बलिदान

[क्रान्तिकारी उपन्यास]

मूल लेखक

-फ्रान्स का प्रसिद्ध उपन्यासकार—

विक्टर ह्यूगो-VICTOR HUGO की

"Ninety Three नाइन्टी थ्री" का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

श्री जयकृष्ण शुक्ल

प्रकाशक

हिन्दी बुक डिपो

चित्तरञ्जन एवन्यू

कलकत्ता

प बार] जनवरी १९५४ [मूल्य

प्रकाशक की ओर से—

यह उपन्यास फ्रान्स के प्रसिद्ध उपन्यासकार मि० विक्टर ह्यूगो के प्रसिद्ध उपन्यास "नाइन्टी थ्री—Ninety Three" का हिन्दी अनुवाद है जो 'बलिदान' के नाम से आपके सामने प्रस्तुत है। इस पुस्तक के मूल लेखक, विक्टर ह्यूगो का स्थान संसार के साहित्य-सेवियों में बहुत ऊंचा है। वे फ्रांस में उत्पन्न हुए थे, परन्तु वे थे संसार भर के, उन्होंने जो कुछ लिखा वह संसार भर के लिए लिखा। उन्होंने बहुत लिखा और बहुत अच्छा लिखा। वे बड़े प्रतिभाशाली लेखक थे। भाषा और भाव, दोनों, उनके इशारे पर नाचते थे। कठिन से कठिन भाव को सरल से सरल ढंग से प्रकट करना, ऊंची से ऊंची बात को साधारण से साधारण बुद्धि के समझने योग्य बना देना, सूक्ष्म भावनाओं के सूक्ष्म से सूक्ष्म संग्रामों का जीवित चित्र आंखों के सामने खींच देना, विक्टर ह्यूगो की लेखनी की स्पष्ट विशेषता है। उनके कुछ उपन्यासों के अंगरेजी अनुवाद निकल चुके हैं। मैंने ह्यूगो के कुछ उपन्यासों के अनुवाद पढ़े हैं। ये उपन्यास ओज और आभा, कल्पना की ऊंची उड़ान और मन की रङ्गबिरङ्गी अठखेलियों से इतने परिपूर्ण हैं कि उनके पढ़ने के पश्चात्, आदमी अपने मन को पहले की अपेक्षा कहीं ऊंचा और कहीं अच्छा अनुभव करता है। ह्यूगो के उपन्यासों में एक का और एक खास का नाम है। Les Miserables, गजब की चीज है। शायद ही संसार भर में उससे बढ़ कर कोई उपन्यास हो। अंगरेजी का प्रसिद्ध कवि स्विनबर्न तो स्पष्ट शब्दों में कहता

है कि उससे बढ़कर कोई उपन्यास नहीं। रोचक इतना है। पंक्ति पंक्ति पढ़े बिना नहीं रहा जा सकता। सहृदयता औ समवेदना से इतना परिपूर्ण, कि उसका एक एक पन्ना आपके ऊपर से ऊपर उठाता चला जायगा। आरम्भ करते समय आ अनुभव करेंगे कि हम पृथ्वी पर चल रहे हैं। अन्त करते समय आप अनुभव करेंगे कि हम आकाश में उड़ रहे हैं, सारा संसार हमारे हृदय की विशाल छाया से आच्छादित है, और दीन से दीन जन के आलिंगन के लिए हमारी आत्मा आगे बढ़ती चली जा रही है। Les Miserables का हिन्दी अनुवाद छप रहा है जो शीघ्र ही पाठकों के सामने आवेगा।

'बलिदान' में जिस समय की बातों का उल्लेख है, वह समय फ्रान्स के लिए अत्यन्त महत्व का है। फ्रान्स में उस समय बड़ी उथल-पुथल मची थी। फ्रान्स में, भीतर ही भीतर एक ज्वालामुखी पर्वत वर्षों से सुलग रहा था। १८वीं शताब्दी के अन्त में, वह एकदम फट पड़ा। उससे आग की जो लपक उठी और अंगारों की जो चमक चमकी, उससे चारों दिशायें जगमगा उठीं और देश देशान्तर में तहलका मच गया। स्वेच्छाचार का राज्य था। शासक और शासितों में आकाश और पाताल का अन्तर था। शासकों के शासन का रूप केवल यही रह गया था कि शासितों को कुचलते हुए चलें और उनका रक्त चूसते हुए अपने जीवन के दिन चैन से काटें। शासितों का काम यही था कि शासकों की सेवा और चाकरी के लिए जियें, और उनके आराम के लिए मरें। फ्रान्स के राजा चौदहवें लुई का जमाना बड़ी शान का गुजरा। ५५ वर्ष तक अटूट राज करने के पश्चात् १७१५ में वह मरा। फ्रान्स का नाम उसने खूब बढ़ाया। दूसरे देशों में उसने फ्रान्स की विजय-दुंदुभी खूब बजाई। परन्तु, इस गौरव, इस कीर्ति का अर्थ यह नहीं था कि उससे फ्रान्स

की प्रजा का कल्याण होता था। लोग पहले तो लुई की शान और प्रभुता से प्रसन्न हुआ करते थे, परन्तु धीरे धीरे जब उन्हें मालूम होने लगा कि लुई की शान महंगी पड़ती है, उसकी प्रभुता और कीर्ति का अर्थ उनके मन से अपने राजा के गौरव पर गर्वित होने की भावना दिन बदिन शिथिल होने लगी। १८वीं शताब्दि के आरम्भ में; फ्रान्स वालों के कष्ट और भी बढ़ गये। दुष्काल का राज्य था। राजा मौज करता था। पूँजीपति ऐय्याशी करते थे। राजा की वेश्यायें राज-कोष का धन हड़पती जाती थीं और खुशामदी लोगों की बन आई थी। राजा और रईस विलासिता में देश के धन को पानी की भांति खर्च करते थे, और बेचारी प्रजा दाने दाने को तरसती थी।

इधर अनाचार का यह दौरदौरा था, लूटमार इस प्रकार जारी थी, प्रजा का रक्त इस प्रकार चूसा जाता था और स्वेच्छाचार का यह भीषण नृत्य और मनुष्यता का यह भारी संहार हो रहा था, उधर मरनेवाले, पिसने वाले लोगों के मन पिसते पिसते, दबते दबते इतने पिस दब चुके थे कि उससे अधिक अब पिसने दबने की गुंजाइश ही नहीं रह गई थी। देश में वालटेयर, रूसो आदि अनेकानेक ऐसे आदमी भी पैदा हो गये थे, जिन्होंने रास्ता न पाने वाले लोगों को पथ दिखलाने के लिये जीते जागते नये विचारों की ज्योति को चारों दिशाओं में छिटका दिया था। एक ओर लोग भूखों के मारे हाहाकार कर रहे थे, अत्याचारियों द्वारा डंडे खा रहे थे, आततायियों द्वारा तंग किये जा रहे थे और नरपशुओं द्वारा पशु समझे जाते थे; दूसरी ओर, समझने वाले लोगों ने समझ और मानवता के आधार पर फ्रान्स के लोगों की इस अवस्था के अनौचित्य पर जोरदार सन्देह करना आरम्भ किया; और आरम्भ किया इस विचार को वायुमण्डल में फैलाना कि किसी

को किसी पर अन्याय करने का अधिकार नहीं और गवर्नमेंटों और शासकों की स्थापना शासितों के आराम के लिये हुआ करती है, शासित लोग शासकों के आराम के लिए कदापि नहीं बनाये गये। भूमि तैयार थी, बीज पड़ने भर की देर थी। असन्तुष्ट लोगों की आत्मा ने इस बीज को सहर्ष धारण किया और इससे वह भारी वृक्ष निकल पड़ा जिसकी शाखायें फ्रान्स भर पर छा गईं और जिसकी जोरदार हवा के कारण यूरोप भर के राज-सिंहासन हिल उठे!

१७७४ में १६ वां लुई गद्दी पर बैठा। इस बेचारे का इसके सिवा और कोई कसूर नहीं था कि वह उन स्वेच्छाचारी सत्ताधारियों की गद्दी का उत्तराधिकारी था जिन्होंने अपने आराम के मुकाबले में फ्रांस भर के लोगों के आराम को कुछ भी नहीं समझा था। वह सीधा आदमी था, चाहता था कि देश का कुछ कल्याण करे। परन्तु पूर्व्वजों के पापों के भार से उसको सदा दबना और अन्त में दबते दबते मरना तक पड़ा। उसकी रानी मेरी एंटोइनेट आस्ट्रिया देश की राजकुमारी थी। उसे राज-सत्ता का बहुत घमण्ड था। उसे फ्रांस के हृदय में धधकनेवाली आग का न तो कुछ पता था, और न राज-मद उसे इस बात का पता लगाने के लिए कभी आज्ञा ही देता था। समय समय पर वह ऐसी बातें कर बैठती, जो फ्रांसवालों के जले हुए दिलों को और भी बुरी लगजातीं। सभी लोग उससे घृणा करते। जिक्र उठते ही उसके नाम पर धिक्कारते। अनेक अवसरों पर, रानी के कारण ही राजा भी प्रजा की नजरों में खटक गया। लुई १६ वें का शासन आरम्भ होते ही, सब से पहले, धन की अटक पड़ी। राज-कोष खाली पड़ा था। देश में दरिद्रता और छीना-झपटी का राज्य था। लोगों में असंतोष पैदा हो गया था, राजा और राज-सत्ता के प्रति लोगों में श्रद्धा बहुत कम हो गई थी।

स्वेच्छाचार का पूरा राज्य था, शासकों के अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ते जाते थे। ५ मई १७८६ को प्रतिनिधि सभा की पहली बैठक हुई। इस समय तक लुई कुछ भी न कर सका। जनता के प्रतिनिधियों ने इस बात पर जोर लगाया कि किसी समुदाय के साथ कोई रियासत न रहे और सब प्रतिनिधि एक समान अपनी राय दें। प्रजा के प्रतिनिधियों की संख्या अधिक थी। इसलिये इस प्रकार बहुमत उनके पक्ष में था। प्रजा के प्रतिनिधियों ने साफ साफ घोषणा की, "हम देश के ९६ प्रतिशत आदमियों के प्रतिनिधि हैं, इसलिए हमीं लोग फ्रान्सीसी राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि हैं। हम देश के सुख-दुख के प्रश्नों पर विचार करते समय किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं करेंगे, और हमारी अनुमति बिना देश के ऊपर कोई भी कर नहीं बाँधा जा सकेगा।" इस समय से प्रजा के प्रतिनिधियों ने अपना नाम National Assembly (राष्ट्रीय परिषद्) रख लिया। राजा ने असन्तुष्ट रईसों और पादड़ियों के कहे में आकर राष्ट्रींय परिषद् से वह स्थान छीन लिया जहां वह अपनी बैठक किया करती थी। प्रजा के प्रतिनिधियों में और भी असन्तोष बढ़ गया। उस समय के प्रजा के प्रधान प्रतिनिधि मीराबो ने अपने साथियों से कहा था, "हम राष्ट्र की इच्छा से एकत्र हुए हैं, कोई हमको हटाना चाहे तो वह हमें हटा सकता है, परन्तु केवल बाहुबल से। वैसे हम कदापि न हटेंगे।" लोग पहले ही से जले बैठे थे। उनके चित्त में यह धारणा दृढ़ हो गई थी कि सारी बुराइयों की जड़ केवल बुरा शासन है, इसलिए शासकों के विरुद्ध जो बात होती, उसका वे मजबूती से साथ देते। इस समय भी फ्रांस भर राष्ट्रीय परिषद् के पक्ष में हो गया। जो पादड़ी और रईस उससे अलग थे, उनमें से भी अधिकांश उसमें शामिल हो गये।

हुई घास। कहीं उन्होंने लकड़ियों को आड़ी और तिरछी बँधी हुई देखा और कहीं वृक्ष की शाखाओं को रक्त से भीगा हुआ। एक जगह उन्होंने अनुमान किया कि हमसे पहले आने वाले लोगों ने यहाँ भोजन बनाया होगा। दूसरी जगह उन्होंने यह समझा कि पहले आने वाले लोगों ने यहाँ उपासना की होगी और फिर पास ही अपने घावों की मरहम-पट्टी की होगी। पर, ये लोग जो पहले आये थे इनका पता कहीं न था। वे गये कहाँ? शायद दूर निकल गये हों। शायद पास ही कहीं झाड़ियों में छिपे हों। सन्देह बढ़ा और सन्देह के साथ तलाश बढ़ी। अपने नायक के साथ तीस जवान औरों की अपेक्षा अधिक आगे बढ़ गये थे। सेना के साथ रण-परिचारिका* भी थी। यह रण-परिचारिकायें खुशी से हरावल‡ के साथ हो जाया करती थीं। जोखम तो रहता था, परन्तु उन्हें सब कुछ देखने को मिलता था। उत्सुकता स्त्रियों की वीरता का एक रूप है।

अचानक ये सिपाही चौंक पड़े। वे ऐसे चौंके जैसे शिकारी उस समय चौंकता है जब वह अपने शिकार के छिपने की जगह के पास पहुँच जाता है। एक झाड़ी से उन्हें कुछ आहट मिली। उन्होंने देखा कि कुछ शाखायें हिल रही हैं। इशारा हुआ और एक मिनट से कम समय के भीतर ही वह स्थान घेर लिया गया। झाड़ी के केन्द्र की ओर किरचें कर दी गईं। सिपाहियों की उंगलियाँ बन्दूकों के घोड़ों पर थीं और आंखें उस स्थान पर। वे अपने नायक के हुक्म का इन्तजार कर रहे थे। इतना होते हुए भी रण-परिचारिका आगे बढ़ी और झाँक कर उसने झाड़ी

---

* उस समय फ्रांस में घायलों की सेवा करने के लिए सेना के साथ रण-परिचारिकायें रहती थीं।

‡ हरावल सेना के उस भाग को कहते हैं जो आगे आगे चलता है।

की चीज को देखा। नायक बन्दूक चलाने का हुक्म देने ही वाला था कि स्त्री चिल्लाई, "ठहर जाना बन्दूक मत चलाओ !!"

यह कह कर वह झाड़ी में घुस गई। सिपाही भी उसके पीछे हो लिये। सचमुच झाड़ी में कोई था। झाड़ी के बीचों-बीच, जहाँ किसी समय आग जलाये जाने के कारण कुछ पृथ्वी साफ थी, घनी पत्तियों के एक झरोके में एक स्त्री बैठी हुई थी। एक छोटा सा बच्चा उसकी छाती से चिपटा हुआ था और दो बच्चे अपने सुन्दर सिरों को उसके घुटने पर रक्खे हुये सो रहे थे। रण-परिचारिका ने उससे पूछा, "तुम यहां क्या कर रही हो ?"

स्त्री ने सिर उठा कर परिचारिका की ओर देखा। परिचारिका ने बड़ी तेजी से कहा, "क्या तुम पगाल हो जो यहां पड़ी हो ? बस, तनिक कसर थी कि तुम्हारे टुकड़े टुकड़े हो जाते। क्या जंगल में कत्ल होने आई हो ?"

वह स्त्री भयभीत हो उठी। कभी वह बन्दूकों और किरचों की ओर देखती, और कभी सिपाहियों के भयावने चेहरों की ओर। दोनों लड़के भी जाग पड़े। एक बोला, 'मैं भूखा हूँ।" दूसरे ने कहा, "मुझे डर लगता है।" छोटा बच्चा छाती से लिपटा हुआ दूध पीता रहा। डर के मारे माँ के मुँह से बात न निकली। तब सिपाहियों का नायक उससे बोला, "डरो मत, हम लोग बोने रो फौज के आदमी हैं।"

स्त्री सिर से पैर तक काँप उठी। उसने आँखें फाड़ कर नायक की ओर देखा। नायक का चेहरा भयावना था। लम्बी मूँछें, घनी भवें और जलते हुए अँगारे की सी आँखों ने उसके चेहरे को और भी भयंकर बना रखा था। उसने फिर पूँछा, "बाई, तुम कौन हो ?"

स्त्री वैसी ही भयभीत रही, कुछ भी न बोली। वह जवान थी, परन्तु दुबली पतली, पीली और चिथड़ों से लदी हुई। दरिद्रता

उसके चेहरे से टपकती थी। छाती उसकी खुली हुई थी। पैरों में जूते न थे, उनसे खून बह रहा था। नायक बोला, "मालूम पड़ता है, यह भिखारिनी है।"

परिचारिका फिर आगे बढ़ी और बड़े मीठे स्वर से उसने पूछा, "बाई, तुम्हारा क्या नाम है?"

बड़ी मुश्किल से लड़खड़ाती हुई जबान के साथ स्त्री ने कहा, "मिचिल फ्लेशार्ड।"

परिचारिका ने छोटे बच्चे के सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा, "इसकी क्या उम्र है?"

माता बोली, "अठारह महीने की।"

परिचारिका ने कहा, "यह बड़ा हो गया है, इसे अब छाती से दूध न पिलाना चाहिये, मैं इसे शोरबा चटाऊँगी।"

माता के मन में अब धीरज बंधा। दोनों लड़के भी, जो सो रहे थे, कुछ चेते और सिपाहियों की सूरतें देखने लगे। माता बोली, "ये बहुत भूखे हैं, मेरे अब दूध तक नहीं।"

नायक ने कहा, "हम उन्हें खाने को देंगे, तुम्हें भी देंगे। जरा यह तो बताओ कि तुम्हारा राजनैतिक मत क्या है?"

स्त्री उसकी ओर देखने लगी। उसने नायक की बात का कुछ जवाब न दिया।

नायक ने फिर पूछा, "क्या तुमने मेरी बात सुनी?"

फ्लेशार्ड लड़खड़ाती हुई बोली, "जब मैं छोटी थी तब साधुनियों के मठ में भेज दी गई थी, परन्तु मैंने ब्याह कर लिया। मैं साधुनी नहीं हूँ। गाँव में आग लगा दी गई थी। हम लोग ऐसे जल्दी जल्दी भागे कि मैं जूता भी पैर में न डाल सकी।"

नायक ने फिर पूछा, "मैं तो यह पूछता हूँ कि तुम्हारा राजनैतिक मत क्या है?"

स्त्री बोली, "मैं नहीं समझी, तुम क्या कहते हो?"

नायक बोला, "औरतें भी जासूस होती हैं। हम जासूसों को गोलियों से मार देते हैं। बोलो, जल्दी बोलो। तुम किस तरफ हो ?"

स्त्री ने नायक की ओर ऐसे देखा, मानो वह कुछ समझी ही नहीं, और फिर बोली, "मैं नहीं जानती।"

नायक—क्या तुम अपने देश ही को नहीं जानतीं ?

स्त्री—अपना देश ! हाँ, उसे तो जानती हूँ ?

नायक—तो फिर कहाँ है वह ?

स्त्री—आज़े जिला में सिस्कोइनार नाम का गाँव है।

थोड़ी देर के लिए नायक सन्नाटे में आ गया। फिर बोला, "वह तो देश नहीं है, वह तो फ्रांस का एक छोटा सा टुकड़ा है।"

स्त्री ने फिर कहा, "नहीं सिस्कोइनार ही हमारा देश है।"

नायक—खैर, ऐसा ही सही। तुम्हारा परिवार वहीं का है ?

स्त्री—हाँ।

नायक—उसका पेशा क्या है ?

स्त्री—सब मर गये, कोई नहीं बचा।

नायक—अरे, कोई तो रहा होगा, बोल, ठीक ठीक बता।

नायक ने यह प्रश्न उग्र स्वर में किया। परिचारिका ने देखा कि बनती बात बिगड़ती है। वह फिर छोटे बच्चे के सिर पर हाथ फेरने लगी और बड़े बच्चे को भी प्यार करती हुई बोली, "इस छोटी बच्ची का नाम क्या है ?"

स्त्री ने उत्तर दिया, "ज्योर्जेट।"

रण०—और, बड़े का ?

स्त्री—रीनेजीन।

रण०—और इस मझोले का ?

स्त्री—ग्रौस-लेन।

रण०—बड़े सुन्दर बच्चे हैं। जी चाहता है कि प्यार ही करती रहूँ।

नायक फिर बोला, "बाई, यह बताओ कि कि तुम्हारे कोई घर है ?"

स्त्री—हाँ, था।

ना०—कहाँ था ?

स्त्री—देश में।

ना०—अपने घर पर तुम क्यों नहीं नहीं रहीं ?

स्त्री—उसे जला दिया।

ना०—किसने ?

स्त्री—मैं नहीं जानती—एक लड़ाई ने।

ना०—तुम इस समय कहाँ से आ रही हो ?

स्त्री—वहीं से।

ना०—जा कहां रही हो ?

स्त्री—पता नहीं।

ना०—ठीक ठीक बताओ, तुम कौन हो ?

स्त्री—मैं नहीं जानती।

ना०—तुम यह नहीं जानतीं कि तुम कौन हो ?

स्त्री—हम घर छोड़ कर भागे हुए आदमी हैं।

ना०—तुम किस दल की हो ?

स्त्री—मैं नहीं जानती।

ना०—तुम ब्ल्यू* हो, या व्हाइट ? तुम किस के साथ हो ?

स्त्री—मैं अपने बच्चों के साथ हूँ।

थोड़ी देर चुप रहकर नायक ने फिर पूछा, "तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं ? बाई, ठीक ठीक अपने माँ बाप का पता बता दो। मेरा नाम रेडो है। मैं इन सिपाहियों का नायक हूँ। मेरे माँ-बाप मीडी

---

* फ्रांस में ब्ल्यू (Bleus) वे लोग कहलाते थे जो प्रजातन्त्र के पक्ष में थे, और व्हाइट (Whites) वे, जो राजतन्त्र के पक्ष में।

गांव में रहते थे। मैं अपने माँ-बाप की सब बातें बता सकता हूँ। इसी तरह तुम भी अपने माँ-बाप की बातें बता दो।"

स्त्री—उनका नाम फ्लेशार्ड था।

ना०—नाम तो फ्लेशार्ड था, काम क्या करते थे?

स्त्री—मजदूरी करते थे। मेरा बाप बीमार था, काम भी न कर सकता था, क्योंकि उसे चोट बहुत लगी थी। मालिक—उसके मालिक—हमारे मालिक—ने उसे मारा था। मालिक ने तो दया की थी, क्योंकि मेरे पिता ने अपराध किया था। खरगोश की चोरी की थी। यह अपराध ऐसा है कि इसके लिए मौत की सजा है। किन्तु मालिक ने दया की। मेरे पिता को सौ बेंतें लगा कर ही छोड़ दिया। इस से मेरा बाप लूला हो गया।

ना०—फिर?

स्त्री—मेरे दादा (अर्थात् बाप का बाप) प्रोटेस्टेन्ट* सम्प्रदाय का था। कैथोलिक सम्प्रदाय के पादड़ी ने उसे जन्म कैद करवा दी। मैं उस समय बहुत छोटी थी।

ना०—और?

स्त्री—मेरे ससुर ने नमक का गोल-माल किया था। राजा ने उसे फाँसी दे दी।

ना०—और तुम्हारा पति, उसने क्या किया?

स्त्री—वह लड़ा था।

ना०—किसके लिए?

स्त्री—पहले राजा के लिए।

ना०—और, फिर?

स्त्री—और, फिर अपने जमींदार के लिए।

---

* ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय जो कैथोलिक सम्प्रदाय के विरुद्ध था और जिसका कैथोलिक सम्प्रदाय ने भी खूब विरोध किया।

ना०—तब ?

स्त्री—इसके बाद, अपने पादड़ी के लिए।

नायक चमक कर बोला, "राजा, जमींदार और पादड़ी—एक एक ही तरह के पशुओं के ये हजारों नाम हैं!"

स्त्री चौंक पड़ी।

नायक ने कहा, "बाई, चौंको मत, हम लोग पेरिस वाले हैं।"

स्त्री ने आकाश की ओर हाथ उठा कर कहा, "भगवन्, रक्षा करो!"

नायक कुड़मुड़ाता हुआ बोला, "इस ढकोसले को छोड़ो।"

जब सिपाहियों ने स्त्री की करुण-कथा सुनी तब वे राजा, जमींदार और पादड़ियों को भला बुरा कहने लगे। नायक ने उन्हें डाँट कर कहा, "चुप रहो, स्त्रियों के सामने अभद्रता-पूर्ण बात नहीं बकना चाहिये।"

सिपाई बोले, "तो भी यह कितनी बड़ी निर्दयता है कि ससुर को तो एक जमींदार लूला कर दे, दादा को पादड़ी साहब जन्म कैद करवा दें, और पिता को राजा फाँसी पर टाँग दे, और फिर भी, एक ऐसे भले आदमी को राजा, जमींदार तथा पादड़ी के लिए हथेली पर जान ले कर लड़ना-मरना पड़े।"

नायक ने सिपाहियों को डाँट कर कहा, "चुप रहो, बहस की जरूरत नहीं। इस समय हम किसी सभा में नहीं बैठे हैं।"

वह स्त्री की ओर फिर मुड़ा और बोला, "बाई तुम्हारे पति का क्या हुआ?"

स्त्री—उनका कुछ नहीं हुआ, लोगों ने उन्हें मार डाला।

नायक—कहाँ मार डाला ?

स्त्री—एक झाड़ी में।

नायक—कब ?

स्त्री—तीन दिन हुए।

नायक—किसने ?

स्त्री—पता नहीं ।

नायक—ऐं! तुम्हें यह पता नहीं कि तुम्हारे पति को किसने मार डाला ?

स्त्री—नहीं ।

नायक—मारने वाला ब्ल्यू था, या ह्वाइट ?

स्त्री—बन्दूक की गोली थी ।

नायक—तीन दिन से क्या करती हो ?

स्त्री—अपने बच्चों को लिए फिरती हूँ ।

नायक—उन्हें कहाँ ले जा रही हो ?

स्त्री—जहां ठौर मिले ।

नायक—इन दिनों तुम कहां सोईं ?

स्त्री—भूमि पर ।

नायक—क्या खाया ?

स्त्री—कुछ नहीं ।

नायक ने चौंक कर पूछा, "कुछ नहीं ?"

स्त्री—हाँ, जंगल में पड़ी हुई जंगली बालियों और बीजों को मुंह में डाल लिया था ।

बड़ा बच्चा उसी समय बोला, "मुझे भूख लगी है ।"

नायक ने अपने थैले से एक फौजी रोटी का टुकड़ा निकाला और उसे स्त्री के हाथ में दिया । स्त्री ने उसके दो टुकड़े किये और दोनों बच्चों के हाथों में दे दिये । बच्चे बड़े चाव से खाने लगे । नायक कहने लगा, "इसने अपने लिए तो कुछ भी नहीं रक्खा ।"

एक सिपाही बोला, "वह भूखी नहीं है ।"

नायक ने उत्तर दिया, "नहीं वह माता है ।"

फिर वह स्त्री से बोला, "क्या तुम कहीं भागी हुई जा रही हो ?"

स्त्री—इसके सिवा और चारा ही क्या है ?

नायक—जिधर तुम्हारे पैर लिये जाते हैं उधर ही चली जाती हो ?

स्त्री—जब तक बनता है चलती हूँ, नहीं बनता है तब गिर पड़ती हूँ। लड़ाई हो रही है, मेरे चारों तरफ गोलियाँ चल रही हैं। पता नहीं, लोग क्या करना चाहते हैं ? उन्होंने मेरे पति को मार डाला, इतना ही समझ सकी।

नायक ने अपनी बन्दूक के कुन्दे को जमीन पर दे पटका और वह आवेश के साथ बोला, "लड़ाई भी कैसी शैतानी माया है !"

स्त्री ने कहा, "कल रात को हम चारों आदमी एक खोखले वृक्ष के भीतर खड़े हो कर सोये थे।"

नायक—चारों आदमी ?

स्त्री—हां, चारों प्राणी।

नायक—सोये ?

स्त्री—हाँ, सोये।

रण-परिचारिका चौंक पड़ी और बोली, "बाबारे, बाबा ! खोखले वृक्ष में खड़े होकर सोना, और सो भी तीन तीन बच्चों के साथ !"

नायक बोला, "और उस पर भी जब यह बच्चे चिल्लाते होंगे, तब यदि उधर से कोई आदमी गुजरता, तो यही समझता कि वृक्ष भाँय-भाँय चिल्लाकर रो रहा है !"

नायक स्त्री की ओर से बढ़ा। उसकी आँखें छोटे बच्चे की आँखों से मिलीं। बच्चे ने छाती छोड़ दी। उसने अपना सिर घुमाया। उसकी छोटी छोटी सुन्दर नीली आंखें नायक के बाल-दार भयंकर चेहरे पर पड़ीं। बच्चा मुसकरा उठा। नायक का बच्चे की ओर झुका हुआ सिर ऊपर उठा। सिपाहियों ने देखा कि उसके

गाल पर आंसू का एक बड़ा बूंद बह आया है, और वह आंसू उसकी मूंछ के नोक पर अटक कर मोती की तरह चमक रहा है।

नायक जोर से बोला, "साथियों, इस घटना से मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि अपनी सेना को इन बच्चों के पिता का स्थान लेना पड़ेगा। क्या यह ठीक है? क्या इन तीनों बच्चों को, अपनी सेना के नाम पर हम लोग गोद ले लें।

सिपाही एक ध्वनि से चिल्ला उठे, "प्रजातंत्र की जय!"

नायक ने कहा, "तो, यह तय है।"

यह कह कर उसने अपने दोनों हाथ माता और बच्चों के सिरों पर फैला दिये, और वह बोला, "वोने-रो' नाम की फौज आज से इन बच्चों को अपना बच्चा बनाती है।"

रण-परिचारिका हर्ष के मारे उछल पड़ी। उसके नेत्रों में आंसू आ गये। उसने बेचारी विधवा को गले से लगा लिया और उसकी ठुड्डी पकड़कर बोली, "देखो तो इस लड़की का मन कितना हरा हो गया!"

सिपाहियों ने 'प्रतातंत्र' की जयध्वनि फिर की। नायक माता से बोला, "उठो नागरिका, आओ हमारे साथ।"

मन-चाहा सरदार

सन्ध्या का समय था। इंगलैंड के एक छोटे से बन्दरगाह से एक जहाज फ्रान्स के लिए रवाना हुआ। वह अंगरेजी बेड़े का एक जहाज था। शकल-सूरत से तो एक सौदागरी जहाज मालूम पड़ता था; परन्तु बनाया वह इस दोहरे मतलब से गया था, कि जहां सम्भव हो, वहां अपनी शकल से शत्रु को धोका दे और जहाँ आवश्यकता हो वहाँ लड़ जाय। चलते समय, उसमें, नीचे के हिस्से में, ३० तोपें रक्खी गई थी। तूफान के डर से या कदाचित इसलिए कि आवाज न हो, इन तोपों को जंजीर से जकड़ कर बाँध दिया गया था। वे ढकी हुई थीं। बाहर से उन्हें कोई न देख सकता था। जहाज में जितने आदमी थे वे सब फ्रान्सीसी थे—कुछ फ्रान्स से भाग कर इंगलैंड में पनाह लेने वाले अफसर और कुछ जहाजों की नौकरी छोड़कर भाग जाने वाले मल्लाह। परन्तु थे सब ऊँचे तुले आदमी—अच्छे सिपाही और अच्छे राजभक्त। जहाज का कप्तान था काउन्ट बोइस बरथेलो और सहायक-कप्तान का नाम था ब्यूबिले। मालूम पड़ता था कि जहाज किसी विशेष काम के लिए फ्रान्स जा रहा था। जहाज पर एक आदमी विशेष ढंग का था। था वह लम्बा और बूढ़ा, लेकिन तीर का सा सीधा और बहुत मजबूत। चेहरे पर इतना रोब था कि बुढ़ापे में भी जवानी टपकती थी, और उम्र का ठीक ठीक अनुमान करना कठिन था। वह उन आदमियों में से था जो बूढ़े होते हुए भी बलवान होते हैं, जिनके सिरों पर सफेद बाल होते हैं और नेत्रों में तीव्र ज्योति, उत्साह में जो ४०

वर्ष की अवस्था वाले के सदृश दिखाई देते हैं, और अधिकार और प्रतिष्ठा में ८० वर्ष के वयोवृद्ध की भाँति। पोशाक उसकी बहुत मामूली थी। फ्रान्स के किसान जैसे मामूली कपड़े पहनते हैं वैसे ही वह पहने हुए था। उसके लबादे के नीचे ढीला पाजामा और चमड़े की जाकट दिखाई पड़ती थी।

कहीं कहीं से, खास कर घुटने और टहनी पर, उसकी पोशाक के कपड़े छन से गये थे। सिर पर चौड़े किनारे की गोल टोपी थी। पोशाक देखकर उसे किसान कहा जा सकता, या मल्लाह परन्तु जिस समय वह जहाज पर चढ़ा था, इंगलेंड के दो बड़े आदमी, एक तो जरर्सी द्वीप का गवर्नर और दूसरा, जहाजी बेड़े का अध्यक्ष, जो राजकुमार था, ये दोनों, उसे जहाज तक पहुँचाने आये थे, और बड़े आदर से उन्होंने उसे जहाज पर चढ़ाया था। गवर्नर ने विदा होते समय अभिवादन करते हुए उसे जनरल (सेनापति) के नाम से पुकारा था। राजकुमार ने विदा होते समय उसे 'भाई' के नाम से सम्बोधन किया था।

जहाज के चल देने के एक घन्टे बाद, इंगलेंड से फ्रान्सीसी राजतन्त्र के एक जासूस ने फ्रान्स के राजतन्त्रवादियों के दल के पास यह समाचार भेजा, "महाशय, रवानगी हो गई। सफलता निश्चित समझिए। आठ दिन के भीतर ही सम्पूर्ण समुद्री किनारा अग्नि-शिखाओं से प्रज्वलित हो उठेगा।"

इस घटना के चार दिन पहले, एक दूसरे जासूस ने 'मारने' नाम के स्थान के प्रजातन्त्र शासन के प्रतिनिधि को यह समाचार भेज दिया था, "नागरिक प्रतिनिध, पहिली जून को बाहरी आडम्बरों से तोपखाने को छिपाये हुए एक जहाज इंगलेंड से रवाना होगा। वह फ्रान्स के समुद्री तट पर जा कर लगेगा। उसमें एक आदमी इस हुलिए का है :—लम्बा, बूढ़ा, सफेद बालों का, किसानी पोशाक में और अमीरों के से हाथ वाला। विशेष ब्योरा

कल भेजूँगा। वह दूसरी तारीख को समुद्री तट पर उतरेगा। जहाजों को खबरदार कर दीजिए। उस जहाज को पकड़ लीजिए और उस आदमी का सर काट लीजिए।"

× × ×

रात हो गई थी। जहाज फ्रान्स की तरफ बढ़ता जा रहा था। नौ बजे के लगभग हवा कुछ तेज हो गई। समुद्र की लहरें जोर से उठ रही थीं। बूढ़ा आदमी डेक पर शान्ति के साथ टहल रहा था। वह न किसी से बोलता था और न चालता। जब कभी थोड़ी बहुत बातें करता भी तो कप्तान से, जो अत्यन्त विनीतभाव के साथ उसकी बातें सुनता और उनका उत्तर देता। दस बजे वह अपने कमरे में चला गया। चलते समय धीरे से वह कप्तान और उसके सहायक ब्यूबिले से बोला, "देखिए कोई बात खुलने न पावे। उस समय तक जबान पर ताला लगा हुआ समझिए जब तक घटना घट न जाय। केवल आप ही दोनों यह जानते हैं कि मैं कौन हूँ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "प्राण भले ही चले जायं, पर कोई बात खुलने न पावेगी।"

बूढ़ा कमरे में चला गया। कप्तान और उसका सहायक दोनों डेक पर टहल टहल कर बातें करने लगे। कप्तान काउंट बोइस बर्थेलो भारी स्वर से बोला, "देखें, यह यथार्थ नेता सिद्ध होता है, या नहीं?"

ब्यूबिले ने जवाब दिया, "है तो वह राजकुमार।"

काउंट—हां, राजकुमार ही सा है।

ब्यूबिले—फ्रान्स का तो वह सरदार है, पर ब्रिटेनी प्रदेश का वह राजकुमार है।

काउंट—फ्रान्स में, और राजा के साथ, यदि उसकी सरदारों

में गणना है तो मैं भी फ्रान्स देश का एक काउंट* हूँ, और तुम भी सैनिक हो।

ब्यूबिले—इन बातों का तो अब जमाना ही उठ गया।

थोड़ी देर सन्नाटा रहा। काउंट फिर बोला, "किसी फ्रान्सीसी राजकुमार के न होने के कारण ब्रिटेनी के राजकुमार का आसरा ढूँढ़ना पड़ा है।"

ब्यूबिले—सच है, बाज की कमी के कारण कौए को चुनना पड़ा।

काउंट—ऐसे समय पर तो बाज ही होना चाहिए।

ब्यूबिले—बेशक एक सच्चे सरदार की जरूरत है जो पूरा सेनापति हो। नये और पुराने, भले और बुरे, सब प्रकार के सेनापतियों को मैं जानता हूँ। परन्तु उनमें कोई भी ऐसा नहीं जो इस समय हमारे काम का हो। बैंडी‡ की शापित भूमि के लिए एक ऐसे सेनापति की जरूरत है जो सैनिक चाल-पेंचों को जानते हुए कानूनी दांव-घातों का भी जानकार हो। वह शत्रु को थका मारे। नदी, नाले, झाड़ी और खाई, पग पग, पर उसका मुकाबला करे। हर चीज को देखे और हर चीज से लाभ उठावे। रक्त की नदियाँ बहावे और शत्रुओं को ऐसी कड़वी शिक्षा दे कि वे फिर उसे न भूलें। न आराम ले और न आराम लेने दे। दया और करुणा उसके पास तक न फटके। बैंडी के किसानों की सेना में वीरों की कमी नहीं। कमी जो कुछ है, वह सेना के सञ्चालन करने वाले अधिनायकों की है। नीच जाति के टुच्चे आदमी उस वीर सेना में अधिनायक बन बैठे हैं! यदि हमारी सेना में नाई और धोबी,

---

* उपाधि-विशेष।

‡ फ्राँस का एक प्रदेश, जो राज्यक्रान्ति के समय प्रजा-तन्त्र वालों से राज-तन्त्र के पक्ष में अच्छी लड़ाई लड़ा था।

रईसों और भले-मानुसों के ऊपर कप्तान और जेनरल बनकर बिठा दिये जायँ तो फिर इस राज्य-क्रान्ति के मुकाबला करने से फायदा ही क्या, और फिर प्रजातंत्र-वादियों और हम में फर्क ही क्या रहा?

काउंट—जिन साधारण आदमियों की तरफ तुम्हारा इशारा है उनमें से कुछ तो बहुत अच्छे भी निकले। किसानी सेना का 'गैस्टन' बाल बनाने का काम करता था, परन्तु लड़ाई में भी उसने बड़ा काम किया, उसने तीन सौ ब्ल्यू (प्रजा-तन्त्र के) सिपाहियों को मारा।

ब्यूबिले—तो भी लड़ाई के बड़े काम, बड़े आदमियों के ही हाथों में होने चाहिये। बालों के बनाने और संवारने वाले इन कामों को क्या जानें?

काउंट—मैं फिर इस बात पर जोर देता हूँ कि इन छोटे आदमियों में भी कई बहुत अच्छे निकले हैं। वर्दीसाज 'जोभी' ही को देखो। वह केवल सिपाही था। वैन्डी की फौज में सरदार जा बना। उसका लड़का प्रजातन्त्र वालों में जा मिला। बाप इधर काम करता था, और बेटा उधर। लड़ाई में मुठभेड़ हो गई। बाप ने बेटे को कैद कर लिया और उसका सर उड़ा दिया।

ब्यूबिले—शाबाश!

काउंट—भाई, जो हालत हमारी है वही उनकी है। हमारी तरफ अगर छोटे आदमी ज्यादा हैं तो उधर बड़े आदमी, जिनमें बेवकूफों की तादात काफी ज्यादा है। उनमें से कई ऐसे हैं कि सेना की शकल तक नहीं देखा, और इस समय उसका सञ्चालन कर रहे हैं।

इन दोनों की बातें बीच ही में कट गईं। बड़े जोर की एक चीख सुन कर दोनों रुक गये। फिर बड़े जोर का एक धड़ाका हुआ। चीख और धड़ाका जहाज के नीचे के हिस्से हुए थे। कप्तान और लेफ्टिनेन्ट उसी तरफ लपके, परन्तु नीचे न उतर

सके। सब गोलन्दाज ऊपर ही की ओर भागते आ रहे थे। एक बड़ा भीषण काण्ड हो गया था। तोपखाने की एक तोप जञ्जीर तोड़ कर छूट गई थी। समुद्र में तेजी के साथ जाते हुए जहाज पर इस से अधिक और कोई दुर्घटना नहीं हो सकती। जञ्जीरों से छूट कर खुल पड़ने वाली तोप ऐसी अवस्था में बड़ी ही भयंकर राक्षसी का रूप धारण कर लेती है। उसके पहिए घूमने लगते हैं। गेंद की तरह वह ढुलकने लगती है। इधर आती है, उधर जाती है, ठहर जाता है, मानों कुछ सोचने लगती है, और फिर झपट पड़ती है, जहाज के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तीर की तरह लपकती है, चक्कर मारती है, उछलती है, हटती है, बढ़ती है, तोड़ती है, हत्या करती है और विनाश करती है। मालूम पड़ता है कि सदा जञ्जीरों से बँधी रहने वाली यह 'शक्ति' ऐसे समय पर अपने बन्धनों का बदला लेती है। भासित होता है कि उसमें धैर्य्य का लवलेश नहीं रहा। हिंसात्मक भयङ्कर बदला लेने के काम में इस निर्जीव पदार्थ के क्रोध से बढ़कर भीषण कोई भी वेग नहीं। चीते की भांति वह उछाल मारती है। हाथी की तरह वह बोझ डालती है। चूहे की भांति उसमें फुर्ती होती है। कुल्हाड़ी की भांति वह दृढ़ता दिखाती है। समुद्र की लहरों की भांति उसके आने जाने का कोई समय नहीं। बिजली की तरह उसमें तीव्र गति है और श्मशान की तरह वह गूंगी बहरी होती है। सवा सौ मन भारी लोहे की चीज बच्चे की गेंद की तरह उछलती और कूदती है। उसके भयङ्कर नृत्य के बन्द करने का क्या उपाय? तूफान गुजर जाते हैं, वायु के झकोरे शान्त हो जाते हैं, जहाज की टूटी हुई मस्तूल बदल दी जाती है, उसमें हो जाने वाले छेद बन्द कर किये जाते हैं, और लग जाने वाली आग बुझा दी जाती है; परन्तु, धातु के इस भयङ्कर भूत के शमन करने का क्या उपाय? कोई उसे नहीं मार सकता। वह मुर्दा चीज है

परन्तु मुर्दा होते हुए भी वह जिन्दा है। उसके नीचे के तख्ते उसे हरकत देते हैं। जहाज के कारण वह हिलती है, जहाज को समुद्र हिलाता है और हवा की टक्करें समुद्र की लहरों को हिलाती हैं। जहाज, लहरें और हवा सभी इस भयङ्कर पिशाचिनी को मदद देती है। इनके कारण उसका बल और भी बढ़ जाता है। जहाज को नष्ट-भ्रष्ट तक कर डालने वाली इस विनाश लीला को कैसे रोका जाय ? उसके एक क्षण रुकने का भी कोई ठिकाना नहीं। कभी वह आगे बढ़ती है और कभी पीछे हटती है और कभी दायें और कभी बायें चोट करती है। रोकने के लिए जो चीजें डाली जाती हैं उन्हें तोड़ देती है और आदमियों को तो इस तरह मार देती है जैसे कि मक्खियाँ मारी जाती हैं। ऐसा भासित होता है कि बिजली है जो जहाज के पेट में कैद हो गई और निकल जाना चाहती है।

मुख्य गोलन्दाज की गफलत का यह नतीजा था। तोप को बाँधते समय उसमें कील-काँटे खूब कस कर नहीं लगाये गये थे। आज कल जहाजों पर तोपों के साधने और रोकने के लिए जिन उपायों का अवलम्बन किया जाता है उस समय उनका जन्म नहीं हुआ था। एक भारी लहर की टक्कर लगी और बन्धन टूट गये, और तोप जंगली जानवर की भाँति दौड़ने लगी। जिस समय तोप खुल गई उस समय गोलन्दाज लोग उसी जगह पर थे। कुछ गोलन्दाज एक स्थान पर खड़े हुए थे। छूटते ही वह उनके झुंड से टकराई। पहिले ही बार में चार आदमी कुचल गये। जब वह पलटी तो एक आदमी और कट गया और एक तोप को इतना धक्का लगा कि वह नीचे गिरते गिरते बची। इतने ही में चीख पुकार मच गई। नीचे के लोग ऊपर की ओर भागे। नीचे का हिस्सा खाली होगया। मनमानी कुलेलें करने के लिए तोप को वह सारा स्थान मिल गया। जहाज वाले लड़ाइयों का मुकाबिला

हंसते हंसते करते थे; परन्तु इस समय वे काँप उठे। कप्तान और लेफ्टिनेन्ट दोनों सीढ़ी के सिर पर पहुँच कर ठिठक गये। वे हक्के-बक्के रह गये। क्या करें और क्या न करें, कुछ भी उनकी समझ में नहीं आया। इतने में पीछे से उन्हें कोई हाथ से हटा कर नीचे उतर गया। वह वही किसान-वेषी यात्री था। सीढ़ी के नीचे जाकर वह चुप होकर खड़ा होगया।

तोप का वही हाल था। खूब दौड़ लगा रही थी और विनाश का खेल खेल रही थी। इस समय तक चार तोपों को उसने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। दो जगह जहाज की पेंदी फोड़ दी थी। वह जहाज की मजबूत दीवारों पर बड़े जबरदस्त हमले कर रही थी। जहाज की ठोस लकड़ी की दीवारें इन प्रहारों का खूब मुकाबिला कर रही थीं, परन्तु इन टक्करों से जो धड़ाका होता था वह बहुत ही भीषण था। तोप के पहिये पाँच मरे हुये आदमियों के शरीरों पर बार बार घूम रहे थे। शरीर चटनी हो गये थे और उनका खून छिटक छिटक कर दूर दूर तक पड़ रहा था। कप्तान ने हुक्म दिया, और मल्लाहों ने पहियों की रोक के लिए जो चीज हाथ लगी, नीचे फेकनी आरम्भ कर दी। पाल, रस्सियां, गाँठें, सब कुछ डाल दी गई। परन्तु इनसे क्या होता था। किसी की हिम्मत न पड़ी कि नीचे उतरता और इन चीजों का ढेर ढंग से लगा कर मोरचेबन्दी करता। थोड़ी ही देर में सब चीजें लत्ते का ढेर बन गई। धीरे धीरे ३० तोपों में से १० बेकार होगई। जहाज की पेंदी और भी कई जगह से टूट गई और उसमें पानी भी आने लगा। खतरा बढ़ चला। कप्तान, लेफ्टिनेन्ट से बोला, "क्या तुम ईश्वर में विश्वाश करते हो?"

ले०—हां—नहीं—कभी कभी।

कप्तान—क्या तूफान के समय?

ले०—हां, और ऐसे अवसरों पर भी।

कप्तान—इस अवसर पर तो केलव ईश्वर ही हमारी मदद कर सकता है।

फिर सन्नाटा छा गया। केवल तोप अपना भयङ्कर खेल खेल रही थी। बाहर से लहरें जहाज पर चोट मारती थीं और भीतर से तोप के धक्के।

अचानक इस भयङ्कर लीला-क्षेत्र में एक आदमी एक लोहे का का छड़ अपने हाथ में लिये हुए उछल कर पहुँचा। यह वही गोलन्दाज था जिसकी गफलत से तोप जञ्जीर से छूट गई थी। उसके एक हाथ में लोहे का छड़ था और दूसरे में जहाजी रस्सी का फन्दा। अब तोप और तोपची का संग्राम आरम्भ हुआ। वह आदमी एक कोने में खड़ा हो गया और तोप के अपने पास आने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ क्षण के लिए लहरों के किसी भिन्न प्रकार के बहाव के कारण तोप स्थिर सी मालूम पड़ी। यह मालूम पड़ता था कि तोप ने अपने उस मालिक को पहचान लिया जिसके साथ वह सालों तक रही थी और जिसने एक बार नहीं, अनेक बार उसके मुँह में हाथ डालकर खेल खेला और खेल खिलाया था। परन्तु अन्त में तोप लपकी। गोलन्दाज ने पैंतरा बदल कर अपने को बचाया। तोप के वार बार-बार होने लगे। गोलन्दाज फुर्ती के साथ टक्करों से अपने को बचाता था। वह टक्करों से बच जाता था; परन्तु टक्करें लगती थीं जहाज में, और उनके कारण भारी अनर्थ होता जा रहा था। टूटी हुई जञ्जीर का एक सिरा अभी तक किसी प्रकार तोप में उलझा हुआ था। तोप की हरकत के साथ वह भी बड़े जोर से घूमता और तोप के प्रहारों की भयंकरता और भी बढ़ाता। इस समय तक इस मारा-मारी से तीन तोपें और बेकार हो गईं। गोलन्दाज इस कोने से उस कोने तक दौड़ने वाले इस भयंकर पशु का बड़ी ही फुर्ती और सतर्कता से आगे बढ़ते, पीछे हटते और दायें और बायें मुड़ते हुए पीछा

कर रहा था। एक बार तोप ऐसे बेढब ढंग से पीछे लुड़की कि गोलन्दाज बिल्कुल उसकी चपेट में आता हुआ नजर आया। वह अपने को बचाते हुए सीढ़ी के पाये के पास पहुँच चुका था। बूढ़ा आदमी, जोकि इस तमाशे को देख रहा था, उससे कुछ ही क़दम के फ़ासले पर था। तोप आगे बढ़ती आरही थी और ऐसा मालूम पड़ता था कि गोलन्दाज अब गया, और तब गया। जहाज वाले, जो ऊपर से इस लीला को देख रहे थे, घबड़ा गये। वे चिल्ला उठे। बूढ़े आदमी ने जो अभी तक चुपचाप था, एक उछाल मारी। जहाज के पाल की एक गांठ उसने उठा ली और बाल बाल बचते हुए उसे तोप के पहिये के बीच फेंक दी। काम बड़ा खतरनाक था। परन्तु वह ऐसा अचूक बैठा कि उसे तोप-खाने के सारे रहस्यों से जानकार, चतुर और मँझा हुआ आदमी ही कर सकता था। तोप के पहियों को गांठ की ठोकर लगी। गोलन्दाज ने भी प्राणों पर खेल कर लोहे के छड़ को तोप के पिछले पहियों में अटका दिया, तोप रुक गई। गोलन्दाज पसीने से तर-बतर था, तो भी बड़ी फुर्ती से रस्सी का फन्दा तोप के गले में उसने फांस दिया। अब तोप बिलकुल वश में होगई। जहाज वालों की जान में जान आई। रस्से और जञ्जीरें लेकर सब दौड़ पड़े। क्षण भर में तोप फाँस ली गई। गोलन्दाज ने मुसाफिर का अभिवादन किया और बोला, "श्रीमान्, आपने मेरे प्राण बचाये।"

बूढ़ा वैसा ही गम्भीर बना रहा। उसने कुछ जवाब न दिया।

आदमी ने तोप को जीत लिया, परन्तु तो भी तोप की एक जीत हुई। जहाज की तबाही उस समय तो बच गई, लेकिन उसकी दुर्गति होगई। पेंदी में पाँच बड़े बड़े छेद होगये। तीस तोपों में से बीस बेकार होगई। वह तोप स्वयं भी किसी काम की न रही। चीजों की छीलालेदर हुई सो अलग। इधर इस परेशानी में जहाज अपने मार्ग से भी हट गया था। वह कहीं का कहीं जा

पहुँचा। तूफान के ढङ्ग भी नजर आ रहे थे। अंधकार इतना हो रहा था कि पास की चीज तक नजर न आती थी। जहाज वाले जब जहाज के सुधार में लग गये तब बूढ़ा मुसाफिर ऊपर चला गया। थोड़ी देर में सब मल्लाह एक जगह जमा हुए और कप्तान के साथ बूढ़े मुसाफिर के पास पहुँचे। कप्तान के पीछे तोप को गिरफ्तार करने वाला गोलन्दाज था। अभी तक वह हांफ रह था। उसकी पोशाक अभी तक अस्त-व्यस्त थी। तो भी उसकी आंखों से संघोत का भाव टपकता था। कप्तान ने किसान-वेषी मुसाफिर को सैनिक सलाम करके कहा, "सेनापति महोदय! यह आदमी आपके सामने हाजिर है।"

गोलन्दाज आँखें नीचे किये हुए सीधे सिपाहियाने ढङ्ग से खड़ा होगया। कप्तान फिर बोला, "महोदय इस आदमी ने जो काम किया है उस पर उसे पुरस्कार मिलना चाहिए।"

बूढ़े ने कहा, "निस्सन्देह।"

कप्तान—तो कृपा कर आज्ञा दीजिए।

बूढ़ा—आज्ञा आपको देनी चाहिये, आप कप्तान हैं।

कप्तान—परन्तु, आप जेनरल हैं।

बूढ़े आदमी ने गोलन्दाज की तरफ देखा और उससे कहा, "इधर आओ।" गोलन्दाज आगे बढ़ा। बूढ़ा, कप्तान की तरफ बढ़ा। उसने कप्तान की वरदी से सेन्ट-लुई का पदक निकाल लिया, और उस पदक को गोलन्दाज की छाती पर लगा दिया। मल्लाह लोग खुशी के मारे जय-जयकार करने लगे। उन्होंने बूढ़े की सलामी की। इसके बाद बूढ़ा पदक-प्राप्त गोलन्दाज की तरफ उंगली उठा कर बोला, "अब इस आदमी को गोली से मारदो।"

हर्ष-ध्वनि की जगह विषाद-युक्त सन्नाटा छा गया। श्मशान भूमि के सन्नाटे की भांति इस सन्नाटे में बूढ़े आदमी ने अपने स्वर को ऊंचा उठाते हुए जोर से कहा, "इसकी गफलत के कारण

यह जहाज खतरे में पड़ गया है। इस समय लगभग जहाज का अन्त समय सा दृष्टि के सामने है। समुद्र में रहना शत्रु के मुकाबले में रहने के बराबर है। खुले समुद्र में एक जहाज उस सेना के सदृश होता है जो रण-क्षेत्र में होती है। सारा समुद्र उसकी घात में रहता है। तूफान छिप जाते हैं, परन्तु वे समाप्त नहीं हो जाते। जिस समय शत्रु का सामना हो, उस समय जो कोई जो अपराध करे उसकी सजा केवल मृत्यु है। ऐसे अवसर पर कोई अपराध अवहेलना के योग्य नहीं। साहस के लिए पुरस्कार मिलना चाहिए और गफलत के लिए दंड।" धीरे धीरे इन शब्दों को कहते हुए, अन्त में बूढ़ा, सिपाहियों की ओर मुड़ा और उनसे बोला, "तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो।" गोलन्दाज ने, जिसकी छाती पर सेन्ट-लुई का पदक चमक रहा था, अपना सर झुका दिया। थोड़ी देर ही बाद उसे गोली से उड़ा दिया गया। एक धड़ाका हुआ और उसकी प्रतिध्वनि गूंज उठी। इसके बाद फिर सन्नाटा छा गया। तब समुद्र में शरीर के गिराये जाने की आवाज आई।*

बूढ़ा यात्री हाथ बांधे और मस्तूल से पीठ लगाये हुए खड़ा विचार चिन्ता में निमग्न था। कप्तान ने धीरे से उँगली से इशारा करते हुए लेफ्टिनेन्ट से कहा, "वेन्डी की सेना के लिए मन-चाहा सरदार मिल गया।"

---

* सैनिक ढंग से गोलन्दाज को गोली मार दी गई और फिर उसका शरीर समुद्र में फेंक दिया गया।

इधर कुआँ और उधर खाई

इधर बाहर समुद्र में तूफान जोर से बढ़ता जा रहा था। घटा-टोप अंधेरा था। इतना घना कुहिरा छाया हुआ था कि हाथ के पास की चीज भी न दिखाई पड़ती थी। लहरें बड़े जोर जोर से उठ रही थीं। जहाज बड़े खतरे में पड़ गया। तोप ने जिन चीजों को नष्ट-भ्रष्ट किया था, वे सब समुद्र में इस लिए फेंक दी गई कि जहाज कुछ हलका हो जाय। जहाज वाले खतरे को अच्छी तरह जान चुके थे। उनके चेहरों पर गंभीरता छाई हुई थी। ब्यूबिले मुख्य नाविक के पास पहुँचा और उससे पूछने लगा "नाविक यह तो बताओ कि इस समय हम लोग हैं कहाँ?"

नाविक ने गंभीरता से जवाब दिया, "परमेश्वर की गोद में।"

धीरे धीरे रात कटी सबेरे का उजाला कुछ कुछ प्रकट होने लगा, बादल अब भी छाये हुए थे, परन्तु वे उतने भयावने नहीं थे। पूर्व दिशा में प्रातः कालीन ऊषा की छटा छिटक चली थी और पश्चिम दिशा में अस्त होने वाले चन्द्र की मलिन प्रभा लुप्त होती जा रही थी। इन दोनों अवस्थाओं के कारण काले समुद्र और भयावने आकाश के बीच में क्षितिज के किनारे किनारे पीली पीली रेखायें सी बन गई थीं। इन रेखाओं के उस पार कुछ काली काली सीधी और स्थिर शकलें दिखाई पड़ रही थीं। पश्चिम में तीन ऊंची पहाड़ियाँ और पूर्व मे, आठ मस्तूल, एक ही क्रम से लगे हुए थे। ये तीन ऊंचे टीले, 'मिनकर' नाम की पहाड़ी के थे। यह पहाड़ी अपनी भयंकरता के लिए बहुत बदनाम थी। जो मस्तूल दिखाई पड़ते, वे थे फ्रान्सीसी जहाजों के। इस प्रकार यदि

इस जहाज के लिए एक ओर खाईं थी तो दूसरी ओर विनाश का कुआँ। एक तरफ तबाही थी, तो दूसरी तरह लड़ाई। टीलों से मुकाबिला नहीं किया जा सकता था। जहाजों का सामना करना कितना कठिन था, वह इसी बात से समझा जासकता है कि तीस तोपों में से इक्कीस टूट-फूट जाने के कारण समुद्र में फेंक दी गई थीं, और अच्छे अच्छे गोलन्दाज मर चुके थे। 'मिनकर' की पहाड़ियां जितनी भयंकर आज हैं उससे कहीं अधिक भयंकर वे उस समय थीं। वर्षों के तूफानों और समुद्र की टक्करों ने उनकी विकरालता को आज कल बहुत कम कर दिया है। परन्तु उस समय तो दशा यह थी कि 'मिनकर' की पहाड़ी से टकराने या उसके समुद्री भंवर में पड़ जाने पर किसी भी जहाज की कुशल न थी। जो जहाज सामने दिखाई पड़ते थे वे फ्रान्सीसी प्रजा-तंत्र के थे। उससे भी पार पाना मुश्किल था। इस प्रकार एक ओर तो तबाही का सामना था और दूसरी ओर बे जोड़ लड़ाई का। और वह भी ऐसी दशा में, जब कि एक तोप के ऊधम से जहाज के अंजर-पंजर बिल्कुल ढीले हो चुके थे और वह समुद्र की लहरों ही से डगमगा रहा था।

थोड़ा थोड़ा उजाला हो चला था। जहाज हवा के रुख पर कर दिया गया था और यह इसलिए कि यदि जहाज के अगल-बगल हवा के झोंके लगने दिये जाते, तो वह इतना कमजोर पड़ गया था कि उलट जाता। कप्तान ने हाथ में दूरबीन ली और उसके द्वारा वह बाहर की अवस्था की जांच-पड़ताल करने लगा। पहले उसने पहाड़ियों की तरफ नजर डाली। फिर उसने जहाजों की पंक्ति के ऊपर दृष्टि फेंकी। कप्तान ने मुख्य नाविक से पूछा, "क्या तुम इन जहाजों को जानते हो?"

ना०—हाँ, अवश्य।

कप्तान—कहाँ के हैं?

ना०—बेड़े के।

कप्तान—क्या फ्रान्स के बेड़े के?

ना०—शैतान के बेड़े के?

थोड़ी देर चुप रह कर कप्तान ने फिर पूंछा, "क्या पूरा बेड़ा है?"

ना०—नहीं तो।

कप्तान कुछ सोच कर बोला, "पूरे बेड़े में तो १६ जहाज हैं। यहाँ तो ये सिर्फ आठ ही हैं।"

ना०—बाकी पीछे होंगे। वे समुद्र-तट की रक्षा करते होंगे।

कप्तान ने अपनी आंखों पर फिर दूरबीन लगाई और जहाजों को फिर बड़े गौर से देखने लगा। वह फ्रांस के जहाजी बेड़े में काम कर चुका था। वह इन जहजों को अच्छी तरह पहचानता था कि किस पर कितनी तोपें हैं। अच्छी तरह से जहाजों को पहचान कर और उनकी तोपों का हिसाब अपनी नोट-बुक पर पेंसिल से लगा कर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि इन आठ जहाजों पर तीन सौ अस्सी तोपें हैं। धीरे धीरे ये आठों जहाज आगे बढ़ते हुए दिखाई दिये। कप्तान ने तैयारी का हुक्म दिया। इस टूटे फूटे जहाज पर लड़ाई के लिए जो तैयारियां की जा सकती थीं वे शान्ति और धीरज के साथ की गईं।

एक जगह पर रस्सों और तारों का ढेर लगा दिया गया और यह इसलिए, कि आवश्यकता पड़ने पर मस्तूल कमजोर न होने पावे। जख्मियों के लिए अलहदा जगह बना दी गई। उस समय के जहाजी नियम के अनुसार, डेक की मोरचेबन्दी कर दी गई। तोपें ठीक स्थान पर रख दी गई। बारूदखाना खोल दिया गया। कारतूसों और गोलियों का भण्डार खुल गया। मल्लाहों ने कारतूस का एक एक बक्स ले लिया और अपनी कमर-पेटियों में एक एक जोड़े पिस्तौलों के डाल लिये। ये सब प्रबन्ध बहुत

जल्दी, बिल्कुल शान्त ढंग से, बिना एक भी शब्द के बोले-चाले, हो गया। इसके बाद जहाज ने लंगर डाल दिये और अपनी तोपों के मुंह जहाजी बेड़े के तरफ कर दिये। बेड़े ने इस जहाज को अर्द्धचन्द्राकार ढंग से घेर लिया। अब, कसर केवल इतनी ही रह गई कि एक पक्ष दूसरे पक्ष पर वार कर चले।

बूढ़ा मुसाफिर डेक पर खड़ा था। जो बातें हो रही थीं उन सब को वह बड़ी गंभीरता से देख रहा था। अन्त में कप्तान उसके पास पहुँचा और बोला, "श्रीमान्, तैयारियाँ हो चुकीं। हम जबरदस्ती मौत के मुंह में घसीटे जा रहे हैं। तो भी हम अपने हाथ-पैर ढीले नहीं करेंगे। एक तरफ दुश्मन का जहाजी बेड़ा है, दूसरी तरफ खतरनाक चट्टानें। इधर भी मौत और उधर भी मौत। हमारे लिए मौत के सिवा अब और कोई चारा नहीं। चट्टानों से टकरा के मरने की अपेक्षा शत्रु से लड़कर मरना कहीं अच्छा है। डूब कर मरने की अपेक्षा मैं गोली से मरना पसन्द करता हूँ। पानी में जान देने के बजाय अग्नि से जान देना मैं अच्छा समझता हूँ। हमारे सामने इस समय जो काम है वह है मरना। आपके लिए वह काम नहीं। आपको किसी और काम के लिए चुना गया है। आपके सामने एक बड़ा उद्देश है। वेण्डी के युद्ध के संचालन का भार आपको सौंपा गया है। यदि इस समय आप चल बसे तो इसका अर्थ यह होगा कि राज-सत्ता सदा के लिए लोप हो जाजगी। हमारी प्रतिष्ठा हमें आज्ञा देती है कि हम यहीं रहें, और आपकी प्रतिष्ठा आपसे कहती है कि आप यहाँ से जायँ। जनरल महोदय, आप जहाज छोड़ दें। आपको एक आदमी और एक नाव देता हूँ। चक्कर खाकर समुद्र-तट पर पहुँच जाना असम्भव नहीं है। अभी दिन भी नहीं हुआ। न लहरें ऊँची उठ रही हैं। समुद्र पर अँधेरा छाया हुआ है। आप

साफ निकल जा सकते हैं। ऐसे अवसर पर जाना विजय के समान है।"

बूढ़े ने अनुमति प्रकट करते हुए सिर हिला दिया। कप्तान ने जोर से पुकारा। सब सिपाहियों और मल्लाहों के चेहरे कप्तान की तरफ हो गये। कप्तान बोला, "ये महाशय, जो इस समय हमारे साथ हैं, राजा के प्रतिनिधि हैं। वे हमें सौंपे गये हैं। हमें उनकी प्राण-रक्षा करनी चाहिए। फ्रान्स के राज-सिंहासन की रक्षा के लिए वे अत्यन्त आवश्यक व्यक्ति हैं। वेण्डी में सैन्य-संचालन का काम उन्हीं को करना पड़ेगा। वे बड़े भारी सेनापति हैं। वे हमारे साथ फ्रान्स की भूमि पर पैर रखते, परन्तु अब उन्हें हमारे बिना फ्रान्स की भूमि पर उतरना चाहिए। यदि हम उन्हें बचा लें तो मानों हमने सब कुछ बचा लिया।"

जहाज वालों ने एक स्वर से कहा, "बेशक।"

कप्तान फिर बोला, "उन्हें भी बड़ी बड़ी जोखिमों का सामना करना पड़ेगा। समुद्र-तट तक पहुँचना आसान नहीं। चंचल समुद्र पार करने के लिए बड़ी नाव चाहिए। परन्तु उस नाव का छोटा होना भी जरूरी है, नहीं तो शत्रु के जहाजों की दृष्टि से वह बच न सकेगी। उस नाव को पार ले जाने के लिए एक ऐसे मजबूत तैराक नाविक की जरूरत है जो समुद्र के इस हिस्से के सब हिस्सों को भलीभांति जानता हो। अभी अंधेरा काफी है। कोहरे से भी हमको मदद मिलेगी। कोई जहाज इस बिछे हुए जाल से निकल नहीं सकता, परन्तु छोटी नाव तेजी के साथ दौड़ कर शत्रुओं की दृष्टि से बच सकती है। नाव को बच निकलने का अवसर इसलिए और भी अधिक प्राप्त होगा कि हम शत्रुओं पर आक्रमण करके उनका सारा ध्यान युद्ध-क्रीड़ा में लगा लेंगे। क्या आप लोगों की भी राय है कि ऐसा हो?"

जहाज वालों ने कहा, "अवश्य।"

कप्तान ने फिर कहा, "तो अब हमको समय नहीं खोना चाहिये। कौन आदमी नाव पर जाने के लिए तैयार है ?"

एक मल्लाह आगे बढ़ा और बोला, "मैं।"

कुछ मिनटों के बाद जहाज पर से एक छोटी सी नाव समुद्र में डाल दी गई। उसमें दो आदमी थे। एक तो बूढ़ा मुसाफिर, और दूसरा वही मल्लाह। मल्लाह बड़ी तेजी से नाव को खे रहा था। नाव पहाड़ी की तरफ बढ़ रही थी। उसमें कुछ खाने-पीने की चीजें और एक पीपा पानी भी था। थोड़ी ही देर में हवा और लहरों का रुख पाकर कोहरे और लहरों की ऊँचाई में छिपती-छिपाती, नाव अपने जहाज से बहुत दूर निकल गई।

इधर कप्तान ने प्रखर स्वर में मल्लाहों को आज्ञा दी, "सफेद राजकीय झंडे को ऊपर लगा दो।"

झंडा हवा में फड़-फड़ाने लगा। जहाज ने बेड़े पर आक्रमण कर दिया। पहला गोला चला दिया गया। उसके साथ ही जहाज वाले चिल्लाये, बादशाह की जय !" क्षितिज की दूसरी ओर से भी तोपें छूटने लगीं। उधर से भी ध्वनि उठी, "प्रजा-तन्त्र की जय !" सैकड़ों तोपों की गर्जना, धुएं और अग्नि के साथ समुद्र भर में फैल गई। लड़ाई जोरों से छिड़ गई। भासित होता था, मानो समुद्र के वक्षस्थल पर अनेकों ज्वाला-मुखी पर्वत बड़ी विकरालता के साथ अग्नि उगल रहे हैं।

उधर से दोनों आदमी अपनी छोटी नाव में चुपचाप बैठे, बड़ी तेजी के साथ पहाड़ी की तरफ बढ़ रहे थे। मिनकर की पहाड़ियों का नीचे का वह हिस्सा भी, जहाँ पर किसी तरह उतरा जा सकता था, समुद्र से बहुत ऊँचा था। सीधी पंक्ति में छः पहाड़ियाँ एक दूसरे के आगे एक बड़ी ऊँची सी दीवार बनाती हुई आगे बढ़ गई थीं। इनके बीच में एक बहुत तंग रास्ता था, जिसमें से होकर छोटी नाव दूसरी तरफ खुले समुद्र में पहुँच

सकती थी। मल्लाह बड़ी होशियारी के साथ इसी रास्ते पर नाव को लाया। वह इस रास्ते को पार कर खुले हुए समुद्र में दूसरी तरफ पहुँच गया। यहाँ से वह न तो लड़ने वाले जहाजों को देख सकता था और न यही पता लगा सकता था कि लड़ाई का अब क्या हाल है? तो भी तोपों की घोर गर्जना से उसे यही भासित होता था कि उसका अकेला जहाज बेड़े के जहाजों को खूब उलझाये हुए है और बड़ी वीरता के साथ युद्ध कर रहा है।

धीरे धीरे सूर्योदय हुआ। अंधेरा दूर हो चला। प्रकाश की किरणों के कारण समुद्र की लहरों में श्वेतता आ गई। नाव शत्रु की पहुँच से बाहर हो गई थी। परन्तु अब भी उसके सामने अत्यन्त कठिन काम था। अत्यन्त विस्तृत समुद्र में, बिना मस्तूल के, बिना दिशा-सूचक यंत्र के, और बिना किसी अन्य प्रकार के सामान के, वह इधर-उधर लुढ़कने वाले निरा एक एक घोंघे के समान थी। इस निर्जनता में इस नाव के खेने वाले मल्लाह ने प्रकाश की ओर अपने चेहरे को घुमा दिया, और और फिर कर्कश स्वर में बूढ़े आदमी से बोला, "मैं उस आदमी का भाई हूँ जिसे आपने गोली से मरवा दिया है!"

हलमलो

बूढ़े आदमी ने सिर उठाया। उसने देखा कि मल्लाह की उम्र लग-भग तीस वर्ष के है। मजबूती से वह दोनों डाड़ों को पकड़े हुये था। उसके मुख-मंडल पर मृदुलता थी। उसकी आखों में ग्रामीण जीवन की स्वाभाविकता थी। उसकी कमर-पेटी में एक कटारी, दो पिस्तौल और एक माला लटकी हुई थी।

बूढ़े ने पूछा, "तुम कौन हो?"

मल्लाह—मैं कह तो चुका।

बूढ़ा—तुम क्या चाहते हो?

मल्लाह ने डांड़े छोड़ दिये और संभल कर बोला, "आपको मार डालना। तैयार हो जाइए।"

बू०—किसलिए?

मल्लाह—मरने के लिए।

बू०—क्यों?

थोड़ी देर सन्नाटा रहा। मल्लाह इस प्रश्न से कुछ घबड़ा सा गया। उसने फिर दोहराया, "मैं कहता हूँ, मैं आपको मारना चाहता हूँ।"

बू०—मैं पूछता हूँ, किसलिए?

मल्लाह की आँखें अंगारे की तरह चमक पड़ीं। वह बोला, "इसलिए कि आपने मेरे भाई को मार डाला।

बूढ़े ने बड़ी शान्ति से जवाब दिया, मैंने तो उसके प्राण बचाये थे।"

मल्लाह—ठीक है। पहले आपने उसके प्राण बचाये, फिर उसे मार डाला।

बू०—मैंने उसे नहीं मारा।

म०—तो किसने मारा?

बू०—उसके कसूर ने।

मल्लाह आँखें फाड़कर बूढ़े की तरफ देखने लगा। उसकी भवें तन गई।

बूढ़े ने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

म० मेरा नाम हलमलो है, परन्तु मेरे हाथों से मारे जाने के लिए आपको मेरा नाम जानना तनिक भी आवश्यक नहीं।

सूर्य्य ऊपर उठ रहा था। मल्लाह के चेहरे पर पूरा प्रकाश पड़ रहा था। बूढ़े ने बड़े गौर से उसके चेहरे की तरफ देखा।

मल्लाह ने कमर-पेटी से निकाल कर अपने दाहिने हाथ में एक पिस्तौल लेली और बायें हाथ में माला। बूढ़े ने तन करके उससे पूछा, "क्या तुम ईश्वर में विश्वास करते हो?"

मल्लाह ने क्रास* का निशान बताते हुए कहा, "हाँ।"

बू०—क्या तुम्हारी माता जीवित है?

ह०—हां। अब बातें हो चुकीं। श्रीमान्, मैं आपको एक मिनट का समय देता हूँ।

बू०—तुम मुझे श्रीमान् क्यों कहते हो?

ह०—क्योंकि आप सरदार हैं। यह बात तो साफ मालूम पड़ती है।

बू०—क्या तुम्हारा भी कोई सरदार है?

---

* ईसाई धर्म का चिह्न।

ह०—हां, और बड़ा भारी। क्या कोई बिना सरदार* के भी होता है?

बू०—वह कहां है?

ह०—पता नहीं, उसने देश छोड़ दिया है। उसका नाम मारकुइस लान्टेनक है। वह ब्रिटेनी का राजकुमार है। वह सात जंगलों का मालिक है। मैंने उसे कभी नहीं देखा, परन्तु इससे क्या, तो भी वह मेरा मालिक है।

बू०—यदि तुम उसे देखो तो क्या तुम उसकी आज्ञा मानोगे?

ह०—निस्सन्देह, उसकी आज्ञा न मानना मेरे लिए बड़ा पाप होगा। मैं ईश्वर को मानता हूँ। उसके राजा को, जो ईश्वर तुल्य है, और उसके बाद सरदार को, जो राजा के तुल्य है। खैर, इन बातों को छोड़िए। आपने मेरे भाई को मारा है, मैं आपको मारूंगा।

बूढ़े ने उत्तर दिया, ठीक है, मैंने तुम्हारे भाई को मारा और मैं कहता हूँ कि मैंने जो कुछ किया वह ठीक किया।

मल्लाह ने पिस्तौल को और भी कस कर पकड़ लिया और बोला, "तैयार हो जाइए।"

बड़ी शान्ति के साथ बूढ़े ने कहा, "बहुत अच्छा। बतलाओ, पादड़ी कहां है?"

मल्लाह ने आँख फाड़ कर कहा, "कैसा पादड़ी?"

बू०—वैसा ही पादड़ी जैसा कि मरते वक्त मैंने तुम्हारे भाई को दिया था। तुम्हें भी मुझे वैसा ही पादड़ी देना पड़ेगा।

म०—मेरे पास पादड़ी नहीं। समुद्र में पादड़ी नहीं मिला करते।

---

* उन दिनों फ्रान्स में किसान जिस जमींदार की जमीन पर बसते थे उसे अपना अधिपति या सरदार मानते थे।

बूढ़े ने लड़ाई में होनेवाली तोपों की ध्वनि की ओर उंगली उठाकर कहा, "देखो, वे लोग जो उधर मर रहे हैं, उनके पास भी पादड़ी हैं।"

म०—ठीक है, सेनाओं पादड़ी होते हैं।

बू०—बिना पादड़ी के तुम मेरी आत्मा का भी हनन करोगे यह भारी बात है।

मल्लाह चिन्ता में पड़ गया। उसने अपना सर झुका लिया।

बूढ़ा फिर बोला, "मेरी आत्मा का हनन तुम्हारी आत्मा का भी हनन है। जरा मेरी बात सुनो। करना वही जो तुम्हारे मन में आवे। थोड़ी देर हुई, मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया था। पहले मैंने तुम्हारे भाई की जान बचाई, फिर उसे लेली। अब भी मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। इस समय मैं तुम्हारी आत्मा की रक्षा कर रहा हूँ। जरा विचार करो, क्या तुम उस तरफ तोपों के चलने की आवाज सुनते हो? कितने ही आदमी उस ओर मर रहे हैं—कितने ही वीर पुरुष, कितने ही पति, जो अब अपनी पत्नियों को कभी न देखेंगे, कितने ही पिता जो अब अपने बच्चों को कभी न पावेंगे, कितने ही भाई जो तुम्हारी तरह अपने भाइयों से कभी नहीं मिलेंगे—और, यह सब किसके दोष से? केवल तुम्हारे भाई के। तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो न? हृदय में यह अनुभव करो कि एक प्रकार से ईश्वर के ऊपर इस समय संकट है। फ्रांस के परम पवित्र राजा के रूप में, जो महात्मा ईसा की भांति निरा शिशु समान है, और जो इस समय टेंपिल के किले में कैद है, ईश्वर संकटों को भोग रहा है। अपमानित गिरजाघरों के रूप में, भ्रष्ट किये गये पवित्र ग्रन्थों के रूप में, अपवित्र किये गये उपासना-स्थलों के रूप में, तलवार की धार उतार दिये जाने जाने वाले भक्तजनों के रूप में, ईश्वर इस समय कष्टों को भोग रहा है। उस जहाज पर बैठकर जो इस

समय उस पार डूब रहा है, तुम जानते हो, हम क्या करने जा रहे थे ? हम सताये हुए ईश्वर के उन बच्चों की सहायता करने जा रहे थे। यदि तुम्हारा भाई कर्त्तव्यशील होता तो तोप वाली दुर्घटना कदापि न होती। जहाज इस प्रकार कदापि टूट फूट न जाता, वह कदापि रास्ते से इस तरह भटक न जाता। उसका इस सत्यानाशी बेड़े से कदापि सामना न होता। इस समय, वीर योद्धाओं और मल्लाहों की भाँति तलवारों को हाथ में लिए और श्वेत झंडों को फहराते हुए, हँसी और खुशी के साथ हम लोग फ्रान्स की भूमि पर उतरते होते। हमने वेन्डी के वीर किसानों को मदद पहुँचा दी होती और इस प्रकार बचा लिया होता फ्रान्स और उसके साथ ही अपने प्यारे राजा को। हम ईश्वर का काम इस तरह कर चुके होते। यही काम था जो हमें करना चाहिये था और जिसे अब तक हम कर चुके होते। यही काम है, जिसके करने के लिए मैं अकेला—उन सब में बचा हुआ मैं अकेला—इस तरह से जहाज छोड़ कर रवाना हुआ। परन्तु तुम उस काम के बाधक बने हो, धार्मिक आदमियों के विरुद्ध पापियों के इस युद्ध में, राजा के विरुद्ध राजा की हत्या करने वालों की इस कलह में, ईश्वर के विरुद्ध शैतान के संग्राम में, तुमने पिशाचों का पक्ष ग्रहण किया है। तुम्हारा भाई शैतान का पहला साथी था और तुम दूसरे। उसने श्री गणेश किया था, तुम इति श्री कर रहे पड़े। राजा की हत्या करने वाले और गिरजा को अपवित्र कढ़ ने ले पापियों का तुम साथ दे रहे हो। मैं नहीं रहूँगा तो सामान को क्या होगा ? गाँवों के झोपड़ों से अग्नि-शिखा उठत लिया। इसके पड़ती रहेगी। परिवारों के आँसू नहीं थमेंगे। धा ले चलूँ, या का रक्त गिराया जाना बन्द न होगा। ब्रिटेनी र

होगा, राजा बन्दी रहेगा और प्रभु ईसामसीह की भी आव-
यह सब किसके कारण होगा ? तुम्हारे। मैं। केवल दो के

साथ रहने से काम नहीं चलेगा। या तो हजारों साथ होंगे, या फिर मैं अकेला ही रहूंगा।"

इसके बाद बूढ़े ने एक रेशमी रूमाल निकाला जिसके बीच में राज-चिह्न बना हुआ था। बूढ़े ने हलमलो से पूछा, "तुम पढ़ना जानते हो?"

हलमला—नहीं।

बूढ़ा—यह अच्छा है। जो लोग पढ़ना जानते हैं वे बहुत कष्ट देते हैं। क्या तुम्हारी स्मरण-शक्ति अच्छी है?

ह०—हां।

बू०—अच्छा, तो सुनो। तुम दाहिनी दिशा की ओर जाओ, और मैं बाईं दिशा की ओर जाता हूँ। इस थैले को पास रखना। इसके टाँग लेने पर तुम किसान मालूम पड़ते हो। अपने हथियारों को छिपाये रखना। किसी पेड़ से काट कर एक लाठी बना लेना। खेतों में से लुक-छिप कर जाना। रास्ते चलते आदमियों से दूर रहना। सड़कों और पुलों को बचाते हुए, पगडंडी पर से जाना। किसी गांव या कस्बे में बसेरा न लेना। आगे नदी और नाले पड़ेंगे, उन्हें तैर कर पार करना। हां, यह तो बतलाओ, रात को तुम कहाँ ठहरा करोगे?

ह०—मैं यथार्थ में किसान हूँ। बड़े मजे से किसी पेड़ की खोखली जड़ में रात बिता लिया करूँगा।

बू०—अच्छी बात है। तुम अपना वेष और भी अच्छी तरह से बदल डालो। मल्लाही टोपी की जगह किसानों की सी टोपी कहीं से लेकर सिर पर रख लेना, जिसमें किसी को किसी तरह का शक न हो। तुम इधर के जंगल और उनके नाम जानते हो न?

ह०—खूब अच्छी तरह से।

बू०—दिन भर में कितने मील चल सकते हो?

ह०—तीस मील तक।

बू०—तुम उल्लू की बोली बोल सकते हो ?

हलमलो ने गाल फुलाकर ऐसी आवाज निकाली कि मालूम होता था कि सचमुच उल्लू बोल रहा है।

बूढ़े ने कहा, "बहुत ठीक। यह रूमाल लो, यह मेरी आज्ञा का चिन्ह है। इस पर जो राज-चिन्ह बना हुआ है, उसे श्रीमती रानी महोदया ने उस समय बनाया था जब वे कैदखाने में थीं।"

हलमलो ने जमीन पर घुटने टेक दिये। कांपते हुए हाथ से उसने उस रूमाल को लिया और बूढ़े की आज्ञा लेकर डरते हुए अत्यन्त श्रद्धा और आदर के साथ उसने राजचिह्न को चूम लिया।

बूढ़ा तब फिर बोला, "अच्छी तरह ध्यान से सुनो। इस रूमाल से सम्बन्ध रखने वाली आज्ञा यह है, "उठ पड़ो, विप्लव मचादो और किसी को शरण मत दो! जब तुम सेन्ट आबिन के जंगल के पास पहुँचोगे तब किनारे पर खड़े होकर तुम उल्लू की बोली तीन बार बोलना। तीसरी बोली के समाप्त होते ही वृक्षों की झुरमुट से बाहर निकल कर एक आदमी तुम्हें मिलेगा। वह आदमी अपना है। उसे तुम रूमाल का चिह्न दिखाना। वह सब बातें समझ लेगा। इसके बाद तुम आगे बढ़ना। आगे जितने बड़े-बड़े जंगल तुम्हें मिलें उन सब में तुम वही बोली बोलना। तुम्हें वहां आदमी मिलेंगे और उन सब को रूमाल के चिन्ह द्वारा तुम मेरा संदेह पहुँचाना। तुम लाटोर के किले को जानते हो न ?"

हलमलो लाटोर के किले को जानना ? वह तो मेरे मालिक ही का किला है। उसमें लोहे का एक बड़ा दरवाजा है जिसके कारण पुराना हिस्सा नये हिस्से से अलग हो जाता है। तोप का गोला भी उसे नहीं खोल सकता। किले की खाई में बहुत से मेढ़क रहते हैं। जब मैं छोटा था तब उन्हें पत्थर फेंक फेंक कर खूब चिढ़ाया करता था। एक सुरंग भी है, जिसे मैं ही जानता हूँ, शायद और कोई उसे नहीं जानता।

बूढ़ा—क्या वहां सुरंग है ? क्या कहते हो ?

ह०—हां, सुरंग है। वह पुराने जमाने में बनाई गई थी। लाटोर को शत्रुओं ने घेर लिया था। यह सुरंग इसलिए बनाई गई थी कि उसके द्वारा लोग चुपचाप किले से निकल कर जंगल में पहुँच जायं।

बूढ़ा—नहीं, लाटोर में ऐसी कोई सुरंग नहीं है।

ह०—नहीं, श्रीमान्, है। मैं भली भांति जानता हूँ। मैं तो लाटोर के पास ही का रहने वाला हूँ। वह बहुत पुराने जमाने की सुरंग है। मैं समझता हूँ कि मेरे सिवा शायद ही उसे और कोई जानता हो। सुरंग का भेद बहुत छिपाया जाता था। मेरे पिता इस भेद को जानते थे। उन्हीं ने मुझे वह सुरंग दिखलाई थी। मुझे सुरंग का नक्शा अच्छी तरह याद है। उसके द्वारा मैं जंगल से सीधा किले के भीतर पहुँच सकता हूँ, और किले से सीधा जंगल में आ सकता हूँ। और यह सब इतने छिप कर कि किसी को भी खबर न हो। यह सुरंग बनाई ही इसलिए गई थी कि यदि शत्रु किले को घेर ले तो किले के आदमी चुपचाप जंगल में पहुँच जायँ और शत्रु को पता ही न लगे।

बूढ़ा थोड़ी देर तक चुप रहा। इसके बाद बोला, "तुम्हें किसी तरह का धोखा हो गया है। यदि ऐसी कोई बात होती तो मुझे जरूर मालूम होती।"

ह०—नहीं श्रीमान्, मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह बिल्कुल ठीक है। सुरंग में एक ऐसा पत्थर है जो घूम जाता है।

बूढ़ा—बहुत ठीक, तुम किसान लोग बड़े सीधे होते हो। तुममें से कोई तो कहता है कि पत्थर घूमते हैं और कोई समझता कि पत्थर गाते हैं। कहीं कहीं तो यह भी कहा जाता है कि ऐसे भी पत्थर होते हैं जो रात को निकट के नाले पर पानी पीने जाते हैं। ये सब मूर्खता की बातें हैं।

बूढ़ा—क्या वहां सुरंग है ? क्या कहते हो ?

ह०—हां, सुरंग है। वह पुराने जमाने में बनाई गई थी। लाटोर को शत्रुओं ने घेर लिया था। यह सुरंग इसलिए बनाई गई थी कि उसके द्वारा लोग चुपचाप किले से निकल कर जंगल में पहुँच जायं।

बूढ़ा—नहीं, लाटोर में ऐसी कोई सुरंग नहीं है।

ह०—नहीं, श्रीमान्, है। मैं भली भांति जानता हूँ। मैं तो लाटोर के पास ही का रहने वाला हूँ। वह बहुत पुराने जमाने की सुरंग है। मैं समझता हूँ कि मेरे सिवा शायद ही उसे और कोई जानता हो। सुरंग का भेद बहुत छिपाया जाता था। मेरे पिता इस भेद को जानते थे। उन्हीं ने मुझे वह सुरंग दिखलाई थी। मुझे सुरंग का नक्शा अच्छी तरह याद है। उसके द्वारा मैं जंगल से सीधा किले के भीतर पहुँच सकता हूँ, और किले से सीधा जंगल में आ सकता हूँ। और यह सब इतने छिप कर कि किसी को भी खबर न हो। यह सुरंग बनाई ही इसलिए गई थी कि यदि शत्रु किले को घेर ले तो किले के आदमी चुपचाप जंगल में पहुँच जायँ और शत्रु को पता ही न लगे।

बूढ़ा थोड़ी देर तक चुप रहा। इसके बाद बोला, "तुम्हें किसी तरह का धोखा हो गया है। यदि ऐसी कोई बात होती तो मुझे जरूर मालूम होती।"

ह०—नहीं श्रीमान्, मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह बिल्कुल ठीक है। सुरंग में एक ऐसा पत्थर है जो घूम जाता है।

बूढ़ा—बहुत ठीक, तुम किसान लोग बड़े सीधे होते हो। तुममें से कोई तो कहता है कि पत्थर घूमते हैं और कोई समझता कि पत्थर गाते हैं। कहीं कहीं तो यह भी कहा जाता है कि ऐसे भी पत्थर होते हैं जो रात को निकट के नाले पर पानी पीने जाते हैं। ये सब मूर्खता की बातें हैं।

ह०—नहीं, श्रीमान्, मैंने तो अपने आंखों से उस पत्थर को घूमते देखा है।

बूढ़ा—ठीक उसी जिस तरह से दूसरों ने पत्थरों को गाते सुना होगा। लाटोर का किला बड़ा मजबूत है। उसमें बैठ कर किले वाले अपनी रक्षा अच्छी तरह कर सकते हैं। उसमें कोई सुरंग नहीं। यह केवल पागलपन है।

ह०—परन्तु, महोदय...

बात काट कर बूढ़े ने कहा, "ये फजूल की बातें हैं। समय जा रहा है। आवश्यक बातें सुनो।"

हलमलो चुप हो गया। बूढ़े ने, अपनी जेब से एक थैली और एक पाकेट-बुक निकाली और दोनों को हलमलो के हाथ में देकर कहा, "पाकेट-बुक में तीस हजार के नोट हैं, परन्तु यह असली नहीं हैं। थैली में सौ मुहरें हैं। मेरे पास जो कुछ है वह सब तुम्हें देता हूँ। मुझे इनकी जरूरत भी नहीं।"

इसके बाद बूढ़े ने हलमलो को बहुत से जंगलों, किलों और आदमियों के नाम बतलाये और उन सब के पास जाकर अपना सन्देश पहुँचाने का आदेश दिया। अन्त में, वह बोला, "हल-मलो, मैं तुम्हारी होशियारी का उस समय से कायल हूँ जब से मैंने विशाल समुद्र की भयंकर लहरों में से छोटी सी नाव को बड़ी चतुरता के साथ सकुशल पार लगाते हुए तुम्हें देखा है। जिस तरह समुद्र की विकरालता में से तुम साफ निकल आये, उससे मुझे विश्वाश हो गया है कि तुम मेरी इन आज्ञाओं का का पालन ठीक ठीक करोगे। तुम सब लोगों से कह देना कि मैं मैदान की लड़ाई की अपेक्षा जंगल की लड़ाई अधिक पसंद करता हूँ। लाखों किसानों को मैदान में ले जाकर प्रजातन्त्र के सिपाहियों की तोपों के गोलों का निशाना बनाना मुझे इष्ट नहीं। मैं चाहता हूँ कि एक मास के भीतर ही मेरे पांच लाख

योद्धा जंगल में छिपे हों और हम झाड़ियों में बैठ कर प्रजातन्त्र की सेना पर अपना निशाना सीधा करें। सब लोगों से कह देना कि किसी शत्रु को किसी हालत में भी शरण न दें, और हर जगह अपनी चौकसी रक्खें। इसी प्रकार के कार्य्य करने में हमारा कल्याण है। तुम यह भी कह देना कि अंगरेज लोग हमारे साथ हैं और यूरोप के सभी राजा हमारी मदद करेंगे। समझ गये न ? क्या समझे ?"

ह०—जी हाँ। यही समझा कि मार-काट की जाय। किसी भी शत्रु को जीवित बचने न दिया जाय।

बू०—ठीक है।

ह०—किसी को शरण न दी जाय।

बू—ठीक है—किसी को नहीं।

ह०—मैं सब जगह जाऊंगा।

बू०—होशियार रहना, पग पग पर यहाँ मौत सिर पर मंडराती है।

ह०—मौत की मुझे परवाह नहीं। जो आदमी मुझे मारने के लिए आगे बढ़ेगा उसकी भी कुशल नहीं।

बू०—शाबाश !

ह० यदि मुझसे कोई श्रीमान् का नाम पूँछे, तो ?

बू०—अभी उसके प्रकट करने की आवश्यता नहीं। तुम कह देना कि मैं नहीं जानता, और यह बात सच भी है।

ह०—मैं श्रीमान् से फिर कहां मिलूँ ?

बू०—जहाँ कहीं मैं रहूँ।

ह०—मैं कैसे जानूँगा कि आप कहाँ हैं ?

बू०—दुनियाँ भर को मेरा ठिकाना मालूम हो जायागा। आज से आठवें दिन के पहले ही सब जगह मेरी चर्चा होने लगेगी। मैं धर्म और राजा पर किये गये अत्याचारों का ऐसा

बदला लूँगा कि लोग याद करेंगे। और जब वे चर्चा करें तो समझ लेना कि वह मेरी ही बात कर रहे हैं।

ह०—मैं समझ गया।

बू०—अच्छा तो जाओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।

ह०—आपने जो मुझे आज्ञा दी है उसका मैं पालन करूँगा। यदि मुझे सफलता मिली, तो...?

बूढ़ा—मैं तुम्हें 'सेन्ट लुई, की सरदारी प्रदान करूँगा।

ह०—मेरे भाई की तरह ? और यदि मैं सफल न हुआ तो ? तो क्या आप गोली से मरवा देंगे ?

बढ़ा—हाँ, ठीक उसी तरह जिस तरह कि तुम्हारा भाई मारा गया।

ह०—बहुत अच्छा, श्रीमान्।

बूढ़े ने सिर झुका लिया और वह किसी विचार में डूब गया। जब उसने आँखें उठाईं तो देखा कि वह अकेला है, और हलमलो चल पड़ा है। सूर्यास्त हो चुका था। बूढ़ा भी चल पड़ा।

हो रहा है। बूढ़े के मन में यह प्रश्न उठा और जब उसके मन में यह बात आई कि हो न हो, यह सब उसी के लिए है, तब वह काँप उठा। वह सोचने लगा कि मेरा आना किसी को क्या मालूम हो गया ? मेरा जहाज तबाह हो चुका, जहाँ तक मैं समझता हूँ, उसका एक भी आदमी नहीं बचा, तो भी उसके मन में चिन्ता उत्पन्न हो गई। थोड़ी ही देर पहले वह पूर्ण शान्ति के स्वप्न देख रहा था। अब वह सब ओर खतरे का अनुमान करने लगा। कुछ क्षणों के पश्चात उसकी पीठ की ओर कुछ खड़खड़ाहट मालूम हुई। सूखी पत्तियाँ जिस तरह खड़खड़ाती हैं यह खड़-खड़ाहट भी वैसी ही थी। पहले तो उसने उस ओर ध्यान न दिया; परन्तु जब खड़खड़हट बराबर जारी रही तब वह मुड़ा। उसने देखा कि उसके सिर ही पर खंभे के ऊपर पीछे की ओर एक बड़ा भारी कागज चिपका हुआ है और हवा के झोकों के कारण उसका कुछ उखड़ा हुआ हिस्सा फड़फड़ा रहा है। मालूम पड़ता था कि इस कागज को चिपके बहुत देर नहीं हुई, क्योंकि अभी तक उसमें कुछ नमी थी। बूढ़ा खड़ा हो गया और फड़फड़ाने वाले कोने को थाम कर कागज को देखने लगा। कागज पर कुछ बड़े बड़े अक्षर छपे थे। अभी इतना उजाला था कि अक्षर पढ़े जा सकते थे। बूढ़े ने यह पढ़ा :—

"फ्रान्सीसी प्रजातन्त्र की आज्ञा से, हम 'मारने' के अध्यक्ष, जनता के प्रतिनिधि की हैसियत से यह प्रकाशित करते हैं कि ब्रिटेन का राजकुमार और मारकुइस लान्टेनक के नाम से अपने को पुकारने वाला एक आदमी चुपचाप इधर के समुद्र-तट पर उतरा है। उसे बागी करार दिया जाता है। जो आदमी उसे जिन्दा या मुरदा पकड़ कर लावेगा उसे साठ हजार फ्रेंक* का

---

* फ्राँस का सिक्का जो लगभग १० आने के बराबर होता है।

इनाम दिया जायगा। उसकी गिरफ्तारी के लिए सेना भी शीघ्र ही समुद्र-तट पर भेजी जायगी। समस्त गाँव वालों को आज्ञा दी जाती है कि वे इस काम में सहायता दें।

(हस्ताक्षर) मारने का अध्यक्ष।"

इस नाम के नीचे एक हस्ताक्षर और भी था। उसके अक्षर बहुत छोटे थे। अंधेरे के कारण बूढ़ा उन्हें न पढ़ सका। बूढ़ा वहाँ से तत्काल चल दिया। नीचे उतर कर वह उसी खलिहान की ओर बढ़ा। चन्द्रमा निकल आया था। बूढ़ा एक ऐसे ठिकाने पर पहुँचा कि जहाँ से आगे जाने के लिए दो सड़कें थीं। वहाँ पर पत्थर का एक खंभा था। उस खंभे पर कोई सफेद चीज चपकी हुई थी। बूढ़े ने समझा कि यह भी उसी तरह का विज्ञापन होगा। वह उस खंभे की तरफ जा ही रहा था कि एक आवाज आई, "कहाँ जा रहे हो?"

वह घूम पड़ा। उसने देखा कि पीछे एक आदमी वैसा ही लम्बा और वैसा ही बूढ़ा और श्वेत केशों वाला, और उससे भी ज्यादा फटे पुराने कपड़ों वाला जैसे कि स्वयं उसके थे, एक लम्बी छड़ी लिए पीछे झुका हुआ खड़ा है। बूढ़े ने रुखाई से जवाब दिया, "पहले मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं हूँ कहाँ?"

आदमी—आप टानिस की बस्ती के पास हैं। मैं उसका भिखारी हूँ। आप उसके जमींदार हैं।

बूढ़ा—मैं, जमींदार?

आ०—हाँ, आप जमींदार हैं क्योंकि आप मारकुइस लन्टेनक हैं।

मारकुइस लन्टेनक (बूढ़े को अब हम इसी नाम से पुकारेंगे) ने बड़ी धीरता से कहाँ, "तो मुझे पकड़ लो और इनाम हासिल करो।"

वह आदमी बोला, "आप इरवीन-पेल के खलिहान की तरफ जा रहे थे न ?"

"हाँ।"

"वहाँ न जाइए।"

"क्यों ?"

"वहाँ प्रजा-तन्त्र सेना के सिपाही पहुँच गये हैं।"

"कब पहुँचे ?"

"तीन दिन हुए।"

"क्या खलिहान वालों ने उनका मुकाबला किया ?"

"नहीं, उन्होंने उनका स्वागत किया।"

आश्चर्य से—"ऐं।"

खलिहान की छत की ओर उंगली उठा कर दिखाते हुए उस आदमी ने मारक्विस से पूछा, "क्या आप उस छत पर कोई चीज देखते हैं ?।"

"हाँ।"

"क्या ?"

"कुछ उड़ती हुई।"

"वह झंडा है, और प्रजा-तंत्र का तिरंगा झंडा।"

इस झंडे की ओर मारकुइस का ध्यान उसी समय गया था जब वह टीले की चोटी पर खड़ा हुआ था। मारकुइस ने पूछा, "क्या घंटाघरों के घंटे बजाये जा रहे हैं ?"

"हां।"

"क्यों ?"

"आपही के लिए।"

"उनकी आवाज तो नहीं सुनाई पड़ती।"

"हवा के उलटे रुख के कारण। आपने इश्तिहार तो देख ही लिया होगा ?"

"हाँ।"

"आपका खूब पीछा किया जा रहा है। गिरफ्तारी के लिए कुछ सेना भी आ गई है।"

"बहुत अच्छा"—यह कह कर मारकुइस ने खलिहान की तरफ क़दम बढ़ाया। उस मनुष्य ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "उस तरफ न जाइए।"

"तो किधर जाऊँ ?"

"मेरे साथ घर चलिए।"

मारकुइस ने दृष्टि गाड़ कर भिखारी की तरफ देखा। भिखारी बोला, "श्रीमान्, जरा मेरी बात सुन लीजिए। मेरा घर सुन्दर नहीं, परन्तु उसमें किसी प्रकार का भय नहीं है। एक छोटी कोठरी है—गुफा से भी नीची। समुद्री घास का बिछौना है। डालियों और पत्तियों की छत है। उसी में आइए। खलिहान में आप गोली से मार दिये जायँगे। मेरे घर में आप आराम से सो सकेंगे। आप थके हुए होंगे। रात को विश्राम कीजिए। कल सवेरे जब 'ब्ल्यूज़' आगे कूच कर जायं तब जहाँ मन चाहे वहाँ, आप भी पधार जाइएगा।"

गौर से भिखारी की तरफ देख कर मारकुइस ने पूछा, "तुम किस तरफ के आदमी हो ? प्रजा-तंत्र के या राज-पक्ष के ?"

"मैं भिक्षुक हूँ।"

"न राजतंत्र-वादी, और न प्रजातंत्र-वादी ?"

"हां।"

"तुम राजा के पक्ष में हो या उसके खिलाफ ?"

"इस प्रकार की बातों के लिए मेरे पास समय नहीं।"

"जो कुछ हो रहा है उस पर तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मैं केवल इतना ही जानता हूँ कि मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

"तो भी तुम मेरी सहायता करना चाहते हो ?"

"यह इस लिए कि मैं देखता हूँ कि आप कानून के आश्रय से वञ्चित किये गये और विद्रो ी ठहराये गये हैं। कानून क्या है ? उसके आश्रय से वञ्चित कैसे हुआ जाता है ? यह मैं नहीं जानता। मैं कानून के आश्रय में हूँ या उस आश्रय से वञ्चित हूँ इसे भी मैं नहीं जानता। भूखों मरना क्या कानून के आश्रय में होने का चिन्ह है ?"

"तुम कब से भूखों मरते हो ?"

"जन्म से।"

"इस पर भी तुम मुझे बचाते हो ?"

"हां।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि मैंने मन में सोचा कि यहां पर मुझसे भी अधिक दीन हीन एक आदमी है। मुझे तो सांस लेने का हक प्राप्त है, उसे यह भी नहीं।"

"यह सच है, इसीलिए तुम मुझे बचा रहे हो ?"

"निस्सन्देह, महोदय, हम भाई समान हैं। मैं रोटियां मांगता हूँ, और आप प्राण। हम दोनों भिक्षुक हैं।"

"परन्तु क्या तुम यह जानते हो कि मेरे सिर पर इनाम है ?"

"हाँ।"

"तुमने कैसे जाना ?"

"मैंने इश्तिहार पढ़ा था।"

"तब तुम क्या यह जानते हो कि मुझे पकड़वा कर कोई भी आदमी साठ हजार फ्रैंक नकद का इनाम पा सकता है ?"

"हां, जानता हूँ।"

"तुम यह भी जानते हो कि यह रकम बहुत भारी है ?"

"हां, यह भी जानता हूँ।"

"और, इस बड़ी रकम को प्राप्त करके कोई भी आदमी बड़ा धनी बन सकता है ?"

"ठीक है, यह बात मैं भी सोच रहा था। इसीलिए आपको देखते ही मेरे मन में यह बात आई कि कोई भी आदमी इन्हें पकड़ कर या मार कर साठ हज़ार फ्रैंक पा सकता है और सहज ही धनी हो सकता है। इसीलिए, मैंने सोचा कि चलो, जल्दी से इन्हें छिपा दूं।"

मारकुइस भिखारी के पीछे हो लिया। दोनों वृक्षों के एक झुरमुट में पहुँचे। वहीं भिखारी की खोह थी। एक बड़े पुराने वृक्ष की जड़ में, जड़ों और पत्तों से खूब ढकी-मुंदी, छिपी-छिपाई, नीची-गहरी, अन्धकार-मय, एक गुफा सी थी, जिसमें दो आदमियों के लेटने-बैठने लायक जगह थी। उसमें कुछ घड़े रखे थे और नीचे पाल बिछी हुई थी। झुक कर ये दोनों आदमी भीतर पहुँचे। बाहर के छेद से भीतर कुछ उजाला आता था। एक कोने में कुछ सूखी रोटियाँ, कुछ जंगली फल और एक घड़ा पानी रक्खा था। भिखारी ने भोजन का सामान मारकुइस के सामने रख दिया और कहा, "आइए, भोजन कर लें।"

दोनों ने मिल कर उस रूखे-सूखे भोजन को खाया और ठंडे पानी को पिया। इसके बाद वे दोनों फिर बातें करने लगे। मारकुइस ने उससे पूछा, "क्या कहीं कुछ भी बने या बिगड़े, तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं। ?"

"जी, हां, आप बड़े आदमी हैं। बड़े आदमियों के काम हैं कि वे दुनियां में बनना और बिगड़ना देखें। मुझे उन बातों से क्या सरोकार ?"

मा०—परन्तु वर्तमान घटनायें...?

भिखारी—वे भी मेरी पहुँच से दूर हैं। कुछ ऐसी वस्तुएं हैं जो कहीं ऊंची हैं, जैसे कि सूर्य्य जो ऊपर उठता है और चन्द्र

जो घटता और बढ़ता है। मैं इसी प्रकार की वस्तुओं के ध्यान में मग्न रहता हूँ।—यह कह कर उसने लोटे का पानी पिया और मीठे और ठंडे पानी का स्वाद लेते हुए बोला, "कैसा अच्छा और ताजा पानी है।"

मा०—तुम्हारा नाम क्या है?

भि०—मेरा नाम टेलीमार्च है। मुझे कैमान्ड भी कहते हैं। इस प्रान्त में 'कैमान्ड' 'भिखारी' को कहते हैं। आज चालीस वर्ष से लोग मुझे 'बूढ़ा आदमी' भी कहते हैं।

मा०—उसके पहले तो तुम जवान रहे होंगे?

भि०—मैं कभी जवान नहीं रहा। आपके से धनी, मानी लोग जवान हुआ करते हैं। आपकी टांगें बीस वर्ष के युवक की टांगों की भांति हैं। इस लिए आप उस ऊंचे टीले पर चढ़ सके। मेरे लिए तो चलना तक कठिन है। आधा मील चलता हूँ और थक पड़ता हूँ। यद्यपि मेरी और आपकी उम्र एक ही है, परन्तु अमीर लोग हम गरीबों के मुकाबले में कहीं अच्छे रहते हैं। वे रोज भोजन करते हैं। भोजन ही शरीर को दृढ़ रखता है।

थोड़ी देर चुप रह कर टेलीमार्च फिर बोला, "गरीबी और अमीरी—यह सारी व्याधियों की जड़ है। गरीब अमीर होना चाहते हैं और अमीर गरीब होने के लिए राजी नहीं। इसी से सब झगड़े उठते हैं। मैं इन झगड़ों में नहीं पड़ता। मैं न इधर हूँ और न उधर ही। हां, इतना भर जानता हूँ कि एक ऋण है जिसका परिशोध हो रहा है। मेरे मन की सी होती, यदि लोग राजा को मारते, परन्तु मेरे लिए यह कहना कठिन है कि ऐसा क्यों होना चाहिये था, क्योंकि कहीं न कहीं से कोई यह कह बैठता कि यह भी तो याद करो कि राजा के समय में गरीब आदमी किस प्रकार वृक्षों पर फांसी से लटकाये जाते थे। एक बार एक आदमी ने राजा के खरगोश पर गोली चला दी। इसी

जो घटता और बढ़ता है। मैं इसी प्रकार की वस्तुओं के ध्यान में मग्न रहता हूँ।—यह कह कर उसने लोटे का पानी पिया और मीठे और ठंडे पानी का स्वाद लेते हुए बोला, "कैसा अच्छा और ताजा पानी है।"

मा०—तुम्हारा नाम क्या है ?

भि०—मेरा नाम टेलीमार्च है। मुझे कैमान्ड भी कहते हैं। इस प्रान्त में 'कैमान्ड' 'भिखारी' को कहते हैं। आज चालीस वर्ष से लोग मुझे 'बूढ़ा आदमी' भी कहते हैं।

मा०—उसके पहले तो तुम जवान रहे होंगे ?

भि०—मैं कभी जवान नहीं रहा। आपके से धनी, मानी लोग जवान हुआ करते हैं। आपकी टांगें बीस वर्ष के युवक की टांगों की भांति हैं। इस लिए आप उस ऊंचे टीले पर चढ़ सके। मेरे लिए तो चलना तक कठिन है। आधा मील चलता हूँ और थक पड़ता हूँ। यद्यपि मेरी और आपकी उम्र एक ही है, परन्तु अमीर लोग हम गरीबों के मुकाबले में कहीं अच्छे रहते हैं। वे रोज़ भोजन करते हैं। भोजन ही शरीर को दृढ़ रखता है।

थोड़ी देर चुप रह कर टेलीमार्च फिर बोला, "गरीबी और अमीरी—यह सारी व्याधियों की जड़ है। गरीब अमीर होना चाहते हैं और अमीर गरीब होने के लिए राज़ी नहीं। इसी से सब झगड़े उठते हैं। मैं इन झगड़ों में नहीं पड़ता। मैं न इधर हूँ और न उधर ही। हां, इतना भर जानता हूँ कि एक ऋण है जिसका परिशोध हो रहा है। मेरे मन की सी होती, यदि लोग राजा को मारते, परन्तु मेरे लिए यह कहना कठिन है कि ऐसा क्यों होना चाहिये था, क्योंकि कहीं न कहीं से कोई यह कह बैठता कि यह भी तो याद करो कि राजा के समय में गरीब आदमी किस प्रकार वृक्षों पर फांसी से लटकाये जाते थे। एक बार एक आदमी ने राजा के खरगोश पर गोली चला दी। इसी

पर उसे फांसी लग गई। उसके एक स्त्री थी और सात बच्चे। मैंने उसे फांसी लगते अपनी आंखों से देखा।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह फिर बोला, "इन झगड़ों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मैं चिकित्सा का कुछ कार्य किया करता हूँ। उखड़ी हुई हड्डियों को बैठाता हूँ। कुछ जंगली जड़ी बूटियों को जानता हूँ। मैं दिन भर इन्हीं कामों में लगा रहता हूँ। किसान लोग मुझे जादूगर और सियाना समझते हैं।"

मा०—क्या तुम इधर ही के रहने वाले हो?

भि०—मैं यहाँ से कभी बाहर ही नहीं गया।

मा०—क्या तुम मुझे जानते हो?

भि०—हाँ, पिछली बार, आज से दो वर्ष पहले, जब आप इधर से इंगलैन्ड जा रहे थे तब मैंने आपको देखा था। टीले पर जब मैंने एक बहुत लम्बे आदमी को देखा तब अपने मन में सोचा कि इस ब्रिटेनी देश के आदमी तो छोटे छोटे होते हैं। यहाँ पर यह इतना लम्बा आदमी कौन है? मैं इश्तिहार पढ़ चुका था। इसलिए मेरे मन में सन्देह उठा। जब आप नीचे आये तो चाँदनी से मैंने आपको पहचान लिया।

मा०—परन्तु मैं तो तुम्हें नहीं जानता।

भि०—आपने मुझे देखा है, परन्तु गौर नहीं किया। मैंने आपको देखा है, परन्तु दाता और भिक्षुक, इन दोनों की आँखें एक सी नहीं होतीं। मैं आपकी राह का भिखारी रहा हूँ। आपने मुझे बहुधा दान दिया है। दान देने वाला दान पाने वाले की सुधि नहीं रखता। परन्तु दान पाने वाले को जो कुछ मिलता है उसकी वह जाँच-पड़ताल करता है और दानी की सुधि रखता है। मैं हाथ पसार दिया करता था और आप कुछ फेंक दिया करते थे। फल यह होता था कि बहुधा सवेरे की इस कमाई के कारण मैं रात को भूखा नहीं मरता था। बहुधा मुझे रात दिन

भूखे रहना पड़ा है। बहुधा एक पैसे से मेरे जीवन की रक्षा हो गई है। आपने मुझे जीवनदान दिया था। आज मैं उस ऋण से मुक्त होता हूँ।

मा०—यह सच है, तुमने मेरी जान बचाई। -

टेलीमार्च ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "श्रीमान्, मैं आपको बचाता हूँ, परन्तु एक शर्त पर।"

मा०—और वह शर्त क्या है ?

टेली०—शर्त यह है कि आप यहाँ कोई अनर्थ न करें।

मा०—मैं यहाँ कल्याणकारी कार्य के लिये ही आया हूँ।

टेली०—बहुत अच्छा, अब सो जाइए।

दोनों पास-पास पाल के बिछौने पर लेट गये। भिखारी तुरन्त सो गया। अद्यपि मारकुइस बहुत थका हुआ था तो भी बहुत देर तक अनेक प्रकार की चिन्ताओं में पड़ा जागता रहा। अन्त में वह भी सो गया।

भिखारी का पश्चात्ताप

सबेरे उठ कर टेलीमार्च ने मारकुइस को जागाया और उससे कहा' "मैं तो सो रहा हूँ। सूर्य उदय होना ही चाहता है। हरबीन पेल के खलिहान की तरफ बिलकुल सन्नाटा है। मालूम पड़ता है कि 'ब्ल्यू' सेना या तो अभी तक सो रही है, या वह आगे बढ़ गई। ये जंगली फल हैं। यदि भूख लगे तो आप उन्हें खा लीजिए। मेरा और आपका रास्ता अब अलग अलग है (उंगली से इशारा करते हुए) आपको उस ओर जाना है।"

यह कह कर अभिवादन करके भिक्षुक वहाँ से चला गया और थोड़ी देर में वृक्षों के झुरमुट में जाकर गायब हो गया।

मारकुइस उठा और भिक्षुक के बतलाये हुए रास्ते पर चल पड़ा। सड़क की ओर मोड़ पर उसने उसी इश्तिहार को लगे हुए देखा। 'मारने' के अध्यक्ष के हस्ताक्षर के चीचे की पंक्तियों को वह रात के अन्धेरे के कारण नहीं पढ़ सका था, इसलिए उन्हें पढ़ने के लिए वह आगे बढ़ा। छोटे-छोटे अक्षरों में यह लिखा था—

"गिरफ्तारी के बाद शनाख्त हो जाने पर मारकुइस लेल्ट-नक तुरन्त गोली से मार दिया जायगा।

(हस्ताक्षर) गावेन,
सेनाध्यक्ष।

इन पंक्तियों के पढ़ते ही मारकुइस की दृष्टि 'गावेन' शब्द पर गड़ गई। उस शब्द को उसने कई बार दोहराया। वह आगे बढ़ा, फिर लौटा और घूम कर उसने फिर इश्तिहार पढ़ा। धीरे

धीरे फिर उसने कदम बढ़ाया। 'गावेन' शब्द बहुत धीरे धीरे उसके मुंह से बार बार निकल रहा था। वह पग-डंडी छोड़ कर एक ऊँचे रास्ते से हरवीन-पेल की ओर बढ़ा। यह ऊँचा रास्ता एक छोटे टीले पर से हो कर जारहा था। अचानक बूढ़े ने सुना कि खलिहान में बहुत शोर गुल हो रहा है। चीखने-चिल्लाने और गोली चलाने की आवाज खेतों में गूंज गई। खलिहान के ऊपर बहुत सा धुआं दिखाई पड़ा। लम्बी लम्बी लपटें भी उठती हुई मालूम पड़ीं। मालूम होता था कि खलिहान के मकानों में आग लग गई है और सब सामान खूब जल रहा है, यह भयंकर दृश्य एक दम मारकुइस की दृष्टि के सामने उठ खड़ा हुआ। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। इस आश्चर्य से उसके मन में उत्सुकता ने जोर मारा। वह टीले की चोटी पर चढ़ गया और वहाँ से चारों ओर देखने लगा। निःसन्देह वहाँ कोई बिकट घटना घट रही थी। अग्नि-काँड हो रहा था। चीतकार सुनाई पड़ता था। आग की लपटें दिखाई पड़ती थीं। परन्तु, यह कुछ भी न मालूम पड़ा कि हरवीन-पेल के खलिहान पर, यदि, आक्रमण हुआ तो वह किसका हुआ, और यदि यह लड़ाई थी तो किस प्रकार की लड़ाई थी। बहुधा प्रजा-तंत्र की सेनाओं ने खलिहानों और गांवों में आग लगाई थी। उन्हें अपने अफसरों की आज्ञा थी कि जिस गाँव के लोगों ने पेड़ों और झाड़ियों को काट कर प्रजा-तंत्र की घुड़सवार सेना के निकलने के लिए रास्ता साफ न कर दिया हो उन्हें वे फूंक दें। मारकुइस, अपने मन में सोचने लगा कि हरबीन-पेल की दुर्दशा भी क्या इसीलिए हुई ? मारकुइस जिस जगह पर खड़ा था वहाँ पर एक घनी झाड़ी थी। वहाँ से वह देख सकता था। मारकुइस के विचारों का ताँता समाप्त भी न हुआ था, कि नीचे का शोर-गुल मिट गया। झाड़ी में खड़े खड़े मारकुइस को ऐसा मालूम हुआ कि अब सेना वाले, तेजी के

साथ और खुशी खुशी इधर उधर दौड़ते फिर रहे हैं। वृक्षों के नीचे और जंगल मे सिपाही लोग झपटते हुए जा रहे हैं। बन्दूकों का चलाना बन्द हो गया। ढोल अभी तक पीटे जा रहे हैं। ऐसा मालूम होता था कि अब वे लोग किसी की तलाश में हैं और उसी के लिए शोर-गुल करते हुए इधर-उधर लपक रहे हैं। एकाएक धुएं के बड़े भारी ढेर में कुछ आदमी साफ-साफ दिखाई पड़े। वे एक ही एक शब्द का उच्चारण कर रहे थे। मारकुइस को स्पष्ट रूप में मालूम हुआ कि वे 'लन्टेनक', 'लन्टेनक' चिल्ला रहे हैं!

इस शब्द के कान में पड़ते ही मारकुइस को मालूम पड़ा कि मानो चारों ओर से बन्दूकों, तलवारों और किरचों का धावा हो पड़ा। आंखों के सामने प्रजा-तंत्र का तिरंगा झंडा ऊंचा उठ पड़ा, और पैरों तले की धरती से, झाड़ियों और वृक्षों से, भयंकर से भयंकर आकृति वाले मनुष्य निकल पड़े। मारकुइस अकेला था। ऐसी उंचाई पर खड़ा था, जहां पर जंगल भर से कोई भी उसे देख सकता था। जो लोग उसका नाम चिल्ला रहे थे, उन्हें वह मुश्किल से देख सकता था, परन्तु उसे वे सब देख सकते थे। उसकी दशा ठीक वैसी थी जैसी कि चांदमारी के निशाने की होती है, जिस पर सैकड़ों बन्दूकों का लक्ष होता है। उसे अपने चारों तरफ लाल लाल अङ्गारों की सी आँखों के सिवा और कुछ भी नहीं दिखाई देता था। उसने अपनी टोपी उतार ली। झाड़ी से एक कांटा तोड़ कर और टोपी के किनारे को उलट कर, उसमें उसने राज-चिन्ह अपनी जेब से निकाल कर लगा लिया। फिर टोपी को इस तरह से सिर पर रख कर कि वह हिस्सा, जिसमें कि राजचिन्ह लगा हुआ था, सामने रहे और उसका चेहरा भी पूरी तरह से खुला रहे, उसने जंगल भर को गुंजा देने वाली आवाज से पुकार कर कहा, मैं ही वह आदमी हूँ, जिसकी तुम्हें तलाश है। मैं ही मारकुइस लन्टेनक हूँ। मैं ही ब्रिटेन का

धीरे फिर उसने कदम बढ़ाया। 'गावेन' शब्द बहुत धीरे धीरे उसके मुंह से बार बार निकल रहा था। वह पग-डंडी छोड़ कर एक ऊँचे रास्ते से हरबीन-पेल की ओर बढ़ा। यह ऊँचा रास्ता एक छोटे टीले पर से हो कर जारहा था। अचानक बूढ़े ने सुना कि खलिहान में बहुत शोर गुल हो रहा है। चीखने-चिल्लाने और गोली चलाने की आवाज खेतों में गूंज गई। खलिहान के ऊपर बहुत सा धुआं दिखाई पड़ा। लम्बी लम्बी लपटें भी उठती हुई मालूम पड़ी। मालूम होता था कि खलिहान के मकानों में आग लग गई है और सब सामान खूब जल रहा है, यह भयंकर दृश्य एक दम मारकुइस की दृष्टि के सामने उठ खड़ा हुआ। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। इस आश्चर्य से उसके मन में उत्सुकता ने जोर मारा। वह टीले की चोटी पर चढ़ गया और वहाँ से चारों ओर देखने लगा। निःसन्देह वहाँ कोई विकट घटना घट रही थी। अग्नि-काँड हो रहा था। चीतकार सुनाई पड़ता था। आग की लपटें दिखाई पड़ती थीं। परन्तु, यह कुछ भी न मालूम पड़ा कि हरबीन-पेल के खलिहान पर, यदि, आक्रमण हुआ तो वह किसका हुआ, और यदि यह लड़ाई थी तो किस प्रकार की लड़ाई थी। बहुधा प्रजा-तंत्र की सेनाओं ने खलिहानों और गांवों में आग लगाई थी। उन्हें अपने अफसरों की आज्ञा थी कि जिस गाँव के लोगों ने पेड़ों और झाड़ियों को काट कर प्रजा-तंत्र की घुड़सवार सेना के निकलने के लिए रास्ता साफ न कर दिया हो उन्हें वे फूंक दें। मारकुइस, अपने मन में सोचने लगा कि हरबीन-पेल की दुर्दशा भी क्या इसीलिए हुई? मारकुइस जिस जगह पर खड़ा था वहाँ पर एक घनी झाड़ी थी। वहाँ से वह देख सकता था। मारकुइस के विचारों का ताँता समाप्त भी न हुआ था, कि नीचे का शोर-गुल मिट गया। झाड़ी में खड़े खड़े मारकुइस को ऐसा मालूम हुआ कि अब सेना वाले, तेजी के

साथ और खुशी खुशी इधर उधर दौड़ते फिर रहे हैं। वृक्षों के नीचे और जंगल में सिपाही लोग झपटते हुए जा रहे हैं। बन्दूकों का चलाना बन्द हो गया। ढोल अभी तक पीटे जा रहे हैं। ऐसा मालूम होता था कि अब वे लोग किसी की तलाश में हैं और उसी के लिए शोर-गुल करते हुए इधर-उधर लपक रहे हैं। एका-एक धुएं के बड़े भारी ढेर में कुछ आदमी साफ-साफ दिखाई पड़े। वे एक ही एक शब्द का उच्चारण कर रहे थे। मारकुइस को स्पष्ट रूप में मालूम हुआ कि वे 'लन्टेनक', 'लन्टेनक' चिल्ला रहे हैं!

इस शब्द के कान में पड़ते ही मारकुइस को मालूम पड़ा कि मानो चारों ओर से बन्दूकों, तलवारों और किरचों का धावा हो पड़ा। आंखों के सामने प्रजा-तंत्र का तिरंगा झंडा ऊंचा उठ पड़ा, और पैरों तले की धरती से, झाड़ियों और वृक्षों से, भयंकर से भयंकर आकृति वाले मनुष्य निकल पड़े। मारकुइस अकेला था। ऐसी उंचाई पर खड़ा था, जहां पर जंगल भर से कोई भी उसे देख सकता था। जो लोग उसका नाम चिल्ला रहे थे, उन्हें वह मुश्किल से देख सकता था, परन्तु उसे वे सब देख सकते थे। उसकी दशा ठीक वैसी थी जैसी कि चांदमारी के निशाने की होती है, जिस पर सैकड़ों बन्दूकों का लक्ष होता है। उसे अपने चारों तरफ लाल लाल अङ्गारों की सी आँखों के सिवा और कुछ भी नहीं दिखाई देता था। उसने अपनी टोपी उतार ली। झाड़ी से एक कांटा तोड़ कर और टोपी के किनारे को उलट कर, उसमें उसने राज-चिन्ह अपनी जेब से निकाल कर लगा लिया। फिर टोपी को इस तरह से सिर पर रख कर कि वह हिस्सा, जिसमें कि राजचिन्ह लगा हुआ था, सामने रहे और उसका चेहरा भी पूरी तरह से खुला रहे, उसने जंगल भर को गुंजा देने वाली आवाज से पुकार कर कहा, मैं ही वह आदमी हूँ, जिसकी तुम्हें तलाश है। मैं ही मारकुइस लन्टेनक हूँ। मैं ही ब्रिटेन का

राजकुमार और राजसेनाओं का अधिपति हूँ। आओ, मुझे समाप्त कर दो ! चलाओ गोली !"

यह कह कर, दोनों हाथों से उसने अपना कोट खोल दिया और अपनी छाती उघार दी। फिर, उसने नीचे देखा, और यह समझ कर देखा कि अब बन्दूकें उसकी ओर तनी हुई होंगी। परन्तु, उसने जो देखा वह यह था कि लोग घुटने टेके और उसे घेरे हुए हैं। और, फिर जोर की ध्वनि उठी, 'लन्टेनक की जय !' 'सेनापति की जय !!'

हवा में टोपियां उछलने लगीं। खुशी के मारे किरचें घुमाई जाने लगीं। इधर-उधर, चारों तरफ बैन्डी के किसान सिपाही थे। उन लोगों ने उसे देख कर श्रद्धा के साथ घुटने टेके। मारकुइस के मन की विचित्र हालत थी। कुछ ही क्षण पहले वह सोच रहा था कि राक्षसों से पाला पड़ा, परन्तु इस समय स्वयं उसकी देवताओं की तरह पूजा हो रही थी। भयंकरता से भरी हुई मालूम पड़ने वाली आंखें उत्कट प्रेम से उसके ऊपर गड़ी हुई थीं।

वे लोग बन्दूकों, भालों, हंसियों, डंडों और छड़ियों से सुसज्जित थे। बड़ी बड़ी टोपियां उनके सिरों पर थीं, जिनमें राज-पक्ष के चिन्ह अंकित थे। मालाएं और गंडे-ताबीज भी उनकी देहों के भूषण थे। चमड़े की जाकटें, चमड़े ही के गेटिस और घुटने तक के पाजामे, लम्बे लम्बे बाल, तीखी परन्तु स-दय चितवनें—यही उनकी सज-धज थी।

भीड़ में से एक युवक मारकुइस की ओर बढ़ा। सूरत-शकल और पोशाक से वह उच्च कुल का मालूम पड़ता था। उसकी कमर से सोने की मूठ की एक तलवार लटकी हुई थी। पास पहुँच कर उसने टोपी उतार ली। भूमि पर एक घुटना टेक दिया और तलवार पेश कर के मारकुइस से बोला, "हम आपही की तलाश में थे। हमने आपको पा लिया। सरदारी की इस तलवार को

स्वीकार कीजिए। ये सब आदमी अब आपके हैं। अभी तक मैं इनका सरदार था। अब मैं इनके साथ रहूँगा और आपका सिपाही बनता हूँ। श्रीमन्, हमारी सेवा को स्वीकार करें। सेनापति महोदय, मुझे अपनी आज्ञा दीजिए।"

इसके बाद उसने इशारा किया। लोग पंक्ति बांध कर मारकुइस के सामने आये और उन्होंने उसके चरणों में एक तिरंगा झंडा रख दिया। यह वही झंडा था जिसे मारकुइस ने झाड़ी से देखा था। वही युवक फिर बोला, "इस झंडे को हमने अभी अभी ब्लयू लोगों से हारबीन-पेल में छीना है।"

मा०—तुम्हारा क्या नाम है ?

युवक– मेरा नाम गेवार्ड है।

मा०—ठीक।

मारकुइस ने युवक की दी हुई तलवार धारण कर ली, और खड़े हो कर तलवार को सर पर से घुमाते हुए वह पुकार कर बोला, "खड़े हो जाओ और बोलो 'राजा की जय !'"

सब कोई उठ खड़े हुए। 'राजा की जय', 'मारकुइस की जय', 'लन्टेनक की जय' से जंगल भर गूँज उठा। मारकुइस ने गेवार्ड से पूछा, "तुम कुल कितने आदमी हो ?"

गे०—सात हज़ार।

मारकुइस के साथ लोग टीले से नीचे उतरे। आगे आगे किसान लोग झाड़ियों को हटाते, मारकुइस के लिए रास्ता बनाते जाते थे। गेवार्ड मारकुइस से बोला, "हमें इन सात हजार आदमियों के जमा करने में कोई कठिनता नहीं हुई। चुटकी बजाते काम हो गया। प्रजा-तंत्र की तरफ़ से आपके सिर के लिए जो इनाम प्रकाशित किया गया था, उससे प्रान्त भर में राजा के लिए भक्ति का वेग उमड़ पड़ा। आपको पकड़ने के

लिए कल घंटे बजाये गये थे। उनसे भी बड़ी मदद मिली और इतने आदमी इकट्ठे हो गये।"

मारकुइस—तो तुम इस समय सात हजार हो।

गे०—आज सात हजार हैं, और कल पन्द्रह हजार हो जायंगे। जरूरत पड़ने पर इन प्रान्तों के वीर हथेली पर सिर रख कर आगे बढ़े हैं। और अब भी आगे बढ़ेंगे। हमें विश्वास था कि आप इसी जंगल में कहीं पर हैं, और इसीलिए हम आपकी तलाश कर रहे थे।

मा०—क्या तुमने हरबीन-पेज ही में ब्ल्यूज लोगों पर आक्रमण किया था?

गे०—उन लोगों ने हवा के कारण घंटों की आवाज नहीं सुनी थी। उन्हें किसी तरह का शक नहीं था। मूर्ख खलिहान वालों ने भी उनकी खूब महमानी की थी। आज सबेरे हमने उन्हें घेर लिया। वे सो रहे थे। उन पर हमने अच्छी तरह हाथ साफ किया। सेनापति, मेरे पास एक घोड़ा है। आप उसे ले लीजिए।

मा०—अच्छा।

एक किसान एक सफेद घोड़ा लाया मारकुइस उस पर सवार हो गया। किसानों ने उसकी 'जय' बोली। गेवार्ड ने उसे फौजी सलाम किया, और उससे पूछा, "महोदय, आपका निवासस्थान कहां रहेगा?"

मा०—अपने सात जंगलों में से किसी में। तुम लोगों के साथ कोई पादड़ी है?

गे०—हां, एक है।

पादड़ी सामने आया। मारकुइस ने अभिवादान करके उससे कहा, "आपको बहुत काम करना पड़ेगा। मरने वालों के निकट रहना पड़ेगा। जो लोग अपने पापों पर पश्चात्ताप करना चाहेंगे,

उनके पास आपको रहना पड़ेगा, परन्तु किसी को इसके लिए विवश नहीं किया जायगा।"

पादड़ी ने कहा, "मैं खुशी से इस काम को करूंगा।"

गेवार्ड बोला, "सेनापति, हम लोगों को आज्ञा दीजिए।"

मा०—सब से पहले फोरे के जंगल पर अधिकार कर लो। सब लोग वहीं पहुँच जाओ। हां, क्या तुमने यह कहा था कि हरबीन-पेल वालों ने 'ब्ल्यूज़' लोगों का बहुत सत्कार किया ?

गे०—हां, सेनापति, कहा था।

मा०—क्या तुमने उस को जला दिया ?

गे०—हां।

मा०—क्या उस गांव को जला दिया ?

गे०—नहीं।

मा०—उसे जला दो।

गे०—ब्ल्यूज़ लोगों ने अपनी रक्षा के लिए बहुत हाथ पैर मारे, परन्तु वे क्या कर सकते थे। वे डेढ़ सौ थे और हम सात हज़ार।

मा०—वे किसके आदमी थे ?

गे०—सेन्टेरे के।

मा०—उसी सेन्टेरे के, जिसने उस समय ढोल बजवाये थे, जब राजा का सिर काटा जा रहा था ? इस रेजीमेन्ट का क्या नाम था।

गे०—बोने-रो। घायलों के साथ हम कैसा व्यवहार करें ?

मा०—उन्हें समाप्त कर दो।

गे०—कैदियों को हम क्या करें ?

मा०—उन्हें गोली मार दो।

गे०—कैदी लगभग अस्सी के हैं।

मा०—उन सब को मार दो।

गे०—उनमें दो औरतें भी हैं।

मा०—उन्हें भी मार दो।

गे०—तीन बच्चे भी हैं।

मा०—उन्हें साथ रक्खो, उन्हें पीछे देखेंगे।

यह कह कर मारकुइस ने घोड़े को ऐड़ लगाई, और वह वहां से चल दिया।

× × ×

सन्ध्या को जंगलों से घूमता-घामता भिखारी टेलीमार्च अपनी झोपड़ी की तरफ लौटा। राह में उसने धुआँ उठते देखा। धुएं से बढ़ कर शान्त चीज कोई नहीं। उससे बढ़ कर चौंका देने वाली चीज भी कोई नहीं। अच्छे धुएं होते हैं, और बुरे धुएं भी होते हैं। युद्ध और शान्ति, मेल और विग्रह, आतिथ्य और शोक, जीवन और मृत्यु के भिन्न भिन्न धुओं में जो अन्तर होता है, वह अन्तर केवल उनके घनत्व और रंग का है। वृक्षों पर छाया हुआ धुआं संसार के सब से अधिक आकर्षक स्थान का धुआं हो सकता है, अर्थात, वह घर के चूल्हे का धुआं हो सकता है, और वह किसी अत्यन्त भयंकर अवस्था का भी सूचक हो सकता है, अर्थात, किसी अग्नि-काण्ड का। मनुष्य का भारी से भारी सुख और उसकी बड़ी से बड़ी विपदा बहुधा इस साधारण सी वस्तु से प्रकट हो जाया करती है, जिसे वायु अपने इच्छानुसार चाहे जिधर फैला देती है। टेलीमार्च ने जिस धुएं को देखा वह अशान्ति-सूचक था। वह काला था। कभी कभी उसमें लाल लाल लपकें भी उठ पड़ती थीं। हरबीन-पेल के ऊपर वह छाया हुआ था। टेलीमार्च ने तेजी से कदम बढ़ाये। वह बहुत थका हुआ था, परन्तु तो भी उसने यह जान लेना चाहा कि बात क्या है? एक ऊंचे टीले पर खड़े होकर उसने देखा कि हरबीन-पेल की जगह पर बरबादी के सिवा अब और कुछ भी नहीं। इधर

से एक और चेहरा दिखाई पड़ा। ये दोनों किसान थे जो छिपे हुए थे। केवल यही दोनों बच पाये थे। टेलीमार्च को देखकर दोनों बाहर आये, तो भी कांपते हुए। टेलीमार्च भी इतना शंका-कुल हो गया था कि उसके मुंह से बात न निकली। उसने पड़ी हुई स्त्री की तरफ उंगली का इशारा भर कर दिया।

पहले किसान ने पूछा, "क्या उसमें जान बाकी है?"

टेलीमार्च ने सिर हिला दिया। दूसरे ने पूछा, "क्या दूसरी औरत भी जिन्दा है?"

टेलीमार्च ने सिर हिलाया और ऐसे ढंग से कि उसके प्रथम ही पहला किसान बोला, "शेष सभी मर गये। मैंने छिपे छिपे यह सब दुर्घटना अपनी आंखों देखी। मेरा घर जल गया। बच्चे चिल्लाते थे 'माँ!', माँ चिल्लाती थी 'बच्चे!' जिन लोगों ने हत्या की, वे चले गये। बच्चों को ले गये। माँ को मार गये। मैंने यह सब देखा, परन्तु तुम कहते हो कि वह नहीं मरी। क्या सचमुच नहीं मरी? क्या तुम उसे बचा सकते हो? क्या हम तुम्हारी गुफा तक उसे ले चलें?"

टेलीमार्च ने इशारा किया जिसका अर्थ था, "हाँ।"

किसानों ने वृक्षों की डालें तोड़ कर उन पर स्त्री को लिटाया और उसे टेलीमार्च की गुफा की ओर ले चले। टेलीमार्च स्त्री का हाथ पकड़ कर उसकी नाड़ी देखने लगा। चन्द्रमा का प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। चांदनी के प्रकाश में रक्त से लथ-पथ स्त्री के सफेद चेहरे पर दृष्टि डालते हुए दोनों किसान सहमे हुए ढङ्ग से बातें करने लगे। एक बोला, "सभी को मार डाला!"

दूसरा बोला, "सभी को जला दिया!"

पहला—भगवान्, क्या अब ऐसी ही बातें हुआ करेंगी!

दूसरा—यह सब उसी लम्बे आदमी के हुक्म से हुआ।

पहला—हां, वही उनका सरदार था।

दूसरा—जब गोली चल रही थी, तब मैं वहां न था। क्या वह यहीं था ?

पहला—नहीं, वह चला गया था। परन्तु जो कुछ हुआ वह हुआ उसी के हुक्म से।

दूसरा—तो उसी ने सब कुछ कराया ?

पहला—वह कहता था, "सबको मारो, सब को जला दो, किसी को भी शरण मत दो।"

दूसरा—वह मारकुइस है।

पहला—हां, हमारा मारकुइस है।

दूसरा—उसे किस नाम से पुकारते हैं ?

पहला—उसे मारकुइस लन्टेनक कहते हैं।

टेलीमार्च ने आकाश की ओर आँखें उठाईं, और धीरे धीरे बोला, "भगवान्, यदि मैं यह जानता,……!"

उस समय का पेरिस और उसके आदमी

उस समय पेरिस में लोग खुले ढंग से रहते थे। दर्वाजे पर मेज बिछा लेते, और वहीं पर भोजन करते। स्त्रियाँ गिरजा-घरों की सीढ़ियों पर बैठ जातीं, घावों पर बाँधने की पट्टियां बनातीं और देश-भक्ति के गीत गातीं। बड़े-बड़े बागों में सिपाहियों को कवायद सिखाई जाती। लुहारों की दुकानों पर बहुत काम रहता। वे बन्दूकें बनाते। लोग उन्हें इस काम को करते हुए देखकर प्रसन्न होते और खुशी से तालियां बजाते। हर एक आदमी की जबान पर यही बात थी, "धैर्य्य रक्खो. घबड़ाओ मत, क्रान्ति का समय है!" विपत्ति के समय भी लोग वीरता के साथ मुसकराते। खेल तमाशे बराबर पहले ही की तरह होते रहते। लोग थियेटरों में जाया करते। जर्मन-सेना फ्रान्सीसी सीमा पर आ गई थी। खबर मशहूर थी, प्रुशा के राजा ने विजय के पश्चात तमाशे देखने के लिए पेरिस के थियेटरों में अपने लिये जगह 'रिजब' तक करा ली थी। चारों तरफ खतरा था, परन्तु किसी के हृदय में भय नहीं था। जिस व्यक्ति के ऊपर देश के विरुद्ध होने का सन्देह भी हो जाता उसकी नजरों के सामने फाँसी द्वारा मारे जाने का दृश्य सदा नाचा करता। लेरां नाम का एक वकील था। लोगों ने उसका तिरस्कार किया। उसकी दशा थी कि अपनी खिड़की पर कपड़े पहने हुए और बंशी बजाता हुआ सदा अपनी गिरफ्तारी का इन्तजार किया करता। किसी को फ़ुरसत न थी। सभी कार्य्यों में व्यस्थ थे। हर एक आदमी की टोपी पर प्रजा-तन्त्र का चिन्ह होता। स्त्रियाँ

कहतीं कि प्रजा-तन्त्र की लाल टोपियां हमें अच्छी लगती हैं। पेरिस भर में चहल-पहल थी। विचित्र चीजों के बेचने वाली दुकानों पर राज-मुकुट, राज-दंड और अन्य प्रकार के राज-चिन्ह-युक्त वस्तुओं का ढेर लगा रहता। यह सब राज-महलों की सामग्री होती। राज-सत्ता का इस प्रकार संहार हो रहा था। गरीब लोग सड़कों पर नंगे पैर चला करते। परन्तु, कभी कभी यहां तक देखा जाता कि वे ठेले पर जूता बेचने वाले का ठेला रोक लेते। चन्दा करके जूतों के बहुत से जोड़े खरीद डालते, और फिर फ्रान्स की जन-सभा के पास उन जोड़ों को इसलिए भेज देते कि देश के लिए लड़ने वाले सिपाहियों को ये जूते दिये जायं। शहर भर में फ्रेंकलिन* रूसो† ब्रूटस‡ और मारेऽ की मूर्तियाँ जगह जगह पर स्थापित थीं। बड़ी-बड़ी दुकानें बहुत कम थीं। छोटी छोटी दुकानें और ऐसी दुकानें जिन्हें दुकानदार अपने साथ लिये फिरते थे, बहुत थीं। स्त्रियाँ बिसात-खाने की चीजें और खिलौने ठेलों पर लेकर निकलतीं। रात को मोम-बत्तियाँ जलाकर उनमें रोशनी कर लेतीं। अन्य प्रकार की खुली हुई छोटी दुकानों पर वे स्त्रियाँ बैठी हुई दिखाई पड़तीं,

---

* फ्रेन्कलिन अमेरिका का प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता और राजनीतिज्ञ था। अपने बुद्धिमत्ता से उसने अपने देश की स्वाधीनता के संग्राम में बहुत सेवा की।

† रूसो फ्राँस की जनता को उनके अधिकार का ज्ञान करा कर जगाने वालों में था।

‡ ब्रूटस ने प्राचीन रोम के सम्राट जूलियस सीजर को इसलिए मारा था कि वह अत्याचारी हो गया था।

ऽ मारे का जिक्र आगे भी आवेगा, वह क्रान्तिकारियों में एक विशेष व्यक्ति था।

जो पहले साधुनियां थीं। कहीं कोई काउन्टेस (काउन्ट* की स्त्री) मोजे की दुकान रक्खे दिखलाई पड़ती और कहीं कोई मारशनैस (मारकुइस* की स्त्री) पोशाक तैयार करने की दुकान। अमीर लोग महलों को छोड़कर छोटे छोटे मकानों में जा बसे थे। लोग दौड़ दौड़ कर समाचार-पत्र बेचते थे। गलियों में गाने वालों की भरमार रहती। बड़े बड़े घेरे बनाकर लोग खूब नाचते। लोग एक दूसरे को "नागरिक या नागरिका" शब्द द्वारा सम्बोधन करते। गिजार-घर और मकबरों की कोई कदर न रह गई थी। लोग वहाँ नाचते गाते। सड़कों और बाजारों के नाम बदल दिये गये थे। पुराने नामों की जगह पर ऐसे नाम रक्खे गये, जिनका सम्बन्ध उस समय की घटनाओं से था। उस समय के जो बड़े बड़े क्रान्तिकारी लोग थे, वे जब निकलते तब लोग उन्हें बड़ी उत्सुकता के साथ देखते। कुछ लोगों को, मौत की सजा पाये हुओं को फाँसी की टिकटी पर चढ़ते देखने में बड़ा मजा आता। वे इस प्रकार के मुकदमे-मामले अपने सौ काम छोड़कर भी देखते। वे ऐसे अवसरों की सदा प्रतीक्षा किया करते। लोग अदालती कायदे के अनुसार किये गये विवाहों का मजाक उड़ाते। इधर उधर ईसाई-सन्तों और राजाओं की जो मूतियाँ स्थापति थीं, उन पर मुकुट के स्थान पर उलटी टोपियां लगा दी जातीं। लोग ताश खेलते, परन्तु क्रान्ति के रंग में रंग कर। बादशाह की जगह पर ज्ञान का देवता रक्खा जाता। रानी की जगह स्वाधीनता की देवी मिलती। गुलाम की जगह समता की मूर्ति बनाई जाती। इक्के की जगह विधान (कानून) का स्वरूप रखा जाता। जो पुराने बाग थे, उनमें हल चला दिये गये थे। समाचार-पत्र बहुत निकलने लगे थे।

---

* उपाधि-विशेष है।

स्त्रियां खुले स्थानों में केश गुंथवातीं थीं और पुरुष गूँधते। और, साथ ही उन्हें जोर जोर से अखबार पढ़ कर सुनाया जाता। आस-पास जमा हो जाने वाले लोग तीव्रता और उत्साह के साथ समाचर-पत्र की बातों पर टीका-टिप्पणी करते। एक एक दुकान पर बहुधा अनेक बे-जोड़ वस्तुएं बिका करतीं। गुड्डे, गुड़ियों और खेल-तमाशों की चीजों के साथ, नाई की दुकान पर, मांस भी बिका करता। खुल्लम-खुल्ला शराब बिकती। पुराने रईसों की घड़ियां और पलंग कबाड़ियों के यहां बिकते दिखाई:पड़ते। एक बाल सँवारने वाले ने साइन-बोर्ड लगा रक्खा था कि पादड़ियों की हजामत बनाता हूँ, रईसों के बालों में कंघी करता हूँ और साधारण आदमियों के बालों को ठीक करता हूँ। रोटी, कोयले और शोरबे की कमी थी। दुधार गायें झुंड की झुंड देहातों से आतीं। राष्ट्रीय पंचायत की आज्ञा थी कि प्रत्येक आदमी को दसवें दिन आधा सेर मांस मिले। मांस की बड़ी कमी थी। मांस वालों की दुकान पर गाहकों की भारी भीड़ रहती। अन्त में तो दशा यहां तक पहुँची थीं, कि लोग एक रस्सी को पकड़ कर पंक्ति-बद्ध खड़े हो जाते, और जब सब से आगे का आदमी मांस ले चुकता, तब उससे पीछे का आदमी लेने के लिए आगे बढ़ता। बहुधा ये पंक्तियां बहुत लम्बी होतीं, और दुकान से परे अन्य कई गलियों तक निकल जातीं। रोटियों की दुकानों पर भी यही हाल रहता। बहुधा स्त्रियों को रोटिया प्राप्त करने के लिए बड़ी वीरता के साथ रात रात भर दुकान के सामने खड़ा रहना पड़ता। चोरियां बहुत कम होतीं। दरिद्रता के कारण लोगों को बहुत कष्ट था, तो भी उनमें बे-हद ईमानदारी थी। नंगे पैरों घूमते, भूखे रहते, परन्तु जौहरी की दुकान के पास से जब निकलते तब आखें नीची कर के। एक स्त्री ने एक बाग से एक फूल तोड़ लिया।

लोगों ने उसके कानों पर घूंसे लगाये। लकड़ी बहुत महँगी थी। लोग चारपाइयां तोड़ कर लकड़ी का काम लेते थे। जाड़े के दिनों में पानी जम गया और फिर पानी भी दामों पर बिका। सोने की एक मुहर में ३९५० फ्रेन्क सिक्के तक हुए। गाड़ी की सवारी के लिए एक-एक दिन में लोगों को छः छः हजार फ्रेंक तक देने पड़े। कुंजड़िन कहती, आज मैंने तीस हजार फ्रेन्क की तरकारी बेंची। भिखारी कहता कि ईश्वर के नाम पर मुझे दान दीजिए, दो सौ तीस फ्रेंक मुझे अपने जूते के दामों में कर्ज के देने हैं। यह महँगी विशेष कर इस लिए थी कि नकली सिक्कों और नकली नोटों का चलन खूब हो गया था। लोगों में किसी तरह की घबराहट न था। राज-सत्ता की समाप्ति पर वे खुश थे। स्वयम्-सेवकों की भरमार थी। गली गली में स्वयम्-सेवकों की एक सेना तैयार हो गयी थी। जिले जिले के झंडे तैयार हो गये थे। एक झंडे पर लिखा था, "अब कोई हमारी डाढ़ी नहीं कटवा सकता।" दूसरे पर लिखा था, "हम किसी को रईस नहीं मानते, सिवाय अपने हृदय के!" सभी दीवारों पर छोटे-बड़े, सफेद-पीले, हरे-लाल, छपे और लिखे इश्तिहार चिपके हुए थे, जिनमें अंकित था, "प्रजा-तंत्र की जय!" छोटे बच्चे भी 'जयजय, करते। इन छोटे बच्चों में भारी भविष्यत् की आभा छिपी हुई थी।

पेरिस की गलियां क्रान्ति के रंग में दो बार रंगी गईं। एक का विवरण तो यह है। दूसरा रंग इसके बाद चढ़ा। उसमें यह कहना उचित है कि लोग पागल हो उठे थे।

अस्सी वर्ष पहले राजा लुई चौदहवें के जमाने में लोग उसी प्रकार मदोन्मत्त हो उठे थे। उन पर अय्याशी का नशा छा गया था। उनकी विलासिता की कोई हद ही न रह गयी थी। मृत्यु से भिड़ने की इच्छा के बाद खूब मौज करने की इच्छा ने उन्हें धर दबाया था। बड़े-बड़े महलों में, स्त्रियों के मधुर संगीत के बीच

में, लोग नाना प्रकार के व्यंजनों को चखते और अनेक प्रकार की कुलेलों में, अपना समय व्यतीत करते। विलासिता की सारी सामग्रियां सामने होतीं। उजड़े हुए गिरजा-घरों में धूम-धाम से नाच होते। घायलों के लिए मरहम की पट्टियाँ तैयार करने वाली नागरिकायें परियों का रूप धारण करतीं। बे-शरमी और विलासिता का राज्य होता। नीचे से लेकर ऊपर तक सभी का यही साज होता। नतीजा यह हुआ कि ईमानदारी उड़ गई और बेईमानी ने जगह ली। पेरिस में गँठकटे जमा हो गये। उनसे जेब की चीजें तक बचाना कठिन था। स्त्रियाँ तक चोरी करती और पकड़ी जातीं। मुकदमे चलते और सजायें होतीं। परन्तु, ये बातें १७९३ के बाद की हैं। १७९३ में वैसी ही हालत थी, जैसी कि हम पहले कह आये हैं। उस समय क्रान्ति के पोषण-कर्ता अनेकानेक प्रसिद्ध वक्ता और वीर लोग थे। उनमें से कुछ ऐसे अवश्य थे, जो ऐसे छिछोड़े थे। परन्तु शेष ऐसे थे जिनका प्रभाव पड़ता था। उनमें से एक ऐसा था जो बहुत सच्चा और अचूक था। उसका नाम था सिमोरडेन।

सिमोरडेन विवेकशील आदमी था। उसका हृदय पवित्र, किन्तु उग्र था। उसमें कुछ निरंकुशता थी। वह धर्म्माचार्य्य था, और इस बात का उसके स्वभाव पर बहुत गहरा असर पड़ा था। धार्मिकता ने उसके जीवन पर एक गहरी छाप लगाई थी। एक अगम और अन्धकार-मय स्थिरता की छाया उस पर छा गई थी, परन्तु इसी अवस्था के कारण उसके अनेक सद्गुण नक्षत्रों की तरह चमकते और दूर दूर तक प्रकाश फैलाते थे। वह एक गाँव में पादड़ी था। एक बड़े परिवार में अध्यापक का भी काम करता था। फिर, किसी रिस्तेदार के मर जाने पर उसे कुछ रुपया मिल गया। उसे स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। वह बहुत जिद्दी था। किसी बात का पीछा उस समय तक न छोड़ता जब

तक उसके अन्त तक न पहुँच जाता। वह यूरोप की सारी भाषाओं को जानता था, और कुछ अन्य भाषाओं को भी समझ लेता था। निरन्तर पढ़ता रहता, और इसी से वह ब्रह्मचर्य्य के भार के वहन करने योग्य बना रहा। किन्तु, इस प्रकार के दमन के जीवन से बढ़कर भयंकर भी कोई अवस्था नहीं होती। परिस्थिति के कारण कहिए, चाहे आत्म-गौरव या उदारता के कारण कहिए, जो बात उसके मुंह से निकल जाती वह उसे अवश्य पूरा करता। तो भी, वह अपने धार्मिक विश्वासों की रक्षा न कर सका। विज्ञान ने उसके विश्वास को हिला दिया। धर्म-सूत्रों का उसके हृदय पर अधिकार नहीं रहा। आत्म-परीक्षा करने पर उसे यह अनुभव हुआ कि मेरी आत्मा खंड खंड हो गई है। पादड़ी बनते समय उसने जो शपथ ली थी, उसे तो वह तोड़ न सका, परन्तु उसने यह निश्चय किया कि कठोर तपस्या द्वारा मैं अपने जीवन का रङ्ग बदल दूंगा। परिवार उससे छिन चुका था। देश भर को उसने अपना परिवार बना लिया। धर्म-पथ* में पैर रखते ही, विवाह उसके लिए वर्जित हो गया था। उसने मनुष्यता से अपना गँठ-बन्धन जोड़ा। उसके किसान माता-पिता ने उसे धर्म-पथ में देते हुए यह समझा था कि अब हमारा लड़का साधारण लोगों से कहीं ऊपर उठ जायगा। परन्तु, वह स्वयं इस प्रकार साधारण लोगों में लौट आया, और, लौट आया बड़े उत्साह के साथ। कष्टों को देख कर उसे दारुण व्यथा होती। धर्माचार्य्य से वह दार्शनिक बन बैठा, और दार्शनिक से लड़ाका। बहुत दिनों से उसकी सहानुभूति प्रजा-पक्ष की ओर थी, परन्तु किस रूप में, यह उसे स्वयं भी मालूम न था। उसके लिए प्रेम का मार्ग ही न था, इसलिए उसने घृणा

---

* कैथोलिक सम्प्रदाय के पादड़ी विवाह नहीं करते।

के मार्ग में पैर रक्खा। झूठ से, राज-सत्ता से, आचार्य्य-सत्ता से, और यहाँ तक कि धर्म्माचार्यों के वेष तक से उसे घृणा थी। वर्त्तमान काल से उसे घृणा थी। भविष्यत् काल की वह, जोरों से दुहाइयाँ देता। उसे आभास सा हो गया था, उसे कुछ पूर्व लक्षण से मालूम हो गये थे, इसीलिए वह भविष्यत् काल के अत्यंत भयावह और ओज-पूर्ण चित्र खींचता।

उसके मत से, मनुष्य जाति की दुःख-पूर्ण दुर्दशा दूर करने के लिए आवश्यता केवल इस बात की थी कि अत्याचारों का बदला लेने वाले, जनता का उद्धार करने वाले किसी एक जन का उदय तुरन्त हो। वह सदा उस दूर-भविन्यत् में घटने वाली घोर घटना की उपासना किया करता। १७८९ में, यह घटना घटी। सिमोरडेन ने सहर्ष उसका स्वागत किया, और मानव-उद्धार के उस विस्तीर्ण क्षेत्र में वह दृढ़ता और उत्साह के साथ कूद पड़ा। इन बड़े बड़े क्रान्तिकारी वर्षों की गोद में वह खेला। उनकी बड़ी-बड़ी थपेड़ों को उसने सहा। १७८९ में उस बेस्टायल के उस भयंकर कैदखाने का पतन देखा, जिसमें फ्रांस के अमीर और गरीब सभी श्रेणी के आदमी राजा के मुंह-लगे लोगों की तनिक सी नाराजगी पर, बिना किसी जांच-पड़ताल के, जन्म भर सड़ने और गलने के लिए, बन्द कर दिये जाते थे। १७६० की चौथी अगस्त को उसने फ्रांस में जमींदारी-प्रथा का अन्त देखा। १७६१ में राज-सत्ता का अस्त हुआ, और ९२, में प्रजातन्त्र का जन्म। क्रान्ति के इस राक्षसी रूप से सिमोरडेन के मन में तनिक भी भय का संचार नहीं हुआ। किन्तु जो कुछ हुआ वह बिल्कुल ही उलटा हुआ। हर दिशा में होने वाले इस विकास से उसका हृदय बहुत बढ़ गया। यद्यपि वह बूढ़ा हो चला था— वह पचास वर्ष का था और पादड़ी लोग जल्दी बूढ़े होते हैं—तो भी उसे अपने हृदय और शरीर में अधिक से अधिक उत्साह

बढ़ते हुए मालूम हुआ। ज्यों ज्यों घटनायें बढ़ती थीं, त्यों त्यों उसका उत्साह बढ़ता था। पहले उसे डर था कि कहीं क्रान्ति विफल न हो जाय। क्रान्ति की गति पर सदा उसकी दृष्टि लगी रहती। कायरों को क्रान्ति से जितना अधिक भय लगता, क्रान्ति पर उसका उतना ही अधिक अनुराग बढ़ता जाता। अन्त में, तो, उसकी मनोकामना यह थी कि क्रान्ति सफलता की ओर दिन-दूनी और रात-चौगुनी बढ़े, और वह इतनी बलवान हो जाय कि जो लोग उस पर चोटें करें, उन्हें चोट का जवाब चोट से दे और उनके मनों में भय का संचार करे।

धीरे धीरे १७९३ का सन् आ पहुँचा। इस वर्ष में एक विचित्र खेल खेला गया। यूरोप भर ने फ्रांस पर आक्रमण किया, और फ्रांस भर ने पेरिस पर चढ़ाई बोली। उस समय क्रान्ति ने क्या किया? इसके सिवा और कुछ नहीं, कि फ्रांस ने यूरोप पर विजय पाई और पेरिस ने फ्रांस पर। इसीलिए शताब्दि भर में, सन् ९३ से बढ़ कर भयंकर और शानदार कोई दूसरा वर्ष नहीं। इससे बढ़ कर, चिन्ता-जनक बात और क्या हो सकती थी, कि योरप, फ्रान्स पर आक्रमण करे, और फ्रान्स पेरिस पर। एक तूफान चल पड़ा था, जिसमें क्रोध और वैभव का अधिक से अधिक अंश था। सिमोरडेन ने उस समय यही अनुभव किया कि जो कुछ हो रहा है, वह सब ठीक है। उसने अपनी क्रीड़ा के लिए भयंकरता और वैभव से परिपूर्ण इस क्षेत्र को अत्यन्त अनकूल पाया। जिस प्रकार समुद्री चिड़ियाँ भयंकर तूफान से प्रसन्न होती हैं, उसी प्रकार अपनी इन्द्रियों को वश में करने वाले, इस व्यक्ति को जोखिम का यह अवसर अच्छा लगा। बहुत सी चिड़ियाँ देखने में उद्दंड होती हैं, परन्तु वे भयंकर बवंडरों के साथ बड़ी ही धीरता और शान्ति-पूर्वक युद्ध करती हैं। सिमोरडेन भी ठीक वैसा ही था।

उसने दया की भावना को अभागी लोगों के लिए अलग उठाकर रख दिया था। जिन कष्टों से लोगों को त्रास होता था, उन्हीं के दूर करने में वह अपनी शक्ति लगाता। उसे किसी बात से घृणा न होती। यह उसका एक विशेष गुण था। जिस घृणित अवसर पर कोई भी किसी प्रकार सहायता के लिए तैयार न होता, वहां वह देवता की भांति सहायता के लिए आगे बढ़ता। ऐसे काम बहुत ही मुश्किल से किये जाते हैं, जो अच्छे तो हों, परन्तु जिनका बाहरी रूप वीभत्सता से परिपूर्ण हो। वह उन्हें करने के लिए सदा तैयार रहता। एक आदमी मर रहा था। उसके गले में फोड़ा निकला। फोड़े में बहुत सी गन्दी और छूतदार पीप आ गई थी। आवश्यकता थी कि फोड़ा फोड़ दिया जाय। सिमोरडेन वहाँ पर था। उसने अपने होंठ उस पर लगा कर उसे चूस डाला। चूस चूस कर उसने सारा मवाद निकाल बाहर किया। फोड़ा अच्छा हो गया। आदमी बच गया।

सिमोरडेन ने जिस समय यह काम किया था, उस समय वह पादड़ी की पोशाक पहने हुए था। एक आदमी ने उससे कहा, "यदि आप राजा के लिए ऐसा करते, तो आप निश्चय बड़े पादड़ी बना दिये जाते।" सिमोरडेन ने जवाब दिया, "मैं राजा के लिए कभी ऐसा न करता।" उसके इस काम और इस जवाब ने उसे पेरिस में और लोक-प्रिय कर दिया। उसे लोग इतना प्यार करने लगे कि जहां कोई कष्ट होता, लोग उसे बुलाते, और उसका कहा मानते। अपने इसी प्रभाव के कारण, उसने समय समय पर लोगों को उत्पात करने से रोका और बदमाशों को बदमाशी करने से। बारहवीं अगस्त को लोगों का जलूस निकला था, और वह इसलिए कि शहर में जहाँ जहाँ राजाओं की मूर्तियाँ हों वहाँ वहाँ से, वह उन्हें उखाड़ दें। सिमोरडेन इस जलूस का मुखिया था। ये मूर्तियाँ गिरीं, और कहीं कहीं लोगों को भी

मामूली कपड़े पहनता था और गरीब सा प्रकट होता था। उसकी चाँद गंजी थी, और जो थोड़े से बाल बचे भी थे, वे भूरे हो गये थे। उसका माथा चौड़ा था, और उससे उसके चरित्र की विशालता टपकती थी। वह गंभीरता से उत्साह के साथ बोला करता। उसकी आवाज तेज थी। वह शब्दों पर जोर दिया करता। उसकी आंखों से स्वच्छता और गहराई टपकती थी। सम्पूर्ण चेहरे से एक अवर्णनीय तिरस्कारपूर्ण भाव झलका करता। सिमोरडेन ऐसा आदमी था, परन्तु आज उसका कोई नाम भी नहीं जानता! अनेकानेक ऐसे ही गुम-नाम महान व्यक्ति संसार में हो चुके हैं!

क्या इस प्रकार का आदमी, आदमी कहे जाने के योग्य था? मनुष्य जाति मात्र का सेवक बनने की आकांक्षा रखने वाले इस आदमी के हृदय था और उस हृदय में था अनुराग। उसके आलिंगन से प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक मनुष्य का स्थान था। क्या उसका हृदय इतना सङ्कीर्ण हो सकता था, कि एक व्यक्ति पर उसका अनुराग होता? क्या सिमोरडेन का किसी पर प्रेम था। उत्तर यह है कि हाँ! जिस समय वह जवान था और एक उच्च कुल में अध्यापक का कार्य-करता था, उस समय उसके एक शिष्य था और उसे वह प्यार करता था। वह लड़का उस बड़े कुल का उत्तराधिकारी था। बच्चों को प्यार करना आसान भी है। बच्चे की कौन सी बात क्षमा नहीं की जा सकती? सिमोरडेन ऐसे आदमी भी, किसी बच्चे का सरदार या राजा होना, भूल सकते हैं। छुटपने का भोलापन और उस समय की निर्बलता किसी के हृदय में इस बात को अधिक काल तक नहीं रहने दे सकती कि वह किसी राजा या रईस का लड़का है। उसका छोटापन उसके कुल के बड़ेपन को विस्मृति में डुबा देती है। गुलाम भूल जाता है, कि जिस बच्चे को वह प्यार करता है वह

उसका मालिक है। काला हब्शी गोरे बच्चे को खिलाते खिलाते यह भूल जाता है कि मुझे बच्चे की जाति से कोई विद्वेष है। सिमारडेन का एक शिष्य था। उसको अपने शिष्य पर बहुत स्नेह हो गया था। इस छोटे नन्हे से बच्चे के सामने वह अपने सारे बल को भूल गया था। अत्यन्त वात्सल्य के साथ, पिता, भ्राता या मित्र के सदृश, वह उस बच्चे को प्यार करता। वह उसे अपना ही पुत्र समझता। वह अपने को उसके शरीर की रचना का निमित्त नहीं मानता, परन्तु उसके मन की रचना को वह अपना ही काम समझता था। बात भी यही थी। उसने बड़े परिश्रम और तत्परता से उस बच्चे की मानसिक कला को उन्नत किया था। उसके हृदय में जिन बड़े उन्नत विचारों का अधिकार था उन सब से उसने अपने शिष्य के हृदय को सुसज्जित किया। उसने उसे अपने समस्त सद्‌गुणों, ज्ञान और आदर्शों की शिक्षा दी। एक कुलीन रईस के मस्तिष्क में जनता की आत्मा उड़ेल दी। शिक्षक धाय के समान होता है। धाय, बच्चे को दूध पिलाती है और शिक्षक, विचार। शिक्षक बहुधा पिता से भी बढ़ कर होता है, और यह उसी प्रकार जिस प्रकार बहुधा धाय माता से बढ़ कर होती है। अपने शिष्य से सिमोरडेन का ऐसा ही सम्बन्ध था। उस लड़के को देखते ही उसका हृदय शीतल हो जाता था।

इस लड़के के माँ-बाप नहीं थे, एक अन्धी दादी थी और दादा का भाई था। दादी मर गई। दादा का भाई घर का मुखिया बना। वह सैनिक था। बहुत ऊंचे पद पर नियुक्त था। वह राज-दरबार में रहता, या रहता फौज के साथ। लड़का घर मे अकेला अपने गुरु के साथ रहा करता। जब वह बहुत छोटा था, तब उसे एक बड़ी बीमारी हुई। बचने की कोई आशा नहीं रह गई थी। सिमोरडेन ने रात दिन उसकी सेवा की। चिकित्सक तो केवल चिकित्सा करता है, रोगी यथार्थ में अच्छी सेवा-सुश्रूषा के सहारे

रोग-मुक्त हुआ करता है। सिमोरडेन ने सेवा करके इस बच्चे की जान बचाई। इस प्रकार से यह लड़का अपनी शिक्षा और ज्ञान के लिए ही सिमोरडेन का ऋणी नहीं था, किन्तु वह प्राणों के लिए भी उसका ऋणी था। बहुधा ऐसा होता है कि हम उनकी उपासना करते हैं, जो अपने सर्वस्व के लिए हमारे ऋणी होते हैं। सिमोरडेन इसी प्रकार इस लड़के की पूजा सी करता था। अन्त में वियोग का समय आया। शिक्षा समाप्त होने पर सिमोरडेन को वहाँ से चला जाना पड़ा। उसका कार्य क्षेत्र बदल गया। उसका शिष्य एक कुलीन रईस होने के कारण तुरन्त सेना में कप्तान बना कर भेज दिया गया। अध्यापक बेचारा पादड़ी का जीवन व्यतीत करने के लिए गुम-नाम धर्म-क्षेत्र की ओर आ गया। दोनों एक दूसरे की दृष्टि से ओझल हो गये।

क्रान्ति के दिन आये। सिमोरडेन पर सार्वजनिक कामों का बहुत अधिक भार पड़ा। तो भी वह अपने शिष्य को भूला नहीं। संसार भर में वही अनाथ बालक—उसका शिष्य—ऐसा व्यक्ति था, जिसे वह प्यार करता था। क्या इस प्रकार के प्रेम की परीक्षा के समय सिमोरडेन ऐसा आदमी अपने सिन्द्धातों और व्रतों पर अटल और अविचल रह सकता है? यह हम आगे चलकर देखेंगे।

क्रान्ति की त्रि-मूर्ति

२८ जून १७९३ की रात की बात है। पेरिस की एक रङ्ग-शाला के एक बन्द कमरे में तीन आदमी बैठे हुए थे। उनकी कुर्सियों के बीच मे एक मेज थी। आठ बज चुके थे। छत से लटके हुए एक लम्प द्वारा कमरे में रोशनी हो रही थी। इन तीन में से एक जवान, गंभीर, पतले ओठों और शान्ति दृष्टि वाला था। वह नीला कोट पहने हुए था, और उसके आदि से लेकर अन्त तक सब बटन बन्द थे। वह हाथों में दस्ताने पहने हुए था। उसकी पोशाक बहुत बढ़िया थी। जूते में चांदी के बक्सुए टके हुए थे। शेष दो आदमियो में से एक बहुत लम्बा-चौड़ा था, और दूसरा बौना। लम्बे-चौड़े आदमी की पोशाक भद्दी सी थी। कहीं बटन थे, और कहीं नहीं। उसके बाल भी बिखरे और उलझे हुए थे, चेहरे पर शीतला के चिह्न थे। भवें तनी सी थीं। ओंठ छोटे और दांत बड़े थे। बौना आदमी पीले रङ्ग का था। जब बैठ जाता तब कुरूप दिखाई देता। जब चलता तब छाती उठा कर चलता। उसके नेत्रों से खून टपकता था, बालों पर एक रूमाल बांधे हुए था। मालूम पड़ता था, मानों माथा है ही नहीं। उसका मुंह बड़ा और भयंकर था। उसकी ढीली-ढाली जाकट की जेब में कोई कड़ी चीज उभड़ी सी मालूम होती थी। मालूम पड़ता था कि छुरी छिपी हुई है। पहले आदमी का नाम था रोब्सपीरी, दूसरे का डेन्टन, और तीसरे का मारे। इन तीनों के अतिरिक्त, उस कमरे में और कोई न था। डेन्टन के सामने शराब की बोतल और प्याला था, मारे के सामने काफी का

प्याला, और रोब्सपीरी के सामने केवल कागज। कागजों के पास पुराने ढङ्ग की भारी गोल दावात थी। एक कलम उसके पास पड़ा हुआ था। कागजों पर एक बड़ी मुहर पड़ी थी। मेज पर फ्रांस का नक्शा बिछा हुआ था। कमरे के दरवाजे पर मारे का पहरेदार था, जिसे आज्ञा थी कि कोई भीतर न आने पावे। बहुत देर से यह कान्फ्रेन्स हो रही थी। मेज पर जो कागज फैले हुए थे, उन्हीं के सम्बन्ध में जो कुछ विचार हो रहा था। बातें करते करते इन तीनों की आवाजें तेज हो उठीं। तीनों का क्रोध प्रकट हो चला। बाहर से भी उनका ऊँचा स्वर सुनाई पड़ सकता था। मारे का पहरेदार दरवाजे से कान लगाये सब बातें सुनने लगा। वह 'इवेशे' समिति का सदस्य था।

डेन्टन तेजी से कुर्सी खसका कर उठ पड़ा, और बोला, "प्रजा-तन्त्र पर इस समय काली घटाएं छाई हुई हैं। मैं तो इस समय केवल एक ही बात जानता हूँ। वह यह है कि दुश्मनों के हाथों से फ्राँस को बचाया जाय। इस काम के करने के लिए चाहे जो कुछ किया जाय, वह सब ठीक और वाजिब होगा। ऐसे मौके पर उचित और अनुचित के विचार की आवश्यकता नहीं। मेरा विचार तो उस शेर की भाँति है, जो पीछे हटना जानता ही नहीं। टाल-मटूल से काम नहीं चलेगा। दृढ़ता से आगे बढ़ने की जरूरत है। कोई हर्ज नहीं, यदि हम कोई भयंकर कार्य कर बैठें। हाथी चलते समय यह नहीं देखता कि उसका पैर कहां पड़ता है। हमें जो कुछ करना है वह यही है कि हम दुश्मन को कुचल डालें।"

रोब्सपीरी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "बात ठीक है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि दुश्मन है कहाँ पर?"

डन्टन—वह देश के बाहर है। मैं कहता हूँ कि उसे वहीं पछाड़ा जाय।

रोब्स—दुश्मन देश के भीतर है। मैं उसे देख रहा हूँ।

डेन्टन—वह बाहर है। मेरी नजर उसका पीछा कर रही है। मैं उसे भगा कर छोड़ूँगा।

रोब्स—घर के दुश्मन को भगाया नहीं जा सकता।

डेन्टन—तब उसका क्या करोगे?

रोब्स—तलवार के घाट उतारेंगे।

डेन्टन—यह ठीक है, परन्तु रोब्सपीरी! मैं कहता हूँ कि दुश्मन बाहर है।

रोब्स—मैं कहता हूँ, वह भीतर है।

डेन्टन—रोब्सपीरी। शत्रु सरहद पर है।

रोब्स—डेन्टन! हमारे घर में वैण्डी के रूप में हमारा शत्रु मौजूद है।

एक तीसरी आवाज उठी, "शान्त हो जाओ। शत्रु हर जगह है, और बाजी तुम्हारे हाथ से निकला चाहती है।"

यह आवाज मारे की थी। रोब्सपीरी ने उसकी तरफ देखा और गम्भीरता से उत्तर दिया, "यह तो एक गोल-मोल बात हुई। मैं तो एक विशेष बात पर जोर देता हूँ। लीजिए, मैं आपको कुछ पते की बातें बतलाता हूँ।"

मा॰ कुड़मुड़ा उठा और मुंह ही मुंह में बोला, "बकवादी!"

रोब्सपीरी ने अपने सामने के कागजों पर हाथ रखकर कहा, "मैंने इसी समय मारने के अध्यक्ष का पत्र तुम लोगों को पढ़कर सुनाया। और अभी जो समाचार इधर उधर से मिले वे सब भी मैं तुमसे कह चुका हूँ। डेन्टन! सुनो, बाहर वालों से लड़ना कोई बड़ी बात नहीं। घर की लड़ाई बड़ी बुरी चीज है। बाहर वालों से लड़ाई का होना केवल ऐसे खरोंचे का लगसा जाना है जो इधर-उधर उलझ जाने पर हाथ में लग जाया करता है। परन्तु, घर की लड़ाई उस भयंकर फोड़े के समान है जो

प्याला, और रोब्सपीरी के सामने केवल कागज । कागजों के पास पुराने ढङ्ग की भारी गोल दावात थी । एक कलम उसके पास पड़ा हुआ था । कागजों पर एक बड़ी मुहर पड़ी थी । मेज पर फ्रांस का नक्शा बिछा हुआ था । कमरे के दरवाजे पर मारे का पहरेदार था, जिसे आज्ञा थी कि कोई भीतर न आने पावे। बहुत देर से यह कान्फ्रेन्स हो रही थी । मेज पर जो कागज फैले हुए थे, उन्हीं के सम्बन्ध में जो कुछ विचार हो रहा था। बातें करते करते इन तीनों की आवाजें तेज हो उठीं । तीनों का क्रोध प्रकट हो चला । बाहर से भी उनका ऊँचा स्वर सुनाई पड़ सकता था । मारे का पहरेदार दरवाजे से कान लगाये सब बातें सुनने लगा । वह 'इवेशे' समिति का सदस्य था ।

डेन्टन तेजी से कुर्सी खसका कर उठ पड़ा, और बोला, "प्रजा-तन्त्र पर इस समय काली घटाएं छाई हुई हैं । मैं तो इस समय केवल एक ही बात जानता हूँ । वह यह है कि दुश्मनों के हाथों से फ्राँस को बचाया जाय । इस काम के करने के लिए चाहे जो कुछ किया जाय, वह सब ठीक और वाजिब होगा। ऐसे मौके पर उचित और अनुचित के विचार की आवश्यकता नहीं । मेरा विचार तो उस शेर की भाँति है, जो पीछे हटना जानता ही नहीं । टाल-मटूल से काम नहीं चलेगा । दृढ़ता से आगे बढ़ने की जरूरत है । कोई हर्ज नहीं, यदि हम कोई भयंकर कार्य कर बैठें । हाथी चलते समय यह नहीं देखता कि उसका पैर कहां पड़ता है । हमें जो कुछ करना है वह यही है कि हम दुश्मन को कुचल डालें ।"

रोब्सपीरी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "बात ठीक है, परन्तु प्रश्न तो यह है कि दुश्मन है कहाँ पर ?"

डन्टन—वह देश के बाहर है । मैं कहता हूँ कि उसे वहीं पछाड़ा जाय ।

रोब्स—दुश्मन डेरा के भीतर है। मैं उसे देख रहा हूँ।

डेन्टन—वह बाहर है। मेरी नजर उसका पीछा कर रही है। मैं उसे भगा कर छोड़ूँगा।

रोब्स—घर के दुश्मन को भगाया नहीं जा सकता।

डेन्टन—तब उसका क्या करोगे?

रोब्स—तलवार के घाट उतारेंगे।

डेन्टन—यह ठीक है, परन्तु रोब्सपीरी! मैं कहता हूँ कि दुश्मन बाहर है।

रोब्स—मैं कहता हूँ, वह भीतर है।

डेन्टन—रोब्सपीरी। शत्रु सरहद पर है।

रोब्स—डेन्टन! हमारे घर में वैण्डी के रूप में हमारा शत्रु मौजूद है।

एक तीसरी आवाज उठी, "शान्त हो जाओ। शत्रु हर जगह है, और बाजी तुम्हारे हाथ से निकला चाहती है।"

यह आवाज मारे की थी। रोब्सपीरी ने उसकी तरफ देखा और गम्भीरता से उत्तर दिया, "यह तो एक गोल-मोल बात हुई। मैं तो एक विशेष बात पर जोर देता हूँ। लीजिए, मैं आपको कुछ पते की बातें बतलाता हूँ।"

मा० कुड़मुड़ा उठा और मुंह ही मुंह में बोला, "बकवादी!"

रोब्सपीरी ने अपने सामने के कागजों पर हाथ रखकर कहा, "मैंने इसी समय मारने के अध्यक्ष का पत्र तुम लोगों को पढ़कर सुनाया। और अभी जो समाचार इधर उधर से मिले वे सब भी मैं तुमसे कह चुका हूँ। डेन्टन! सुनो, बाहर वालों से लड़ना कोई बड़ी बात नहीं। घर की लड़ाई बड़ी बुरी चीज है। बाहर वालों से लड़ाई का होना केवल ऐसे खरोंचे का लगसा जाना है जो इधर-उधर उलझ जाने पर हाथ मे लग जाया करता है। परन्तु, घर की लड़ाई उस भयंकर फोड़े के समान है जो

शरीर भर को खा जाता है बहुत विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ। वैण्डी वालों में अभी तक फैल-फूट थी। अब वे सब मिलकर एक ही सेनापति...।"

डेन्टन भुनभुना कर बोला, "चोर कहीं का!"

रोब्सपीरी—दूसरी जून को यह आदमी फ्रान्स में पहुँच भी गया। अब अधिक उत्पात भी होने लगे। जो समाचार मुझे मिले हैं, उनसे पता चलता है कि वैण्डी वाले अब जंगलों में अधिक छापा मारेंगे। इधर अंगरेज लोग भी उनकी मदद के लिए तैयार हैं। वैण्डी वालों की तैयारी समाप्त होते ही अंगरेज उनकी मदद को पहुँच जायँगे। (नक्शे में समुद्र-तट पर उतरने के अनेक स्थलों को बतलाते हुए और उनमें अपनी तैयारी और मोरचेबन्दी की कमजोरी प्रकट करते हुए) यदि इस प्रकार अंगरेजी सेना हमारे समुद्र-तट के इन हिस्सों पर उतरी, क्योंकि यही हिस्से अँगरेजों के लिए सुविधा-जनक हैं, तो पन्द्रह दिन के भीतर ही हमारी भूमि पर हमारे शत्रुओ—अँगरेजों और वैण्डी वालों की मिलकर तीन लाख आदमियों की सेना हो जायगी और ब्रिटेनी प्रदेश पर फ्रान्स के राजा का अधिकार हो जायगा।

डेन्टन—अर्थात, इंगलैंड के राजा का अधिकार हो जायगा।

रोब्स—नहीं, फ्रान्स के राजा का अधिकार। फ्रान्स के राजा का अधिकार अधिक बुरा है। विदेशी लोग तो पन्द्रह दिन के भीतर देश के भीतर से निकाल बाहर किये जा सकते हैं, परन्तु राज-सत्ता को निकालते हुए आज अट्ठारह सौ वर्ष लग गये।

डेन्टन थोड़ी देर के लिए विचार-मग्न हो गया। फिर नक्शे पर हाथ पटक कर बोला, "रोब्सपीरी! जिस प्रकार अंगरेजों के लिए फ्रान्स में घुस आने का रास्ता है, क्या वैसे ही प्रुशा की सेना को पेरिस तक बढ़ आने का मार्ग प्राप्त नहीं था?"

रोब्स—तो?

डेन्टन—तो यह, कि जिस तरह ह० ने प्रुशा वालों को निकाल बाहर किया, उसी प्रकार हम, अंग्रेजों को भी धता बतलावेंगे।

रोब्सपीरी—डेन्टन! प्रुशा की बात और थी। फ्रान्स के किसी आदमी ने उसका साथ नहीं दिया था। अंग्रेजों की बात और है, ब्रिटेनी प्रान्त उसके साथ है। इसमें, और उसमें बड़ा भारी अन्तर है। वह तो था बाहर वालों से लड़ाई लड़ना, और यह है घर वालों ही से जूझना। अच्छा, डेन्टन! जरा बैठ जाओ। मेज पर घूंसे मत मारो। तनिक नक्शे की ओर देखो।

परन्तु, डेन्टन अपनी ही धुन में मस्त था। वह जोर से बोला, "जब विपत्ति पश्चिम में हो, तो उसे पूर्व में समझना पागलपन है। रोब्सपीरी! माना, 'इंगलैंड' समुद्र की तरफ से आ रहा है, तो स्पेन भी पर्व्वतों को लांघता हुआ बढ़ रहा है। इटली और जर्मनी भी तो धमकी दे रहे हैं। रूस भी तो उत्पात पर कमर कसे हुए है। खतरे चारों तरफ हैं, और हम उनके बीच में हैं। बाहर यह चण्डाल-चौकड़ी है और भीतर देश-द्रोही लोग हैं। उधर सेना का बुरा हाल है। सेनायें नष्ट-भ्रष्ट हो चुकीं। किसी भी सेना में पूरे चार सौ आदमी नहीं। सेनापति देश-द्रोही होते जा रहे हैं। बाहर वालों का बल बढ़ता जाता है, और वे हमारी भूमि पर कब्जा करते जाते हैं। यदि दशा यही रही, और हम कुछ भी न कर सके, तो कहना यह पड़ेगा कि फ्रान्स की राज-क्रान्ति फ्रान्स वालों के हित के लिए नहीं, किन्तु दूसरों के लाभ के लिए हुई। हमारी असफलता से प्रुशा को बहुत लाभ होगा, और उस समय कहना यह पड़ेगा कि प्रुशा के राजा के लाभ के लिए हमने फ्रान्स के राजा को मार डाला।"

यह कह कर डेन्टन भयंकर हँसी हँसा। मारे इस हँसी पर मुस्करा दिया और बोला, "तुम दोनों सनकी हो। डेन्टन! तुम्हें प्रुशा की सनक है, और रोब्सपीरी! तुम्हें वैण्डी की। तुम दोनों

को यथार्थ बात का कुछ पता नहीं। सब खराबियों की जड़ यह है कि पेरिस भर में इधर और उधर गली-गली में, अनेक प्रकार की राजनैतिक टोलियों के अड्डे कायम हो गये हैं। इन्हीं अड्डों में सारा विष तैयार होता है और देश भर में फैलता है। कितने ही अड्डे ऐसे हैं, जिनमें वर्तमान शासन-सत्ता के उखाड़ फेंकने की युक्तियां सोची जाया करती हैं। कई अड्डों पर राज-सत्ता को फिर से स्थापति करने और प्रजा-तंत्र को बदनाम करने के मंसूबे गाँठे जाते हैं। इस समय जो लोग आगे बढ़े से मालूम पड़ते हैं, उनकी टोलियां भी एक दूसरे को गिराने और परास्त करने और स्वयं सब कुछ बन-बैठने की घात में रहा करती हैं। यथार्थ में यही बातें सब से चिन्ताजनक होनी चाहिए।"

डेन्टन ने गुर्रा कर कहा, "मारे! तुमने अपने रूप का खूब बखान किया!"

मारे जल उठा। कर्कश स्वर से वह बोला, "ठीक है, नागरिक डेन्टन, ठीक है। तुम मेरे ऊपर पहले भी फब्तियां कस चुके हो, परन्तु मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। तुम्हें मेरे असली रूप का पता नहीं है। मैंने बड़ों बड़ों को धूल चटाई, और उनकी कलई खोल दी है। मैं उड़ती चिड़िया को पहचानता हूँ। देश-द्रोही को ऐसी चतुरता से भांप लेता हूँ, कि द्रोह करने के पहले ही वह चारों खाने चित्त हो जाता है। मेरी सूझ ऐसी है कि जो बात तुम्हें कल सूझेगी वह मुझे आज सूझती है। मैंने प्रजा-तंत्र की जो जो बड़ी बड़ी सेवायें की हैं, वे तुम्हें भली भाँति मालूम हैं। कठिन से कठिन अवसर पर मैंने शत्रुओं की सारी चालें यहाँ तक मट्टी में मिला दीं कि उन्हें छठी का दूध तक याद आ गया। इसीलिए तो मुझसे घर वाले भी बिगड़े रहते हैं और बाहर वाले भी। इंगलैंड और जर्मनी वाले चाहते हैं कि मुझे फ्रांस से निकाल दिया जाय या मेरा मुंह बन्द कर दिया जाय।

घर के कितने ही दुराचारी इस कोशिश में हैं, कि या तो कैद कर दिया जाऊं, या पागलखाने भेज दिया जाऊं। नागरिक डेन्टन! यदि मेरी खरी बातें अच्छी नहीं लगतीं तो तुमने मुझे यहाँ बुलाया ही क्यों था? क्या मैं यहाँ आने के लिए ठुनक रहा था? तुम्हारी और रोब्सपीरी की बातें सुनने का शौक मुझे तनिक भी नहीं था। मैं तो पहले ही जानता था कि तुम दोनों ऐसे हो कि मेरी बातों को समझ ही नहीं सकते। तुम्हें तो अभी राजनीति की वर्णमाला तक नहीं मामूम। बड़े खेद की बात है कि यहाँ कोई राजनीति-विशारद नहीं। मेरे कहने का तात्पर्य केवल यही है कि तुम दोनों धोके में हो! डर की बात न तो कोइ लन्दन से है और न बर्लिन ही से। जो कुछ डर है वह पेरिस ही से है। यहां एका नहीं। जिसे देखो वही अपनी तरफ खींच करता है। इन खींच करने वालों में तुम दोनों सब से अव्वल हो। खासी अन्धाधुन्धी फैली हुई है।"

डेन्टन बीच में टोक कर बोला, "अन्धाधुन्धी तुम्हीं करते हो।"

मारे ने डेन्टन की बात अनसुनी करते हुए कहा, "रोब्स पीरी, और डेन्टन! देश को जो खतरा है, वह इन्हीं गुट्टों, अड्डों और क्लबों से है। फसाद बढ़ाने वाले गुट्टों में तुम दोनों के भी गुट्ट हैं। अन्न-कष्ट और कागजी सिक्कों के कारण भी जनता में घोर असन्तोष है। नोटों की इतनी बे-कदरी बढ़ गई है कि पड़े हुए नोट को लोग यह कह कर उठाना तक नहीं चाहते कि उनका उठाना भी फजूल है। दलालों और माल भर लेने वालों की बन आई है। तुम लोगों का इधर कोई ध्यान ही नहीं। घर में आग लगी हुई है। तुम खतरे को बाहर ढूँढ़ते फिरते हो। तुम्हारे चारों तरफ षड्यंत्रों की रचना हो रही है। तुम्हें पता तक नहीं। मुझे रत्ती रत्ती बात का पता है।

तुम्हारे जासूस झक मारते हैं। रास्ते में लोग समाचार-पत्र पढ़ते हैं, और होने वाली घटनाओं पर सिर हिलाते हैं। लोग रोटियों के लिए मोहताज हैं! स्त्रियाँ अपने दर्वाजे पर खड़ी होती हैं, और कहती हैं, "शान्ति के दिन कब आवेंगे?" तुम अपने कार्यालय में बैठे बैठे समझते हो कि तुम्हारी बातें कार्यालय से बाहर जाती ही नहीं, परन्तु वहाँ बैठ कर तुम जो कुछ कहते हो वह बात गलियों तक में पहुँच जाती हैं। सिपाही नंगे पैरों फिरते हैं। पुरानी सत्ता के पक्षपाती आजाद होकर मूछों पर ताव देते फिरते हैं। जिन अच्छे घोड़ों को युद्ध की तोपों में जुतकर सरहद पर पहुँच जाना चाहिये था, लापरवाही के कारण, वे गलियों का कीचड़ छपछपाते फिरते हैं। रोटी और अन्न बेतरह महँगा हो गया है। थियेटरों में अश्लील खेल खेले जाते हैं। चालबाजियों का तो यह हाल है कि शीघ्र ही रोब्सपीरी, डेन्टन के गले पर छुरी चला देगा।"

डेन्टन बोला, "बहुत ठीक!"

रोब्सपीरी की नजर नक्शे ही पर डटी रही। मारे फिर बोला, "इस समय आवश्यकता इस बात की है कि एक आदमी को सब अधिकार दे दिये जायँ। रोब्सपीरी, तुम जानते हो कि मैं वर्तमान अवसर के लिए एक सर्वाधिकारी चाहता हूँ।"

रोब्सपीरी ने सिर उठाया, वह बोला, "मारे, मैं जानता हूँ, परन्तु सर्वाधिकारी हो कौन? तुम, या मैं?"

मारे—मैं, या तुम?

डेन्टन गुर्रा कर बोला, "सर्वाधिकारी बनाकर देखो, कैसा मजा पाते हो!"

मारे फिर बोला, "हमें आपस में समझौता कर लेना चाहिये, इस समय समझौता करने की जरूरत है। पहले भी ऐसा किया जा चुका है। बाहर से हमारे ऊपर आक्रमण हो रहे हैं। भीतर से

हमारे ऊपर छुरियाँ चल रही हैं। इस समय हमें फूट की नहीं, एकता की आवश्यकता है। एकता ही में हमारा कल्याण है। यदि हम देर करेंगे तो शत्रुओं की बन आवेगी। मेरी बात मानो। अन्त में वही सर्वाधिकार की बात आती है। क्रान्ति की हम त्रिमूर्ति हैं। हम तीनों में से एक बोलता है, अर्थात् रोब्सपीरी, तुम बोलते हो। एक गरजता है, अर्थात् डेन्टन, तुम गरजते हो।—

डेन्टन बीच में बात काट कर बोला, "एक काटता है, अर्थात् मारे, तुम काटते हो!"

रोब्सपीरी बोला, "तीनों काटते हैं!

इसके बाद सन्नाटा छा गया। तीनों मन ही मन कुछ सोचते रहे। मारे शान्त हो चला था, कि इतने ही में डेन्टन बोला, "मारे सर्वाधिकार और एकता की बातें बढ़ बढ़ कर मारता है, परन्तु उसमें केवल एक ही बात की लियाकत है, और वह यह कि जिस काम को वह अपने हाथ में ले उसका बंटाढार कर दे।"

मारे दृष्टि गाड़ कर डेन्टन से बोला, 'डेन्टन? मैं तुम्हें एक सलाह देता हूँ। तुम्हें इस समय प्रेम सूझा है। तुम विवाह करने का विचार कर रहे हो। इसलिए अब राजनैतिक झमेलों में अधिक न पड़ो। होश संभालो।"

यह कह कर व्यंगपूर्ण ढंग से दोनों का अभिवादन करता हुआ वह दरवाजे की ओर बढ़ा। डेन्टन और रोब्सपीरी सहम गये। इसी समय पीछे से एक आवाज आई, "मारे, तुम भूल करते हो।"

तीनों मुड़े। जिस समय मारे का क्रोध जोरों में था। उसी समय कमरे में एक आदमी और आ गया था। उसका आना किसी ने नहीं जाना था। मारे बोला, "नागरिक सिमोरडेन! तुम हो। आओ नमस्कार!"

सिमोरडेन आगे बढ़ा, और बोला, "मारे, तुम भूल करते हो। तुम उपयोगी हो, परन्तु रोब्सपीरी और डेन्टन भी आवश्यक हैं। फिर उन्हें तुम क्यों धमकाते हो ? नागरिकों! साधारण जनता तुम में एकता होने की आशा रखती है।

सिमोरडेन के आने से इन तीनों के झगड़े पर ठंढा पानी पड़ गया। डेन्टन और रोब्सपीरी ने उससे पूछा, "तुम यहां कैसे आ सके ?"

मारे बात काट कर बोला, "सिमोरडेन 'इवेशे' समिति का सदस्य है।"

यथार्थ बात यह थी कि मारे, इवेशे समिति के सिवा और किसी से नहीं डरता था।

डेन्टन बोला, "कोई हर्ज नहीं। नागारिक सिमोरडेन के आ जाने से कोई बाधा नहीं पड़ती। वे ठीक समय पर आये। इन्हें भी अपना झगड़ा सुनाना चाहिए, और इनसे राय लेनी चाहिए।"

सिमोरडेन गम्भीरता से बोला, "क्या झगड़ा है ?"

रोब्स०—वही वैण्डी का।

सिमो०—वैण्डी का! है तो यह बड़ा खतरा। यदि क्रान्ति असफल हुई तो उसकी असफलता वैण्डी ही के कारण होगी। एक वैण्डी दस जर्मनी से भी अधिक बलवान है। फ्रान्स की प्राण-रक्षा के लिए वैण्डी की हत्या आवश्यक है।"

अपने इन शब्दों से सिमोरडेन ने रोब्सपीरी का मन जीत लिया, तो भी रोब्सपीरी ने उससे पूछा, "तुम तो पहले धर्म्माचार्य्य थे न ?"

सिमोरडेन—हां।

डेन्टन बोला, "इससे क्या होता है ? जब धर्म्माचार्य्य लोग भले आदमी की तरह साथ देने लगते हैं, तब खूब ही साथ

देते हैं। इस क्रान्ति के युग में धर्माचार्यों ने भी उसी प्रकार नागरिकता का बाना धारण किया है, जिस प्रकार धातु की घंटियां गल कर तोप और तलवारें बन गई। बहुत से धर्माचार्य आज हमारे साथी हैं। राज सत्ता के मिटाने में उनमें से कितने ही लोगों ने हमारा बहुत साथ दिया।"

सिमोरडेन ने पूछा, "यह तो बतलाओ, इस समय वैण्डी में हो क्या रहा है?"

रोब्सपीरी वैण्डी को सेनापति मिल गया, और इसी लिए उसने और भी भयंकर रूप धारण कर लिया है।

सिमो०—नागरिक रोब्सपीरी, यह सेनापति कौन है ?

रोब्स०—मारकुइस लन्टेनक।

सिमो०—मैं उसे जानता हूँ। मैं उसके परिवार में पादड़ी का काम कर चुका हूँ। (सोचकर) पहले वह बहुत रंगीला था, परन्तु इस समय अवश्य ही वह बहुत भयानक होगा।

रोब्स०—भयानक भी कैसा कुछ! गांवों को जला देता है। घायलों को मार देता है। कैदियों को कत्ल कर देता है, और स्त्रियों तक पर गोली छुड़वा देता है।

सिमोरडेन – स्त्रियों तक के साथ यह व्यवहार ?

रोब्स—हाँ, अभी उसने एक ऐसी स्त्री को गोली से मरवा दिया जो तीन बच्चों की माँ थी। पता नहीं, वे बच्चे कहाँ गये? इसमें सन्देह नहीं कि वह अच्छा योद्धा है और युद्धकला में निपुण है।

सिमो०—यह सच है। वह युद्ध-कला खूब जानता है। बड़ी बड़ी लड़ाइयों में लड़ चुका है।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद रोब्सपीरी फिर बोला, "आज तीन सप्ताह से यह आदमी वैण्डी में है।"

सिमो०—उसे बागी करार देना चाहिए।

रोब्स०—ऐसा तो कर दिया गया।

सिमो०—उसके सिर के लिए भारी इनाम बोलना चाहिए।

रोब्स०—यह भी कर दिया गया।

सिमो०—जब वह पकड़ा जाय तब उसका सिर काटा जाय।

रोब्स० - यह भी हो जायगा।

सिमो०—कौन करेगा ?

रोब्स०—तुम।

सिमो०—मैं ?

रोब्स०—हाँ, तुम्हें इस काम के लिए अपरिमित अधिकार दिये जायेंगे।

सिमो० - अच्छी बात है, मुझे मंजूर है।

रोब्सपीरी को आदमी की बड़ी परख थी। उसने एक सफेद कागज निकाल लिया, और उस पर लिखने के लिए तैयार हुआ। सिमोरडेन बोला, "मैं स्वीकार करता हूँ कि मुकाबला बेढब का बेढब के साथ है। लन्टेनट भयंकर आदमी है। मैं भी वैसा ही हो जाऊंगा। अन्त तक उससे मेरा द्वन्द युद्ध होगा। ईश्वर ने चाहा तो लन्टेनक के हाथों से मैं प्रजातन्त्र का उद्धार करूंगा।

डेन्टन—ईश्वर तो अब पुराना पड़ गया, उसकी सत्ता अब नहीं रही।

डेन्टन के इस आक्षेप से सिमोरडेन तनिक भी विचलित नहीं हुआ। वह बोला, "मुझे ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास है।"

फिर, उसने घूम कर रोब्सपीरी से पूछा, "मुझे क्या करना होगा ?"

रोब्सपीरी · लन्टेनक के विरुद्ध जो सेना भेजी गई है उसके अध्यक्ष के साथ तुम्हें रहना पड़ेगा। हाँ, एक चेतावनी मैं तुम्हें देता हूँ। यह अध्यक्ष एक रईस है।

डेन्टन फिर बोला, "तो फिर, इससे क्या ? रईस ही सही।

रईस और धर्माचार्य तो एक ही तरह के हैं न? जब धर्माचार्य अच्छे, तो रईस भी अच्छे। बेजा पक्षपात न होना चाहिए। क्रान्तिकारियों में कितने ही बड़े बड़े रईस हैं। हमारे कार्यकर्ताओं में कितने ही बड़े बड़े रईस हैं। हमारी पंचायतों तक में रईस हैं।"

रोब्स०—ठीक है, मैंने आक्षेप नहीं किया था।

मारे—डेन्टन ने जो कुछ कहा वह ठीक है, परन्तु डेन्टन ही ने एक बार चिल्ला कर कहा था, कि जो रईस हैं, वे सब देश-द्रोही हैं।

सिमोरडेन गम्भीरता से बोला, "नागरिक डेन्टन, और नागरिक रोब्सपीरी, आपको यह अधिकार है कि आप रईसों पर विश्वास करें, परन्तु जनता का उन पर विश्वास नहीं, और जनता गलती भी नहीं करती। जब एक रईस के ऊपर चौकीदारी करने का काम एक धर्माचार्य को सौंपा जाता है, तब समस्या और भी जटिल हो जाती है, और धर्माचार्य के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह हर तरह से अटल और अविचल सिद्ध हो।"

रोब्स०—नागरिक सिमोरडेन, तुम ठीक कहते हो। तुम्हें एक युवक के ऊपर दृष्टि रखनी पड़ेगी। तुम्हारा दर्जा उससे ऊंचा होगा। तुम उसे आदेश दोगे, परन्तु होशियारी के साथ! जितने समाचार आये हैं, उन सबसे यही मालूम होता है कि वह युद्ध-कला में बहुत प्रवीण है। अभी तक उसका काम बहुत अच्छा रहा है। पन्द्रह दिन तक उसने मारकुइस लन्टेनक को रोक रक्खा। उसने उसे पीछे भी हटाया, और मालूम यह पड़ता है कि यह लन्टेनक को पीछे ही हटाता चला जायगा। परन्तु, लन्टेनक बहुत चालाक सैनिक है। इधर कुछ लोग इस युवक से ईर्षा भी करने लगे हैं, और चाहते हैं कि विजय युवक के हाथों से नहीं, हमारे हाथों से हो। सैनिकों की इस पारस्परिक ईर्षा के

कारण वैण्डी का युद्ध और भी भयंकर होता जा रहा है। सेना का ठीक ठीक संचालन नहीं होता। फौजें तितर-बितर हो गई हैं। आवश्यकता इस बात की है कि वैण्डी की सेनाओं का संचालन ठीक ठीक किया जाय और शत्रुओं के मंसूबे धूल में मिलाये जायं। इस युवक की वीरता पर 'मारने' का अध्यक्ष बहुत मुग्ध है। वह चाहता है कि युवक जनरल बना दिया जाय, परन्तु प्रजा-तन्त्र की सेना का अध्यक्ष युवक की इस वृद्धि से सन्तुष्ट नहीं। सिमोरडेन, यह युवक बहुत गुणवान मालूम होता है।

मारे बीच में बोल उठा, "उसमें एक दोष भी है।"

सिमोरडेन—यह क्या ?

मारे-वह दयालु है। युद्ध के समय वह दृढ़ रहता है। परन्तु, युद्ध के पश्चात वह दुर्बलता प्रकट करता है। वह दया दिखाता है, लोगों को क्षमा प्रकट कर देता है। साधु और साधुनियों को शरण देता है। रईसों की बहू-बेटियों को बचा देता है। कैदियों को छोड़ देता है। धर्माचार्यों को आजाद कर देता है।

सिमो०—बहुत बुरा करता है।

मारे—अपराध करता है।

डेन्टन—वह ऐसा कभी कभी करता होगा।

रा॰स०—बहुधा करता है।

मारे लगभग सदा करता है।

सिमो०—जब देश के शत्रुओं के साथ ये व्यवहार करना हो तो सदा......।

बात काट कर मारे बोला, "प्रजा-तंत्र पक्ष के उस सरदार के साथ तुम क्या व्यवहार करोगे, जो राज-तंत्र के किसी सरदार को पकड़ कर छोड़ दे ?"

सिमो०—मैं उसे गोली से मरवा दूंगा।

मारे—या, उसकी गर्दन कटवा दोगे।

सिमो०—इन दो में से उसे किसी एक सज़ा के पसन्द कर लेने की......।

डेन्टन हंस कर बोला, "मैं तो दोनों सजाओं को एक-सा समझता हूँ।"

मारे गुर्रा कर डेन्टन से बोला—"तुम्हें इन दोनों बातों में से एक जरूर नसीब होगी। (फिर सिमोरडेन से) तो नागरिक सिमोरडेन, यदि प्रजातंत्र का कोई नेता तुम्हें कर्तव्य-पथ से हिलते हुए मालूम पड़ेगा तो तुम उसका सिर उड़ा दोगे?"

सिमोरडेन—बेशक, चौबीस घंटे के अन्दर।

मा०—मैं रोब्सपीरी से सहमत हूँ। नागरिक सिमोरडेन ही को वैण्डी का काम सौंपना चाहिए।

डेन्टन बोला, "अच्छा है, रईस पर धर्माचार्य को अंकुश के रूप में रक्खो। यदि धर्माचार्य अकेला हो तो उस पर मुझे विश्वास न होता। दोनों साथ होंगे, इस लिए भय की कोई बात नहीं। एक दूसरे को ताकेंगे, और इस प्रकार इनकी खूब गुजरेगी।"

डेन्टन की बात की परवाह न करते हुए सिमोरडेन बोला, "जो सेनापति मुझे सौंपा जाता है, यदि उसने कोई भूल की तो उसे प्राण-दण्ड मिलेगा।"

रोब्सपीरी ने अपने कागजों पर दृष्टि डालते हुए कहा, "नागरिक सिमोरडेन, यह लो, उसका नाम भी मिल गया। जिस सेनापति के ऊपर तुम्हें पूरे अधिकार दिये जाते हैं, वह एक वाय-काउन्ट* है। उसका नाम गावेन है।"

---

* उपाधि-विशेष।

सिमोरडेन नाम सुन कर पीला पड़ गया। वह धीरे से बोला, "गावेन !"

मारे ने उसके चेहरे का पीलापन देखा। रोब्सपीरी ने सिमोरडेन को उत्तर दिया, "हाँ, वाय-काउन्ट गावेन ही !"

थोड़ी देर सन्नाटा रहा। उसके पश्चात मारे, जिसकी दृष्टि सिमोरडेन पर जमी हुई थी, कहा—"नागरिक सिमोरडेन, जो शर्तें तुमने कहीं क्या उन्हीं के अनुसार तुम सेनापति गावेन के नियंत्रण का भार अपने ऊपर लेने के लिए तैयार हो ?"

सिमोरडेन का चेहरा और भी पीला पड़ गया। उसने कहा, "हाँ, तैयार हूँ।"

रोब्सपीरी ने कलम उठा ली। सामने पड़े हुए कागज पर चार पंक्तियाँ लिखीं। फिर उस पर उसने अपने दस्तखत किये। कागज और कलम डेन्टन की तरफ बढ़ा दिया गया। डेन्टन ने भी दस्तखत कर दिये। मारे की दृष्टि अब भी सिमोरडेन के चेहरे पर थी। अन्त में, उसने भी दस्तखत किये। कागज सिमोरडेन को दे दिया गया। उसमें लिखा था :—

"समुद्रतट पर जो सेना है उसके सेनापति नागरिक गावेन के नियंत्रण करने का पूरा भार नागरिक सिमोरडेन को सम्पूर्ण अधिकारों के साथ प्रदान किया जाता है।"

(हस्ताक्षर)
रोब्सपीरी
डेन्टन
मारे

सब से नीचे तारीख थी—ता० २८ जून सन् १७९३।

जिस समय सिमोरडेन उस कागज को पढ़ रहा था, उस समय भी मारे की दृष्टि उस पर थी। रोब्सपीरी बोला, "अब

समय खोने की जरूरत नहीं नागरिक सिमोरडेन, कल तुम्हें बाकायदा आज्ञा-पत्र भी मिल जायगा। उसके आधार पर तुम्हें अपरमित अधिकार प्राप्त हो जायेंगे और जहाँ तुम जाओगे वहाँ तुम्हें सुविधायें प्राप्त होंगी। उसी के बल से तुम गावेन को सेनापति बना सकोगे और उसी के बल से तुम उसे फाँसी की टिकटी पर चढ़ा सकोगे। कल तीन बजे वह अधिकार-पत्र तुम्हें प्राप्त होगा। तुम कब रवाना होगे?"

सिमो०—चार बजे।

इसके बाद वे सब अपने अपने स्थान के लिए चल दिये।

फ्रान्स की जन-सभा

मनुष्य जाति के क्षितिज पर फ्रांस की जन-सभा से बढ़ कर ऊंची वस्तु कभी नहीं देखी गई। हिमालय की ऊंचाई एक ओर, और इस जन-सभा की दूसरी ओर। इतिहास में उसकी कोई तुलना नहीं। जब तक वह नजरों के सामने रही, मनुष्य ने नहीं समझा, कि वह है क्या ? तत्कालीन लोगों की दृष्टि उसकी महत्ता पर ठहर ही न सकी। महान् वस्तुओं के चारों ओर पवित्र भय का आवरण हुआ करता है। टीलों और पहाड़ियों पर मुग्ध होना आसान है, परन्तु किसी अत्यन्त विशाल वस्तु को, चाहे वह प्रतिभा का विकाश हो या पर्वत का ढेर, पास से देखते डर सा लगता है। बहुत ऊँचाई की चढ़ाई थका डालने वाली हुआ करती है। चढ़ाई साँस फुला देती है, और उसका ढलुआ उतार पैर फिसला देता है। पर्वत की निकली हुई तेज खुरदरी नोकें देखने में सुन्दर हो सकती हैं, परन्तु गिरने वाले के लिए वे त्रिशूल सदृश हैं। इसलिए ऐसे दृश्यों में हर्ष की अपेक्षा भय का समावेश अधिक होता है। इस प्रकार, भय का भूत प्रकाश के दृश्य को नेत्रों से ओझल कर देता है। मनुष्य को अन्धकार के दर्शन होते हैं, श्वेत संगमर्मर उसकी आँखों से छिप जाता है। आरम्भ में फ्रांस की जन-सभा के देखने और समझने में इसी प्रकार की भूलें हुई। उसकी नाप-जोख का काम उन्होंने किया, जिन्हें पास ही की वस्तु न सूझती थी, यद्यपि यह काम होना चाहिए था ऐसी दृष्टि से, जो गृद्ध-दृष्टि कही जा सकती। आज हम उसे दूर से देखते हैं, और उसके चेहरे-मोहरे पर

राज्य-क्रान्ति का पूरा चित्र अङ्कित पाते हैं। यह जन-सभा जनता का प्रथम अवतार थी। उसके ही द्वारा नये युग, या यों कहिए आज के भविष्यत् का आरम्भ हुआ। प्रत्येक भाव का कोई प्रत्यक्ष निरूपण होना चाहिए। सिद्धान्तों के निवास के लिए ऊपरी आवरण की आवश्कता होती है। मन्दिर क्या है? चार दीवारों के बीच में परमात्मा का रूप। प्रत्येक सिद्धान्त के लिए मन्दिर की आवश्यकता है। जब जन-सभा का रूप बन गया, तब यह आवश्यकता पड़ी कि अब उसे बसावें कहाँ? १० मई १७९३ से जन-सभा ने टूइलरीज के राज-महल में अपना आसन जमाया। महल के निचले भाग में, जिसके चारों ओर जन-सभा की रक्षा के लिए, सैनिकों की चौकियां थीं, एक चबूतरा बना दिया गया था, और दीवारों पर रंग-बिरंगे, सचित्र पर्दे लगा दिये गये थे। राजा के समय में, इस स्थान पर थियेटर हुआ करते थे। उसी स्थान का इस समय यह बे-ढंगा संवार हुआ। राज-पक्ष के लोग इस पर कहकहे लगाते थे। कहते थे, "सुअर बाड़ों से निकाल कर लगाये गये खम्भों, दफ्तियों से बनाई हुई महराबों, टाट के पर्दों से सजाई गई दीवारों का यह बेढंगा खेल किसी दिन चुटकी बजाते ही मिट जायगा!" परन्तु, ऐसा हुआ कुछ भी नहीं। फ्रान्स ने इसी खेल—इसी अस्थायी न्यायालय—को अमर मंदिर बना डाला।

जन-सभा के इस मन्दिर की दीवारों पर स्थान स्थान पर बहुत से वाक्य अङ्कित थे। उनमें से कुछ ये थे:—

"राजा लौट रहा है। कोई उसका सन्मान करेगा तो पीटा जावेगा, और कोई उसका अपमान करेगा तो फांसी पावेगा।"

"शान्ति! सिरों पर टोपियां रख लो। वह अपने जजों के सामने जा रहा है।

"राजा ने राष्ट्र को चौपट किया। उसने आग लगाई। अब राष्ट्र की बारी है।"

"कानून—केवल कानून !"

उसी स्थान पर, राजा लुई १६वें पर जन-सभा ने अपना फैसला सुनाया था।

इस बड़े कमरे के सम्बन्ध में छोटी सी छोटी बातें भी रोचक हैं। इसमें प्रवेश करते ही, दो खिडकियों के बीच में रक्खी हुई एक मूर्ति दिखलाई पड़ती थी। यह मूर्ति "स्वाधीनता" की थी। राजा के जमाने मे यह कमरा सजा हुआ था। १४० फीट लम्बा था, ३४ फीट चौड़ा, और ३७ फीट ऊँचा। वह राजा का रंग-मंच था। बड़े बड़े तमाशे और नाच-रंग उसमे हुआ करते थे। इस समय वह राज्य-क्रान्ति की क्रीड़ा का परम-क्षेत्र बन रहा था। इमारत की बनावट पुराने ढंग की थी। लकड़ी का काम बहुत था। एक बड़े और मोटे खम्भे पर कमरा सधा हुआ था। यह लकड़ी का खम्भा कुछ भद्दे ढंग का था। इसलिए पीछे से निकाल डाला गया, और उसका स्थान संगमर्मर के खम्भे ने ले लिया था। परन्तु लकड़ी के खम्भे की मजबूती का मुकाबला संगमर्मर के खम्भे से न हो सका, और वह बहुत दिनों तक न चला। कमरा चौकोर था। एक ओर, प्रतिनिधियों के बैठने के लिए अर्ध-चन्द्राकार बैठकें थीं। उनके सामने मेजें नहीं थीं। जो लोग लिखना चाहते थे, वे घुटनों पर कागज रख कर लिखा करते थे। सामने मंच था, और मंच के बीच में सभापति की कुर्सी। प्रतिनिधियों के स्थान मे ऊपर उठती ली जाने वाली १६ गेलरियां थीं, जिनके कारण ये चन्द्राकर बैठकें कमरे के ऊपर और नीचे के दो कोनों तक पहुँच जाती थीं। मंच के एक किनारे एक बड़े काले तख्ते पर कागज के तीन गज लम्बे दो पन्ने चिपके रहते, जिन पर मनुष्य के अधिकार की घोषणा

अङ्कित रहती। दूसरे कोने पर इसी प्रकार शासन-व्यवस्था की प्रति लटकी रहती। मंच पर ठीक उस स्थान के ऊपर, जहां से वक्ता भाषण किया करते थे, ऊपर छज्जा पर बैठने वाले दर्शकों के समीप, प्रजा-तन्त्र का तिरङ्गा झंडा एक ऐसी वेदी पर गड़ा रहता, जिस पर मोटे मोटे अक्षरों मे 'कानून' शब्द अङ्कित रहता। इसी वेदी के सामने प्रतिनिधियों की ओर मुँह किये हुए, और सभापति के दाहिने और बाएं, भाषण की स्वाधीनता और प्राचीन ग्रीस के स्वाधीन-चेता और नियम-रचयिता पुरुषों की मूर्तियां विराजमान थीं। इन मूर्तियों के सिरों पर फूलों और पत्तियों की मालायें पड़ी रहतीं। छज्जे से लेकर नीचे तक दीवारों पर पर्दे लटके रहते, और ऊपर की दीवार खुली और चूने से पुती रहती। कमरे के दोनों ओर, दर्शकों के लिए दस दस छज्जे और दो बड़े बाक्स थे। इनमें बड़ी भीड़ होती। नीचे वाले छज्जे पर जब बहुत भीड़ हो जाती तब बड़ी खींचा-तानी होती, और लोग आगे बढ़े रहने के लिए एक दूसरे पर टूट पड़ा करते। उनके साधने के लिए लोहे की छड़ें लगी हुई थीं, परन्तु इतने पर भी कभी कभी ऊपर से आदमी नीचे गिर पड़ा करते। एक बार एक आदमी सिर के बल ऊपर से गिरा। वह नीचे एक 'बिशप' (बड़े पादड़ी) की पीठ पर गिर पड़ा। इस प्रकार उसकी खोपड़ी फटने से बच गई। झाड़-पोंछ कर वह बोला, "भाई, खूब अब मालूम हुआ कि बिशप लोग भी कभी कभी अच्छे काम आ जाते हैं।"

इस कमरे में दो हजार आदमी मजे से बैठ सकते थे। उन दिनों तो उसमें तीन तीन हजार आदमी बैठा करते। जन-सभा की बैठक दो बार हुआ करती, एक तो दिन में और दूसरी रात को। सभापति की मेज के चारों कोने चार राक्षसों की मूर्तियों द्वारा सधे हुए थे। अन्त में, ये चारों मूर्तियां एक में मिल गई थीं, और इस प्रकार मेज केवल एक ही पाये पर सधी हुई थी।

मेज पर एक बड़ी भारी घंटी रक्खी रहती। पीतल की दावात और कुछ कागज भी सदा रहते। कभी कभी इस मेज पर ताजे कटे हुए सिर भी बर्छियों की नोकों पर लाये जा कर रक्खे जाते, और इस प्रकार मेज पर ताजे खून का छिड़काव भी कभी कभी हो जाया करता। मंच पर पहुँचने के लिए नौ सीढ़ियां थीं। सीढ़ियां ऊंची थीं और बहुधा लोगों को उन पर चढ़ने में दिक्कत पड़ा करती। एक बार इन सीढ़ियों पर चढ़ते हुए एक आदमी ने कहा था, "यह तो फांसी की टिकटी से भी बढ़ कर है?" पास ही बैठे हुए एक दूसरे आदमी ने उत्तर दिया "जरा सब्र करो, अभी उसकी उम्मेदवारी ही का दर्जा है।" मेज के दायें, आठ आठ लेम्पों का एक खम्भा था। इस कमरे में जन-सभा की अदालत बैठा करती। अन्य कामों के लिए, पास ही अलग अलग स्थान थे। इस कमरे की बनावट, या उसके राज-नैतिक महत्व को छोड़ देने पर भी, उसमें कुछ बात ऐसी अवश्य थी, जिसकी चिन्तना मात्र से कलेजा काँप उठता था। एक समय था कि यह स्थान इन्द्र का नन्दन-वन था। सुख और बिलासिता की समस्त सामग्रियां यहाँ एकत्रित थीं। नाच रङ्ग यहां होते थे। गद्दे-तकिये यहां बिछे थे। छत सजी हुई थी, और दीवारें सुन्दर थीं। चारों ओर हीरे-पीन्ने की चमम-दमक थी। रेशमी और मखमली वस्त्रों की सजावट थी। पर्दों और कोनों में परियों और कामनियों के चित-चुराने वाले चित्र और मूर्तियां थीं। सुनहले और रुपहले विलासितामय राजसी ठाठ-बाट की सुन्दर आभा, इस रमणीक स्थान पर मुग्धकारी मुसक्यान द्वारा, अपना सिक्का जमाये हुए थी! परन्तु, जिस समय का जिक्र है, उस समय पुराने रंग-ढंग बदल गये थे। उसी भूमि पर, हर जगह एक ऐसी कठोर अवस्था का राज्य हो गया था, जो इस्पात से भी अधिक कठोर और शान्त होती है।

परन्तु जो लोग जन-सभा को देखते थे, वे उसके इस मन्दिर को भूल जाते थे। नाटक, नाट्य-शाला से भी कहीं अधिक मन-मोहक था। उसमें जो ऊधम मचता, उससे बढ़ कर ऊधम हो ही नहीं सकता था। साथ ही वहां जैसी निर्मलता का राज्य था, उससे बढ़ कर निर्मलता कहीं मिल ही नहीं सकती। एक भीड़ थी वीरों की, एक झुण्ड था कायरों का। आदमी क्या थे, पहाड़ों पर छलांगें मारने वाले हिरन थे, और दलदलों में रपटने वाले सांप। लड़ाके ऐसे कि एक दूसरे को धक्का देते, लड़ाई का न्योता देते फिरते, धमकी देते, लड़ते और फिर भी साथ ही बने रहते। आज उनकी बातें स्वप्न की सी हैं। दाहिने हाथ वे बैठते जिन्हें अपने बुद्धि-बल का गर्व था, और बाईं ओर वे, जो अपने शारीरिक बल पर ऐंठते थे। एक ओर बैठते थे 'ब्रिसो', जिसने बेस्टाइल के उस जेल को फतह किया था, जिसमें राज-बंश के कोप में पड़ने वाले लोग घुट घुट कर मर जाया करते थे; 'जेनसेनो', जिसने सभापतियों तक पर प्रजा के प्रतिनिधियों की सत्ता कायम की; भीषण 'गाडे', जिसे रानी ने एक दिन अपने सोते हुए बच्चे को दिखलाया था, और जिसने उस समय युव-राज के माथे को आदर से चूमा था, परन्तु अन्त में युवराज के पिता, अर्थात् राजा के सिर को धड़ से उड़वा दिया था; 'कुइ-नेट', जिसने राजा लुई १६वें के शासन का अन्त किया था; 'लासोर्स', जिसने एक बार भाषण करते हुए कहा था कि, जो राष्ट्र कृतघ्न हों उन्हें धिक्कार, और जिसे अन्त में फांसी चढ़ते समय अपने विपक्षियों पर ताने फेंकते हुए इस वाक्य का इस प्रकार खण्डन करना पड़ा था, कि "आज हम मारे जाते हैं, और यह इसलिए, कि हमारा राष्ट्र गहरी निद्रा में अचेत है। याद रक्खो, तुम भी मारे जाओगे, परन्तु हमारी भांति नहीं, क्योंकि जनता उस समय तक जाग चुकेगी, और वह तुम्हें मारेगी।"

लेखक 'मर्सियर', जिसका यह वाक्य प्रसिद्ध था, "२१ जनवरी को सभी राजा इस बात के देखने के लिए कि हमारे धड़ पर सिर बाकी है या नहीं, अपनी अपनी गर्दन टटोलते थे"; और इसी प्रकार अन्य बीसियों आदमी। दूसरी ओर बैठते थे 'लेवोन', जो पादड़ी था, जिसके एक हाथ में सदा कटारी रहा करती और उस पर गिरजा-घर का पवित्र पानी छिड़का रहता; 'बोरनेस' जिसका कहना था कि अब न्यायालय ऐसे होने चाहिए कि उनमें न्याय-कर्ता होवें ही नहीं; 'इंगलेटाइन' जिसने प्रजा-पत्र के लिए नया पंचांग रचा था; 'अटार्नी मेनुएल' जो कहा करता था कि राजा मर भी जाय, तो भी वह जीते आदमी से कम नहीं होता; 'जेगो' जिससे, जब यह शिकायत की गई कि कैदियों के पास कपड़े बहुत कम हैं, और वे नंगे रहते हैं, तब बोला, "कैदखाना स्वयं पत्थर की पोशाक है"; 'कोलोर्न,' जो, जिस समय स्पेन के राजा ने फ्रांस के राजा लुई के पक्ष में एक पत्र भेजा, तो चिल्ला पड़ा, "जन-सभा को एक राजा के पक्ष में लिखे गये एक राजा के पत्र को पढ़ना तक न चाहिए"; 'अमार' जिसने कहा था "संसार भर लुई को अपराधी ठहराता है, फिर उसकी अपील होगी कहाँ, क्या तारामण्डल में ?" 'रोगर' जिसने लुई के फाँसी पाते समय तोपों के चलाये जाने का इसलिए विरोध किया था कि भूमि पर गिरते समय राजा के सिर को साधारण आदमी के सिर से अधिक शोर मचाने का कोई अधिकार नहीं है, 'जेनीसो, जिसने जन-सभा से उन सभी के लिये मृत्यु-दण्ड चाहा था जो लुई को शहीद समझते थे; 'रोबेंरे' जो केवल बदमाशी ही के लिए बदमाश था, क्योंकि वह बदमाशी की कला की बड़ी कदर किया करता था; 'चार्लियर' जो कहता था कि कुलीनों के सम्बोधन के लिए ही 'तुम' शब्द सुरक्षित कर दिया जाय और इस शब्द को बहुत हीन समझा जाय; और

इसी प्रकार के अन्य बीसियों आदमी, जिनमें कुलीन, व्यापारी, लेखक, धनवान, नास्तिक और धार्म्मिक सभी प्रकार के लोग थे। इस दल का सरदार था डेन्टन। रोब्सपीरी इन दोनों दलों से अलग था, परन्तु उसकी धाक दोनों पर थी।

ये तो महारथी लोग थे। परन्तु, इनके अतिरिक्त भी जन-साधारण था, जो हिचकिचाहट, और खींचातानी, इन्तजार और सुभीते के फेर में पड़ा रहता। सीये नाम का आदमी इस प्रकार के आदमियों का मुखिया था। वह रोब्सपीरी को 'चीता' कहता। रोब्सपीरी उसे 'मक्खी' के नाम से पुकारता। सीये समझ-बूझ कर कदम रखता। वह क्रान्ति का सेवक नहीं था, वह उसका दरबारी था। आगे बढ़ने वालों के साथ आगे बढ़ जाता, और उत्साह की बातें करता; परन्तु अपना पल्ला सदा बचाये रखता, और उत्साह के काम स्वयं कभी न करता। कुछ लोग ऐसी समझदारी पसंद करते हैं जो समय पड़ने पर खम् ठोक कर आगे बढ़ा दे, और कुछ लोग इस प्रकार की समझदारी के कायल होते हैं कि काम पड़ने पर अपनी रक्षा का पहले ध्यान रक्खा जाय। सीये पिछले ढंग का आदमी था। सीये के दल से भी निकृष्ट एक और दल था। इसका हाल चमगीदड़ों का सा था। उत्कंठा से उसका सिर सदा उठा रहता। जहा। उसे आशा की मृग-मरीचिका दिखाई पड़ती, उधर ही वह झुक जाता। लज्जा और दृढ़ता का उससे कोई सरोकार न था। राज-पक्ष में कुछ बल आते देखता, बस, सफलता का भावी आगमन उधर ही समझ कर राज-पक्ष की तरफ हो जाता। राज-पक्ष मिट गया, तो तुरन्त क्रान्तिकारियों के पैरों पड़ने लगा। क्रान्तिकारियों के दल में जिसको आगे बढ़ा हुआ देखा, उसी की जय-जयकार बोलने लगा। उसने जिसे गिरते हुए देखा, उसे दो धक्के और लगा कर वह विजयी दल के साथ हो लिया। इस दल की

संख्या काफी थी। उसके आदमियों में बल था और उनमें थी कायरता।

जन-सभा के आदमियों की खूबियाँ भी उल्लेखनीय हैं। उनमें से बहुत से ऐसे थे जो कल्पना शक्ति द्वारा बड़ी दूर की कौड़ी लाते थे। सभी प्रकार की होनी और अनहोनी बातों की कल्पनायें उनके दिमागों में चक्कर खाती रहतीं। निर्दयता का इतना राज्य था कि फाँसी की टिकटी में सुधार करने की अनेक तरकीबें सोची जातीं, और दया भी इतनी कि सख्त सजाओं के उड़ा देने के मंसूबे गांठे जाते। कहीं लड़ाई की बातें सोची जातीं, और कहीं संसार भर में शान्ति के राज्य की स्थापना की। कुछ लोग बक्की थे और व्याख्यान दे दे कर कमरे को गुंजाया करते, तो कुछ ऐसे थे जो सोच-विचार ही में अपना समय खर्च करते। 'लेकानल' सदा चुप रहा, परन्तु उसने राष्ट्रीय-शिक्षा-प्रणाली पर खूब विचार किया। 'लेथीनेस' भी चुप रहा, और उसने प्रारम्भिक शिक्षा के लिए जगह जगह पाठशालायें कायम करा दीं। 'लीपो' चुपचाप यही सोचता रहा कि दर्शन-शास्त्र और धर्म के सिद्धान्तों में एकता कैसे उत्पन्न कर दी जाय। इसी प्रकार एक महाशय, चिकित्सालयों की स्थापना की बात, और दूसरे नौकरी के पेशे के बिल्कुल उड़ा देने की बात पर विचार करते रहे। तीसरा विचार करता रहा कि कर्जदारों को जेल में न भेजा जाना चाहिए। चौथा इस पर कि शीघ्र ही शल्य-चिकित्सा और प्राणी-शास्त्र की प्रदर्शनियां और विभाग स्थापित किये जायं। पाँचवाँ इस पर कि नदियों में जहाज चलाये जाने चाहिए। 'बेजार्ड' चित्र-कला का प्रेमी था। इधर लुई का सिर काटा जा रहा था, उधर वह एक नाले में पड़ी पाई गई एक तसवीर की जांच कर रहा था और सोच रहा था कि अब चित्र-कला की

किस प्रकार उन्नति हो। इसी प्रकार सभी के सामने, चाहे कोई कलावान रहा हो, या वक्ता, सिपाही रहा हो, या दार्शनिक, बस, एक ही खयाल था, और वह यह कि उन्नति किस प्रकार हो? इसमें किसी का मत-भेद नहीं था। जन-सभा उनकी तत्परता, उनकी सच्चाई की कसौटी थी। एक ओर रोब्सपीरी था, जो सदा 'कानून' की पाबन्दी पर जोर देता, और दूसरी ओर कोंडरसेट, जिसकी दृष्टि का लक्ष्य था, 'कर्तव्य'। कोंडरसेट भक्त और विद्वान था। रोब्सपीरी कर्मवीर था। वह काम चाहता था, और कभी कभी बहुत समय खो चुकने वाली आज्ञाओं के पालनार्थ प्रदर्शित की गई उसकी क्रिया-शीलता का अर्थ विनाश हुआ करता था। क्रान्ति की लहर के दो रूप होते हैं, उतार और चढ़ाव। इन्हीं पर सभी ऋतुओं की वस्तुएं तैरती हैं—वसन्त के पुष्पों से लेकर शिशिर के हिम-कण तक। इन्हीं के अनुसार आदमी उत्पन्न होते और बनते रहते हैं, ऐसे आदमियों से लेकर जो सूर्य-ताप के प्रेमी होते हैं और ऐसे तक जो बिजलियों के प्रहार के समय तक दृढ़ रहते हैं।

स्थान के साथ किसी किसी घटना का बड़ा ही घना सम्बन्ध होता है। फ्रान्स की इस जन-सभा का भी सम्बन्ध एक विशेष घटना से बहुत गहरा था। लोग उंगलियों के इशारे से उस कोने को दिखाया करते जहां बैठ कर जनता के सात प्रतिनिधियों ने सब से पहले लगातार राजा लुई को मृत्यु-दण्ड की आज्ञा सुनाई थी। सात बार, निस्तब्ध वायुमण्डल में केवल 'मृत्यु-दण्ड' शब्द का उच्चारण कितना गम्भीर रहा होगा! इतिहास अमर-ध्वनि से न्यायालय की दीवारों से कब्रस्तान या श्मशान-भूमि की ध्वनि की गूँज टकराया करती है। जन-सभा के जिन जिन आदमियों ने राजा को मृत्यु-दण्ड देते समय जिन जिन वाक्यों को अपने मुँह से निकाला था, लोग स्थान की ओर उंगली का संकेत कर के

उन्हें दोहराया करते थे। पगनेल ने कहा था, "मृत्यु-दण्ड! अब राजा केवल मृत्यु-दण्ड पा कर ही उपयोगी बन सकता है।" मिलो ने कहा था, "यदि आज संसार में मृत्यु का अस्तित्व नहीं है, तो यह आवश्यक है, कि उसका आविष्कार किया जाय।" थूरियों ने राजा की ओर से की जाने वाली अपील को खारिज करते हुए कहा था, "जनता की सेवा में अपील करने का यह अर्थ होगा, कि लुई का सिर धराशायी होने के पहले ही श्वेत हो जाय, (अर्थात् इतना समय बीत जाय कि राजा बूढ़ा हो जाय, और उसके बाल सफेद हो जायँ।)" आगस्टिन राब्सपीरी ने, जो रोब्सपीरी का भाई था, कहा था, "मैं उस मनुष्यता को नहीं पहचानता जो जनता की हत्या करती है और स्वेच्छाचारियों को क्षमा। मृत्यु-दण्ड! मृत्यु-दण्ड को रोकना जनता के सामने अपील करने की जगह जालिमों के सामने अपील करना है।" सेंट-थोर ने कहा था, "मुझे रक्त-पात से घृणा है, परन्तु राजा का रक्त मनुष्य का रक्त नहीं है, इसलिए, मृत्यु-दण्ड।" सेंट आंद्रे ने कहा था, "जालिम के मरे बिना कोई जाति अपने को आजाद नही कह सकती।" लवी-कोमटेरी ने कहा था, "जब तक जालिम सांसें लेता है तब तक स्वाधीनता का गला घुटता है, इसलिए, मृत्यु-दण्ड!" टेलियर ने कहा था, "शत्रुओं पर चलाने के लिए तोप के जो गोले बनाए जायँ वे लुई के सिर के बराबर हों।" दयालु जेंटिल ने कहा था, "मैं कैद का फतवा देता हूँ, क्योंकि लुई को इंगलैंड का चार्ल्स प्रथम बनाना अपने देश में क्रामवेल की रचना करना है।" बनकल ने कहा था, "लुई को देशनिकाला दो, मै संसार के इस पहिले राजा को अपनी जीविका के लिए इधर उधर मेहनत करते-फिरते देखना चाहता हूँ।" अलबोई ने कहा था, "मैं भी देशनिकाले की राय देता हूँ। यह जिन्दा भूत संसार के राजाओं के बीच मँडराता

फिरे।" चैलन ने कहा था, "इसे मारो मत, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मौत के बाद लोग उसे सन्त समझ कर पूजने लगें।"

जिस समय ये कठोर व्यवस्थायें निकल निकल कर इतिहास में अङ्कित हो रही थीं, उस समय जन-सभा में छज्जों पर बैठे हुए दर्शकों में से खूब ओढ़-पहन कर आनेवाली स्त्रियों में से अनेक मृत्यु-दण्ड के वोटों को आलपीन से निशान लगा कर गिन रही थीं।

जन सभा किसी भी समय देखी जाती, राजा के मुकद्दमे की घटना ताजा हो जाया करती। २१ जनवरी की इस घटना का समावेश जन-सभा-मन्दिर के कोने कोने तक में था। शक्तिशालिनी जन-सभा उन श्वासों से परिपूर्ण थी जिन्होंने १२ शताब्दियों से बराबर जलती रहने वाली राज-सत्ता रूपी दीपशिखा को फूंक कर बुझा दिया था। भूतकाल के विरुद्ध यह महायुद्ध छिड़ा था। लुई के रूप मे संसार भर के राजा जनता की अदालत में आज्ञा पाने के लिए खड़े हुए थे। लुई पर दण्ड की आज्ञा का होना उन सब पर उसका होना था। इस लड़ाई मे, यह घटना अत्यन्त महत्व की और गहरा निपटारा करानेवाली, थी। जन-सभा की कोई भी बैठक देखी जाती, उसके अन्तरतर मे लुई के फाँसी पर टंगे होने की छाया पड़ी सी दिखाई पड़ती। वह समय नेत्रों के सामने फिर जाता। दर्शकों का वह हजूम था कि कुछ ठिकाना नहीं। एक प्रतिनिधि बहुत बीमार था, परन्तु मृत्यु-शय्या पर पड़ा हुआ जन-सभा में लाया गया और राजा को मृत्यु-दण्ड का वोट देने के कुछ काल बाद चल बसा। इस अदालत की बैठक ३७ घंटे तक हुई थी। लोग बेतरह थक गये थे। एक प्रतिनिधि इतना थक गया था कि अपने स्थान पर बैठे बैठे सो गया। जब वोट देने के समय

जगाया गया, तब अधखुली आंखों से देखते हुए, बैठे बैठे ही 'मृत्यु' शब्द मुंह से निकाल कर फिर सो गया।

लोग जन-सभा की कार्रवाई बड़े शौक से देखा करते थे। छज्जों पर बड़ी भीड़ होती। ऐसे अवसरों पर जनता और जन-सभा के प्रतिनिधियों में खूब बातें हुआ करतीं। लोग डेपुटेशन लेकर पहुँचा करते और जन-सभा के सामने अपनी भेंट, या प्रार्थना-पत्र पेश करते। देहातों के प्रतिनिधि बहुत सा लोहा-लंगड़ और सोने-चांदी के गहने लेकर आते। उनकी वह भेंट देश के लिए होती। कोई किसी देश-भक्त की मूर्ति लेकर आता, और कहीं की स्त्रियां, प्रतिनिधियों पर झोली भर भर कर फूल बरसातीं। गांवों से लोग गाजे-बाजे के साथ जन-सभा को देश की सुख-शान्ति पर धन्यवाद देने आते। स्त्रियां गुलाब के फूलों की भेंटें देतीं और प्रतिनिधियों के सिरों पर पत्तियों की मालायें डालतीं। कभी कभी कुमारी लड़कियां आतीं और सभा-भवन में कसमें खातीं कि हम जब विवाह करेंगी, तब प्रजा-तन्त्र चाहने वाले पुरुषों ही के साथ करेंगी। अनाथ और वर्ण-संकरी बच्चे राष्ट्रीय पोशाक पहन कर आते। वे प्रजा-तन्त्र की सन्तति के नाम से पुकारे जाते। वक्ता लोग जनता का झुक झुक कर अभिवादन करते और बहुधा उसकी खुशामद में कहते, "हे जनता! तू निर्भ्रान्त है, तू निर्विकार है, तू निर्म्मल है!" जनता की रुचि बालकों की रुचि के सदृश होती है उसे मिश्री के से ये डले बहुत भाते।

क्रान्ति के बाद जन-सभा ने सभ्यता का कार्य आरम्भ किया। अग्नि की इस भट्ठी से रचना का काम हो चला। इस देग में जिसकी खलबलाहट त्रास के रूप में प्रकट होती थी, उन्नति का उफान आया। अन्धकार के इस गोलमाल से, बादलों की इस अनियमित भगदड़ के बीच से प्रस्फुटित हो

कर, सनातन नियमों की तुलना करने वाली अनेकानेक प्रकाश-किरणें फैल गईं—ऐसी किरणें, जो क्षितिज पर बनी रह कर मनुष्य जाति को सदा दृष्टिगोचर होती रही हैं और जो इन नामों से विख्यात हैं—"न्याय, उदारता, सदाचार, सत्य और प्रेम।" जन-सभा ने इस सिद्धान्त की रचना की :—"प्रत्येक नागरिक की स्वाधीनता वहां समाप्त होती है जहाँ कि दूसरे नागरिक की स्वाधीनता का आरम्भ होता है।" इन्हीं दो पंक्तियों में सारे मानव शास्त्रों का तत्व आ गया। जन-सभा ने दरिद्रता को पवित्र माना। गूंगे, बहरे और अंधों की निर्बलता पवित्र मानी गई और राष्ट्र उनका संरक्षक करार दिया गया। मातृत्व पवित्र माना गया। माताओं में, जिनके प्रति स्नेह प्रकट करने और जिनकी उन्नति करने का भार राष्ट्र ने अपने ऊपर लिया। अनाथ बच्चे देश के बच्चे माने गये। निर्दोषिता का आदर हुआ, और जब अभियुक्त निर्दोष छुटा, तब उसे हरजाना दिया गया। गुलामी उठा दी गई और मुफ्त शिक्षा की घोषणा कर दी गई। संगीतालय और अजायबघर रचे गये। एक प्रकार के कानून और एक प्रकार के व्यवहार का जन्म हुआ। देश भर में एक प्रकार का वजन और एक प्रकार का हिसाब जारी हुआ। फ्रान्स की आर्थिक अवस्था सुधारी गई। राज-सत्ता के समय के दीवालियेपन से छुट्टी पाकर प्रजा-तन्त्र ने अपनी साख बाजार में बढ़ाई। अपाहिजों के लिए खैरातखाने बने और बीमारों के लिए अस्पताल। शिक्षा के लिए स्कूल और विज्ञानशालायें बनीं। जन-सभा ने ११,२१० आज्ञायें निकालीं, इनमें एक तिहाई राजनैतिक मामलों पर थीं और शेष दो-तिहाई लोक-कल्याण के कामों के लिए। सभा ने घोषणा की कि सार्व-देशिक सदाचार ही समाज का आधार है और सार्व-देशिक विवेक ही कानून का आधार। इस प्रकार जन-सभा ने दासता की जड़

उखाड़ी, भ्रातृत्व की घोषणा की, मनुष्यता की रक्षा की, मानव-विवेक का संशोधन किया, हाथ के परिश्रम को ठीक और श्लाघनीय बनाया, राष्ट्रीय सम्पत्ति की वृद्धि की, देश के बालकों की शिक्षा और उन्नति की व्यवस्था की, कला और विज्ञान की चर्चा बढ़ाई और सभी जगह प्रकाश की चमक पहुँचाई। उसने कष्टों को दूर किया और अपने सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया और यह सब ऐसी हालत में, जब वैण्डी के किसान रूपी सर्प उसके पेट में और अन्य राजाओं के रूप में चीतों का झुन्ड उसके चारों ओर पूरा ऊधम जोते हुए था।

जन-सभा के लोग आपस में खूब नोक-झोंक करते थे। एक बार रोब्सपीरी बोल रहा था। पीशन चिल्ला पड़ा, "रोब्सपीरी, कहाँ बहके जाते हो? अपने ठिकाने पर आओ।"

रोब्सपीरी ने उत्तर दिया, "मेरी बात तुम्हारे ही सम्बन्ध में है। घबड़ाते क्यों हो? मैं उसी पर तो आता ही हूँ।"

इतने ही में कोई चिल्ला पड़ा, "मारे मर जाय!"

मारे बोला, "जिस दिन मारे मर जायगा, उस दिन पेरिस नहीं रह सकेगा और जिस दिन पेरिस नहीं रहेगा, उस दिन प्रजा-तंत्र नहीं रहेगा!"

इतने ही में एक प्रतिनिधि खड़ा हो गया और बोला, "हम चाहते हैं......।"

दूसरे ने उसे यह कह तुरन्त रोक दिया, "तू तो राजाओं के ढंग से बोलता है......।"

लोग आपस में एक दूसरे को "तू" और "तेरा" शब्द से सम्बोधन किया करते थे।

एक दिन की घटना और सुनिए। किसी ने चिल्ला कर कहा, "देखिए, अमुक मनुष्य ने मेरे ऊपर तलवार खींची।"

दूसरे ने कहा, "सभापति महोदय, हत्या करने की इच्छा करनेवाले व्यक्ति से शान्त रहने के लिए कहिए।"

सभापति ने कहा, "ठहरो।"

इतने में एक तीसरा आदमी बोल पड़ा, "मैं सभापति से शान्त रहने रहने के लिए कहता हूँ।"

इस पर जोर से कहकहा पड़ा।

इतने में एक बोला, "अमुक पादड़ी शिकायत करता है कि उसका विशप (बड़ा पादड़ी) उसे ब्याह नहीं करने देता।" दूसरे ने हाँक दी, "हें, विशप को यह हिम्मत ? खुद तो रखेलियाँ रखता फिरे, और दूसरों को ब्याह तक नहीं करने देता ?"

तीसरे ने आवाज लगाई, पादड़ी साहब, किस फेर में पड़े हो। जाओ, ब्याह कर डालो!"

एक दिन, किसी मामले पर, रोब्सपीरी बड़े जोश से भाषण कर रहा था। कभी वह डेन्टन की ओर सीधे देखता, और कभी तिरछी नजरें फेंकता। अन्त में, धमकी के ढंग से उसने अपने भाषण का इस प्रकार से अन्त किया, "षड़यन्त्र-कारियों का पता लग गया है। बिगाड़ने वालों और बिगड़ने-वालों, दोनों का पता लगा है। देशद्रोहियों का पता लग गया है। वे इसी सभा में हैं। वे हमारी बातें सुन रहे हैं। हम उन्हें देख रहे हैं, और उन पर से अपनी नजर नहीं हटाते। उन्हें अपने ऊपर कानून का खञ्जर लटका दिखाई पड़ेगा। वे अपने हृदय की ओर तो तनिक देखें। उन्हें वह कलंकित दिखाई पड़ेगा। मैं उन्हें सचेत रहने की सूचना देता हूँ।"

डेन्टन चुपचाप सुनता रहा। जब भाषण समाप्त हुआ, तब छत की ओर आंखें किये, बेंच पर पीठ के बल अंगड़ाई लेते हुए और एक हाथ भूमि की ओर झुकाये हुए, एक पद्य गुनगुनाने

लगा, जिसका अर्थ यह था, "टें-टें तो बहुत की, परन्तु हाथ लंगड़ी बटेर भी न लगी।"

इसी प्रकार एक दूसरे पर फब्तियां उड़ाते थे। कभी कोई किसी को 'हत्यारा', 'देशद्रोही', कहता और कभी कोई किसी को षड़यंत्रकारी' और 'जालिया' बताता। घूर घूर कर देखना, घूँसा दिखाना, सिर हिलाना और मुँह बिराना, खंजर और पिस्तोलें खींच लेना भी साधारण बातें थीं।

ये आत्मायें थीं जो विभूति-सम्पन्न बयार के डुलाये डोलती थीं। जन-सभा का मेम्बर होना समुद्र की लहर होना था। बड़े से बड़ों का यही हाल था। हाला-डोला ऊपर से आता था। जन-सभा की जो शक्ति थी, वह थी सब की, किसी एक की नहीं। क्रान्ति इस शक्ति का रूप थी। आकाश की चोटी से लेकर पाताल के तल तक, यह अदम्य और अनन्त शक्ति व्यापी हुई हुई थी। जब उसकी लहर चलती तो कोई ऊपर उठता और कोई नीचे गिरता, किसी को वह लहरों में बहा ले जाती और किसी को कगार पर उठा कर डाल देती। यह शक्ति जानती थी कि वह किधर जाती है और भँवर को किधर बहाये लिए जाती है। क्रान्ति को मनुष्य की इच्छा का रूप समझना ज्वार-भाटे की लहरों को इच्छा का फल समझना है। क्रान्ति अज्ञेय शक्तियों का कार्य है। चाहे तुम उसे बुरा कहो और चाहे भला, परन्तु उसे उसी के आधार पर छोड़ दो, जिसने उसे जन्म दिया। मालूम पड़ता है कि बड़ी घटनाओं और बड़ी आत्माओं के संयुक्त कार्य का फल क्रान्ति के रूप मे उदय होता है, परन्तु यथार्थ में क्रान्ति केवल बड़ी घटनाओं ही का फल है। घटनायें अलग हो जाती हैं, और मनुष्य चक्कर में पड़ जाता है। घटनाये आज्ञायें देती हैं, मनुष्य चुपचाप उनका पालन करता है। क्रान्ति अमर दृश्य का वह रूप है जो चारों ओर से हम पर

घाव तक नहीं लगा। उसकी आवाज बड़ी मीठी थी। सैनिक अफसर की आवाज तेज होनी चाहिए; परन्तु इसकी मीठी आवाज ही सब काम करा लिया करती थी। चाहे तूफान चलता और चाहे पानी या बरफ गिरती, वह भूमि पर ही सोता और सिरहाने तकिये के स्थान पर एक पत्थर का टुकड़ा रख लेता। उसकी सारी बातों से वीरता टपकती। अपने गुणों के के कारण, यह आदमी केवल एक साधारण आदमी ही न था, केवक एक वीर और विचारशील व्यक्ति ही न रह गया था, वह क्रान्ति के इस युग में एक प्रभावशाली नेता हो गया था और उसके सिपाहियों की गणना एक स्वतन्त्र सेना की भांति होने लगी थी। उधर लन्टेनक भी करारा योद्धा था। बड़ा ही कठोर और बहुत जीवट का। बूढ़े वीरों में जवान वीरों से अधिक कठोरता हुआ करती है, क्योंकि वे जीवन के सुख के समय की निकटता से बहुत दूर पड़ जाया करते हैं। उनमें जीवट भी बहुत होता है, क्योंकि वे मौत के निकट पहुँच चुके होते हैं। मरने से उनकी कौन सी बड़ी हानि? इसीलिए इस लड़ाई में लन्टेनक बहुत बढ़ बढ़ कर कदम मार रहा था। बुड्ढा साहस तो बहुत दिखलाता था, परन्तु जीत पग पग पर गावैन ही की होती थी। यह भाग्य की बात है। मालूम ऐसा पड़ता है कि विजयलक्ष्मी भी युवतियों की स्वाभविक प्रणाली के अनुसार, युवकों ही के गले में अपनी माला डालना पन्सद करती है। लन्टेनक गावैन से बहुत चिढ़ता था। वह सोचता था कि गावैन जागीदार होकर प्रजा-तन्त्र की तरफ से लड़ रहा है और फिर मेरा पोता हो कर —मेरा ही वारिस होकर—मुझसे लड़ने चला है। वह यह सोच सोच कर दांत पीसता था, और मन ही मन कहता था कि एक बार मैं उसे पकड़ भर पाऊँ फिर मैं उसे कुत्ते की मौत न मारूं तो मेरा नाम लन्टेनक नहीं। लन्टेनक ने फ्रान्स में अंग्रेजी फौज

के उतारने ही के लिए डोल पर कब्जा करना अवश्यक समझा इसके लिए उसने अपनी सारी सेना से,सब से अच्छे ६०० आदमी और १२ तोपें चुनीं। उसने सोचा कि, यदि, तोपें डोल के टीले पर चढ़ा दी जांय, तो फिर वे समुद्र-तट से लेकर दूर दूर तक की खबर ले सकेंगी और बिना किसी विघ्न के अंग्रेज सेना फ्रान्स में उतार दी जायगी। गावैन की सेना पास ही थी परन्तु उसमें केवल १५०० आदमी थे। छः हजार के मुकाबले मे ये कुछ भी न थे। डोल की पहाड़ी पर से गोलों की वर्षा करके, इन्हें दूर ही रक्खा जा सकता था। लन्टेनक को एक सेना का डर और भी था। वह २५००० की थी, परन्तु वह ६० मील दूरी पर थी और उसके पहुँचते पहुँचते काम पूरा किया जा सकता था। इन सब बातों पर भला भांति बिचार कर के, लन्टेनक ने डोल पर धावा बोल दिया। डोल के निवासियों ने उसका तनिक भी मुकाबला नहीं किया, क्योंकि वे भली भांति जानते थे कि यदि हमने मुकाबला किया, तो लन्टेनक जो स्वभाव से अत्यन्त कठोर है, हमें कच्चा ही खा जायगा। लन्टेनक के सिपाही नगर मे उतर पड़े, तोपें छोड़ छोड़ कर लगे मैदानों में रोटियां पकाने, या मालायें लेकर गिरजाघरों में उपासना करने। लन्टनक का एक सहकारी था। उसे लोग 'इमानस' के नाम से पुकारते थे। नाम तो उसका कुछ और ही था, परन्तु उसे 'इमानस' का नाम इस लिए मिला, कि वह 'इमानस' नाम के प्राचीन-काल के एक भयंकर और बदशकल दैत्य की भांति क्रूर और कुरूप था। लड़ाई में वह बहुत बीर था, परन्तु लड़ाई के बाद वह निर्दयता मे सब से बाजी मार ले जाया करता। भयंकर से भयकर काम के करने के लिए वह तैयार रहता। लन्टनक को उस पर और उसकी क्रूरता पर बहुत बिश्वास था। डोल पर कब्जा हो जाने के पश्चात्, लन्टेनक इमानस के हाथ

में नगर को देकर पहाड़ी पर चढ़ गया और वहां तोपों के लगाने का मोका तजवीज करने लगा। इमानस वीर था और भयंकर था, परन्तु वह अफसर बनने के योग्य न था। वह हजारों आदमियों का गला काट देने के काबिल था, परन्तु वह नगर की रक्षा करने के योग्य कदापि नहीं था। संध्या को लन्टेनक पहाड़ी पर से लौटा। उसने यकायक तोपों की गड़गड़ाहट सुनी। नगर की प्रधान गली पर धुंआ छाया हुआ देखा। वह सन्न रह गया। यह लड़ाई कैसी? क्यों? किसके साथ? गावैन ने तो हमला किया होगा ही नहीं, क्योंकि चार के मुकाबले में एक को ले जाकर वह जान तो देगा ही नहीं। और, फिर ६० मील वाली फौज इतनी जल्दी यहां तक पहुँच ही नहीं सकती। लन्टेनक अधिक काल तक सोच-विचार में नहीं पड़ा रहा। उसने घोड़े को एड़ मारी। नगर के पास पहुँचने पर लोग भागते हुए मिले। लन्टेनक ने उनसे प्रश्न किया, परन्तु वे इतने बोखलाये हुए थे कि भागे जाते थे और कहते जाते थे, 'ब्ल्यूज'-ब्ल्यूज'! (प्रजातंत्र के सिपाही इस नाम से पुकारे जाते थे) लन्टेनक जब शहर में पहुँचा तो उसने देखा कि पासा पलट चुका है।

यह आक्रमण कैसे हुआ, अब वह भी सुनिए। सन्ध्या को लन्टेनक ने डोल पर कब्जा किया था। किसान योद्धा दिन भर के थके-मांदे थे और वे सिपाहियों की भांति नियमों की पाबन्दी करना भी आवश्यक नहीं समझते थे, इसलिए जिसका जिधर मन चाहा उधर वह घूमने-फिरने लगा और रात होते ही, सब कोई खा-पीकर, प्रधान गली में बिछौने डाल डाल कर पड़ गये। पहरे-चौकी का भी काफी प्रबन्ध करने की आवश्यकता नहीं समझी गई। मुँह अँधेरे, जब किसी किसी की नींद खुली, तो देखते क्या हैं कि गली के मुहाने पर तीन तोपें लगी हुई हैं। ये गावैन की तोपें थीं। रातोरात उसने गली के मुहाने पर कब्जा

कर लिया था। एक किसान उठा और बन्दूक चलाते हुए, चिल्लाया, "कौन है ?" तोपों ने उत्तर दिया। सोने वालों की नींद भाग गई और वे अपने अपने बिछौने पर से उछल पड़े। उनमें बड़ी घबड़ाहट फैल गई। शोर मचा। लोग इधर उधर भागने लगे। किसी ने होश ठीक भी रक्खे और बन्दूक हाथ में भी ली, तो उसे अपने ही आदमियों पर चला दी। नगर वाले अपने अपने घरों से निकल पड़े और जिसका जिधर सुभीता लगा उधर ही को भाग चला। कहीं कहीं कोई स्त्री भागी जाती थी और कहीं कोई बच्चा रो रहा था। अभी अँधेरा ही था। तोपों के गोलों से अँधेरे में उजेला हो जाया करता था। मालूम पड़ता था कि तोपें चारों ओर से चल रही हैं। किसानों की गटरी-मुटरी और गाड़ियों के कारण गड़बड़ी और भी बढ़ गई। घोड़े तो ऐसे बिगड़े कि सँभाले ही न जा सकते थे। कितने ही घायल आदमी उनकी टापों से कुचल गये। इस प्रकार रौंदे जाने वाले मनुष्यों का करुण-क्रन्दन आकाश में गूँज रहा था। सर्वत्र आतङ्क छाया हुआ था। सिपाही अपने अफसरों को खोजते थे और अफसर सिपाहियों को, पर कोई किसी को न मिलता था। किसान-योद्धाओं का नाश हो रहा था, परन्तु गावैन की हानि तनिक भी नहीं हुई। वह आड़ में था और ताक ताक कर निशाना लगवा रहा था।

अन्त में किसानों ने होश सँभाला। वे बाजार के भीतर घुस गये और आड़ में होकर उन्होंने गोली चलाना आरम्भ किया। उनके पास तोपें भी थीं परन्तु तोपों का चलाना किसी को आता नहीं था। जो इन्हें चलाना जानते थे, वे लन्टेनक के साथ पहाड़ी पर मौका देखने के लिए गये हुए थे। शत्रु के प्रहारों से बचने के लिए उन्होंने बाजार भर के पीपे, मेज, कुर्सियाँ और अंगड़-खंगड़ जमा करके सामने एक दीवार खड़ी कर ली थी और

उसी दीवार में छेद रख कर वे बदूक्कें चलाते थे। अब गावैन का काम उतना आसान नहीं रह गया। बाजार ने किले का रूप धारण कर लिया, किसान सुरक्षित हो गये। गावैन घोड़े पर से उतर पड़ा। एक मशाल की रोशनी में, वह अपने आगे छाये हुए अन्धकार की ओर आँखें गाड़ गाड़ कर देखने लगा। मशाल की रोशनी के कारण आड़ की दीवार के पीछे घात लगाये बैठे किसानों की नजर गावैन पर पड़ गई और वे उस पर ताक ताक कर निशाना लगाने लगे। उसके चारों ओर गोलियों की वर्षा होने लगी, परन्तु वह अपने ही ध्यान में मग्न था। उसे अपने तोपखाने पर बड़ा भरोसा था। बात भी यह ठीक है कि अच्छे तोपखाने के सामने बन्दूकों की कोई हकीकत नहीं। इतने ही में एकाएक बाजार के एक घर से बिजली सी चमकी और बड़े धमाके के साथ एक गोला गावैन के सिर के पास से निकल गया। अब गावैन का ध्यान टूटा। उसने समझा कि तोपें उधर से भी चलने लगीं। इतने में ही दूसरा गोला भी आया और गावैन के पास ही आकर गिरा। फिर, एक तीसरा गोला भी आया और उसके धक्के से गावैन की टोपी सिर से नीचे गिर पड़ी। ये गोले भारी भारी थे और एक बड़ी तोप ही उन्हें उगल सकती थी। गावैन का तोपची उसके पास पहुँचा और बोला, सेनापति, वे लोग आप ही पर निशाना बाँधे हुए हैं। गावैन ने मशाल बुझवा दी और अपनी टोपी भूमि पर से उठा ली। इसमें शक नहीं कि ये गोले चलाये गावैन ही पर गये थे और चलाने वाला था लन्टेनक, जो उसी समय पीछे से, बाजार में अपने आदमियों में पहुँचा था। इमानस उसके पास दौड़ता हुआ पहुँचा और बोला, "महोदय, हमारे ऊपर छापा मारा गया।"

लन०—किसने मारा?

इमा०—पता नहीं।

लन०—डिनन का मार्ग खुला हुआ है ?

इमा०—हां, खुला हुआ है।

लन०—तो हमें उसी ओर पीछे हटना आरम्भ कर देना चाहिए।

इमा०—पीछे हटना! बहुत से आदमी तो भाग भी गये।

लन०—हमें भागना न चाहिए, हमें पीछे हटना चाहिए। तुम तोपें क्यों नहीं चला रहे हो ?

इमा०—आदमियों के होश तो ठिकाने हैं ही नहीं, इसके सिवा तोपची लोग आपके साथ गये हुए थे।

लन०—अच्छा, अब मैं आ गया हूँ।

इमा०—महोदय, मैंने गठरी-मुटरी, स्त्रियों तथा अन्य अनावश्यक चीजों को तो यहां से चलता किया है, अब आप आज्ञा दीजिए कि उन तीन छोटे कैदियों का क्या किया जाय ?

लन०—उन तीन बच्चों का ?

इमा०—हां।

लन०—वे हमारी अमानत हैं। उन्हें लाटोर के किले में भेज दो।

यह कह कर लन्टेनक अपने आदमियों की तरफ झपटा। सरदार के आ जाने से लोगों में जान सी आ गई। रक्षा के लिए जो दीवार रची गई थीं, लन्टेनक ने उसका और भी सुधार किया और तोपों के चलाने के लिए उसमें छेद किये। जब वह झुका हुआ छेदों द्वारा शत्रु के तोपखाने के देखने का यत्न कर रहा था, तब उसकी नजर मशाल की रोशनी में खड़े हुए गावैन के ऊपर पड़ी। उसे देखते ही वह तोप के पास पहुँचा और अपने हाथ से उसने उसे भर कर गावैन पर चालाई। तीन बार उसने गावैन पर तोप का गोला छोड़ा, परन्तु तीनों बार निशाना खता कर गया। तीसरी बार वह केवल उसकी टोपी को नीचे गिरा सका।

तीसरी बार लन्टेनक बड़बड़ा पड़ा, यदि मेरा निशाना तनिक नीचे और बैठता, तो मैं उसका सिर उड़ा देता। इतने में मशाल बुझ गई और फिर लन्टेनक अंधेरे में कुछ भी न देख सका।

गावैन के कान खड़े हो गये। परिस्थिति की भयंकरता बढ़ गई थी। घिरे हुए शत्रु ने तोपों का प्रहार तो आरम्भ कर ही दिया था, अभी तक वह अपनी रक्षा कर रहा था, अब आड़ से निकल करके धावा बोल देने में उसे देरी ही क्या लग सकती थी? यदि भागे हुए आदमियों की संख्या निकाल दी जाय, तो भी शत्रु के लगभग ५००० आदमी थे, जिनके मुकाबले मे १२०० आदमी कर ही क्या सकते? यदि कहीं शत्रु को यह पता लग जाय कि मुकाबले में इतने ही थोड़े आदमी हैं तो और भी खराबी हो। गावैन बड़ी चिन्ता में था। वह सोच रहा था कि यदि सीधे आक्रमण करता हूँ, तो १२०० आदमियों के बल से ५००० आदमियों के पैर उखाड़ देना असम्भव है और यदि ठहरता हूँ तो उजेला होते ही कलई खुल जायगी, शत्रु ऊपर झपट पड़ेगा और सत्यानाश कर डालेगा। दोनों ओर नाश ही नाश दिखाई पड़ता था। पांसा पलट गया था। यह हालत बदलनी चाहिए, परन्तु कैसे? गावैन उसी पड़ोस का निवासी था, इसलिए उसे वहां की भूमि की चप्पा चप्पा का हाल मालूम था। वह जानता था कि बाजार में पहुँचने के लिए आड़ी टेढ़ी गलियों द्वारा पीछे से एक रास्ता है। उसने अपने सहकारी कप्तान गूशेम्प को बुलाया और उससे बोला; "मैं सेना को तुम्हारी अध्यक्षता में छोड़ता हूँ। जितनी जल्दी जल्दी हो सके तोपें चलाते जाओ। आड़ की दीवार को छेद डालो। ऐसा करो कि शत्रु का पूरा ध्यान तुम्हारी ही ओर खिंचा रहे।"

गूशेम्प ने उत्तर दिया, "मै आपका मतलब समझ गया।"

गा०—साथ ही, सब बन्दूकें भरी और आदमी तैयार रक्खो, जिससे जरूरत पड़ते ही हल्ला बोल दें।

इसके बाद गावैन ने गूशेम्प के कान में कुछ कहा। फिर गावैन ने पूछा, "अपनी सेना में नौ नगाड़े बजाने वाले हैं, इनमें से सात मुझे दे दो।"

सातों नगाड़ेवाले गावैन के सामने आ कर खड़े हो गये। गावैन ने उनसे पूछा, "बोने-रो की 'बटालियन' (सैनिक टुकड़ी) कहां है ?"

सेना से निकल कर, सार्जन्ट-सहित, १२ आदमी गावैन के सामने खड़े हो गये। गावैन ने उनसे कहा, "मुझे पूरी 'बटालियन' चाहिए।"

सार्जन्ट ने उत्तर दिया, "पूरी बटालियन इतनी ही रह गई है।"

गा०—तुम तो केवल बारह हो।

सा०—केवल बारह ही जीवित बचे।

गावैन ने कहा, "बहुत ठीक।"

सार्जन्ट वही रेडो था, जिसने 'बोने-रो' बटालियन की तरफ से जंगल में मिलने वाले तीनों बच्चों को गोद लिया था। हरबीन-पेल के युद्ध में यह सेना विध्वंस हो गई थी। सौभाग्य से रेडो और उसके ग्यारह साथी ही वहां से जीवित बचे थे।

पास ही घास की एक गाड़ी खड़ी हुई थी। गावैन ने उसकी ओर उंगली उठा कर सार्जन्ट से कहा, "अपने आदमियों को आज्ञा दो कि वे इस घास की रस्सियां बट डालें और उन्हें तोपों के पहियों से लपट दें, जिससे उनके चलाने में खड़खड़ाहट न हो।"

बहुत ही थोड़ी देर में इस आज्ञा के अनुसार काम

गया। अब गावैन ने सिपाहियों को हुक्म दिया, "अपने अपने जूते पैरों से निकाल डालो।"

सिपाहियों ने उत्तर दिया, "हमारे पास जूते हैं ही नहीं।"

१२ सिपाही थे ७ नगाड़े वाले, और एक गावैन खुद। इस प्रकार २० आदमियों का यह दल सजा। गावैन ने आज्ञा दी, "सब कोई मेरे पीछे पीछे आओ, एक के बाद दूसरा, मेरे बाद नगाड़ेवाले, उनके बाद, बटालियन वाले।"

इस प्रकार ये बीसों आदमी अंधेरे में चल पड़े। एक गली में घुमे। उधर दोनों एक दूसरे पर गोले चला रहे थे, इधर यह टुकड़ी अंधकार और सन्नाटे में लुकती-छिपती, नगर में घुसी और पीछे से होकर प्रधान गली के दूसरे मुहाने पर पहुँची। उधर किसी को ख्याल भी न था, इसलिए उधर रक्षा का कोई भी उपाय नहीं किया गया था। मार्ग खुला पड़ा था। कुछ गाड़ियां खड़ी थीं। आदमी भी थे। एक, दो नहीं, ५०००, परन्तु सब के मुंह दूसरी ओर और सब की पीठ उस ओर। गावैन ने तोपों के पहियों से रिस्सयां छुड़वा दीं। बारहों जवान कतार बाँध कर गली के मुहने पर डट गये। नगाड़े वाले हाथ में चोब लिये हुक्म की बाट जोहने लगे। उधर तोपें छुट रही थीं। एक बाढ़ के छुटने के बाद तनिक सा सन्नाटा होते ही, गावैन हाथ में तलवार लिये और उसे हिलाता हुआ, सन्नाटे के आर-पार हो जाने वाले अत्यन्त प्रखर स्वर से गरज कर बोला, "दो सौ दाहिने तरफ़, दो सौ बायें तरफ़, और बाकी बीच में।"

इन शब्दों के निकलते ही, तोपों पर बत्ती पड़ गई और सातों नगाड़ों पर चोब! गावैन फिर एक बार चिल्लाया, "संगीनें ले लो, और पिल पड़ो!

इन बातों का जादू का सा असर हुआ। किसान समझे कि शत्रु की और भी फौज आ गई और उसने अब पीछे से भी

हमला कर दिया है। उधर नगाड़े पर चोट पड़ते ही, सामने से गूशेम्प ने किसान योद्धाओं पर जोर का हल्ला बोल दिया। किसानों को मालूम पड़ा कि इधर कुआँ है और उधर खाईं! जब भय छा जाता है तब छोटी छोटी बातों का भी बड़ा असर हुआ करता है। पिस्तौल की गोली तोप के गोले से बढ़ जाती है और कुत्ते का भूकना शेर के तड़पने से अधिक भयंकर भासित होता है। फिर किसानों का तो यह हाल है कि जब डरते हैं तो फिर इतनी ही तेजी से डरते चले जाते हैं जितनी तेजी से आग लगने पर, फूस जलता ही जाता है। किसानों के पैर उखड़ गये और भारी भगदड़ आरम्भ हो गई। कुछ ही मिनटों में बाजार खाली हो गया। जिसको जिधर सूझ पड़ा उधर ही को वह भाग गया। अफसरों ने बहुत चाहा कि वे तनिक रुकें परन्तु कौन किसकी सुनता है? इस पर इमानस को तो इतना क्रोध आया कि उसने दो तीन आदमियों को तलवार के घाट तक उतार दिया, परन्तु उसकी निर्दयता का भी असर नहीं हुआ। लन्टेनक यह सब चुपचाप देखता रहा। अन्त में सब के पीछे, अपने हाथों से तोपों के मुंह में कील ठोंक कर वह भी चल पड़ा। मन ही मन में उसने कहा कि इन किसानों से काम नहीं चलेगा, अंग्रेजों का आना ही ठीक होगा।

गावैन की पूरी विजय प्राप्त हुई। उसने 'बोने-रो' बटालियन की ओर मुड़कर कहा, "तुम केवल १२ हो, परन्तु १००० के बराबर हो।" उन दिनों अपने सरदार के मुँह से प्रशंसा पाना प्रतिष्ठा की परम-सीमा मानी जाती थी।

गूशेम्प ने भागते हुए लोगों का पीछा किया और उनमें से, बहुत से पकड़े भी गये। मशालें जलाई गईं और नगर की तलाशी आरम्भ हुई। रास्ता मुर्दों और घायलों से पटा हुआ था। अब भी इधर उधर कुछ टुकड़ियाँ ऐसी मिलीं

जो चोटें कर रही थीं। उन्हें घेर लिया गया, और उन से हथियार धरवा लिये गये। इस खोज में, गावैन की नजर एक ऐसे तेज और मजबूत आदमी पर पड़ी, जो नाके पर खड़ा हुआ था, भागने वालों को रास्ता दे रहा था और उनका पीछा करने वालों का मुकाबला कर रहा था। उसने अपनी बन्दूक से खूब काम लिया था। उसे भर भर कर चलाता और जरूरत पड़ने पर उससे डंडे का भी काम लेता। फल यह हुआ कि बन्दूक तो टूट गई और नीचे पड़ी हुई थी, अब उसके एक हाथ में एक पिस्तौल और दूसरे हाथ में एक तलवार रह गई थी। इस रुद्र-मूर्ति के सामने आने की किसी को हिम्मत नहीं पड़ती थी। उसके घाव भी लगे थे, उसके कपड़े रक्त से लथ-पथ थे और वह कमजोर भी हो गया था। इसीलिए वह एक खम्भे की आड़ लगाये हुए खड़ा था। तो भी अपनी मुट्ठियों में, पिस्तौल और तलवार मजबूती से पकड़े हुए था। गावैन उसके पास पहुँचा और बोला, "आत्म-समर्पण कर दो, तुम मेरे कैदी हो।"

आदमी चुप रहा। केवल गावैन को घूरता भर रहा। गावैन ने फिर कहा, "तुम बड़े वीर हो, आओ......" यह कह कर गावैन ने उसकी तरफ अपना हाथ फैलाया। वह आदमी हिला, जोर से उसने 'राजा की जय' बोली और फिर जोर लगाकर उसने गावैन की छाती पर पिस्तौल सर कर दिया और साथ ही उसके सिर पर उसने तलवार का भी एक भरपूर हाथ जमाया। उसने यह सब उसी तेजी के साथ किया जिस तेजी के साथ चीता अपने शिकार पर झपटता है, परन्तु इससे ज्यादा तेजी इसी समय एक और आदमी ने दिखाई। यह आदमी घोड़े पर सवार था, कुछ ही मिनट पहले वह उस जगह पहुँचा था। अभी तक किसी की भी नजर उस पर नहीं पड़ी थी। यह आदमी यह देख कर कि किसान ने हाथ उठाया, आगे

झपटा और वार होते ही, गावैन और किसान के बीच में आ गया। यदि ऐसा न होता तो गावैन कदापि न बचता। पिस्तौल की गोली घोड़े को लगी और तलवार का वार आदमी पर बैठा। घोड़ा और आदमी—दोनों—गिर पड़े। पल भर में यह घटना घट गई। किसान भी थक कर नीचे गिर पड़ा। तलवार का वार आदमी के चेहरे पर बैठा था और वह बेहोश हो गया था। घोड़ा बेचारा तो जान ही से हाथ धो बैठा। गावैन आदमी के निकट पहुँचा। उसने पूछा, "यह कौन है?"

उत्तर न मिलने पर वह उसे ध्यान से देखने लगा। उसके चेहरे से खून जारी था, इसलिए उसका पहिचानना कठिन था। हाँ, उसके बाल सफेद थे। गावैन ने फिर पूछा, "जिस आदमी ने मेरी जान बचाई है, कोई जानता है कि वह कौन है?"

एक सिपाही बोला, "महोदय अभी कुछ ही मिनट हुए यह आदमी नगर मे आया था। मैंने उसे आते देखा था।"

डाक्टर अपने यंत्रों को लेकर पहुँचा। उसने उसकी परीक्षा की और बोला, "भारी चोट नहीं है। टांके लग जायंगे और आठ दिन में यह आदमी अच्छा हो जायगा।"

बेहोश आदमी डोली में रक्खा गया। फिर उसके कपड़े ढीले किये गये और ताजे पानी से उसका मुंह और घाव धोया गया। गावैन ने उसके चेहरे की ओर ध्यान से देखते हुए पूछा, "क्या इसके कपड़ों में कोई कागज नहीं मिला?"

डाक्टर ने बेहोश आदमी की जेबों को टटोला। एक पाकेट-बुक मिली। गावैन उस पाकेट-बुक को देखने लगा। इधर ठंडा पानी पड़ने से आदमी की बेहोशी दूर हो चली और उसकी पलकें उघर चलीं। गावैन को पाकेट-बुक मे एक चौपरता कागज मिला। उसे उसने खोला। उस पर लिखा हुआ था, "सार्व-जनिक रक्षा की कमेटी की ओर से नागरिक सिमोरडेन।"

गावैन के मुंह से निकल पड़ा, 'सिमोरडेन !" इस उच्चारण पर घायल आदमी की आँखें खुल गईं। गावैन भी उत्साह से चिल्ला पड़ा, "सिमोरडेन ! सिमोरडेन !! यह दूसरी बार है कि तुमने मेरी जान बचाई !!!"

यह कह कर उसने सिमोरडेन के बगल में घुटने टेक दिये और बोला, 'मेरे गुरुदेव !'

सिमरडेन ने उसकी तरफ देखा। उसके रक्त के भीगे हुए मुख-मण्डल पर आनन्द की गहरी छाप थी। वह धीरे से बोला, मेरे बच्चे !"

द्वन्द-युद्ध

गुरू और शिष्य बहुत दिनों से नहीं मिले थे, परन्तु हृदय में वे कभी एक दूसरे से अलग नहीं हुए थे। इतने दिन अलग रहने के बाद वे ऐसे मिले जैसे कि सदा एक दूसरे से मिलते रहने वाले दो प्रेमी मिलते हों। डाक्टर ने सिमोरडेन के घाव को सी दिया। उसके बाद उसने गावैन से कहा, "अब सिमोरडेन को विश्राम करने दीजिए, इनसे अब ज्यादा बातें न कीजिए।" गावैन को और भी बहुत से काम थे। वह बिदा मांग कर चला गया। सिमोरडेन अकेला रह गया। उसने बहुत चाहा कि नींद आ जाय, परन्तु वह न आई। दो प्रकार की तापों से वह उत्तेजित हो रहा था। एक ताप थी घाव के कारण और दूसरी थी हर्ष के कारण। बहुत दिन हुए, उसने इस बात पर विश्वास करना तक छोड़ दिया था कि मुझे कभी ऐसा सुख मिलेगा, परन्तु उसे सुख मिला। उसने गावैन को फिर पाया। गावैन को जब उसने पिछली बार देखा था तब वह निरा एक बालक था। इस समय गावैन पूरा जवान हो गया था। साथ ही, इस समय वह बलवान और तेजवान भी था। जनता के के लिए वह विजय प विजय प्राप्त करता जा रहा था। वैण्डी के रण-क्षेत्र में गावैन राज्य-क्रान्ति का सब से बड़ा स्तम्भ था और इस स्तम्भ को सिमोरडेन ही ने प्रजा-तंत्र को प्रदान किया था। विजय गावैन सिमोरडेन का शिष्य था। उसका तेज सिमोरडेन का तेज था। उसकी वीरता और धीरता सिमोरडेन के लगाये हुए बीज से ही अंकुरित हुई थी सिमोरडेन को यह

भासित हुआ कि गावैन के हाथों से जो कुछ हो रहा है उस सब का कर्ता और धर्ता यथार्थ में उसका अपना ही उद्योग और श्रम है, गावैन की कीर्ति में उसकी अपनी ही कृति छिपी हुई है।

इन्हीं विचारों में सिमोरडेन गोते लगाता रहा। गावैन के भूत और भविष्यत् पर विचार करते हुए उसकी आत्मा आनन्द-सागर में डूबती और उतराती थी। गावैन की भावी उन्नति और कीर्ति के सम्बन्ध में उसने बड़े बड़े मन्सूबे बांधे। उसने सोचा कि ऐसी कोशिश करूंगा कि देश भर में गावैन ही गावैन दीख पड़े, उसके समान कोई भी सेनापति देश में नज़र न आवे और वह ऐसा विजयी निकले कि समुद्र-तट पर अंग्रेजों को पछाड़े और राइन नदी के तट पर जर्मन राजाओं को; पर्वतों में स्पेन को हरावे और आल्प्स पर्वतों की शिखाओं पर खड़ा होकर इटली को स्वाधीन बनने का सन्देश दे।

सिमोरडेन के हृदय में दो भावनायें एक साथ बास करती थीं। एक भावना थी मृदुल और दूसरी कठोर। गावैन के सम्बन्ध में सिमोरडेन की दोनों भावनायें सन्तुष्ट थीं। मृदुल भावना द्वारा गावैन को वह अच्छा और प्यार के योग्य समझता था। कठोर भावना द्वारा उसने यह भी समझा कि गावैन भी कठोर-हृदय है। सिमोरडेन का यह मत था कि निर्माण के काम के पहले संहार के कार्य की जरूरत है। उसने अपने मन में कहा, "इस समय नर्मी की जरूरत नहीं। खूब कठोरता से काम होना चाहिए। गावैन भी अवश्य ही खूब कठोर होगा।"

सिमोरडेन इन्हीं विचारों में मग्न था कि उसे पास के कमरे में गावैन की आवाज सुनाई पड़ी। उसे गावैन की आवाज बहुत भली लगती थी। उसने उसी ओर अपना कान लगाया। उसे कुछ सिपाहियों के कदम की आहट मालूम पड़ी, और फिर उसने सुना कि उनमें से एक कह रहा है, "सेनापति, यही वह

आदमी है जिसने आपके ऊपर गोली चलाई थी। हम उसे कैद कर के लाये हैं।"

इसके बाद सिमोरडेन ने गावैन और कैदी की बातें सुनीं। गावैन ने कैदी से पूछा, "क्या तुम जख्मी हो गए हो?"

कैदी—तो भी मैं इतना अच्छा हूँ कि तुम मुझे गोली से मरवा दो।

गावैन (सिपाहियों से)—इस आदमी को लिटा दो। घावों पर पट्टी बांध दो। यत्न करो कि यह अच्छा हो जाय।

कैदी—मैं तो मरना चाहता हूँ।

गावैन—तुम्हें जीवित रहना होगा। राजा के नाम पर तुमने मुझे मार डालना चाहा था। प्रजा-तंत्र के नाम पर मैं तुम्हारे ऊपर दया करता हूँ।

सिमोरडेन के माथे पर पसीना आ गया। वह चौंक सा पड़ा। खिन्नता के साथ वह बड़बड़ाने लगा, "अरे, यह तो दयालु निकला!"

× × ×

सर्वत्र यही चर्चा थी कि इस घरेलू युद्ध में दो आदमी ऐसे हैं जो शत्रु के मुकाबले में एक हैं, परन्तु वैसे एक दूसरे के बड़े विरोधी हैं। वैण्डी का युद्ध अभी तक जारी था, परन्तु वैण्डी वाले पग पग पर हारते जा रहे थे और प्रजा-तंत्र की सब जगह जीत हो रही थी। इस विजय में प्रजा-तंत्र के दो रूप प्रकट हुए, एक आतङ्कमय और दूसरा दयालु। एक इस बात का इच्छुक था कि विजय हो और कठोरता के साथ हो और दूसरा इस बात का कि विजय हो और साथ ही दया और करुणा को भी हाथ से न जाने दिया जाय। इन दो रूपों के दो आदमी स्तम्भ-स्वरूप थे। दोनों प्रभावशाली और अधिकार-युक्त थे। एक सेनापति था और

एक प्रतिनिधि। प्रतिनिधि पेरिस की पंचायत से यह आदेश लेकर रण-क्षेत्र में आया था कि किसी के साथ दया न की जाय और किसी को भी शरण न दी जाय। उसे सब कुछ करने-धरने का अधिकार था। फ्रान्स की जन-सभा ने उसे इस बात का अधिकार दे दिया था कि यदि कोई आदमी पकड़े हुए बागी सरदार को छोड़ देने का या उसे भाग जाने में मदद देने का अपराधी समझा जाय तो उसे मृत्यु का दण्ड मिले। इस अधिकार पत्र पर रोब्सपीरी, डेन्टन और मार के हस्ताक्षर थे। इतना बलवान था वह आदमी, जो प्रतिनिधि बन कर इस समय वैण्डी के मैदान में काम कर रहा था। दूसरा आदमी सैनिक था। उसका बल केवल यही था कि वह सहृदय और दयालु था। अपने बाहु-बल से शत्रुओं को पराजित करता था और अपनी सहृदयता से वह उन्हें क्षमा। विजयी होने के कारण वह अपना यह अधिकार मानता था कि विजितों की प्राण-रक्षा करे।

इन्हीं दोनों बातों पर उन दो आदमियों में गुप्त परन्तु गहरा मतभेद था। दोनों का विचार-मण्डल एक दूसरे से बिल्कुल अलग था। दोनों विद्रोह से संग्राम कर रहे थे। दोनों के हाथों में वज्रास्त्र थे। एक का वज्रास्त्र था विजय और दूसरे का वज्रास्त्र था आतंक। लोगों में इन दोनों की खूब चर्चा थी। लोगों को बड़ा आश्चर्य था कि इतना जबरदस्त मत-भेद रखते हुए भी ये दोनों एक दूसरे के साथ खूब हिल-मिल कर रहते हैं और एक दूसरे के प्रति अत्यन्त प्रेम और सहृदयता रखते हैं। इससे बढ़कर स्नेह और सहृदयता और क्या हो सकती है कि कठोर हृदय मनुष्य ने दयालु मनुष्य की प्राण-रक्षा में प्राणघातक घाव तक खाये। विचित्र मूर्तियां थीं! एक जीवन की और एक मृत्यु की, एक शान्ति की और विनाश की और एक दूसरे पर अत्यन्त प्रगाढ़ अनुराग रखने वाली! यह ऐसी पहेली थी कि

कुछ भी समझ में न आती थी। एक और भी विचित्र बात थी। इन दोनों में, जो व्यक्ति कठोर कहा जाता था, वह बड़ा परमार्थी था। घायलों की पट्टियाँ बांधता, रोगियों की सेवा करता और इन्हीं कामों में अपना सारा समय व्यतीत करता। गरीबों के बच्चों को सर्दी में ठिठुरे हुए नंगे पैरों देख कर उसके हृदय को बड़ी ठेस लगती। वह अपने पास कुछ भी न रखता। सब कुछ गरीबों को दे डालता। सभी लड़ाइयों में वह मौजूद रहता। लड़ने वाली सेनाओं में वह सबसे आगे रहता। जहां खूब घमासान युद्ध होता वहां अवश्य पहुँचता। एक तलवार दो पिस्तौलें उसके पास सदा रहतीं, परन्तु किसी ने भी उसका प्रयोग करते हुए न देखा। उसके ऊपर प्रहार होते, परन्तु उलट कर वह कभी प्रहार न करता। कहा जाता था कि वह पादड़ी है।

इन दोनो में से एक था गावैन और दूसरा था सिमोरडेन। दोनों में खूब मित्रता थी, परन्तु दोनों के सिद्धान्त में खूब शत्रुता थी। एक दिन सिद्धान्तों का यह गुप्त युद्ध अच्छी तरह से खुल पड़ा। सिमोरडेन ने गावैन से पूछा, "हमने किन किन कामों को कर डाला?"

गावैन ने उत्तर दिया "यह बात तो जितनी मैं जानता हूँ उतनी ही आप भी जानते हैं। लन्टेनक की सेना तितर-बितर हो चुकी है। बहुत ही थोड़े आदमी उसके पास रह गये हैं। वह जंगलों में भाग गया है। आशा है कि आठ दिन के अन्दर हम उसे घेर लेंगे।"

सिमोरडेन—फिर?

गावैन—पन्द्रह दिन के भीतर हम उसे पकड़ लेंगे।

सिमो०—और, तब?

गावैन—आप मेरा इश्तिहार पढ़ ही चुके हैं।

सिमो०—हां, तो?

गावैन—तो उसे गोली से मार दिया जायगा।

सिमो०—तो भी दया ही! उसकी गर्दन काटी जानी चाहिए।

गावैन—मैं सैनिक दण्ड का कायल हूँ। सैनिक दण्ड यही है कि उसे गोली से मार दिया जाय।

सिमो०—मैं उस मृत्यु-दण्ड को ठीक समझता हूँ जिसका जन्म क्रान्ति के युग में हुआ है।

फिर, गावैन के चेहरे की तरफ देखकर सिमोरडेन ने पूछा, "तुमने उस मठ की साधुनियों को क्यों छोड़ दिया?"

गावैन—मैं स्त्रियों से युद्ध नहीं करता।

सिमोरडेन—ये साधुनियाँ जनता से बहुत घृणा करती हैं। घृणा के सम्बन्ध में एक स्त्री दस पुरुषों से अधिक भयंकर होती है। हाँ, जिन बूढ़े पुरोहितों को तुमने पकड़ा था उन्हें दण्ड क्यों नहीं दिलाया?

गावैन—मैं बूढ़े आदमियों से भी युद्ध नहीं करता।

सिमो०—बूढ़े पुरोहित युवक पुरोहितों से अधिक भयंकर होते हैं। सफेद बाल वाले लोग जिस अशान्ति का प्रचार करते हैं, वह कहीं अधिक खतरनाक होती है। उन लोगों पर साधारण लोगों का विश्वास बहुत होता है, जिनके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी होती हैं। देखो, गावैन, झूठी दया मत किया करो। जिन लोगों ने रानी-राजा का बध किया है, वे स्वाधीनता के उपासक हैं तुम्हारी दृष्टि टेंपिल किले के बुर्ज पर गड़ी रहनी चाहिये।

गावैन—टेंपिल के बुर्ज पर? मैं उसमें से युवराज को, जो उसमें कैद है, बाहर निकाल लाऊंगा। मैं बच्चों से युद्ध नहीं करता।

सिमोरडेन तीखे स्वर से बोला, "गावैन याद रक्खो, उस स्त्री के साथ, जो अपने को फ्रान्स की रानी कहती है, उस बूढ़े आदमी के साथ जो पोप के नाम से पुकारा जाता है और उस

बच्चे के साथ जो युवराज के नाम से प्रसिद्ध है, युद्ध करना आवश्यक और परमाश्यक है।

गा०—गुरुदेव आप इसे क्यों भूलते हैं कि मैं राजनैतिक चाल-पेंचों से दूर रहता हूँ।"

सिमो०—देखो काम में बाधायें मत छोड़ो। तुमने उस दिन बागी जीन-ट्रेटन को परास्त करके छोड़ दिया। वह अकेला तलवार हाथ में लिये लड़ रहा था और तुम चाहते तो उसे मरवा देते, परन्तु तुमने स्पष्ट आज्ञा देकर उसे भाग निकलने दिया।

गा०—मैं अपने १५०० आदमियों को केवल एक आदमी की हत्या करने के लिए कैसे उत्साहित करता?

सिमो०—उस दिन लड़ाई में, जोजेफ बेजीर घायल हो कर घिसल रहा था। तुम्हारे सिपाही उसे खत्म कर देने वाले थे। परन्तु, तुमने उन्हें रोक दिया। तुम बोले; उसे हाथ मत लगाओ। यह कह कर तुमने अपनी बन्दूक उस बागी पर छोड़ने की अपेक्षा, हवा में, ऊपर की तरफ चला दी। यह क्या लड़कपन नहीं है?

गा०—मैं फिसलने वाले आदमी पर हाथ नहीं उठा सकता।

सिमो०—परन्तु, तुम्हारी इस दया का क्या फल हुआ। वे दोनों उस समय बच गये। परन्तु, जानते ही हो कि वे इस समय प्रजा-तन्त्र के कितने बड़े शत्रु सिद्ध हो रहे हैं। शत्रु-सेना में वे दोनों खास पदों पर हैं। इस प्रकार तुमने अपनी दया की बदौलत प्रजा-तन्त्र के दो बड़े शत्रु उत्पन्न कर दिये।

गा०—मेरा प्रयत्न तो सदा यही रहता है कि मैं प्रजा-तन्त्र के मित्रों की संख्या बढ़ाऊं।

सिमो०—तुमने लेंडीन की विजय के पश्चात् ३०० कैदी किसानों को मरवा क्यों नहीं डाला?

गा०—इसलिए कि प्रजा-तन्त्र के जो सिपाही राज-तन्त्र की सेना ने उस समय पकड़ लिये थे, उनके साथ दया का

बर्ताव किया गया था। मैं नहीं चाहता कि किसी को यह कहने का मौका मिले कि प्रजा-तन्त्र वाले दूसरे पक्ष के कैदियों के साथ दया का व्यवहार नहीं कर सकते।

सिमो०—तो, इसका तो अर्थ यह है कि यदि तुमने लन्टेनक को पकड़ लिया तो उसे भी क्षमा कर दोगे।

गा०—ऐसा नहीं होगा।

सिमो०—क्यों, तुम तो क्षमा की मूर्ति ही हो!

गा०—मैं लन्टेनक को नहीं छोड़ूंगा। यह इसलिए कि किसानों को छोड़ देने से कोई हानि नहीं, वे सीधे साधे होते हैं और यह भी नहीं जानते कि जो कुछ हम करते हैं उसका क्या फल होगा। परन्तु लन्टेनक होशियार है और बुरे और भले को भली भाँति समझता है।

सिमो०—परन्तु, लन्टेनक तुम्हारा सम्बन्धी है।

गा०—परन्तु मातृभूमि से मेरा अधिक निकट का संबंध है।

सिमो०—लन्टेनक को तो तुम इसलिए भी छोड़ सकते हो कि वह वयो-वृद्ध है।

गा०—परन्तु, इससे क्या? लन्टेनक मेरे लिए अजनबी है। वह अँग्रेजों को मातृ-भूमि छाती रौंदने के लिए बुला रहा है। वह देश का परम-शत्रु है। उसकी मेरी लड़ाई का अन्त उसी समय हो सकता है जब हम दो में से एक का अन्त हो जाय।

सिमो०—गावैन, इस व्रत को याद रखना।

गा०—मैं पहले ही इस बात की शपथ धारण कर चुका हूँ।

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे, एक दूसरे की ओर देखते रहे।

फिर सिमोरडेन बोला, "गावैन समय टेढ़ा है। इस समय हमारा जो कर्त्तव्य है वह और भी टेढ़ा है। इस समय दया का नाम भी न लो, क्योंकि यह क्रान्ति का भीषण युग है। क्रान्ति का सर्वदा एक परम-शत्रु हुआ करता है। वह शत्रु है पुराना

संसार और उसकी बातें। उसके तथा उनके लिए क्रान्ति के हृदय में उसी प्रकार तनिक भी दया का भाव नहीं होता, जिस प्रकार सर्जन के हृदय में एक फोड़े के लिए। क्रान्ति के बल से राजा का राजत्व, रईसों की रईसी, सैनिकों का स्वेच्छाचार, धर्माचारियों का आडम्बर और न्यायकर्ताओं की क्रूरता धूल में मिल गई है। संक्षेप में, प्रत्येक उस वस्तु का विनाश हो रहा है जो अत्याचार को पोषण करती है और जिससे अत्याचारी को आधार मिलता है। यह विनाशलीला भयंकर है। क्रान्ति इस खेल को बड़ी स्थिरता से खेल रही है। निःसन्देह बड़ी तोड़-फोड़ हो रही है, परन्तु बतलाओ तो सही, किस फोड़े के चीरने में रक्त की धारा नहीं बह निकलती ? लगी हुई ,अग्नि के बुझाने के लिए भी उसी प्रबल प्रचण्डता की आवश्यकता होती है जिसके बल पर, अग्नि की लपकें बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं को भस्म के रूप में परिवर्तित्त कर देती हैं। यदि सफलता चाहिए तो इन बातों को इसी प्रकार करना होगा। सर्जन, कसाई के सदृश मालूम पड़ता है। स्वास्थ्य का देने वाला चिकित्सक जल्लाद की भांति मालूम पड़ता है। क्रान्ति का रूप भी वैसा ही भयंकर समझो। वह तोड-फ़ोड़ करती है परन्तु वह जीवन की रक्षा करती है। तुम्हारी दया—वह तो एक ऐसी बात है, जैसी कि तुम यह चाहो कि शरीर के भीतर विष बना रहे। क्रान्ति तुम्हारी इस बात को कदापि नहीं सुन सकती। वह अटल रहेगी। वह अपना काम करती रहेगी। सभ्यता के शरीर पर वह ऐसा नश्तर लगावेगी कि उससे मनुष्य जाति-मात्र को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होगा। लोगों को कष्ट पहुँच रहा है ? निःसन्देह। परन्तु यह कष्ट कितनी देर का है ? बस, उतनी ही देर का, जितनी देर इस नश्तर के करने में लगे। इसके पश्चात्, आराम ही आराम है। क्रान्ति संसार के बड़े भाग का

छेदन कर रही है। यह वर्ष—१७९३ का यह वर्ष—उस नश्तर से बहे हुए रक्त का स्वरूप मात्र है।

गा०—नश्तर लगानेवाला शांत है, परंतु उसके साथी उग्र हैं।

सिमो०—क्रान्ति को उग्र आदमियों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। जिनके हाथ कांपें, उन्हें क्रान्ति नहीं पतियाती। जो लोग किसी प्रकार भी विचलित न हों उन्हीं पर उसका विश्वास होता है। देखो न, डेन्टन कितना भयङ्कर है, रोब्सपीरी कितना दृढ़ है, मारे कितना कठोर है। गावैन, इनमें से प्रत्येक एक एक सेना के बराबर है। यूरोप को ये थर्रा देंगे।

गा०—कदाचित्, भविष्यत्, भी इनसे थर्रा उठे! (थोड़ी देर रुक कर) मेरी धारणा यह है कि गुरुदेव, आप यहीं भूल करते हैं। मैं किसी को भी दोषी नहीं समझता। यही क्रान्ति की विशेषता है कि कोई बेकसूर नहीं और कोई कसूरवार भी नहीं। राजा लुई उस भेड़ के तुल्य है जो शेरों के बीच में फेंक दी गई हो। वह भागना चाहती है, वह बचना चाहती है। बन सके, तो वह काट भी खाय, परन्तु बेचारी शेर के समान कैसे बन जाय। उसकी जड़ता उसका दोष बन जाती है। भेड़ खीस निपोरती है। शेर समझते हैं, वह द्रोह करती है। वे उस पर टूट पड़ते हैं और उसे अपना कलेवा बना डालते हैं। इसके बाद, फिर आपस ही में, एक दूसरे पर झपटा-झपटी होती है।

सिमो०—भेड़ जानवर ही जो ठहरी।

गा०—और शेर क्या है?

सिमोरडेन विचार में पड़ गया। कुछ सोच कर बोला, "शेर विवेक-स्वरूप हैं। वे विचारों और सिद्धान्तों के स्थान पर हैं।"

गा०—परन्तु, उनमें हुल्लड़शाही और आपा-धापी उत्पन्न होती है।

सि०—अन्त में जो नतीजा होगा उससे तुम क्रान्ति को अच्छा कहोगे ।

गा०—कहीं ऐसा न हो कि हुल्लड़शाही क्रान्ति की कालिमा सिद्ध हो। (थोड़े देर चुप रह कर) स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व शान्ति और सुख के मूल तत्व हैं। फिर उनका रूप भीषण क्यों हो? हम चाहते हैं कि लोग अपनी सत्ता के नीचे रहें, परन्तु इसके लिए, हम उन्हें आतंकित क्यों करें? आतंक से क्या होगा? किसी अच्छे नतीजे के पैदा करने के लिए बुरे रास्ते पर चलने की क्या जरूरत? राज-सिंहासनों को इसलिए नहीं उलटा जा रहा कि उनके स्थान पर सूलियां खड़ी हों। राजा समाप्त हों, परन्तु राष्ट्रों को जीवन मिले। राजमुकुट उड़ जायँ, परन्तु सिरों को बचने दो। क्रान्ति सोमता का स्वरूप है, भीषणता की मूर्ति नहीं। निर्दय लोगों को दया-भाव अच्छे नहीं लगते, परन्तु मानव-भाषा में, मुझे तो 'क्षमा' से बढ़ कर सुन्दर कोई दूसरा शब्द नहीं मिलता। रक्तपात के मैं विरुद्ध हूँ। अपनी जान पर जब जोखिम होगा उसी समय मैं रक्तपात करूँगा। मैं केवल युद्ध करना जानता हूँ। मैं केवल सैनिक हूँ। यदि मैं क्षमा न करूँ तो मेरी दृष्टि में विजय प्राप्त करने के योग्य पदार्थ न रहे। युद्ध में हम अपने शत्रुओं के शत्रु हैं, परन्तु विजय के पश्चात् हम उनके भाई हैं।

सिमो०—गावैन, होशियार रहो। मैं फिर तुमसे कहता हूँ कि सचेत रहो। तुम मुझे बेटे से भी अधिक प्यारे हो परन्तु मैं फिर कहता हूँ कि सचेत रहो। (सोच कर) आजकल के से समय में, दया, विश्वासघात का एक रूप मात्र है।

इन दोनों की बातें जो सुनता, वह यही कहता कि मानों तलवार और फरसे से, आपस में खटक रही है।

माता की व्यथा

पाठक टेलीमार्च को न भूले होंगे। हरबीन-पेल के खलियान में वह फेशार्ड को उठा कर अपनी गुफा में लाया था। फेशार्ड के तीन घाव लगे थे, एक घाव छाती में, एक मोढ़े पर और एक गले की हंसली पर। टेलीमार्च ने ला कर उसे पुआल के बिछौने पर लिटा दिया। आस-पास के गाँवों में यह मशहूर था कि टेलीमार्च बड़ा 'स्याना' है। इसका मतलब यही था कि टेलीमार्च आध्यात्मिक और आदि-भौतिक सभी प्रकार की व्याधियों को चंगा कर सकता था। इस अवसर पर उसने अपने 'स्यानेपन' का प्रयोग किया। इधर-उधर की जड़ियों से फेशार्ड का इलाज करने लगा और फल यह हुआ कि फेशार्ड अच्छी हो चली घाव भर गये और कुछ दिनों के बाद, फेशार्ड उठने बैठने लगी। वह बोलती नहीं थी और जब बोलने की कोशिश भी करती तो टेलीमार्च उसे रोक देता। बोलना फेशार्ड के लिए हानिकारक था। तो भी फेशार्ड के मन में जो विचार दौड़ लगा रहे थे, उनका पता उसके नेत्रों से साफ साफ लगता था। एक दिन, जब वह कुछ मजबूत हो चुकी थी और कुछ दूर चल कर वृक्षों की छाया के तले जा बैठी थी, बूढ़े टेलीमार्च ने मुस्कराते हुए उससे कहा, "अब सब ठीक है, अब कोई घाव नहीं रहा।"

फे० - हाँ, कोई घाव नहीं रहा, परन्तु हृदय का घाव वैसा ही बना हुआ है। तुम्हें कुछ पता है, वे कहाँ हैं ?

टेली०—'वे' कौन ?

फे०—मेरे बच्चे।

ज्वर की दशा में, फेशार्ड कई बार बर्राई थी। बर्राने में उसने अपने बच्चों को अनेक बार याद किया था। टेलीमार्च की समझ में उस समय यह कुछ भी नहीं आया कि फेशार्ड को क्या उत्तर दूँ और उसे किस प्रकार समझाऊँ। यह तो वह जानता था कि जिस स्त्री को मैं उठा कर लाया हूँ वह माता है, उसके तीन बच्चे हैं, उसे तो गोली का निशान बनाया गया और उसके बच्चों को लन्टेनक के आदमी अपने साथ ले गये। परन्तु इसके आगे उसे कुछ भी मालूम न था। उसने इधर-उधर पूछा भी लन्टेनक के ठिकाने की पूछ-ताछ भी की। परन्तु, किसी ने भी उसे ठीक-ठीक बात न बतलाई। एक बात और भी थी। किसान लोग उससे बहुत बातें करना पसंद नहीं करते थे। वे उसे विचित्र प्राणी समझते थे। दुनिया से उसका बिल्कुल अलग-अलग रहना उनकी समझ में कुछ भी न आता था। वे देखते थे कि चारों ओर तो इस समय मार-काट जारी है, घर जलाये जाते हैं, परिवार तितर-बितर किये जाते हैं, गांवों में आग लगा दी जाती है, छापे मारे जाते हैं और खून बहाया जाता है। संक्षेप में, सर्वत्र जाल बिछा है और छीना-झपटी हो रही है, परन्तु ऐसी अशान्ति के समय में भी, मारने वालों या मरने वालों में से किसी के भी साथी बने बिना, अपनी ही बातों में व्यस्त, आकाश के नक्षत्रों के देखने, जंगल की जड़ी बूटियों के चुनते-फिरने और नैसर्गिक छटा ही पर मुग्ध हो कर समय बिताने वाला यह व्यक्ति निःसंदेह एक विचित्र और भीषण प्राणी है। टेलीमार्च का असली रूप किसानों की समझ में न आता था। वे उसे पागल कहते थे, वे उसके पास जाते भी न थे। इस अवस्था का फल यह हुआ कि आस-पास लड़ाई-भिड़ाई के होते हुए भी, सभी प्रकार के लोगों से अलग-अलग रहने के कारण, टेलीमार्च को न तो यही मालूम था कि कहां क्या हो रहा है और न उसके इस शान्ति-मय-जीवन

में उस समय तक कोई बाधा हो पड़ सकती थी, जब तक अशान्ति की प्रचण्डता नितान्त सामने और ऊपर आकर उसके हृदय को, अपने भीषण नृत्य से न रौंद डालती। फेशार्ड के ये शब्द—'मेरे बच्चे'—बिजली का सा काम कर गये। टेलीमार्च की मुस्कराहट हवा हो गई। फेशार्ड भी चिन्तासागर में डूबने और उतराने लगी। कुछ क्षण के पश्चात् फिर उसके मुंह से वही शब्द 'मेरे बच्चे' आवेश के साथ निकल पड़े। टेलीमार्च के हृदय पर मानो वज्र-प्रहार हुआ। उसने अपराधी व्यक्ति की भांति अपना सिर झुका लिया। उसका ध्यान लन्टेनक पर पहुँचा। मन ही मन उसने कहा, "जब खतरा सिर पर होता है, तब बड़े आदमी के नाम से पुकारे जाने वाले आदमियों की स्मरण-शक्ति कभी धोका नहीं खाती, परन्तु खतरे से बाहर होती ही, वे अपने सहायक को मुश्किल से पहचानते हैं। मैंने इस 'बड़े आदमी' को बचाया ही क्यों? (स्वयं ही उत्तर देते हुए) केवल इसलिए कि 'बड़ा आदमी' होते हुए भी, अन्त में, वह आदमी ही था। (कुछ देर सोच कर) क्या सचमुच वह आदमी ही था? (कटुता के साथ) यदि मैं जानता कि वह ऐसा करेगा!"

इन विचारों ने उसे बहुत व्यथित किया। वह मन में सोचने लगा कि अच्छे कामों का भी बुरा नतीजा होता है, होम करते भी हाथ जलता है। भेड़िये के बचाने से भेड़ की जान पर आ बनती है। शिकरे को बचाइए तो चिड़ियों की जान जाती है। टेलीमार्च मन ही मन समझने लगा कि मैंने लन्टेनक को बचा कर बड़ा पाप किया। माता की व्यथित वाणी उसके हृदय में बर्छी के वार के सदृश काम करती थी। उसके मन में संतोष था, तो केवल यही कि यदि मेरे हाथों ने लन्टेनक के प्राण बचाये तो उन्हीं हाथों ने फेशार्ड की भी सेवा की। परन्तु, इधर हृदय में यह संतोष पूरी तरह से प्रवेश भी न कर पाया था कि माता

के हृदय की व्यथा और माता की गोद से बिछुड़े हुए बच्चों की बात ने टेलीमार्च के हृदय को मथना आरम्भ कर दिया। फेशार्ड की आंखें टेलीमार्च पर गड़ी हुई थीं। अन्त में वह बोली, "इससे तो मैं मर जाती तो ठीक होता ? तुमने मुझे क्यों बचाया ? तुमने अच्छा नहीं किया। मैं तो आज मर जाऊं, परन्तु बच्चों के मिलने की आशा नहीं मरने देती। वे हैं कहां ? मुझे उनका पता तो बता दो, मैं उनके पास जाऊंगी।"

टेलीमार्च ने उसकी नाड़ी पर हाथ रखते हुए कहा, "अधिक उत्तेजित मत हो। देखो, तुम्हें फिर ज्वर होता आ रहा है।"

इस बात को बिल्कुल अनसुनी करके, फेशार्ड ने कहा, "मैं यहां से कब जाऊं ?"

टेली०—क्या ?

फे०—मैं पूंछती हूँ कि कब तक मैं अच्छी तरह चल फिर सकूंगी ?

टेली०—यदि तुम जिद्द करोगी तब तो तुम कभी चल फिर न सकोगी और यदि समझदारी से काम लोगी, तो कल ही मजे से चलने-फिरने लगोगी।

फे०—समझदारी क्या ?

टेली०—समझदारी यही कि ईश्वर पर भरोसा रक्खो।

फे०—ईश्वर पर भरोसा ! ईश्वर ने मेरे बच्चों के लिए क्या किया ? तुम्हारे तो बच्चे हैं ही नहीं। तुम इस बात को क्या जानो ? क्या कभी तुम्हारे कोई बच्चा था ?

टेली०—कभी नहीं।

फे०—और, मेरे पास तो बच्चों के सिवा कभी कोई और चीज थी ही नहीं। बच्चों बिना तो मैं कुछ भी नहीं के बराबर हूँ। मेरी समझ ही में नहीं आता कि बच्चे मुझसे क्यों छीन लिये गये ? कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है ? मेरे

पति को मार डाला ! मुझे गोलियाँ मारीं ! भगवान् जाने, यह सब क्या है ?

टेली०—बस, बस, अब अधिक न बोलो। देखो, तुम्हें बुखार चढ़ता चला आ रहा है।

वह चुप हो गई। फिर, उस दिन से, उसने बोलना ही छोड़ दिया। घंटों गुम-सुम बैठी रहती। पेड़ों के तले जा बैठती और मन ही मन कुछ सोचती रहती। टेलीमार्च उसकी दशा पर बहुत खिन्न होता। वह मन ही मन कहता, "फेशार्ड नहीं बोलती, परन्तु उसकी आँखें बोलती हैं। मेरा मन उसकी दशा देख देख कर रोता है। माता का हृदय अपने बच्चों के लिए टूक टूक हो रहा है!" टेलीमार्च भी चुप ही रहता। वह समझता था कि फेशार्ड को समझना व्यर्थ है। माता का हृदय जितना कोमल है उतना ही वह भीषण भी है। माता का प्रेम जितना स्निग्ध है, उतना ही वह भयङ्कर भी है। बच्चों के सम्बन्ध में, माता किसी प्रकार भी समझाये नहीं समझती। मातृत्व मृदुलता और हट की मूर्ति है। बच्चों की विपत्ति के अवसर पर, माता को बच्चे की कुशल के सिवा और कुछ भी नहीं सूझता। उस समय उसके अन्तरतर में कार्य करनेवाली शक्ति उसे केवल एक ही ओर का मार्ग दिखाती है। ऐसे अवसर पर, स्वर्गीय ज्योति से जगमगाते हुए अंधेपन का दृश्य दिखाई पड़ता है।

टेलीमार्च प्रयत्न करता कि किसी प्रकार फेशार्ड बोले, और इस प्रकार उसके मन में जो कुछ भरा हुआ हो वह निकल जाय। एक दिन वह उससे बोला, "दुर्भाग्य से, मैं इस समय बूढ़ा हूँ। चलते नहीं बनता। चलता हूँ तो थोड़ी ही देर में थक जाता हूँ और हांफने लगता हूँ। यदि हाथ-पैर कुछ भी चलते, तो मैं तुम्हारे साथ चलता। परन्तु, सोचता हूँ कि मेरे चलने से लाभ ही क्या होगा। मैं तुम्हारे लिए बोझ सा हो जाऊँगा। मैं सब के

लिए और सब जगह, बोझ सा हूँ। प्रजा-तन्त्र के सैनिक मेरे ऊपर यह सन्देह करते हैं कि मैं किसानों का हितू हूँ और किसान सन्देह करते हैं कि मैं टोने-टुटके किया करता हूँ।" इन शब्दों को कह कर टेलीमार्च कुछ देर तक चुप रहा। उसने समझा कि फेशार्ड कुछ बोलेगी। परन्तु, वह कुछ भी न बोली। उसने उस समय आंख तक ऊपर न उठाई। वह अपने ही विचारों में तल्लीन रही। बेचारा टेलीमार्च और भी व्यथित हुआ। तब, उसने सोचा कि इसे किसी काम में लगाना चाहिए। वह सुई, डोरा और कपड़ा लाया। उसने इन चीजों को फेशार्ड के सामने रख दिया। फेशार्ड ने उन्हें ले लिया और कभी कभी काम भी करने लगी। टेलीमार्च को बहुत संतोष हुआ। धीरे धीरे फेशार्ड की उंगलियाँ और भी तेजी के साथ चलने लगीं। उसने अपने फटे कपड़े सी डाले। वह कपड़े सिया करती और धीरे धीरे कुछ गुनगुनाया करती। कभी कभी यह मालूम पड़ता कि गुनगुना गुनगुना कर वह अपने बच्चों का नाम ले रही है। हवा का झोंका चलता और गुनगुनाती हुई वह अपना सिर झोंके के वेग की ओर उठा देती। चिड़ियां बोलतीं और उसकी आंखें उनकी ओर दौड़ जातीं। हर ओर से उसका मन किसी ऐसी बात के सुनने के लिए उत्सुक-सा रहता जिससे उसे अपने बच्चों की खबर मिलती। एक दिन, टेलीमार्च ने देखा कि एक थैली में, कुछ अखरोटों को भरे हुए, फेशार्ड कहीं जाने के लिए तैयार खड़ी है।

टेलीमार्च ने पूछा, "कहां जा रही हो?"

उसने उत्तर दिया, "उनकी खोज में।"

टेलीमार्च ने उसे नहीं रोका।

माता चल पड़ी। वह किधर जा रही थी, यह स्वयं उसे भी पता न था। वह सीधे चल पड़ी। जिस ओर उसके पैर खिंचे उसी ओर उसने उन्हें बढ़ाया। खाने पीने की उसे तनिक भी

सुध न थीं। रात-दिन उसे चलने ही की धुन थी। बसती में पहुँच कर भीख मांग लेती, और जंगल में पहुँचती, तो जंगली फलों को तोड़ तोड़ कर भक्षण कर लेती। थक जाती तो भूमि पर बैठ जाती। शिथिल हो जाती, तो चमकते हुए तारों की छाया में, शीत और वायु के खयाल के बिना, कभी पानी की बौछारों में और कभी पवन के झोकों में, वह अपने हाथ-पैर उरहनी भूमि पर डाल देती और कुछ समय के लिए, उसकी आंखें झप जातीं। गांव गांव में वह इस प्रकार डोलती फिरती। चिथड़ों से लदी हुई इस भिखारिणी से कहीं कहीं लोग प्रेम से भी बोलते और कहीं कहीं उसे दुरदुरा भी देते। बहुधा ऐसा होता कि जिस रास्ते या सड़क को वह एक बार पार कर जाती, रास्ता भूल कर वह फिर उसी पर आ निकलती। शान्ति और विग्रह दोनों प्रकार के स्थल उसके लिए एक समान थे। जहां गोलियां चलतीं, जहां रुंड-मुंड नाचते, जहां मनुष्य मनुष्य का रक्त बहाते, जहां शान्ति-पूर्ण गृह और सुखी परिवारों को नष्ट-भ्रष्ट किया जाता, उनमें भी वह पहुँचती और अपने बच्चों—अपने खोये हुए बच्चों—का पता पूंछती फिरती। राह में उसे कुछ आदमी मिलते। वह उनसे पूंछती, "तुमने कहीं तीन नन्हें नन्हें बच्चे देखे हैं?" ये लोग कुछ आश्चर्य से उसकी ओर देखते। वह फिर उनसे कहती, "दो लड़के और एक लड़की है।" फिर वह उनसे कहती "उनके नाम रेनीजीन, ग्रोस एलैन और ज्योर्जेट हैं।" इसके पश्चात् भी उसका बर-बराना समाप्त न होता। वह कहती "बड़ा साढ़े चार वर्ष का है और छोटी बच्ची केवल २० महीने की। बताओ, बताओ, क्या तुम जानते हो कि वे कहां है?" लोग उसकी ओर और भी अधिक आश्चर्य से देखते। उनके इस ढंग से वह और भी क्रुद्ध होती और कहती, "तुम नहीं बोलते और इसलिए नहीं बोलते कि ये बच्चे

मुझ अभागिन के हैं !" लोग उसे छोड़ कर चल देते। वह चुप-चाप खड़ी रहती और फिर अपना हृदय दबाकर रह जाती। एक दिन एक किसान ने उसकी बातें सुनीं। उसने सोचकर पूछा, "क्या कहा ? तीन बच्चे ?"

फै०—हाँ, तीन बच्चे।

कि०—दो लड़के ?

फै०—और, एक लड़की भी।

कि०—हाँ, मैंने यह सुना है कि एक रईस के पास इस प्रकार के तीन बच्चे हैं।

फै०—अरे, जल्दी बताओ, कहाँ कहाँ ?

कि०—ला-टोर में।

फै०—ला-टोर क्या चीज है ?

कि०—किला है।

फै०—क्या दूर है ?

कि०—हाँ, निकट नहीं है।

फै०—मैं किस रास्ते से जाऊँ ?

कि०—इधर से, तुम पश्चिम की ओर जाओ और (हाथ से दिखाकर) सीधी इसी पगडंडी के रास्ते चली जाओ।

बात समाप्त भी न होने पाई और वह चल पड़ी। किसान ने पुकार कहा, "संभल कर जाना, वहां युद्ध हो रहा है।"

फैशार्ड ने इसका कोई उत्तर तक न दिया। वह इस बात के सुनने के लिए मुड़ी तक नहीं। वह सीधे आगे ही बढ़ती गई।

———

मुझ अभागिन के हैं !" लोग उसे छोड़ कर चल देते। वह चुप-चाप खड़ी रहती और फिर अपना हृदय दबाकर रह जाती। एक दिन एक किसान ने उसकी बातें सुनीं। उसने सोचकर पूंछा, "क्या कहा ? तीन बच्चे ?"

फै०—हाँ, तीन बच्चे।

कि०—दो लड़के ?

फै०—और, एक लड़की भी।

कि०—हाँ, मैंने यह सुना है कि एक रईस के पास इस प्रकार के तीन बच्चे हैं।

फै०—अरे, जल्दी बताओ, कहाँ कहाँ ?

कि०—ला-टोर में।

फै०—ला-टोर क्या चीज है ?

कि०—किला है।

फै०—क्या दूर है ?

कि०—हाँ, निकट नहीं है।

फै०—मैं किस रास्ते से जाऊँ ?

कि०—इधर से, तुम पश्चिम की ओर जाओ और (हाथ से दिखाकर) सीधी इसी पगडंडी के रास्ते चली जाओ।

बात समाप्त भी न होने पाई और वह चल पड़ी। किसान ने पुकार कहा, "संभल कर जाना, वहां युद्ध हो रहा है।"

फैशार्ड ने इसका कोई उत्तर तक न दिया। वह इस बात के सुनने के लिए मुड़ी तक नहीं। वह सीधे आगे ही बढ़ती गई।

ला-टोर का संग्राम

ला-टोर का किला एक बड़े जंगल में था। वह खूब ऊंचा था। उसकी दीवारें चार-पाँच गज चौड़ी थीं। दीवारों में छेद बने हुए थे, जिनसे भीतर बनी हुई सीढ़ियों के कुछ अंश दिखाई देते थे। यह बात प्रसिद्ध थी कि किले के ऊपरी हिस्से में ऐसे चोर दरवाजे हैं जो खटके से खुलते हैं और खटके ही से बन्द हो जाते हैं और जब ये दरवाजे बन्द हो जाते हैं तो दीवारों में ऐसे ठीक बैठ जाते हैं कि उनका पता लगाना तक कठिन हो जाता है। पुराने जमाने में, इस किले पर, कई बार चढ़ाइयाँ हुई थीं। इन चढ़ाइयों के चिन्ह अभी तक मौजूद थे। किले की दीवारों पर तोप और बन्दूक के गोले और गोलियों के दाग जगह जगह बने हुए थे। किले की दीवार में एक स्थान पर दरार थी। किसी समय किले के उस भाग को बारूद से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया था। वह भाग उड़ा तो नहीं, परन्तु कुछ दरक गया था। दरार के समीप एक सुरंग का दरवाजा था। सुरंग के दो हिस्से थे। ऊपर के हिस्से में, दो कलदार पहिये थे। प्राचीन समय में जिन लोगों को मृत्यु-दण्ड दिया जाता था, उन्हें इस सुरंग में भेजा जाता था। एक हाथ और एक पैर पहिये में लगा दिया जाता था। इसके बाद, कल के जोर से पहिया घुमाया जाता था और उसके घुमाव से, अपराधी कुचल कर चटनी हो जाता था। इसके नीचे जो कोठरी बनी हुई थी, वह काल-कोठरी कहलाती थी। एक छेद द्वारा अपराधी रस्सी से बांध कर उसमें डाल दिया जाता था। उसमें अन्धकार का यह हाल था कि हाथ को हाथ न

सूझता था। उसी छेद से भोजन भी डाल दिया जाता था। नीचे भूमि में बेहद सील थी। कहीं कहीं पानी भी था। छेद से हवा भी पहुँचती थी और सील से मिल कर इतनी ठण्डी हो जाती थी कि तीर की तरह छेदती थी। यहां से जिन्दा निकलना असम्भव था। ऊपर कलदार पहिये थे और नीचे मृत्यु का यह दरवाजा। ऊपर काल-यन्त्र था, तो नीचे कालकोठरी। किले के नीचे एक नाला बहता था। नाले के ऊपर तीन महराबों का एक पुल था। यह पुल किले से जुड़ा हुआ था। किले के पश्चिम में, एक ऊंचा टीला था। इस टीले पर दो अच्छे मैदान थे। टीला किले की बगल में था। उसके और किले के बीच में केवल गहरा नाला और उस पर बना हुआ पुल था। पुल पर तीन खण्ड की एक छोटी अट्टालिका बनी हुई थी। इस अट्टालिका के नीचे के हिस्से में, दुर्ग-रक्षक सैनिक रहा करते थे। ऊपर के खण्ड में, एक पुस्तकालय था, जिसमें बड़ी बड़ी खिड़कियाँ लगी हुई थीं और जिसके भीतर का दृश्य टीले पर से दिखाई देता था। सब से ऊपर, गल्ला-गोदाम था। उसमें गल्ला भरा हुआ था। यह पुल सैनिक दृष्टि से बहुत अच्छा न था, क्योंकि इसकी इमारत के कारण शत्रु को दुर्ग पर धावा करने में सहायता मिल सकती थी। पुल पर इमारत पीछे से बनी थी और उस समय बनी थी जब ला-टोर के दुर्ग के मालिक, गावैन लोगों को बाहरी हमलों का कुछ भी खटका न रहा था। उन्होंने हमलों के समय किये जा सकने वाले रक्षा के उपाय भी किसी अंश में सोच लिये थे। पुल के दो खण्ड तक पहुँच सकने वाली एक लोहे की सीढ़ी उस इमारत में लगा दी गई थी। यह इसलिए कि यदि कभी आग लगे तो हानि न हो। पुल समाप्त करते ही एक भारी, परन्तु छोटा सा लोहे का दरवाजा मिलता था। इसके खोलने के लिए एक बड़ी कुंजी थी। उस कुंजी को बड़े यत्न के साथ एक ऐसे स्थान

पर रक्खा जाता था जिसका पता दुर्गेश के सिवा किसी को मालूम न होता था। कोई भी आदमी पुल से, इस दरवाजे में से हो कर निकले बिना, दुर्ग में नहीं पहुँच सकता था। और, दरवाजा इतना सुदृढ़ था कि तोप के गोले भी उसका कुछ न बिगाड़ सकते थे। संक्षेप में, दुर्ग में छः खण्ड थे और उसके भीतर जाने के लिए केवल एक दरवाजा। पुल की इमारत तक पहुँचने के लिए पुल के एक ऐसे हिस्से से गुजरना पड़ता था जिसे खींच कर हटाया जा सकता था। दुर्ग के पीछे जंगल था और सामने ऊंचा टीला, जो पुल की इमारत से ऊंचा था, परन्तु क़िले की उंचाई से नीचा। और, पुल के नीचे एक छोटा सा गहरा नाला बहता था।

× × ×

अगस्त मास का आरम्भ हो चुका था। फ्रांस भर में उथल-पुथल मची हुई थी। खूब मार-काट हो रही थी। वैण्डी के किसानों के कदम उखड़ गये थे। जगह जगह वे परास्त हो रहे थे। तो भी, उनकी आशा न टूटी थी। उन्हें इंगलैंड की सहायता की आशा थी। वे समझते थे कि शीघ्र ही अंग्रेजी सेना फ्रांस के समुद्री तट पर पहुँच जायगी। इंगलैंड के प्रधान-मंत्री मि० पिट छल और कपट द्वारा इस बात का प्रयत्न भी कर रहे थे कि किसी प्रकार प्रजा-तंत्र की सेना की आंखों में धूल झोंक कर अंग्रेज सिपाहियों को फ्रांस के समुद्री तट पर उतार दें, और इस प्रकार, लन्टेनक को मदद पहुँचा दें। फ्रांस को नीचा दिखाने, उसकी छाती को अपने सैनिकों के पैरों से रौंदने के लिए कोई भी ऐसी बात न थी जिसे पिट ने उठा रखी हो। देश-द्रोहियों को उसने रिश्वतें दीं। फ्रांस भर में उसने अपने जासूस फैला दिये और चतुरता के साथ हत्यायें तक करवा देने की

तैयारियां उसने कीं। परन्तु, पग पग पर फ्रांस के सतर्क सुपूतों ने उसके दांत खट्टे किये और उसकी चालबाजियों को विफल किया, देशद्रोहियों की घातक चालें मलियामेट हुईं और उन्हें कड़ा से कड़ा दण्ड मिला। फ्रांस में, उस समय, हर ओर, हिंसा का ऐसा राज्य था कि एक पक्ष दूसरे पक्ष के साथ तनिक भी दया करना नहीं जानता था। चारों ओर यही ध्वनि जोरों पर थी कि दुश्मन मिले तो उसे बिना सोचे-विचारे तलवार के घाट उतार दो।

अगस्त मास में, ला-टोर के किले को प्रजा-तंत्र की सेना ने जा घेरा। एक दिन सन्ध्या को जब कि झुटपटा समय हो गया था और आकाश में इधर उधर कहीं कहीं तारे भी दिखाई देने लगे थे, किले की दीवार पर से एक तुरही बजी। नीचे पड़ी हुई सेना की ओर से उसका बिगुल बजा कर उत्तर दिया गया। दूसरी बार तुरही फिर बजी। तुरही बजानेवाला दीवार पर खड़ा था। उसने नीचे किले को चारों ओर से घेरे हुई सेना से पूछा, "क्या हम तुमसे बात-चीत कर सकते हैं?" बिगुल द्वारा उत्तर दिया गया—"हां।" उस समय, जब दो लड़नेवाले पक्ष एक दूसरे से कुछ कहना चाहते थे, तो, इसी प्रकार, तुरही और बिगुल की मदद से, एक दूसरे का ध्यान आकर्षित करते थे। यदि एक पक्ष के तुरही बजाने पर दूसरा पक्ष उसी तरह तुरही का बिगुल द्वारा उत्तर न देता, तो समझा यह जाता कि दूसरे पक्ष को बोलना मंजूर नहीं है और यदि दूसरा पक्ष उत्तर देता, तो उसका अर्थ यह होता कि थोड़ी देर तक लड़ाई बन्द रहेगी और दोनों पक्ष एक दूसरे से कुछ कहें सुनेंगे। जब नीचे पड़ी हुई सेना ने दीवार पर से बजनेवाली तुरही का बिगुल से उत्तर दिया तो दीवार पर किले वालों का जो आदमी खड़ा था वह बोला:—

शत्रु-सेना के लोगों! सुनो। मैं पहले अपना नाम बतलाता हूँ मेरा नाम इमानस है। आज तक मैं तुम्हारे कितने ही आद-

मियों को धूल चटा चुका हूँ। तुम्हारे कितने ही नरपुंगव मेरी तलवार की बदौलत धराशायी हो चुके हैं। तुमने भी मेरा बहुत कुछ बिगाड़ा है। मेरे हाथ की उंगली तुम्हारी चोटों के भेंट हो चुकी है। मेरी माँ, मेरे बाप और मेरी अठारह वर्ष की बहिन का सिर तुमने काटा है। यह तो मेरा परिचय हुआ। इस समय मैं तुमसे जो बात कहना चाहता हूँ वह अपनी तरफ से नहीं कहूँगा। मैं अपने प्रभु के सात जंगलों के मालिक, मारकुस लन्टेनक की ओर से तुमसे बातें कर रहा हूँ। सब से पहली बात तो यह है कि मेरे प्रभु मारकुस ने इस किले में बन्द हो जाने के पहले ही अपना काम बाहर छः सेनापतियों को सौंप दिया है। इसलिए तुम यह मत समझो कि यदि तुम इस किले पर कब्जा कर लोगे. तो विजय पा जाओगे और निश्चिन्त हो जाओगे। बाहर के छहों सेनापति तुन्हें नाकों चनें चबवा देंगे। यदि, इस किले में, मारकुइस का अन्त भी हो जायगा, तो बाहर के सेनाध्यक्षों की बदौलत अन्त में राजा और उसके पक्ष ग्रहण करने वालों की जय ही होगी। मैं जो बातें कह रहा हूँ उन्हें ध्यान से सुनो और उन्हें मारकुइस ही के मुँह से निकली हुई मानो। मारकुइस मेरी बगल ही में खड़े हैं। जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सब उन्हीं के आदेश से कह रहा हूँ तुम इस बात को कदापि न भूलो कि तुम्हारी लड़ाई अन्याय की है और हम लोग न्याय के लिए जान दे रहे हैं। हम सीधे-साधे आदमी हैं। ईश्वर के भरोसे काम करते हैं। प्रजा-तन्त्र वालों का यह घोर अन्याय है कि हम पर वे लोग हमला करते हैं। हम खेती करते हैं तो वे हमारी खेती में विघ्न छोड़ते हैं, हमारे घरों में आग लगाते और हमारे खेतों को उजाड़ते हैं। इस घोर अत्याचार के कारण, इस कठिन शीतकाल में, आज हमारे बच्चे और स्त्रियाँ नंगे पैरों जंगलों में भटकती फिरती हैं। तुमने हमें जंगल में घेर रखा है, तुमने

हमें किले में बन्द कर रक्खा है। तुमने हमारे साथियों के प्राण हर लिये हैं। तुम्हारे पास अच्छे हथियार हैं, अच्छी तोपें हैं, अच्छे सैनिक हैं। तुम्हारे पास इस समय साढ़े चार हजार सिपाही हैं और हमारे पास केवल १९ आदमी। तुम्हारे पास गोला-बारूद, रसद और सामान है। तुमने हमारी दीवार भी तोड़-फोड़ डाली है और तुम इस प्रकार किले में घुस भी सकोगे। यह सब कुछ है, तो भी हमें एक खास बात कहना है और तुम लोग, दीवार के नीचे हो—तुम सब, उसे ध्यान से सुनो। हमारे पास इस समय तीन कैदी हैं—तीनों बच्चे हैं। इन बच्चों को तुम्हारी रेजीमेंट ने आज से कुछ पहले गोद लिया था—उन्हें अपने बच्चे बनाया था। हम इन तीनों बच्चों को तुम्हें दे देंगे, परन्तु एक शर्त पर और वह यह कि इसके बदले में, हम १९ आदमी किले के बाहर साफ निकल जाँय। यदि तुम इस बात को नहीं मानते तो सुन लो। तुम, जिधर दीवार में दरार हो गई है, उस ओर से, या टीले की ओर से, पुल की तरफ से ही, हमारे ऊपर आक्रमण कर सकते हो। पुल पर जो इमारत है उसमें तीन खण्ड हैं। जो नीचे का खण्ड है उस में छः पीपे तारकोल के हैं और साथ ही, सूखी घास भरी हुई है। ऊपर के हिस्से में भी घास और दाना भरा हुआ है। बीच के खण्ड में पुस्तकें और कागज हैं। बीच में जो लोहे का दरवाजा है और जिससे होकर ही किले में प्रवेश किया जा सकता है, वह मजबूती के साथ बन्द है और उसकी कुंजी मारकुइस महोदय के पास है। मैंने उस दरवाजे के नीचे एक छेद कर दिया है। उस छेद में गंधक की एक सलीतेदार बत्ती पड़ी है। इस बत्ती का एक सिरा मेरे हाथ में है और दूसरा तारकोल के पीपों में। चुटकी बजाते ही, उस बत्ती में आग लग सकती है। यदि तुम हम लोगों को निकल जाने नहीं दोगे, तो हम तीनों बच्चों को पुल की इमारत

के पुस्तकों और कागजों वाले खण्ड में रख देंगे और लोहे का दरवाजा बन्द कर लेंगे। यदि तुमने पुल की तरफ से आक्रमण किया, तो उस समय पुल की इमारत में जो ज्वाला उठेगी; उसे तुम यह समझना कि तुमने उसे अपने हाथों से उठाई और यदि तुमने दरार की ओर से हमला किया तो जो अग्नि-काण्ड पुल की इमारत में हो, उसे यह समझना कि हमने उसे किया। यदि, तुमने दोनों ओर से हमला किया, पुल और दरार दोनों ओर से तुम हमारे ऊपर टूटे, तो तुम तुम्हारे टूटते ही आग लग जायगी और तुम यह समझना कि इस आग को हमने और तुमने दोनों ने मिल कर लगाई। हर हालत में, इस अग्निकाण्ड से तुम्हारे बच्चे न बचने पावेंगे। अब बताओ तुम क्या चाहते हो? यदि तुम हमारी बात मानते हो, तो हम बाहर निकल जायँ। यदि नहीं मानते, तो तुम्हारे बच्चे मरें! उत्तर दो—मैं अब बोल चुका।"

यह कह कर दीवार पर से बोलने वाला आदमी चुप हो गया। नीचे से एक आवाज उठी, उसने कहा, "हम तुम्हारी बात नहीं मानते।"

यह आवाज कटु और तीक्ष्ण थी। साथ ही, एक आवाज और उठी। उसमें दृढ़ता थी, परन्तु कटुता नहीं। उसने कहा; "हम तुम्हें आत्म-समर्पण के लिए २४ घंटे का समय देते हैं। (थोड़ा ठहर कर) यदि कल ही इसी समय तुमने आत्म-समर्पण नहीं कर दिया, तो हम तुम्हारे ऊपर हमला कर देंगे।"

इन शब्दों के समाप्त होते ही नीचे से पहिले बोलने वाले आदमी ने चिल्ला कर कहा, "उसके पश्चात् हम तुम्हें कदापि शरण न देंगे।"

इस तीक्ष्ण स्वर के उत्तर में, किले की दीवार पर एक दीर्घकाय व्यक्ति आगे बढ़ा। तारों की झिलमिलाहट में, मालूम पड़ा

कि वह मारकुइस लन्टेनक है। उसने नीचे तीक्ष्ण दृष्टि फेंकते हुए चिल्ला कर कहा, "ऐं पादड़ी, क्या तू बोल रहा है?"

नीचे से, उसी प्रकार की कड़ी आवाज में उत्तर दिया गया, "हां, देश-द्रोही, मैं बोल रहा हूँ।"

प्रखर स्वर सिमोरडेन का था और दूसरा आदमी जिसका स्वर कठोर नहीं था, गावैन था। मारकुइस लन्टेनक ने सिमोरडेन को पहचान लिया। उसे उस समय उस ओर का कौन आदमी ऐसा था जो न पहचानता हो। उसकी कठोरता इतनी प्रसिद्ध हो गई थी कि चारों ओर उसकी चर्चा थी। कठोर आदमी बड़े अभागी होते हैं। उनका हृदय चाहे जितना शुद्ध हो और चाहे जितने निःस्वार्थ रूप से वे काम करें, परन्तु जिनकी दृष्टि उन पर पड़ती है वे सब उनसे असन्तुष्ट रहते हैं। लन्टेनक भी बहुत सख्त आदमी था। जिस तरह सिमोरडेन राजपक्ष के आदमियों का खून पीने के लिए सदा तैयार रहता उसी प्रकार लन्टेनक भी प्रजा-तंत्र के आदमियों के रक्त से हाथ रंगने के लिए तैयार रहता। राज-पक्ष के आदमी सिमोरडेन के सिर के लिए बोली बोलते और प्रजा-तंत्र के आदमी लन्टेनक के सिर के लिए। यथार्थ में सिमोरडेन और लन्टेनक एक ही प्रकार की आत्मा के के दो स्वरूप थे। कठोरता में तो मानों उन दोनों का यह हाल था कि एक को छिपाओ और दूसरे को दिखाओ।

गावैन के कारण लड़ाई २४ घंटे तक बन्द रही। इमानस का अनुमान बिल्कुल ठीक था कि गावैन की सेना में ४५०० सिपाही हैं। इस सेना के साथ १२ तोपें थीं। ६ तोपें जंगल की तरफ से और ६ टीले की तरफ से किले पर अपना निशाना बांधे हुए थीं। किले की जड़ में एक दरार हो चुकी थी। चढ़ाई करनेवाले साढ़े चार हजार थे और दुर्ग-रक्षक केवल १९। दुर्ग का कमजोर स्थल था पुल, जिस पर पुस्तकालय और गल्लेगुदाम

की इमारत थी। गावैन सोचने लगा कि यदि पुल पर आक्रमण करता हूँ, तो किले वाले पुल की इमारत में आग लगा देंगे। गावैन का हृदय इस कल्पना से दुखी हुआ। वह नहीं चाहता था कि जिस स्थल में मेरा बाल-जीवन कटा, जिस पुस्तकालय में बैठ कर मैंने अपने अबोध काल के कितने ही सुन्दर वर्ष पढ़ने और खेलने में काटे, जहां की प्रत्येक वस्तु मेरे बाल्य-काल की स्मृति के समान है और जहां, बहुत सम्भव है कि वह पालना इस समय तक मौजूद हो जिसमें मैं बचपन में झूला करता था, उसे इस प्रकार अग्नि में भस्म हो जाने दूं। उसका हृदय हिल गया। वह अपने जन्म-स्थान और बाल-कीड़ा के स्थल को बचाये रखने की चिन्ता में पड़ गया। इस चिन्ता का फल यह हुआ कि उसने किले पर पीछे से आक्रमण करना तय किया, और आगे, पुल की तरफ, उसने पक्की मोर्चा-बन्दी कर दी और छः तोपें लगा दीं। सिमोरडेन ने भी इस पर कुछ कहा-सुनी न की। उसके मन में यह बात आई तो कि पुल पर इतना दया-भाव या उसके साथ इतना मोह-भाव प्रकट करना ठीक नहीं और उसने मन ही मन कई बार कोशिश भी की कि इस प्रकार की कमजोरी कदापि न दिखाई जाय, परन्तु, अन्त में, उसका पत्थर का हृदय भी उस समय हिल गया जब उसके नेत्रों के सामने पुल के उस खण्ड का नक्शा आ गया, जिसमें बैठ कर उसने बालक गावैन का विद्यारम्भ-संस्कार कराया था और जहां, बहुत करके, उस समय की उसकी आरम्भ कराई हुई, गावैन की पहिले की पुस्तकें अभी तक रक्खी हुई थीं। उसके हृदय में में भी ये विचार हिलोरें मारने लगे कि इस पुस्तकालय की चहार-दीवारी के भीतर ही, बालक गावैन मेरे घुटनों पर बैठ कर अपना पाठ याद किया करता था और इसी चहार-दीवारी के भीतर, मेरे नयनों का तारा, गावैन द्वितीया के चन्द्र की तरह बढ़ कर

इतना बड़ा हुआ, उस चहार-दीवार को मैं जान-बूझ कर किस प्रकार अग्नि के सुपुर्द करूं ? इसलिए, गावैन के निश्चय पर वह चुप रहा, परन्तु उसका चुप रहना स्पष्ट रूप से सूचित करता था कि वह सहज में चुप नहीं रहा।

× × ×

इमानस से बात-चीत हो जाने के पश्चात्, गावैन ने अपने लेफ्टीनेंट को बुलाया। उसका नाम था गूशेम्प। गूशेम्प इस योग्य न था कि किसी सेना का नायक होता, परन्तु सिपाही में जितने गुण होने चाहिए वे सब उसमें अधिक से अधिक मात्रा में मौजूद थे। वह ईमानदार था, बहादुर था, निडर था और आज्ञाकारी था। जो बात उससे कही जाती और जहाँ तक की कही जाती, वहीं तक वह उसे समझता और उससे अधिक समझने की न उसमें शक्ति ही थी और न उसके लिए वह प्रयत्न ही करता। सौंपे हुए काम को वह बहुत अच्छी तरह करता और उसके करने के लिए उसे जो रास्ता बता दिया जाता उससे वह न इधर जाता और न उधर ही। जब वह गावैन के सामने पहुँचा तो गावैन ने उससे कहा, "एक सीढ़ी चाहिए।"

गू०—सेनापति, सीढ़ी तो हम लोगों के पास नहीं है।

गा०—एक सीढ़ी तो लानी पड़ेगी।

गू०—दीवार पर चढ़ने के लिए ?

गा०—नहीं, दीवार से उतर जाने के लिए।

गूशेम्प ने थोड़ी देर सोचकर कहा, "हाँ, समझ गया, परन्तु उसके लिए तो ऊँची सीढ़ी चाहिए !"

गा०—हाँ, ऊँची सीढ़ी तो होनी ही चाहिए। परन्तु, सीढ़ी तुम्हारे पास क्यों नहीं है ?

गू०—आपने टीले की ओर से आक्रमण करना तय ही

नहीं किया। इसीलिए हमने सीढ़ी की कोई फिक्र नहीं की। केवल दीवार उड़ाने की चिन्ता हमें थी।

गा०—अच्छा तो कहीं से एक सीढ़ी तो मंगाओ।

गू०—बहुत ऊंची सीढ़ी का तो मिलना भी कठिन है।

गा०—कहीं से ढूँढ निकालो। कई छोटी सीढ़ियों को मिलाकर एक बना लो।

गू०—सीढ़ियों का मिलना कठिन है। किसान लोग हमसे शत्रुता मानते हैं और इसलिए, जिस तरह वे हमारे मार्ग में पड़ने वाली गाड़ियों और पुलों को तोड़ डालते हैं, इसी तरह वे सीढ़ियों को भी नष्ट कर डालते हैं।

गा०—हाँ यह तो ठीक है, वे प्रजा-यन्त्र के मार्ग में रुकावटें डालते हैं।

गू०—किसान लोग खूब बाधायें डालते हैं। रसद नहीं पहुँचने देते, असबाब के लादने के लिए गाड़ियाँ और नदियों के पार करने के लिए नावें नहीं देते।

गा०—तो भी, सीढ़ी तो चाहिए ही ?

गू०—'जवेने' नाल के गांव में एक बढ़ई रहता है, शायद उसके यहां सीढ़ी हो। आपको कब चाहिए ?

गा०—अधिक से अधिक; कल इसी समय।

गू०—मैं उस गांव में आदमी भेजता हूँ। खूब जल्दी करूंगा, और कल सवेरे तक आप की सेवा में सीढ़ी हाजिर करूंगा।

गा०—अच्छी बात है। हाँ, जल्दी करना।

दस मिनट के बाद, गूशेम्प ने जाकर गावैन को खबर दी कि सीढ़ी के लिए आदमी उस गाँव को रवाना कर दिये गये। उसी के बाद यह तय हुआ कि दूसरे दिन गावैन, गूशेम्प

के साथ, जंगल की ओर से, किले पर धावा करे और सिमोरडेन तोपों पर पलीता रक्खे हुए पुल के मुहाने पर मुस्तैद रहे।

किले की जड़ में गोला-बारी से जो दरार हो गई थी, उसके द्वारा शत्रु किले में घुस सकते थे। घुसते ही जहाँ वे पहुँचते, वह एक बड़ा गोल कमरा था और उसके बीच में एक खम्भा था जिसके ऊपर वैसा ही गोल कमरा दूसरे खण्ड में था। इस कमरे में अंधेरा था। इसना अंधेरा कि उसमें रहना कठिन था, और इसी अंधकारमय कमरे से होकर काल-कोठरियों में जाने का मार्ग था। इसी से, किले की दीवारों के भीतर से, ऊपर के कमरों में जाने लिए सीढ़ी थी। किले वालों ने सोचा कि दरार को पाट देना देना व्यर्थ है, क्योकि तोप का गोला उस दरार को फिर फोड़ देगा। इसलिए, उन्होंने दरार को पाटा तो नहीं, परन्तु आत्मा-रक्षा के लिए उन्होंने उस दरार की इस ढंग से मोर्चें बन्दी कर दी कि शत्रुओं की गोलियाँ सीधे उन पर न लग सकें, परन्तु उस अंगड़-खंगड़ के बीच में से, जिसको इकट्ठा कर उन्होंने ने मोर्चेंबन्दी की थी, वे शत्रुओं पर गोलियाँ छोड़ सकें। मारकुइस लन्टेनक ने स्वयं अपनी निगरानी में दरार की मोर्चेबन्दी कराई। न केवल कराई, बल्कि बड़े उत्साह के साथ, हँसते और बोलते, उसने, अपने साथियों के साथ, मोर्चे-बन्दी के लिए, ईंट और पत्थर भी ढोये। काम करते समय, वह अपने साथियों से बिल्कुल बराबरी का व्यवहार करता, परन्तु साथ ही, जिस बात की वह आज्ञा देता, उनमें किसी प्रकार की आना-कानी रवा न रखता। ऐसे अवसर पर, वह साफ साफ कह देता, देखो, यदि तुममें से आधे भी मेरी आज्ञा के विरुद्ध आचरण करेंगे, तो, मैं बचे हुए आधे आदमियों द्वारा दूसरे

आधे आदमियों को गोली से मरवा दूंगा और बचे हुए आद-मियों ही के साथ किले की रक्षा करूँगा।

इधर लन्टेनक दरार की मोर्चेबन्दी में भिड़ा हुआ था, उधर इमानस पुल पर काम कर रहा था। पुल पर लटकने और जरूरत के वक्त काम आने वाली रस्सी उतार ली गई और पुस्तकालय में डाल दी गई। नीचे की खिड़कियों पर मजबूत छड़ लगे हुए थे और ऊपर की खिड़कियाँ बहुत ऊँची थीं। इमानस तीन आदमियों के साथ ऊपर के खण्ड पर गया। उसे उसने घास और फूस से और भी भर दिया। नीचे उसने तारकोल के कुछ पीपे और भी रख दिये। उसने तारकोल नीचे डाल कर उसमें गंधक की बत्ती का एक सिरा डुबो दिया। इस बत्ती का दूसरा सिरा किले में था। तारकोल वाले के खण्ड और घास-फूसवाले खण्ड के बीच में पुस्तकालय का खण्ड था। इमानस ने तीन पालने उस कमरे में लाकर रख दिये। इन पालनों में तीनों बच्चे रेनी-जेन, ग्रोस-एलेन और ज्योर्जेट—आनन्द से सो रहे थे। कमरे में कुसमय काम आने के लिए, एक सीढ़ी लटकी हुई थी। इमानस ने उसे उतार कर नीचे रख दिया। सीढ़ी के किनारे पर उसने तीन प्याले रख दिये जिनमें खाने के लिए दलिया था। प्यालों के पास ही, लकड़ी का एक चम्मच भी डाल दिया गया। गरमी के दिन थे, इसलिए, हवा आने के लिए, इमानस ने खिड़-कियाँ खोल दीं। फिर, वह लोहे दरवाजे के पास पहुँचा। उसने उसमें भीतर से एक ताला और लगा दिया, और भली भांति ठोक-पीट कर उसकी मजबूती की जांच की। फिर, उसने गंधक की बत्ती पर नजर डाली। उससे, उसे बहुत संतोष हुआ। उसने अन्दाजा लगाया कि बत्ती में आग लगते ही, पन्द्रह मिनट में, आग की लपकें पुल पर छा जायँगी। अपने प्रबन्ध पर एक बार, फिर संतोष की दृष्टि डाल कर, वह किले में गया। वहां उसने

मारकुइस को लोहे के दरवाजे की कुञ्जी सौंप दी। मारकुइस ने ले कर उसे जेब में डाल ली। नीचे शत्रु क्या कर रहे हैं, इस पर भी दृष्टि रखना आवश्यक था। इसलिए, इमानस किले की दीवार पर गया। वहाँ बैठ कर वह जंगल और टीले दोनों ओर शत्रु-सेना पर नजर दौड़ाने लगा और साथ ही, बारूद, कागज, गोलियाँ आदि सामान पास रख कर हाथों से कारतूस बनाने लगा।

प्रातःकाल जब सूर्य्योदय हुआ, तब, नीचे अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित, साढ़े चार हजार शत्रु-सैनिक किले पर धावा बोलने के लिए कमर कसे तैयार थे और उनका मुकाबला करने के लिए प्राणों को हथेली पर लिये हुए १९ आदमी, तीन बच्चों की ओट ले कर, किले के भीतर अपने तोप-तमंचे भर और तैयार कर रहे थे।

ज्योर्जेट ने टुकड़ों को नीचे गिरा कर फिर हाथ फैलाया। दूसरा पन्ना भी उसके हाथों में पहुँच गया और उसकी भी पहले ही की सी दशा हुई। ग्रोस-एलन और ज्योर्जेट ने इसी प्रकार, एक एक करके कितने ही पन्नों का दान अपने बड़े भाई से पाया और बड़ी शान्ति के साथ, इन पन्नों में अङ्कित, उस ग्रन्थ के रचयिता और उसके अनेक भाष्यकारों के चित्रों और अनेक देशों के नक्शों, तथा कथाओं के विवरणों को परमगति को प्राप्त कराया। रीने-जीन बड़ी शान से पन्नों को फाड़ फाड़ कर देने का काम कर रहा था। उसके भाई-बहिन जब उसके दिये हुए पन्ने को फाड़ फाड़ कर फेंकते तो वह और भी खुश होता। अन्त में, उसने उस ग्रन्थ की जिल्द को नीचे ढकेल दिया। जिल्द के ऊपर से घिसल कर गिरने में धमाका हुआ। इस पर भी बच्चे बड़े खुश हुए। यही कुशल हुई कि वह किसी बच्चे के हाथ पैर पर न गिरी। यदि वह उन पर गिरती तो भारी-भरकम होने के करण उन्हें हंसाने की जगह पर रुला देती।

रीने-जीन कुर्सी द्वारा नीचे उतर पड़ा। थोड़ी देर तक नीचे पड़े हुए टुकड़ों और जिल्द पर तीनों बच्चे अपनी दृष्टि दौड़ाते रहे। इसके बाद, फिर उन्होंने जिल्द को पैरों से ठुकरा ठुकरा कर खेलना आरम्भ किया। पहली लात रीनेजीन ने जड़ी। फिर, तीनों लात-घूसों से जिल्द और धरती पर पड़े हुए चित्रों के टुकड़ों की मरम्मत करने और हँस हँस कर खेलने लगे। सन्त बार्थ-लोम्यू के चित्र की पूरी दुर्गति हो गई। अन्य चित्रों और नक्शों की भी यही दशा हुई। उन तीनों बच्चों ने बड़े बड़े महात्माओं और अनेक देशों की चिन्दी चिन्दी उड़ा दी। इधर उधर पड़ी हुई चिन्दियों को देख कर ज्योर्जेट कुलक कुलक कर तालियां पीटती और खूब थिरकती। दोनों भाइयों ने टुकड़ों को उठा उठा कर हाथ से और भी छोटे छोटे टुकड़े कर डाले। इन छोटे

छोटे टुकड़ों को उठा उठा कर वे ऊपर फेंकने लगे। ये टुकड़े उड़ उड़ कर इधर उधर पड़ते। ज्योर्जेट इन टुकड़ों को हवा में उड़ते देख कर बोली, "तीली (तितली)।"

खेलते खेलते बिल्कुल शाम हो गई। बच्चों को नींद आने लगी। रीनेजीन अपने पालने का टाट खिड़की के पास घसीट लाया और उस पर लेट रहा। ग्रोस-एलन भी रीने-जीन के पास लेट गया। ज्योर्जेट भी उसके सिर के पास सिर रख कर लेट गई। तीनों को नींद आ गई और वे सो गये।

दिन डूब चला था। सूर्य की अन्तिम किरण क्षितिज पर पड़ रही थी। इतने ही में, जंगल भर में एक उजाला हो पड़ा! इसके बाद बड़ा धड़ाका हुआ। एक तोप दगी। उसकी ध्वनि गूंज उठी और उसकी प्रति-ध्वनि पहाड़ियों में टक्कर मारने लगी। यह शब्द बड़ा भयंकर था। उससे ज्योर्जेट की नींद टूट गई। उसने अपना सिर उठाया, फिर छोटी अंगुली उठाई और बोली, "बम्!"

तोप की ध्वनि समाप्त हो गई। शान्ति छा गई। ज्योर्जेट ने सिर नीचे डाल दिया और फिर सो गई।

माता की खोज

बच्चों की माता बच्चों की खोज में जंगल और मैदान सभी जगह की खाक छानती फिरती थी। दिन भर चलती और कहीं भी न ठहरती। थक जाती तो कहीं पड़ कर सो जाती और जो कुछ मिल जाता उसे खा लेती। इतना ही सोती और इतना ही खाती जिससे कि चलती फिरती और खोज करती रह सके। जिस दिन की बात ऊपर कह आये हैं, उससे एक दिन पहले, रात के वह एक ऐसे खण्डहर में सोई, जिसकी छत के ऊपर चमकने वाले तारे दिखाई देते थे और जिसके भीतर, नीचे भूमि पर, पुआल बिछा हुआ था। आधी रात को उसकी नींद टूट गई। जागते ही, वह चल पड़ी। गरमी के दिन थे। इसलिए, उसका रात रहते ही चल पड़ना ठीक भी था। वह पश्चिम की ओर चली थी। यदि कोई उसके पास पहुँच कर सुनता, तो उसे यह सुनाई पड़ता कि वह धीरे धीरे "ला-टोर" "ला-टोर" कहती और साथ ही अपने बच्चों के नाम भी लेती जाती है। यद्यपि वह चली जा रही थी, परन्तु भासित यही होता था, मानो वह नींद में है और बरबरा रही है। सबेरा होते होते वह एक गाँव में पहुँची। गांव वाले अच्छी तरह जागे भी न थे। घरों के कुछ द्वार खुल चुके थे, परन्तु अधिकांश अभी तक बन्द थे। इन दरवाजों तथा घरों की खिड़कियों से कुछ लोग अधीर हो हो कर बाहर देख रहे थे। बाहर से पहिये और जंजीरों की आवाज सुनाई दी थी। इसी आवाज की ओर लोगों की दृष्टि थी। कुछ आदमी गिरजा-घर के सामने, मैदान में, खड़े हुए थे। वे उस टीले की ओर देख

रहे थे, जो गाँव की सड़क के किनारे था। उस टीले से किसी
चीज को उन्होंने उतरते हुए देखा। यह चीज थी एक चार
पहियों की गाड़ी, जिसमें ऐसे पांच घोड़े जुते हुए थे, जिनकी
जोत लोहे की जंजीरों की थी। इस गाड़ी पर कोई भारी चीज
रक्खी हुई थी और वह टाट से ढकी हुई थी। दस सवार उस
गाड़ी के आगे थे और दस पीछे। इन सवारों के सिरों पर
तिकोनी टोपियां थीं और कन्धों पर नंगी किरचें चमक रही थीं।
ये लोग दूर थे और धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे। गांव में पहुँच
कर, वे उसी मैदान के पास पहुँचे। सवेरा हो गया था और
उजेला हो चला था। अभागिनी माता भी उस मैदान में, दूसरी
तरफ से, ठीक उसी समय पहुँची, जब कि सामने से, ये सवार
लोग पहुँचे। मैदान में कुछ लोग जमा थे और आपस में काना-
फूसी कर रहे थे। एक बोला, "यह क्या चीज है?"

दूसरे ने उत्तर दिया, "गला काटने की मशीन* है।"

प्र०—कहां से आ रही है?

उ०—फोरे स्थान से।

प्र०—कहां जा रही है?

उ०—पता नहीं।

एक बोला, "कहीं जाय, परन्तु यहां न ठहरे।"

अन्त में, सवार लोग अपनी गाड़ी और जंजीरों को खड़-
खड़ाते हुए आगे बढ़ गये। गांववालों की दृष्टि उस पर उस
समय तक गड़ी रही जब तक वह सड़क की मोड़ पर पहुँच कर
उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हो गई। फेशार्ड भी खड़ी इस

---

*फ्रान्स की क्रान्ति के समय, अपराधियों का गला काटने के लिए एक मशीन का बहुत प्रचार हुआ था। उसे लोग Guillotine के नाम से पुकारते थे।

दृश्य को देखती रही और अन्त में, उसी रास्ते पर चल पड़ी जिस पर सवार गये थे। वह कुछ भी न समझ सकी कि मामला क्या है ? उसे केवल अपने बच्चों की चिन्ता थी। मैदान में लोगों को उसने गला काटने की मैशीन का नाम लेते सुना था। गांव से बाहर निकलते ही उसे गला काटने की कल का ख़्याल आ गया। उसके मुँह से "गला काटने की मशीन" शब्द निकल पड़ा और साथ ही, उसके विक्षिप्त चित्त में कुछ ऐसी बातों की याद आ गई कि वह कांप सी उठी, उसके पैरों ने जवाब दे दिया और उससे आगे बढ़ते नहीं बना। वह कुछ थंभी और फिर, सड़क छोड़ कर, बायें तरफ़ मुड़ गई और जंगल में घुस गई।

चलते चलते जंगल के किनारे उसे एक गांव मिला। उसे भूख लग आई थी, इसलिए, वह उस गांव में घुसी। इस गांव में प्रजा-तन्त्र की सेना ने अपने नाके कायम किये थे। वह गाँव के मुखिया के घर के सामने पहुँची। गांव वाले घबड़ाये हुए थे और मुखिया के घर के सामने जमा थे। घर की सीढ़ी पर एक आदमी खड़ा था और उसके चारों ओर सिपाही खड़े थे। उस आदमी के हाथ में, एक बड़ा इश्तहार था। उसकी दाहिनी ओर डुग्गी लिये डुग्गी पीटने वाला खड़ा था और बाईं ओर लेई की हंडिया और ब्रुश लिये इश्तहार चिपकाने वाला। ऊपर दरीचे पर, मुखिया खड़ा हुआ था। जो आदमी सीढ़ी पर हाथ में इश्तहार लिये हुए खड़ा था वह प्रजा-तन्त्र की आज्ञाओं का प्रचारक था। उसके कंधे पर लटके हुए थैले से ही यह मालूम पड़ता था कि उसे निरन्तर यात्रा करनी पड़ती है। उसका काम ही यह था कि वह गांव गांव में पहुँच कर प्रजा-तंत्र की आज्ञाओं को सुनावे। वह अपने हाथ के इश्तहार को पढ़ कर सुनानेवाला ही था कि फैशार्ड भी वहां पहुँच गई। उसने उच्च स्वर से इश्तहार को इस प्रकार पढ़ कर सुनाया:—

"फ्रान्स के शक्तिमान् प्रजा-तंत्र के नाम पर !"

उसकी जबान से ये शब्द ज्यों ही निकले, त्यों ही डुग्गी वाले ने डुग्गी पर एक चोब लगाई। चोब के पड़ते ही भीड़ में सन्नाटा छा गया। कुछ आदमियों ने प्रजा-तंत्र के सम्मान में, अपने सिर से टोपियां उतार ली और कुछ लोगों ने प्रजा-तंत्र की उपेक्षा करने के लिए अपनी टोपियों को और भी संभाल कर सिरों पर कस लिया। उन दिनों टोपिकों द्वारा यह बात भली भांति जानी जा सकती थी कि कौन आदमी प्रजा-तंत्र का पक्ष-पाती है और कौन उसका विरोधी। इसके बाद इश्तहार पढ़ने वाले ने फिर आवाज लगाई :—

"फ्रान्स की जन-सभा द्वारा दिये गये अधिकारों के बल पर, उसकी उस आज्ञा के अनुसार, जिसमें उसने बागियों को प्राण-दण्ड देने और उनके आश्रय-दाताओं को कठोर दण्ड देने की व्यवस्था दी है, हम इन उन्नीस आदमियों को प्राणदण्ड का अधि-कारी घोसित करते हैं। उन उन्नीस आदमियों के नाम ये हैं :—"

इश्तहार पढ़नेवाला थोड़ी देर के लिए ठहर गया। सब लोगों का ध्यान उसके मुंह से निकलनेवाले शब्दों ही की ओर था। इश्तहार पढ़नेवाला फिर जोर से उन १९ आदमियों के नाम ठहर ठहर कर पढ़ने लगा। सब से पहला नाम था मार-कुइस लन्टेनक का। इस नाम के उच्चरित होते ही, अनेक लोगों ने एक दूसरे को कनखियों से देखा। लन्टेनक के नाम पश्चात्, इमानस का नाम पढ़ा गया। इसके बाद, शेष उन सत्तरह आदमियों के नाम, एक एक करके पढ़े गये जो लन्टेनक और इमानस के साथ ला-टोर किले में प्राणों, की बाजी लगाये हुए पड़े थे। जब ये नाम पढ़े जा रहे थे, तब इस भीढ़ में जो जिसकी पहचान के थे, वे उसके नाम पर कुछ संकेत करते और बहुधा उसके सम्बन्ध में, एक दूसरे से एक दो परिचय-सूचक शब्द

भी कहते जाते। इश्तहार पढ़नेवाले ने नामों की सूची समाप्त कर के जोर से पढ़ा :—

"ये लोग जिनके नाम अभी पढ़े गये, जहां कहीं मिलेंगे, वहीं उन्हें शिनाख्त करके तुरन्त प्राण-दण्ड दिया जायगा। जो कोई उन्हें अपने घर में आश्रय देगा या उनके भाग जाने में किसी प्रकार सहायक होगा, उसे सैनिक अदालत के सामने पेश किया जायगा और उसे भी मृत्यु-दण्ड दिया जायगा।"

इसके बाद इश्तहार पढ़नेवाले ने कहा, "हस्ताक्षर सिमोरडेन—प्रतिनिधि, सार्वजनिक रक्षा समिति।"

एक किसान बोल पड़ा, "वही सिमोरडेन, जो पादड़ी है?"

दूसरे ने कहा, "हां, हां, वही; वही, जो परीग गांव में पादड़ी था।"

दरीचे पर से, मुखिया अपनी टोपी ऊंची करके चिल्लाया, "प्रजा-तन्त्र की जय!"

डुग्गीवाले ने डुग्गी पर थाप दी। और, इसका अर्थ यह था कि अभी इश्तहार पढ़नेवाले की बात समाप्त नहीं हुई है। इश्तहार पढ़नेवाले ने हाथ हिला कर इशारा किया। वह फिर बोला, "सावधान! सरकारी इश्तहार में अभी चार पंक्तियां और भी हैं। वे सेनापति गावैन के आज्ञा स्वरूप हैं।"

लोग चुप हो गये। सब की आंखें इश्तहारवाले की तरफ फिर झुक गईं। वह फिर बोला :—

"ऊपर की आज्ञा के अनुसार, जो कोई उन १९ बागियों की किसी प्रकार की मदद करेगा, जो इस समय ला-टोर के किले में बन्द हैं और जिनको हमारी सेना घेरे पड़ी हुई है, उसे भी प्राण-दण्ड मिलेगा। हस्ताक्षर, गावैन, सेनापति।"

"ला-टोर" शब्द के उच्चरित होते ही, फैशार्ड, जो उस

भीड़ के पास चुपचाप खड़ी हुई थी, चौंक पड़ी। उसके मुंह से एकदम निकल पड़ा, "ऐं—ला-टोर !"

उसे चौंकते देखकर लोग आँख फाड़ फाड़ कर उसे देखने लगे। वह फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थी। इसीलिए, कुछ लोग बोल पड़े, "चोर मालूम पड़ती है !"

पास ही एक किसान स्त्री, एक डलिया में बिस्कुट लिये खड़ी थी। वह फैशार्ड के पास खसक आई और धीरे से बोली, "चुप रह, इस समय बोलना ठीक नहीं।"

फैशार्ड आंखें फाड़ फाड़ कर उस स्त्री की ओर देखने लगी। वह तनिक भी न समझ सकी कि लोग मुझे इस प्रकार घूर घूर कर क्यों देख रहे हैं ? उसके ध्यान में यह बात नहीं आई कि लोग मुझे ला-टोर का नाम लेने से क्यों रोक रहे हैं ? वह इसी सङ्कल्प-विकल्प में पड़ी हुई थी कि डुग्गी पर अन्तिम थाप पड़ी और इश्तहार चिपकाने वाले ने दीवार पर इश्तहार चिपका दिया। मुखिया अपने घर में चला गया, इश्तहार पढ़ने वाला आगे बढ़ गया और भीड़ भी छंट गई। कुछ लोग वहां रह गये। इनमें दोनों पक्ष के आदमी थे। वे उन १९ आदमियों के सम्बन्ध में बात चीत करने लगे। एक किसान बोला, "क्या हुआ, अभी सब तो पकड़े गये ही नहीं, १९ आदमियों को; यदि ये पकड़ लेंगे तो इससे क्या होता है ?"

अन्य लोगों ने भी इस किसान की बात में हां-में-हां मिलाई। एक सफेद बालों वाले बूढ़े ने तीखे स्वर से कहा, "यदि इन लोगों ने लन्टेनक को पकड़ लिया तो बस, सब पर चौका फिर जायगा।"

एक युवक बोला, "अभी तक तो लन्टेनक पकड़े गये नहीं।"

बूढ़े ने उत्तर दिया, "लन्टेनक गया तो हमारी आत्मा गई। लन्टेनक मरा तो वैण्डी का अन्त हुआ !"

स्त्री—(सिर हिला कर) देखो आजकल समय बुरा है। बड़ी उलट-पुलट मची हुई। इस समय तुम्हें समझ-बूझ कर बातें करनी चाहिए, नहीं तो तुम्हारे ऊपर विपत्ति आ जायगी।

फै०—देवी, महात्मा ईसा के नाम पर, तथा उनकी माता, पुनीत कुमारी मेरी के नाम पर, मेरी विनती सुनो और मुझे ला-टोर का रास्ता बता दो!

स्त्री नाराज हो गई। उसने चिटक कर कहा, "मैं नहीं जानती। जानती भी होती तो न बताती, क्योंकि वह खराब जगह और लोग वहां नहीं जाते।"

फैशार्ड यह कह कर कि "मैं तो जाती हूँ" आगे बढ़ गई। वह स्त्री उसे खड़ी देखती रही, फिर यह कहती हुई कि इसके खाने के लिए तो कुछ चाहिए ही, वह लपकी और फैशार्ड के हाथ में, एक रोटी देकर बोली, "अच्छा, लो, इसे रास्ते में खा लेना।" फैशार्ड ने बिना कुछ कहे सुने रोटी ले ली और आगे बढ़ गई। गांव के बाहर; उसे तीन छोटे छोटे बच्चे मिले। उनके तन पर फटे कपड़े थे। पास पहुँच कर वह बोली, "ये तो एक लड़का और दो लड़कियां हैं।"

यह देख कर कि बच्चे उसकी रोटी की ओर देख रहे हैं, उसने रोटी उन्हें दे डाली। बच्चों ने रोटी लेने को तो ले ली, परन्तु फिर सहम गये। फैशार्ड ने इधर ध्यान न दिया और जंगल में घुस गई।

× × ×

इसी बीच में, इस जंगल में एक घटना और घटी। जंगल में से होकर, ला-टोर के लिए, एक सड़क थी। यह सड़क बहुत चक्करदार और टेढ़ी-मेढ़ी थी। जंगल में, एक नाले पर एक छोटा सा पुल था। सड़क के इसी भाग के कुछ गड्ढों में, कुछ आदमी

झाड़ियों में छिपे हुए थे। ये लोग चमड़े की जाकटें पहने हुए थे। ये हथियार-बन्द थे। किसी के पास बन्दूक थी और किसी के पास गंडासे। पास ही लकड़ी का ढेर था, जिसे किसी विशेष काम के लिए इन लोगों ने बनाया था। जिनके पास बन्दूकें थीं, वे अपनी अपनी बन्दूकों की नाल झाड़ियों की झुरमट से बाहर निकाले, उनके घोड़ों पर अंगुलियां रखे, किसी की घात में बिल्कुल तैयार बैठे हुए थे। निशाना सड़क की ओर लगा हुआ था। उन लोगों में कानाफूसी हो रही थी। एक ने कहा, "तुम्हें ठीक ठीक पता है न?" उत्तर मिला, "हां जी, मालूम तो ऐसा ही हुआ है।"

"वह इधर ही से निकलेगी?"

"हां, वह पास पहुँच भी गई है।"

"देखो, किसी प्रकार वह आगे न निकलने पावे।"

"अजी, उसका निकलना तो दूर रहा, उसे यहीं भस्म कर देंगे।"

"सिपाहियों का क्या करें?"

"उन्हें समाप्त कर देना पड़ेगा।"

"देखो, सावधान, वह आ रही है।"

सब चुप हो गये। सन्नाटा हो जाने पर घोड़ों की टापों और गाड़ी के पहियों की आहट सुनाई पड़ी। ये लोग पत्तियों की आड़ से देखने लगे। उन्होंने देखा कि एक लम्बी गाड़ी आ रही है, उस पर कोई चीज है और उसके साथ कुछ सवार हैं। उनका मुखिया बोला, "देखो, वह आई।"

"हां, हां, सवार भी हैं।"

"कितने सवार होंगे?"

"बारह हैं।"

"हमें तो मालूम हुआ था कि बीस सवार होंगे।"

"बारह या बीस, इससे हमें क्या सरोकार; हमें तो सभी पर हाथ साफ करना पड़ेगा।"

"जरा ठहर जाओ, पास आ जाने दो। हां, निशाना ठीक बैठा लो।"

थोड़ी देर में, गाड़ी और सवार सड़क की मोड़ पर पहुँच गये। छिपे हुए आदमियों ने बन्दूकें तान लीं और "राजा की जय" चिल्लाते हुए बाढ़ छोड़ दी। चारों ओर धुआं फैल गया और धुएं के साथ, सवार लोग भी इधर उधर तितर-बितर हो गये। सात सवार तो पृथ्वी पर लोट गये और पांच सिर पर पैर रख कर नौ—दो ग्यारह हो गये। इन लोगों ने गाड़ी पर जाकर कब्जा किया। गाड़ी के पास पहुँचते ही, उनका मुखिया बोला, "अरे, यह तो गला काटने का यन्त्र नहीं है, यह तो सीढ़ी है !"

सचमुच गाड़ी पर एक लम्बी सीढ़ी रखी हुई थी।

सीढ़ी को अच्छी तरह देख-भाल कर, मुखिया बोला, "तो भी, एक बात सोचने की है। इस सीढ़ी के इतने सवारों के साथ होने का क्या मतलब है ? इसमें कोई रहस्य अवश्य है। मुझे तो यह मालूम होता है कि शत्रु लोग इस सीढ़ी को इस लिए ले जारहे थे कि इसकी मदद से ला-टोर के किले में कब्जा कर लें।"

अन्य आदमियों ने जोर से कहा, "इस सीढ़ी को जला देना चाहिए।"

उसका जलाना तय हो गया। लकड़ी के ढेर पर वह रख दी गई और ढेर में आग लगा दी गई। ये लोग जिस गाड़ी की बात में थे, वह दूसरी सड़क से जा रही थी और यहां से इस समय दो कोस की दूरी पर थी। ये लोग किसान थे।

× × ×

फैशार्द ने स्वयं ही रास्ता ढूँढ़ निकालने की मन में ठान ली।

चलते चलते वह थक गई । इसलिए कहीं कहीं सुसताने के लिए बैठ जाती, और फिर थोड़ी देर के पश्चात् उठ खड़ी होती और चल पड़ती । थकावट से उसका शरीर चूर चूर हो रहा था। उसकी विचित्र दशा थी । हरदम उसे अपने बच्चों का ख्याल था। उनके ध्यान में वह पागल हो रही थी । एक एक क्षण का काटना उसके लिए कठिन हो रहा था । पल पल पर वह सोचती थी कि मेरे बच्चे न मालूम कैसे हों और यदि मैं जल्दी न करूंगी तो न मालूम उनका क्या हो जाय ? जिसके नेत्रों के सामने अपने बच्चों की यह दशा प्रत्येक क्षण नाचती हो, वह माता किस प्रकार धैर्य धरे ? उधर शरीर का और भी बुरा हाल था । वह आधी रात से चल रही थी । दिन भर चली थी । कहीं भी न ठहरी थी और कहीं भी आराम न मिला था । भूलती-भटकती, पकडंडियों और सड़कों की खाक छानती छानती, वह इस समय, इतनी शिथिल हो गई थी कि यही मालूम पड़ता था कि वह अब गिरी और तब गिरी । सूर्य अस्त हो चला था । अन्धकार का राज्य फैल चला था । रास्ते भी सुझाई न देते थे । कोई आस-पास न था । बेचारी चिल्लाती, परन्तु न कोई सुनता और न कोई उत्तर मिलता । वृक्षों की झुरमट से उसे कुछ उजाला देख पड़ा । वह उधर ही बढ़ी और बढ़ते बढ़ते अचानक जंगल के दूसरे पार—दूसरे किनारे पर—जा पहुँची । उसके सामने एक घाटी थी और नीचे एक नाला बह रह था । नाले का पानी साफ था । पानी देख कर उसे याद आई कि मुझे प्यास लगी है। वह झुकी और झुक कर उसने नाले का पानी पिया । पानी पीने के बाद, उसने नाले को पार किया । नाले के उस पार एक टीला था, जिस पर अनेकानेक झाड़ियां छाई हुई थीं । कहीं कोई नजर न आता था । जो कुछ दिखाई पड़ता था, वह झाड़ियों ही का दृश्य था । कुछ चिड़ियां इधर उधर बसेरा ले रही थीं । फैशाडे

को देख कर वे भी फड़फड़ा कर उड़ गईं। चारों ओर सन्नाटा और भीषणता का राज्य था। फैलार्ड घबड़ा सी गई और चिल्ला पड़ी "क्या कोई यहां है?" उसने उत्तर की प्रतीक्षा की। उत्तर मिला भी। एक गहरी ध्वनि क्षितिज की ओर से उठी और उसकी प्रति-ध्वनि चारों दिशाओं में गूंज गई। यह ध्वनि ऐसी थी जैसी बादल के गरजने या तोप के चलने से होती है। फिर सन्नाटा हो गया। माता के हृदय को सहारा मिला। उसे मालूम हुआ कि उधर आदमी हैं और उनसे कुछ पता लग सकेगा। नये उत्साह से, वह उसी ओर बढ़ी जिधर से ध्वनि उठी थी। टीले पर चढ़ते ही, उसके नेत्रों के सामने, क्षितिज ओर एक ऊंचा किला दिखाई दिया। डूबते हुए सूर्य की किरणें किले की चोटी पर पड़ रही थीं। फैशार्ड ने अपने मन से प्रश्न किया कि क्या इसी किले ने मेरी आर्त-ध्वनिका उत्तर दिया था? मन ही मन सोचती-विचारती, वह इस किले की ओर चल पड़ी।

युद्ध का श्री-गणेश

किले में बन्द लन्टेनक का ख्याल कर के सिमोरडेन सोचने लगा कि अब तो शेर को पिंजड़े में बन्द कर लिया। उसने सोचा कि लन्टेनक का सिर इसी किले में—उसकी इसी पैतृक भूमि पर काटा जाय, जिससे राज-पक्ष के लोगों को पूरी शिक्षा मिले। इसी काम के लिए उसने उस सिर काटने के यन्त्र को मंगाया था जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। लन्टेनक के रक्त से हाथ रंगने के विचार से सिमोरडेन के मन में तनिक भी क्षोभ न था। वह समझता था कि लन्टेनक मर जाय तो वैण्डी धूल में मिल जाय और वैण्डी धूल में मिल जाय तो प्रजा-तंत्र की पताका फ्रान्स भर पर फहराने लगे। इसी विचार से—कर्त्तव्य की इसी प्रेरणा से—वह इस हत्या से अपने हाथ रंगने के लिए वह बिल्कुल तैयार था। उसे चिन्ता थी तो केवल एक और, वह भी गावैन के सम्बन्ध में। सिमोरडेन सोच रहा था कि लड़ाई घमासान होगी दोनों पक्ष प्राणों की बाजी लगावेंगे। प्रजा-तंत्र की सेना की बाग-डोर गावैन के हाथों में है। जहां पर कठिन से कठिन लोहा बजेगा, गावैन वीर सिपाही की भाँति वहां अवश्य पहुँचेगा और अपनी जान पर खेलेगा। कहीं ऐसा न हो कि गावैन लड़ाई में मारा जाय! इस विचार से सिमोरडेन के मन को बहुत व्यथा हो रही थी। वह संसार भर में किसी और वस्तु या किसी और व्यक्ति को उतना न चाहता था जितना गावैन को। गावैन के अनिष्ट के विचार मात्र से उसका हृदय काँप उठता था। इस समय, गावैन-वंश के एक गावैन की तो वह मौत मना रहा था और दूसरे गावैन की जिन्दगी।

इधर किले वालों पर दुर्भाग्य का और प्रहार हुआ। जिस तोप के गोले से ज्योर्जेट चौंक पड़ी थी और जिसकी ध्वनि ने माता के मन में उत्साह उत्पन्न किया और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया था, उसी ने किले की जड़ में लग कर एक और भी दरार कर दी। किले वाले इस दरार को बन्द भी न कर सके। उनके पास गोला बारूद भी बहुत कम था। प्रत्येक आदमी के पास ३० कारतूसों से अधिक न थी। हथियार तो बहुत थे, परन्तु बारूद बहुत कम थी। सब बन्दूकें और पिस्तौलें भर कर रख ली गई। परन्तु इनसे अधिक देर तक काम न चल सकता था। भरोसा केवल इसी बात का था जो लड़ाई होगी, वह आमने-सामने की और दो दो आदमियों की, हाथा पाई के साथ होगी। बन्दूकें और पिस्तौलें काम न आवेंगी, छुरे और किरचों से काम लिया जायगा। किले के नीचे के हिस्से के अग्र-भाग को तो खाली छोड़ दिया गया था। मोरचे-बन्दी के बाद दूसरे भाग में, मुकाबले की पूरी तैयारी थी। एक मेज पर भरे हुए हथियार रक्खे हुए थे। इसी स्थान से, दूसरे खण्ड में पहुँचने के लिए, एक जीना लगा हुआ था। यह दूसरा खण्ड किलेवालों का दूसरा मोहरा था। इसमें भी ऐसे छेद बने हुए थे जिनके द्वारा बाहर वालों पर गोलियाँ चलाई जा सकती थीं। इन्हीं छेदों से, इस कमरे में रोशनी आ रही थी। वैसे भी, रोशनी के लिए, इसमें मशाल का प्रकाश था। इसी कमरे में इमानस की लगाई हुई, गंधक की बत्ती का सिरा मशाल के पास लगा हुआ था। इस कमरे के एक किनारे, एक आलमारी में, चावल, दलिया, माँस और कुछ फल इसलिए रक्खे हुए थे कि लड़ते लड़ते जिसे भूख लगे वह इनमें से कुछ खा ले।

तोप दगते ही, इमानस ने किले की दीवार से शत्रु-सेना को देखा। तोप दगने का अर्थ ही यह था कि लड़ाई छिड़ने वाली

है। लन्टेनक ने इमानस से कह रक्खा था कि जब शत्रु-सेना आगे बढ़े तब उस पर गोलियाँ मत चलाना, क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं, वे ४५०० हैं, उन्हें किले में घुसने दो, बस उस समय हम और वे बराबर हो जाँयगे। यह भी तय हो गया था कि जब शत्रु सेना आगे बढ़ना आरम्भ करे तब इमानस तुरही द्वारा अपने साथियों को सूचना दे। इमानस के तुरही बजाते ही, अन्य अठारह आदमियों का एक एक हाथ तो अपनी अपनी बन्दूक पर जा पड़ा और दूसरा हाथ अपनी मालाओं पर। इस समय हमला करने वालों के लिए तो इतना ही काम था कि वे बाहु-बल से, किले के तीनों कमरों पर कब्जा कर लें—यद्यपि इस काम में पग पग पर गोली और तलवार के वारों का मुकाबला था। जिन पर हमला किया गया था, उनके लिए भी एक ही काम बाकी रह गया था और वह यह था कि लड़ते-लड़ते वे प्राण दे दें।

× × ×

गावैन यह भली भांति जानता था कि किला कितना मजबूत है। वह समझता था कि इस सुदृढ़ किले को जिसकी दीवारें पाँच पाँच गज चौड़ी हैं, तोपों और बन्दूकों के बल से, सीधे सीधे, ले लेना अत्यन्त कष्ट साध्य है। सन्ध्या का समय हो गया था। वह इसी चिन्ता में टहल रहा था। लेफ्टीनेंट गूशेम्प उसके पास खड़ा था। गूशेम्प को दूरबीन द्वारा क्षितिज की ओर देखते देख कर, गावैन ने उस से पूछा, "गूशेम्प, क्या है ?"

गू०—सीढ़ी आ रही है।

गा०—किस तरह से ?

गा०—मैंने आपसे कहा था कि मैंने सीढ़ी ढूँढने के लिए आदमी भेजे हैं। एक सीढ़ी मिल गई। मैंने १२ सवार उसके लेने के लिए भेजे थे। मुझे खबर मिली थी कि दो बजे सीढ़ी

रवाना हो गई। सूर्यास्त हो चुका है। अब सीढ़ी भी आती ही है। इस वक्त तक उसे आ जाना चाहिए था।

गा०—समय हो चुका। इसलिए, हमें धावा तो बोल ही देना चाहिए। यदि हम कुछ भी रुके तो किले वाले समझेंगे कि हम हिचक रहे हैं।

गू०—तो, धावा आरम्भ कर दीजिए।

गा०—परन्तु, सीढ़ी की बहुत जरुरत है।

गू०—यह तो ठीक है।

गा०—वह अभी तक तो आई नहीं।

गू०—आ जायगी।

गा०—यह किस तरह ?

गू०—अभी मैंने दूरबीन से देखा था, दूर से मुझे सवार और गाड़ी आते दिखाई पड़ते हैं। वे पहाड़ी से नीचे उतर रहे हैं। आप भी देखिए।

गावैन ने दूरबीन ले ली। देख कर बोला, "हां, आती तो है। साफ साफ नहीं दिखाई देता, तो भी सवार दिखाई देते हैं। परन्तु तुम तो बारह सवार की बात कहते थे, ये तो ज्यादा हैं!"

गू०—हैं तो ज्यादा से।

गा०—ये लोग आधे मील से भी अधिक फासले पर हैं।

गू०—१५ मिनट में आ जावेंगे।

गा०—तो, फिर हल्ला बोल देना चाहिए।

इन लोगों ने जिस गाड़ी को देखा, वह गाड़ी तो थी, परन्तु वह गाड़ी न थी जिसे वे समझते थे। मुड़ते ही गावैन को सार्जन्ट रेडो सामने खड़ा दिखाई दिया। उसने सैनिक सलाम किया। गावैन ने उससे पूंछा, "सार्जन्ट, क्या है ?"

रेडो०—नागरिक सेनापति ! हम 'बोने-रो, बटालियन के आदमी आपसे कुछ प्रार्थना करना चाहते हैं।

गा०—वह क्या ?

रेडो०—हमें मरने दीजिए!

गा०—एं!

रेडो०—हम यही चाहते हैं।

गा०—तुम्हारा क्या मतलब है ?

रेडो०—सुनिए, डोल की लड़ाई से आप हम पर बहुत कृपा रखते हैं। हम इस समय भी १२ आदमी हैं। इस पर हमें लज्जा आती है।

गा०—तुम लोग वक्त पर काम आने के लिए हो।

रेडो०—हमारी इच्छा यह है कि हम सेना में सब से आगे रह कर लड़ें।

गा०—परन्तु मैं तुम से पीछे काम लेना चाहता हूँ, इसलिए तुम्हें, पीछे रखना चाहता हूँ।

रेडो०—यह तो ठीक नहीं, हम आगे रहना अपना हक़ समझते हैं।

गा०—अच्छा मैं सोचूँगा।

रेडो०—सेनापति, आज सोच लीजिए। इस समय मौका है। खूब ले-दे होनेवाली है। ला-टोर पर जोर-आजमाई है। हम भी अपने जौहर दिखाने की आपसे आज्ञा चाहते हैं। (मूंछों पर ताव देकर) इसके अतिरिक्त एक बात का और भी स्मरण रखिए। हम लोगों के बच्चे किले में बन्द हैं। ये बच्चे हमारी सेना के हैं। दुष्टों ने उन्हें बन्द कर रक्खा है और वे उनके प्राण लेना जाहते हैं। दुनिया इधर की उधर हो जाय, हमारे रहते उनका बाल भी बांका न होने पावेगा। कुछ ही देर हुई, मैं ने टीले पर चढ़कर, एक खिड़की से उन्हें देखा था। आप भी उन्हें देख सकते हैं। वे मुझे देख कर डर से गये थे। वे पागल हैं जो मुझे देख कर डर गये। सेनापति महोदय! यदि उनको

किसी ने उंगली से भी छू दिया तो मैं उसका खून पी जाऊंगा। यही बात मेरी बटालियन कह रही है। हम इन बच्चों को या तो साफ निकाल लावेंगे, या उनके निकालने के उद्योग में अपने प्राण दे देंगे।

गावैन ने रेडो का हाथ पकड़ कर कहा, "तुम वीर पुरुष हो। अच्छा, तुम आगे ही रहना। तुम्हारे आदमियों की दो टोलियां बनाऊंगा। छः आदमी आगे रहेंगे और इस लिए कि बढ़कर हमला करें। और छः पीछे रहेंगे और इसलिए कि किसी को भी पीछे न हटने दें।"

रेडो०—बारहों का सरदार तो मैं ही रहूँगा?

गा०—निःसंदेह।

रेडो०—मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं रहूँगा।

रेडो सैनिक सलाम कर चला गया। गावैन भी गूशेम्प के कान में कुछ कह कर सेना-संचालन के लिए चल दिया।

× × ×

इधर सिमोरडेन ने बिगुल द्वारा किले वालों को बातें करने की सूचना दी। जब उत्तर में तुरही बजी, तब, सिमोरडेन सफेद रूमाल हिलाता हुआ आगे बढ़ा। उसने जोर से पुकार कर कहा, "किलेवालों, क्या तुम मुझे जानते हो?"

इमानस ने जोर से उत्तर दिया, "हां।"

तब, इन दोनों में ये बातें हुई :—

सिमो०—मैं प्रजा-तन्त्र का दूत हूँ।

इ०—तुम परीग गांव के पादड़ी हो।

सिमो०—मैं कानून का प्रतिनिधि और क्रान्ति का कार्य-कर्ता हूँ।

इ०—तुम पतित और धर्म-द्रोही हो।

सिमो०—मैं सिमोरडेन हूँ।

इ०—तुम शैतान हो।

सिमो०—तुम मुझे जानते हो ?

इ०—हम तुम से घृणा करते है।

सिमो०—यदि तुम मुझे पा जाओ तो क्या राजी हो जाओ ?

इ०—हम लोग यहां अठारह आदमी हैं। हम में से हर एक अपना सिर दे कर भी तुम्हारा सिर पाना पसन्द करेगा।

सिमो०- अच्छा तो, लो, मैं आत्म-समर्पण करने आया हूँ।

ऊपर से एक अट्ट-हास्य हुआ, और साथ ही, आवाज आई, "आओ, आओ!"

इधर नीचे पड़ी हुई सेना में सन्नाटा छा गया। सिपाही आगे की बात सुनने के लिए बहुत उत्सुक हो उठे।

सिमोरडेन फिर बोला, "परन्तु एक शर्त पर।"

इ०—वह क्या है ?

सिमो०—सुनो।

इ०—बोलो।

सिमो०—तुम मुझ से घृणा करते हो ?

इ०—हां।

सिमो०—और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैं तुम्हारा भाई हूँ!

इ०—बहुत खासे, यह माया खूब रची।

सिमो०—तुम मेरा अपमान भले ही कर लो, परन्तु मेरी बात सुन लो। मै सुलह चाहता हूँ। तुम मेरे भाई हो। तुम भ्रम में पड़े हुए हो। मुझे ज्ञान प्राप्त है, तुम अज्ञान में पड़े हुए हो। तुम पूछोगे तुम मेरे भाई कैसे ? क्या हमारी तुम्हारी मां —मातृ-भूमि—एक नहीं है ? मेरी बात सुनो। आज के बाद, तुम, या तुम्हारे लड़के या तुम्हारे लड़कों के लड़के इस बात को जानेंगे कि इस समय जो कुछ हो रहा है वह सब ऊपर के कानून के अनुसार हो रहा है और क्रान्ति ईश्वर का कार्य्य है।

जब अज्ञान दूर हो जायगा और प्रकाश फैल जायगा, तब तो यह बात सब की समझ में आ ही जायगी, परन्तु उस अवस्था के आने के पहले ही मैं तुम्हारे सामने उपस्थित हुआ हूँ। मैं अपना सिर पेश करता हूँ। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, कि तुम मुझे मार डालो और अपने को बचा लो। मुझे बहुत अधिकार प्राप्त हैं। मैं जो कुछ कहता हूँ उसे कर सकता हूँ। मैं तुमसे अन्तिम बात कहता हूँ। जो आदमी तुमसे इस समय बातें कर रहा है वह नागरिक है, परन्तु इस नागरिक की अन्तरात्मा में पादड़ी की आत्मा निवास करती है। नागरिक की आत्मा तो तुम्हारा तिरस्कार करती है, परन्तु पादड़ी की आत्मा तुम्हारे लिए द्रवीभूत हुई जाती है। मेरी बात सुनो। तुम्हारे बच्चे और स्त्रियां हैं। मैं उनकी रक्षा चाहता हूँ। मेरे भाइयो ......।

इमानस ने ताना मारकर कहा, "वाह रे उपदेशक! कहेजा!"

सिमो० - मेरे भाइयो! लड़ाई मत छिड़ने दो, नहीं तो गले कटेंगे और हममें से बहुत से कल के प्रातःकाल का सूर्य्य न देख पायेंगे। हममें से बहुत से मरेंगे, और तुम में से तो कोई भी न बचेगा। इसलिए, अपने ऊपर दया करो। क्यों व्यर्थ ही इतना रक्त-पात करते हो? इतने आदमी मारने से क्या लाभ, जब केवल दो आदमियों के मारने ही से काम चल जाता हो?

इ०—दो कौन?

सिमो०—लन्टेनक और मैं। ये दो आदमी बहुत हैं। लन्टेनक तुम्हारे लिए बहुत है और मैं अपनी सेना वालों के लिए। मैं तुम्हारे सामने यह प्रस्ताव रखता हूँ कि हमें लन्टेनक दे दो, और मुझे तुम ले लो। लन्टेनक का गला काट दिया जायगा; और तुम मेरे साथ जो चाहना सो करना।

इमानस चिल्ला कर बोला, "पादड़ी, यदि हम तुझे पा जायँ तो जिन्दा ही धीमी धीमी आग में भून डालें।"

सिमो०—मुझे मंजूर है! और, तुम लोग जिनके सिर पर इस समय मौत नाचती है सबके सब आजाद रहोगे?

इमानस बोला, "तुम बदमाश हो, पागल भी हो। क्यों व्यर्थ बकवाद करते हो? तुम्हें यहाँ आकर बातें मारने के लिए किसने न्योता दिया था? तुम मारकुइस को मांगते हो......। फिर, सोचो, बड़ी मार काट होगी।

सिमो०—मैं उसे भी नहीं, उसका सिर मांगता हूँ; और बदले में अपनी ......।

इमानस को पीछे से लन्टेनक ने इशारा किया। वह गरज करके सेनावालों से बोला, "हमला करने वालों! हमने अपनी शर्तें तुम्हारे सामने रख दीं। उनमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हो सकता! क्या तुम उन्हें मानते हो? हम तीनों बच्चों को देंगे, क्या तुम हम सब को सही सलामत चले जाने दोगे?"

सिमोरडेन ने उत्तर दिया, "हां, तुम सब को चले जाने देंगे, केवल एक को छोड़ कर।"

इ०—और, वह कौन?

सिमो०—लन्टेनक।

इ०—मारकुइस को तुम्हें दे दें—यह नहीं हो सकता।

सिमो०—हमारी तो यही शर्त है।

इ०—तो फिर युद्ध आरम्भ करो।

इसके बाद सन्नाटा छा गया। सेना आगे बढ़ी। भीतर किले के उन्नीस योद्धाओं ने तलवार हाथ में थाम ली और बन्दूकें संभाल लीं। इधर से धावा हुआ और उधर ईश्वर का नाम लेकर किले वालों ने बन्दूक की बाढ़ छोड़ी।

लड़ाई आरम्भ हो गई।

प्राणों की बाजी

लड़ाई बड़ी जोर की छिड़ी। ज्योंही हमला करने वाले सिपाही किले की दीवार की दरार की ओर बढ़े, त्योंही, किले वालों ने बन्दूक की बाढ़ छोड़ी। मालूम पड़ा कि दरार के भीतर बने हुए मोरचे से बिजलियां तड़पने लगीं। हमला करने वालों ने भी जवाब दिया। इन प्रहारों के बीच में, रह रह कर योद्धाओं के हुङ्कार सुनाई पड़ते थे। अपने योद्धाओं को बढ़ावा देने के लिए, गावैन उच्च स्वर से पुकार रहा था, "बढ़े चलना, वीरों!" उधर लन्टेनक हुङ्कार रहा था, "मोरचे पर डटे रहना, वीरों!" बीच बीच में, इमानस भी चिल्ला चिल्ला कर कह रहा था, "वाह रे, मेरे शेरों!" दीवार से एक मशाल अटकी हुई थी। उसी धुंधले प्रकाश में, रणचण्डी का भयङ्कर नृत्य हो रहा था। धुंधले प्रकाश में एक दूसरे का पहचानना कठिन था। बन्दूकों का धुआं इतना छा रहा था कि उसके कारण और भी, हाथ के पास तक की चीज़ का पहचानना कठिन हो रहा था। मार-काट का चीत्कार इतने जोरों पर था कि लड़नेवालों के कान बहरे से हो रहे थे। कुश्तों के पुश्ते लग चले। लाशों के ढेर पर से योद्धा लोग आगे बढ़ते। घायल नीचे गिरते और आगे बढ़ने वाले उन्हे कुचलते और उनके घावों को और भी फाड़ते और बढ़ाते हुए आगे बढ़ जाते। घायलों का क्रन्दन वायु-मण्डल में व्याप रहा था, और मरने वाले तड़प तड़प कर जान दे रहे थे। कोई किसी की सुध लेनेवाला न था। इधर-उधर तोपें छटपटा रही थीं और जगह जगह पर लोहू के पनाले बह रहे थे। मालूम

पड़ता था, किले रूपी दानव के अङ्ग-प्रत्यङ्ग पर चोटें लगी हैं और उन चोटों से लोहू चू रहा है। भीतर दरार के पास यह हालत थी, परन्तु हमला करने वालों की सेना से तनिक ही हट कर ऐसा सन्नाटा था, मानो आस पास कहीं कोई भीषण-काण्ड हो ही नहीं रहा। नाले के पुल तक भी यह हल्ला नहीं पहुँचता था। इसीलिए, तीनों बच्चे बड़े आनन्द से पुस्तकालय में पड़े गहरी नींद ले रहे थे।

लड़ाई बढ़ती गई। मोरचा ले लेना आसान काम न था। यदि आक्रमणकारियों के पक्ष में संख्या थी, तो किले वालों के पक्ष में मोरचाबन्दी थी। आक्रमणकारियों के बहुत से आदमी मारे गये, तब जाकर वे कहीं अपने आदमियों की लाशों पर पैर रखते हुए दरार में प्रवेश कर सके। गावैन पूरे उत्साह के साथ सब से आगे के आदमियों के साथ बढ़ता जा रहा था। उसके दायें, बायें, नीचे, ऊपर, सभी ठौर गोलियों की वर्षा हो रही थी, परन्तु उसे तनिक भी परवा न थी। आज तक उसके बदन से कभी गोली छू तक नहीं गई थी, इसलिए उसके बढ़े हुए मन में गोलियों का किंचित मात्र भय न था। बढ़ते बढ़ते ज्योंही वह अपने सिपाहियों को आज्ञा देने के लिए पीछे मुड़ा, कि उसने, गोलयों के चलने से जो उजाला हो जाता था उससे, एक आदमी को अपने पीछे पीछे आगे बढ़ते देखा। गावैन उससे बोला, "सिमोरडेन महोदय, आप यहां क्या कर रहे हैं?"

सिमोरडेन ने उत्तर दिया, "मैं इसलिए आया हूँ कि ऐसे अवसर पर मैं तुम्हारे ही निकट रहूँ।"

गा०—परन्तु, आपको गोली लग जायगी।

सिमो०—खैर, देखा जायगा परन्तु तुम यहां क्या कर रहे हो?

गा०—मेरा यहां होना तो जरूरी है, आपका यहां होना जरूरी नहीं।

सिमो०—तुम यहां पर हो, तो मैं भी यहीं पर हूँ।

गा०—नहीं, गुरुदेव, यह ठीक नहीं।

सिमो०—नहीं, बेटे, यही ठीक है!

सिमोरडेर गावैन के पास ही रहा।

इधर आक्रमण का जोर बढ़ता ही गया। आक्रमणकारियों में से बहुत से मारे गये, परन्तु ये थे ४५००, और किले वाले थे कुल १९। इन १९ में भी, इस समय तक कुछ घायल हो चुके थे। केवल १५ ही ऐसे थे जो अच्छी तरह लड़ सकते थे। शेष बेकार हो चुके थे। किले वालों में एक योद्धा बड़े जीवट का था। उसका नाम था शैन्टीन ह्विर। वह ठिगना और फुर्तीला आदमी था। वह इतना घायल हुआ कि उसका शरीर चलनी हो गया। एक आँख निकल पड़ी और जबड़ा टूट गया। अभी तक घिसलने की ताकत उसमें बाकी थी। मोरचे से घिसलते घिसलते वह सीढ़ी के पास पहुँचा और धीरे धीरे चढ़ कर पहले खण्ड के कमरे में जा पहुँचा। वहाँ वह इसलिए गया कि शान्ति से, ईश्वर का नाम लेता हुआ, गोली बारूद की महक से रहित वायु-मण्डल में श्वांस लेते हुए, प्राण-विसर्जित कर दे।

अन्त में, सिमोरडेन ने पुकार कर, किले वालों से फिर कहा, "किले वालों, अब भी मान जाओ। देखो हम साढ़े चार हजार हैं और तुम केवल १९। अर्थात्, तुम्हारे एक एक के मुकाबले में हमारे दो दो सौ से अधिक आदमी हैं। अब भी आत्म-समर्पण कर दो।"

मारकुइस लन्टेनक ने ताना मारते हुए उत्तर दिया, "इस मक्कारी से भरे हुए गाल बजाने को रहने दो!

साथ ही, उत्तर की भाँति, किलेवालों ने २० गोलियां आक्रमणकारियों पर चलाई।

गोलियां मोरचे के ऊपर के हिस्से से चलाई जाती थीं।

मोरचाबन्दी ऊपर तक नहीं की गई थी और यह इसलिए कि निशाना लगाने के लिए जगह रहे। इस प्रकार की मोरचाबन्दी से मोरचाबन्दों के लिए यह लाभ था कि वे शत्रुओं पर निशानाबाजी कर सकते थे, परन्तु इस प्रकार की मोरचाबन्दी से आक्रमण-कारियों को भी मोरचे पर चढ़ कर कब्जा करने की सुविधा प्राप्त होती थी।

गावैन ने अपने सिपाहियों से पूछा, "क्या कोई तुममें से ऐसा है जो मोरचे पर चढ़ जाय?"

साजन्ट रेडो आगे बढ़ा, और बोला, "मैं चढ़ूंगा।"

रेडो यह कह कर पीछे हटा। वह झुक गया और सिपाहियों की टांगों में से होता हुआ दरार के बाहर निकल गया। उसके इस ढंग पर सब को आश्चर्य हुआ। आपस में काना-फूसी होने लगी कि इसका क्या अर्थ, क्या रेडो भाग गया? इधर रेडो ने दरार से बाहर निकल कर सबसे पहले अपनी आंखें अच्छी तरह मलीं। बारूद के धुएं के कारण उसके नेत्रों के समाने धुंधलापन छाया हुआ था। फिर नक्षत्रों के प्रकाश में उसने अच्छी तरह किले की दीवार को देखा। देख कर उसने सिर हिलाया। मानों उसने अपने मन में यह कहा कि मैंने जो कुछ समझा था वह ही ठीक है। रेडो ने देखा कि दरार किले की दीवार पर ऊपर के खण्ड तक हो गई है। साथ ही, ऊपर के खण्ड में लोहे के जो जंगले हैं वे तोप के गोले की मार से टूट कर नीचे लटक गये हैं। उसने अन्दाजा लगाया कि दरार के सहारे यदि चढ़ा जा सके, तो ऊपर के खण्ड पर पहुँचा जा सकता है। परन्तु दरारों के सहारे ऊपर चढ़ना बिल्ली और गिलहरी का काम हो सकता है। रेडो भी ऐसे ही ढंग का प्राणी था। वह बहुत फुरतीला था। दीवार को भली भांति देख-भाल कर, उसने अपनी बन्दूक धरती पर फेंक दी। साथ

ही, कोट भी उतार कर नीचे डाल दिया। उसके पास दो पिस्तौलें थीं। उन्हें उसने अपने पतलून की जेबों में डाल लिया और नंगी तलवार अपने दाँतों में दाब ली। जूते भी उसने उतार डाले। इस प्रकार, जहां तक बन सकता था, वहां तक हलके हो कर, रेडो ने दीवार की दरार में पैर के अंगूठे और हाथ की उंगलियां जमा जमा कर ऊपर चढ़ना आरम्भ किया। चढ़ाई बहुत भयंकर थी। मानो तलवार की धार पर चलना था। रेडो मन ही मन सोचता था कि इतना ही बहुत अच्छा है कि ऊपर कोई है नहीं, नहीं तो एक ही धक्के में मेरा काम तमाम हो जाय। धीरे धीरे वह १२ गज ऊपर चढ़ गया। जितना ही वह ऊपर चढ़ता उतनी ही उसके प्राणों की जोखिम बढ़ती जाती। अन्त में, वह लोहे के लटके हुए छड़ों तक पहुँच गया। उन्हें पकड़ कर उसने भीतर घुसने के लिए रास्ता बनाया। घुटनों पर पूरा जोर लगा कर, एक हाथ से बायें ओर के एक छड़ को और दूसरे हाथ से दाहिने ओर के एक छड़ को पकड़ कर, उसने छेद की ओर बढ़ने के लिए अपने शरीर पर जोर लगाया। इस समय उसकी आकृति देखने के योग्य थी। केवल अपनी कलाई के बल पर वह पृथ्वी से इतने ऊपर, अधर में, टूटे हुए छड़ों को पकड़े हुए, लटका हुआ था। यदि, तनिक भी चूकता तो उसके टुकड़े टुकड़े उड़ जाते। अब, केवल इतनी ही कसर रह गई थी कि रेडो एक उछाल मारता और ऊपर के खण्ड के कमरे में पहुँच जाता। परन्तु, उस छेद के सामने एक शकल आ गई। रेडो ने देखा कि बड़ी भयावनी आकृति है, चेहरा लहू-लुहान है, मुंह टूटा हुआ है और एक आंख का पता नहीं। यह शकल एक आंख से दृष्टि गाड़ कर उसे देखने लगी। उस शकल के दोनों हाथ रेडो की ओर बढ़े। एक हाथ से उसने रेडो के दांतों से तलवार निकाल ली और दूसरे से, पतलून की दोनों जेबों से पिस्तौलें। रेडो

निहत्था हो गया। झूमा-झटके में उसके घुटने भी फिसल गये और अब वह केवल छड़ों के सहारे लटका रह गया। यह शकल शैन-टीन-ह्विर की थी। वह घिसल घिसल कर ऊपरी खण्ड के उस टूटे हुए हिस्से में पहुँच गया था, और उस ओर से खुली हवा ले रहा था। इसी बीच में, उसे रेडो झांकता हुआ दिखाई पड़ा। ताजा हवा के झोकों से ह्विर को कुछ बल प्राप्त हो गया था। शत्रु को सिर पर आते हुए देख कर घावों से चूर ह्विर शान्त न रह सका। उसने रेडो की तलवार और पिस्तौले तो छीन ही लीं, इसके पश्चात् अब उन दोनों में एक विचित्र संग्राम छिड़ गया। संग्राम विचित्र इसलिए था कि एक ओर रेडो था जो निहत्था था और उस पर भी दोनों हाथों से लोहे के छड़ों में लटका हुआ था। दूसरी ओर ह्विर था, जो घायल था परन्तु जिसके पास हथियारों की कमी न थी और जो एक गोली से रेडो को ढेर कर सकता था। रेडो के भाग्य अच्छे थे। इसीलिए, उसके दोनों पिस्तौल ह्विर के एक ही हाथ में पड़े। दोनों पिस्तौल एक ही हाथ में होने के कारण चलाये न जा सके। ह्विर के दूसरे हाथ में रेडो की तलवार थी इसी से ह्विर ने रेडो पर वार किया। रेडो को चोट बैठी, परन्तु अपने घाव की परवाह न करते हुए, उसने जोर से अपने बदन को झोंका देकर उछाल मारी और छेद के भीतर हो रहा। अब ह्विर से उसका पूरा आमना-सानना हो गया। ह्विर ने तलवार फेंक दी और दोनों हाथों में पिस्तौलें ले लीं। उसने एक पिस्तौल दाग भी दी। ठीक लक्ष्य न बैठ सकने तथा रेडो के बहुत पास पहुँच जाने के कारण निशाना ठीक नहीं बैठा। गोली सनसनाती हुई रेडो के सिर के पास से निकल गई और उसका एक कान उड़ाती ले गई। ह्विर दूसरी पिस्तौल भी दागने ही वाला था कि रेडो ह्विर पर पिल पड़ा और इतने जोर से उसके हाथ पर टूटा जिसमें पिस्तौल थी कि

हाथ खसक गया, गोली चल गई और छत में जा लगी। रेडो ने हिवर का विदीर्ण चेहरा दोनों हाथों से पकड़ कर इतने जोर से मरोड़ दिया कि हिवर चीखता हुआ भूमि पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। गिरे हुए शत्रु को पैरों से रौंदते हुए रेडो बोला, "अब, चुपचाप यहीं पड़े रहो। तनिक भी कराहा, तो सिर धड़ से अलग कर दूंगा।"

हिवर पड़ा पड़ा कराह रहा था। उसकी ओर देख कर रेडो फिर बोला, "कृपा करके चुप रहो। मैं तुम्हारी जान नहीं लेना चाहता। तुमने तो कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पिस्तौलों की गोलियां तक न बचने दीं। बड़े दुष्ट हो। (कान टटोल कर) ओह, तुमने मेरा कान भी उड़ा दिया। खैर, कान के जाने का कोई गम नहीं। कान है भी केवल शोभा की चीज। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। अच्छा, अब ठंडे ठंडे पड़ जाओ और गुलगपाड़ा मत मारो।" इसके पश्चात् वह कान लगा कर नीचे की बातों की आहट लेने लगा। उसे मालूम हुआ कि लड़ाई अभी तक जोरों पर है। उसने पृथ्वी पर पड़ी हुई अपनी तलवार उठा ली और आगे बढ़ा। कमरे के बीच में, बड़े खम्भे के पास पहुँचते ही, उसने एक बड़ी मेज देखी जिस पर उसने बहुत सी पिस्तौलें, कारबीनें और बन्दूकें रखी हुई देखीं। किलेवालों ने वक्त पर काम आने के लिए इन हथियारों को यहां जमा कर रखा था। रेडो इन्हें पाकर बहुत खुश हुआ। उनमें से उसने दो पिस्तौलें उठा लीं और उन्हें क्षण भर में कमरे के दरवाजे की ओर दाग दीं। इसके बाद उसने बन्दूकें उठा उठा कर सीढ़ी के नीचे चलाना आरम्भ किया। गोलियां नीचे पहुँचीं। नीचे किले वाले मोरचे पर डटे हुए आक्रमणकारियों का मुकाबला कर रहे थे। ऊपर से बन्दूकों के चलने की आवाज सुन कर उनमें खलबली मच गई। ऊपर से जो गोलियां आईं उनसे, इनमें से दो आदमी

ढेर भी हो गये। मारकुइस चिल्ला पड़ा, "शत्रु ऊपर पहुँच गया भाग कर ऊपर पहुँचो।" मारकुइस के आज्ञा देते ही, किलेवाले मोरचा छोड़ कर सीढ़ी से ऊपर भागे। मारकुइस ने इनसे पीछे मोरचा छोड़ा। इधर ऊपर के कमरे में, सीढ़ी के सिरे पर रेडो हाथ में बन्दूक लिये खड़ा था। भाग कर ऊपर चढ़नेवालों में जो सब से आगे था, उस पर रेडो ने गोली दागी। वह पृथ्वी पर लोट गया। परन्तु बाकी के आदमी आँधी की तरह भागते और इस कमरे को भी छोड़ते हुए उसके भी ऊपर वाले कमरे में चढ़ गये। उन्होंने समझा कि इस खण्ड पर कब्जा हो गया। इसी कमरे में लोहे का दरवाजा था। वहीं गंधक की बत्ती थी। यही इन लोगों का अन्तिम मोरचा था।

इधर गावैन को किले वालों के मोरचा छोड़ कर भाग जाने पर बहुत आश्चर्य हुआ। परन्तु, उसने आश्चर्य के करने ही में अधिक समय नहीं खोया। वह अपने सिपाहियों के साथ मोरचा पार कर सीढ़ियों पर चढ़ा और जब प्रथम खण्ड के सिरे पर पहुँचा, तब उसने देखा कि वहां रेडो खड़ा हुआ है। रेडो उसका अभिवादन कर के बोला, "सेनापति महोदय, मैंने डोल की संग्राम-भूमि में जो शिक्षा प्राप्त की थी उसी के अनुसार मैंने यहां कार्य किया। मैंने शत्रु पर दूसरी ओर से छापा मारा।"

गावैन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "निःसन्देह तुम अच्छे शिष्य निकले! (रेडो को लुहू-लहान देख कर) परन्तु, तुम बहुत घायल हो गये हो।"

रेडो—इसकी परवा नहीं। एक कान रहा, रहा और न रहा, न रहा। तलवार का हाथ ही मेरे ऊपर बैठा है, परन्तु इससे थोड़ा सा रक्त निकल जाने के अतिरिक्त और क्या हुआ?

इतने ही में, सिमोरडेन भी वहाँ पहुँच गया। गावैन के प्रमुख सैनिकों ने उस कमरे में इकट्ठे हो कर विचार किया कि

अब क्या करना चाहिए ? ऊपर का खण्ड इस खण्ड से बिल्कुल भिन्न और बन्द था। आक्रमण-कारियों को यह भी नहीं मालूम था कि किलेवालों के पास अब कितना गोला-बारूद है। व्यर्थ में अब किले वालों के पास गोली बारूद बहुत कम रह गई थी। दूसरा खण्ड अब उनका अन्तिम अवलम्बन था। हां, आक्रमण-कारी एक बात से बिल्कुल निश्चिन्त थे। वह यह कि अब किले-वाले फंस गये, कहीं से भी निकल कर नहीं भाग सकते, लन्टेनक ऊपर के खण्ड में ऐसा बन्द हो गया जैसा कोई कैदी मजबूत कैदखाने में बन्द हो। आक्रमणकारियों के बहुत से आदमी इस समय तक मारे जा चुके थे। अब यह तय किया गया कि ऐसे ढंग से किले से इस अन्तिम अड्डे पर हल्ला बोला जाय कि सांप मरे और लाठी न टूटे, अर्थात् शत्रु पर शीघ्र ही विजय हो और आदमी भी कम मारे जायं।

गावैन और सिमोरडेन सलाह कर रहे थे। रेडो उनके पास खड़ा था। अभी कार्य कुछ तय न हुआ था कि रेडो ने गावैन को सैनिक सलाम किया। इसका अर्थ यह था कि रेडो कुछ कहना चाहता था। गावैन ने उससे पूछा, "बोलो, क्या कहना चाहते हो ?

रेडो०—मैं आपसे एक छोटे से पुरस्कार की भिक्षा मांगता हूँ।

गावैन—अवश्य मांगो।

रेडो०—तो, आज्ञा दीजिए कि ऊपर के खण्ड में जाने के लिए, सीढ़ियों पर सब से आगे मैं रहूँ।

रेडो को यह प्रार्थना मान ली गई। मानने के अतिरिक्त और उपाय न था, क्योंकि, फिर रेडो न मानता।

बच निकले

इधर यह सलाह हो रही थी, उधर ऊपर किलेवाले अपनी रक्षा का उपाय कर रहे थे। आक्रमणकारियों के नेत्रों के सामने आशा नाच रही थी। वे समझते थे, अब क्या है, चुटकी बजाते किला ले लेंगे। किलेवालों के हृदयों में निराशा का राज्य था। उसी के बल पर वे मारने और मरने के लिए डटे हुए थे। उन सारी भावनाओं में जो खतरे के समय आदमी को आगे बढ़ातीं और दृढ़ रहने का संदेश देती हैं, आशा का स्थान बहुत ऊंचा है, परन्तु बहुधा निराशा उससे भी ऊंची वस्तु सिद्ध होती है। निराशा ही के बल पर, अपने सिर पर मौत नाचती हुई देख कर भी, खतरे में पड़ा हुआ आदमी बहुधा आगे बढ़ता और अटल और अविचल बना रहता है।

ऊपर के खण्ड में पहुँचते ही किलेवालों को सबसे पहले यह चिन्ता हुई कि सीढ़ी के रास्ते को रोक दिया जाय। कमरे में भारी लकड़ी का एक बहुत पुराना और बड़ा सन्दूक था। किले-वालों ने इसे घसीट कर सीढ़ी के दरवाजे पर अड़ा दिया। वह दरवाजे पर अच्छी तरह बैठ गया। थोड़ी सी जगह ऊपर खाली रही। इस जगह में से हो कर आदमी निकल सकता था, परन्तु इस रास्ते में से हो कर निकल आना आसान न था। जो हिम्मत करता, वह उस भाग में से हो कर निकलने की चेष्टा करते ही अपने प्राण से हाथ धो बैठता।

किलेवाले १९ आदमी थे, परन्तु इस समय वे केवल सात आदमी ही रह गये थे। मारकुइस और इमानस को छोड़ कर

शेष पांचो आदमी घायल हो चुके थे। परन्तु ये सब मार-काट करने के योग्य थे। शेष सब मर चुके थे। गोला बारूद कुछ भी न बचा था। सात आदमियों के बीच में केवल चार गोलियां थीं। कठिन समस्या थी। एक ओर कुआं और दूसरी ओर खाईं का सा मामला था। बच निकलने के लिए कोई रास्ता नहीं था। यदि ऊपर चढ़ें तो कहां जायँ? ऊपर चढ़ कर केवल यही हो सकता था कि किले के ऊपर से गिर कर नीचे कूद पड़ें और प्राण दे दें। पुस्तकालय की ओर जायं और उधर से भाग निकलने की चेष्टा करें, तो सामने ही छः तोपें लगी हुई थीं। एक प्रकार से ये लोग इसी कमरे में कैद हो गये थे। कमरे में रोशनी थी। इमानस ने गंधक की बत्ती के पास, दीवार में, एक जलती हुई मशाल लगा रक्खी थी।

अन्त में मारकुइस अपने साथियों से बोला, "भाई, अब तो कोई उपाय बाकी नहीं है। अच्छा जाओ, ईश्वर से अपने पापों के लिए क्षमा मागें।"

सातों आदमी भूमि पर झुक गये। उन्होंने घुटने टेक दिये और मालायें हाथ में ले लीं। उधर, आक्रमणकारियों की पद-ध्वनि सीढ़ी पर सुनाई दी, इधर, इन सातों में से एक ने जो पादड़ी था और जो इस समय खोपड़ी में घाव होने के कारण, लहू-लुहान था, अपने हाथ में क्रास को धारण किया और जोर से बोला, "हर एक आदमी अपने अपने पाप की कथा कहे। मारकुइस महोदय, आप आरम्भ कीजिए।"

मारकुइस ने घुटने टेके हुए कहा, "मैंने हत्या करने का पाप किया है।"

इमानस भी बोला, "मैंने मनुष्य-हत्या की।"

अन्य पांचों भी एक एक कर यही बात बोले।

पादड़ी बोला, "इसाई धर्म की पवित्र त्रिमूर्ति के नाम पर

मैं तुम्हें पाप से मुक्त करता हूँ । तुम्हारी आत्मायें शान्ति के साथ बिदा हों ।"

सब ने मिल कर कहा, "आमीन (एवमस्तु) !"

मारकुइस उठ खड़ा हुआ और बोला, "चलो, अब मरने चलें ।"

इमानस ने इतना और जोड़ दिया, "और, मारने भी ।"

पादड़ी ने कहा, "अब संसार के सभी विचार मन से निकाल दो, अब समझ लो कि संसार नाम की कोई चीज है ही नहीं ।"

मारकुइस हां, यह ठीक है, अब यह समझ लो कि हम लोग कब्र के भीतर हैं ।

इतने में, दरवाजे पर अड़े हुए सन्दूक पर बन्दूक के दस्तों की ठोकरें पड़ने लगीं । सातों ने फिर ईश-प्रार्थना आरम्भ की । वे लोग ध्यान के साथ, भूमि की ओर नेत्रों को झुकाए, प्रार्थना कर रहे थे कि इतने ही में, पीछे ही से किसी ने जोर से एकदम चिल्ला कर कहा, "महोदय, मैं तो आप से कह ही चुका था !"

सब ने आश्चर्य से अपनी नजरें फेरीं । देखते क्या हैं कि दीवार में एक रास्ता सा निकलता आ रहा है । दीवार से पत्थर का एक पटिया अलग हटता आ रहा था । यह पटिया और पटियों के साथ दीवार में जड़ा हुआ था, परन्तु इस पर औरों की तरह चूना नहीं लगा हुआ था । पटिया अन्त में, सन्दूक के ढक्कन की तरह बिल्कुल खुल गया और दीवार में दो मार्ग दिखाई दिये । एक दाहिनी ओर जाता हुआ और दूसरा बाईं ओर, परन्तु मार्ग इतना तंग था कि केवल एक ही आदमी निकल सकता । पटिया के खुलते ही सीढ़ियां दिखाई दीं और उनमें से हो कर निकलता हुआ एक चेहरा प्रकट हुआ । मारकुइस ने उसे तुरन्त पहचान लिया । वह हलमलो था ।

मारकुइस उसे देख कर बोला, "हलमलो, तुम यहां कैसे ?"

ह०—महोदय, मैं तो आपसे पहले ही कहता था कि कुछ पत्थर ऐसे होते हैं जो घूम जाया करते हैं। मैं बहुत ठीक समय पर पहुँचा। अच्छा, अब जल्द आइए। दस मिनट के भीतर ही हम लोग जंगल में पहुँच जायँगे।

पादड़ी ने कहा, "ईश्वर की महिमा अपार है!"

छहों आदमी बोले, "मारकुइस महोदय, आप पहले पधारिए।"

मारकुइस ने कहा, "नहीं, तुम लोग पहले जाओ।"

पादड़ी बोला, "नहीं महोदय, आप पहले जाइए और मैं सबसे पीछे जाऊंगा।"

मारकुइस ने डपट कर कहा, "उदारता दिखाने का यह समय नहीं। तुम घायल हो। मैं तुम्हें भाग जाने का हुक्म देता हूँ। जाओ, जल्दी जाओ।"

एक ने पूछा, "क्या अलग अलग जायं?"

मार०—निःसंदेह, हम लोग एक एक करके ही यहां से जा सकते हैं। लड़ाई समाप्त नहीं हुई। कल दोपहर को तुम लोग पीरी-गावैन के बन में मुझसे मिलना हलमलो, इन्हें ले जाओ।"

हलमलो आगे बढ़ा। उसने पटिया पर हाथ लगाया। उसे मालूम हुआ कि अब पटिया हिलता तक नहीं। वह पलट कर मारकुइस से बोला, "महोदय, जल्दी कीजिए। पटिया अब हिलता भी नहीं। मैंने उसे खोल तो लिया, परन्तु उसका बन्द करना मुझे मालूम नहीं है। मैं चाहता था कि जब लौटूँ तब उसे बन्द करता जाऊं, जिससे शत्रु को पता न चले कि हम लोग किस तरह निकल गये। परन्तु अब ऐसा नहीं हो सकता। इसलिए अब एक क्षण भी न खोइए। सब के सब जल्दी चलिए।"

इमानस ने हलमलो के कंधे पर हाथ रख कर पूछा, "मित्र, जंगल मे पहुँचने में कितनी देर लगेगी?

हल०—आप लोगों में कोई बहुत घायल तो नहीं है ?

इमानस—कोई बहुत घायल नहीं है।

हम०—तो, हम लोग पन्द्रह मिनट में जंगल में पहुँच जायंगे।

इमा०—यदि, शत्रु यहां पन्द्रह मिनट तक रोके जा सकें, तो…?

हल०—तो, फिर वे हमें नहीं पा सकते।

मारकुइस ने कहा, "परन्तु, पाँच मिनट के भीतर ही शत्रु यहां पहुँच जायंगे। संदूक अधिक काल तक उन्हें नहीं रोक सकता। १५ मिनट तक शत्रु को कौन रोकेगा ?"

इमा०—मैं रोकूँगा।

उनमें से कई एक ने कहा, "मैं भी इमानस के साथ रहूँगा, मेरे शरीर में अधिक घाव नहीं हैं।"

इमानस ने सब की ओर मुड़ कर कहा, आवश्यकता केवल इस बात की है कि जितनी देर तक बने उतनी देर तक शत्रु को यहां पर रोका जाय। मेरे शरीर में इस समय तक पूरा बल है। मेरे शरीर का एक बिन्दु रक्त भी नीचे नहीं गिरा। आप सब घायल हो चुके हैं, इसलिए मैं आप लोगों की अपेक्षा अधिक काल तक शत्रु को रोक सकूंगा। मारकुइस महोदय का भी यहां से जाना आवश्यक है। वे हमारे अधिनायक हैं। उनके बिना हमारे सभी काम रुक जायंगे। मैं अकेला काफी हूँ। मैं आध घंटे तक शत्रु को रोक रखूंगा। हां, आप अपने हथियार यहीं छोड़ जाइए। आप लोगों के पास चार पिस्तौलें हैं। चारों को छोड़ जाइए।"

सब ने इमानस की बात मान ली। पिस्तौलें भूमि पर रख दीं। बातें करने के लिए अधिक समय न था। इमानस से किसी ने न तो ठीक ठीक विदा ही मांगी और न उसे किसी ने धन्य-वाद ही दिया। केवल मारकुइस ने कहा, "इमानस, हम लोग शीघ्र ही फिर मिलेंगे।"

इमानस ने उत्तर दिया, "नहीं महोदय, मैं नहीं मिलूंगा। कम से कम जल्दी नहीं मिलूंगा, क्योंकि मैं मौत से मिलने जा रहा हूँ!"

ये लोग पटिया के रास्ते से चलने लगे। अपनी जेब से पेंसिल निकाल कर मारकुइस ने खुले हुए पटिया पर कुछ शब्द जल्दी जल्दी लिख दिये। इसके बाद, वह भी सुरंग में उतर गया। वहां केवल इमानस रह गया।

इमानस ने अपने दोनों हाथों में पिस्तौलें ले लीं और वह दरवाजे की ओर बढ़ा। आक्रमणकारी फूंक फूंक कर कदम आगे बढ़ा रहे थे। उन्हें डर था कि कहीं ऐसा न हो कि किले वाले बारूद द्वारा खण्ड को उड़ा दें, जैसा कि ऐसी दशा में बहुधा हुआ करता है। संदूक पर उन्होंने बल लगाया, परन्तु वह इतनी मजबूती से रखा हुआ था कि पीछे न हटा। अन्त में संदूक पर हथोड़े चलने लगे और उसमें किरचों की चोट से छेद बनाये जाने लगे। कहीं कहीं छेद हो भी गये। इधर इमानस ने देखा कि इन छेदों से भीतर की अवस्था जानने का प्रयत्न किया जा रहा है, एक छेद पर एक आँख लगी हुई है। उसने तुरन्त उस छेद का निशाना बांधा और पिस्तौल छोड़ दिया। तुरन्त एक चीत्कार हुआ, जिसे सुन कर इमानस बहुत खुश हुआ। गोली--देखने वाले की आँख में लगी और उसे आर-पार करके निकल गई। देखने-वाला धराशायी हो गया। सन्दूद में दो बड़े छेद हो गये थे। इमानस तुरन्त उनकी ओर बढ़ा और उनमें से एक में उसने अपनी पिस्तौल की नली छोड़कर आक्रमणकारियों पर एक गोली और छोड़ी। चीत्कार फिर हुआ। वह गोली कई आदमियों को लगी। आक्रमणकारी शोर करते, तथा एक दूसरे को कुचलते हुए सीढ़ी पर कुछ नीचे उतर गये। खाली पिस्तौलों को जमीन पर डाल कर इमानस ने भरी हुई बाकी दोनों

पिस्तौलों को हाथ में ले लिया और छेद में से झांक कर उसने देखा कि अब शत्रु का क्या हाल है। शत्रु सन्दूक से दूर हट गये थे और सामने कई लाशें तड़प रही थी। इमानस ने मन में सोचा कि चलो, कुछ समय तो मिला। उसने फिर झांका। इस बार उसने देखा कि एक आदमी पेट के बल घिसल कर दरवाजे की तरफ बढ़ रहा है और उसके पीछे पीछे दूसरा आदमी घुटने के बल आगे बढ़ता आ रहा है। इमानस ने घुटने के बल चलने वाले आदमी के सिर को ताक कर पिस्तौल दागी। निशाना ठीक बैठा। आदमी चिल्ला कर गिर पड़ा और तड़फड़ाने लगा। इमानस ने तीसरे पिस्तौल को जमीन पर डाल दिया और चौथे पिस्टौल को बायें हाथ से दाहिने हाथ में ले लिया। परन्तु, जिस समय यह उलटा-फेरी कर रहा था वह स्वयं बहुत जोर से चिल्ला पड़ा। उसके पेट में एक तलवार घसी हुई थी। वह तलवार एक मुट्ठी में थी। यह मुट्ठी सन्दूक में किये गये दूसरे छेद से होकर भीतर जा पहुँची थी। तलवार इमानस के आर-पार हो चुकी थी, परन्तु वह धराशायी नहीं हुआ। दांत भींच कर उसने जोर से अपने को पीछे घसीटा और लोहे के दरवाजे की ओर जहां मशाल जल गई थी, लपका। शत्रु की तलवार उसके शरीर से निकल गई। उसने अपनी पिस्तौल जमीन पर रख दी। बायें हाथ से उसने अपने पेट के घाव को थाम लिया जिससे अंतड़िया निकली पड़ती थीं, और दाहिने हाथ से उसने मशाल लेकर गंधक-बत्ती में लगा दी। बत्ती में तुरन्त आग लग गई। इमानश ने हाथ से मशाल गिरा दी और फिर पिस्ताल उठा ली परन्तु अब वह कमजोर होता जा रहा था, इसलिए, जमीन पर गिर पड़ा। अभी उसमें दम बाकी थी। उस दम से भी उसने काम लिया। वह बत्ती के समीप ही गिरा था। वह वहीं से पड़ा पड़ा उसे फूंकने लगा।

फूंकने का फल यह हुआ कि बत्ती की आग और भी तेजी से आगे बढ़ने लगी और कुछ क्षणों ही में, वह लोहे का दरवाज़ा पार करती हुई पुलवाली इमारत की ओर बढ़ गई। उस समय इमानस को बड़ी खुशी हुई। उसे अपने इस कृत्य पर उस वीरता से भी अधिक प्रसन्नता हुई जो इतने शत्रुओं के मुकाबले में वह अभी प्रकट कर चुका था। प्रकृत-वीर हत्यारे की श्रेणी में उतर गया, और अपने इस क्रूर कर्म पर किसी प्रकार दुःखी होने के स्थान में वह इस समय इन शब्दों को मन ही मन, कह कर, बड़ी प्रसन्नता-पूर्वक मृत्यु का आह्वान करने लगा :—

"ये लोग मुझे अच्छी तरह याद करेंगे। मैं उस छोटे बच्चे का जो हमारा राजा है और जिसे इन दुष्टों ने कैद कर रखा है, इस तरह से इनके तीन छोटे बच्चों को भस्मी-भूत करके बदला ले रहा हूँ।"

इतने ही में धड़ाका हुआ। सन्दूक को जोर का धक्का लगा, और वह पीछे खसक गया। रास्ता निकल आया, और उसमें से तलवार हाथ में लिये हुए रेडो कूद कर कमरे में आ धमका कमरे में इस समय अँधेरा था। मशाल बुझ सी गई थी और भूमि पर पड़ी हुई थी। उसमें कुछ अग्नि अब भी थी और उसी से कुछ धुंधला प्रकाश हो रहा था। रेडो चिल्ला कर बोला, मेरा नाम रेडो है, मैं अकेला हूँ। तुम कितने हो? चाहे जितने हो, आ जाओ, मैं तुमसे भिड़ने के लिए अकेला ही तैयार हूँ।" परन्तु उसकी बात का उत्तर न मिला। जब कोई आहट भी न मिली, तब वह और अगे बड़ा और उधर टटोलने लगा। घूम फिर कर अच्छी तरह देख-भाल लेने पर भी जब उसे कोई नहीं मिला तब तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बड़बड़ाने लगा :—

"हैं! यहां तो कोई भी नहीं। क्या हुए? कहां गायब हो गये?" इसके बाद ही उसकी दृष्टि खुले हुए पटिये पर, पड़ी। धुँधले

प्रकाश में आंख गाड़ कर देखने पर उसे यह भी मालूम हुआ कि दीवार में सुरंग और उसकी सीढ़ी भी लगी हुई है। वह बड़बड़ाने लगा, "अच्छा, अब मैं समझा। ये लोग तो बाहर निकल गये! (बाहरवालों को पुकार कर) अरे भाइयों! आ जाओ! आ जाओ यहां तो कोई भी नहीं है। सब चम्पत हो गये। किले की दीवार में सुरंग है, उसी से ये चोट्टे भाग गये।"

उसके मुंह से ये शब्द निकल ही रहे थे कि उसी समय पिस्तौल चलने की आवाज हुई। एक गोली रेडो का हाथ छिलती हुई निकल गई और दीवार में टकरा कर, चपटी हो कर, नीचे गिर पड़ी।

रेडो बोला, "हैं, तो यहां कोई महाशय इस समय भी हैं। मेरे ऊपर इस समय किन महोदय ने कृपा की?"

उत्तर मिला, "मैंने।

रेडो ने आंखें फाड़ फाड़ कर देखा और अंधेरे में इमानस को नीचे पड़े पाया। वह उससे बोला, "अच्छा, और सब तो भाग गये, तुम तो मिले, अब तुम यहां से जिन्दा नहीं जा सकते।"

इमानस ने ताना देते हुए कहा, "क्या कहना है!"

रेडो ने पूछा, "तुम नीचे क्यों पड़े हो?"

इमा०—नीचे पड़े पड़े मैं तुम पर, जो खड़े हुए हो, हंस रहा हूँ।

रेडो०—तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?

इमा०—पिस्तौल।

रेडो०—और बायें हाथ में?

इमा०—अपने पेट की अंतड़ियां।

रेडो०—अच्छा तुम मेरे कैदी हुए।

इमा०—अ [illegible]!

इमानस ने नीचे सिर झुका दिया। जलती हुई बत्ती को फूंकने का उसने प्रयत्न किया, और इसी प्रयत्न में उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

कुछ ही क्षण के पश्चात्, गावैन, सिमोरडेन और अन्य सैनिक इस स्थान पर पहुँच गये। उन्होंने सुरंग की जांच की। सुरंग का दूसरा सिरा नाले के पास निकलता था। मारकुइस और उसके साथी हाथ से निकल गये थे। गावैन के आदमियों ने इमानस को उठाया। वह भी मर चुका था। गावैन ने लालटेन लेकर पटिया को अच्छी तरह देखा। छुटपन में उसने भी पटियावाली सुरंग की बात सुनी थी, परन्तु इस बात पर उसने कभी विश्वास नहीं किया था। जब लालटेन लेकर वह पटिया को देख रहा था, तब उसकी दृष्टि उन अक्षरों पर पड़ी जो पटिया पर लिखे हुए थे। यह लिखा हुआ था, "इस समय तो नमस्कार! फिर मिलेंगे! मारकुइस लन्टेनक"

गावैन के पास ही गूशेम्प खड़ा था। गावैन ने उसके चेहरे पर दृष्टि डाली। दोनों की आंखें मिलीं। आंखों ही आंखों में दोनों ही ने बातें कर लीं। मानों एक से दूसरे ने कहा, "यह तो कुछ भी नहीं हुआ। सारी की कराई मेहनत व्यर्थ हो गई!" इस मूक-भाषण के उपरान्त गावैन ने गूशेम्प से पूछा, "गूशेम्प, सीढ़ी आई?"

गू०—सेनापति, नहीं आई।

गा०—एक गाड़ी तो आते हुए दिखाई पड़ी थी?

गू०—उस पर सीढ़ी नहीं आई।

गा०—फिर, क्या चीज आई?

गू०—सिर काटने का यन्त्र।

× × ×

सुरंग से निकल कर मारकुइस नाले के किनारे जा पहुँचा। सुरंग से लेकर नाले तक का रास्ता झाड़ियों और वृक्षों से ऐसा भरा हुआ था कि वहां पर, यदि कोई खड़ा हो जाता, तो, उसे कोई न देख पाता। इसलिए, सुरंग के रास्ते के ढाकने की कोई आवश्यकता नहीं समझी गई थी। हलमलो अब भी मारकुइस के साथ था। बाकी पांचो आदमी आगे निकल गये थे। हलमलो ने मारकुइस से कहा, "हमारे साथी तो निकल भी गये।"

मार०—तुम भी उनका अनुकरण करो।

हल०—तो, क्या मैं आपको छोड़ कर चला जाऊँ?

मार०—निसन्देह। इस समय सब का अलग अलग रहना ही ठीक है। यदि हम लोग एक साथ रहेंगे तो पकड़ जायंगे। मेरा और तुम्हारा साथ भी ठीक नहीं। साथ रहने में दोनों के प्राण जाने का भय है।

हल०—श्रीमान्, इस प्रदेश को तो जानते ही हैं?

मार०—हाँ

हल०—तो, कल दोपहर को हम लोगों का पीरी जंगल में इकट्ठा होना तय रहा।

मार०—हाँ; अब केवल इंगलैंड का भरोसा है। पन्द्रह दिन के भीतर अंग्रेजी सेना को फ्रान्स की भूमि पर उतरना पड़ेगा। हाँ, क्या तुम्हें भूख तो नहीं लगी?

हल०—लगी तो है। मैंने आज कुछ भी नहीं खाया।

मारकुइस ने अपनी जेब से चाकलोट* की एक टिकिया निकाली। उसे आधी तोड़ कर हलमलो को उसने दिया, और आधी वह स्वयं खाने लगा।

---

* एक प्रकार की यूरोपियन मिठाई।

हलमलो बोला—"श्रीमान्, यह याद रक्खें नाला आपके दाहिने हाथ पर है, और जंगल बाँयें पर।"

मार०—बहुत अच्छा, अब तुम जाओ।

हलमलो चल दिया, और कुछ ही क्षणों में वह वृक्षों की झुरमुट में लोप हो गया। मारकुइस थोड़ी देर अचल भाव से खड़ा रहा। वह गहरी चिन्ता में था। वह मौत के मुँह से निकल कर आ रहा था। दिन भर की घटनाओं पर जब उसने अपने विचार को दौड़ाया, तब सुदृढ़ चित्त और अत्यन्त निर्भय मन होते हुए भी वह कुछ क्षणों के लिए अपने मन को स्थिर न रख सका। तुरन्त ही उसने अपनी चित्त-वृत्तियों को वश में किया। उसने घड़ी निकाल कर देखी। तारों के प्रकाश में उसने जाना कि अभी केवल दस ही बजे हैं। विपदा समय बड़ी मुश्किल से कटा करता है। विपदा के समय के मिनट और घंटे साधारण मिनटों और घंटों से बड़े नहीं होते, परन्तु अपने शासन-काल मे वे बड़ी क्रूरता के साथ लम्बे और चौड़े होते हुए मालूम पड़ते हैं। किले पर सूर्यास्त के समय आक्रमण आरम्भ हुआ था। रात के आठ बजे से पूरी मार-काट आरम्भ हुई। दो घंटे अर्थात् केवल १२० मिनट ही में यह सब महाकाण्ड हुआ और उसी के भीतर समाप्त हो गया। परन्तु जिनके ऊपर बीत रही थी, जो मौत और जीवन के बीच में फुटबाल के गेंद की भाँति खेल की वस्तु बन रहे थे, उनके लिए, ये दो घंटे दो युग के समान लम्बे हो गये थे।

मारकुइस ने वहाँ अधिक ठहरहना उचित नहीं समझा। उसने घड़ी को जेब में रखा, परन्तु उसी जेब में नहीं जिसमें वह पहले थी, क्योंकि उस जेब में इमानस की दी हुई लोहे के दरवाजे की कुँजी थी, और डर यह था कि यदि घड़ी भी उसी जेब में रही तो उसका शीशा टूट जायगा। इसके बाद वह जंगल की

ओर बढ़ा। बढ़ते ही उसने देखा कि वृक्षों की झुरमुट में से छन छन कर प्रकाश की कुछ किरणें आरही हैं। वह और आगे बढ़ा। अब उस पर प्रकाश पूर्ण रूप से पड़ा। नाले में उसे एक प्रकाश पुंज सा दिखाई दिया। प्रकाश में रहना उसने उचित नहीं समझा। इसलिए, वह फिर झाड़ियों की आड़ में हो गया। प्रकाश क्यों है और वह कैसे हुआ—इन बातों पर बिचार करने की उसने तनिक भी आवश्यकता न समझी। वह हलमलो के बताये हुए जंगल के रास्ते पर चल पड़ा परन्तु अभी वह अधिक आगे नहीं बढ़ा था कि उसे अपने सिर के ऊपर घोर चीत्कार सुनाई पड़ा। नाले के ऊपर जो टीला था उसी पर यह क्रन्दन हो रहा था। मारकुइस ने दृष्टि ऊपर ऊठाई और वहीं ठहर गया।

अग्नि-काण्ड

फैशार्ड ने ला-टोर किले को कोस भर से देखा था। कहां तो उससे चला ही न जाता था और कहां ला-टोर को देख कर उसके शरीर में इतना बल आ गया कि वह लम्बे लम्बे डग रखने लगी। अंधेरा हो चला था, परन्तु वह आगे ही बढ़ती गई। रात में अंधकार और जंगल की झाड़ियों और कांटों का उसने कुछ भी ख्याल नहीं किया। किले की मूर्ति उसके नेत्रों के सामने थी और कांटों के कारण पैरों के लुहू-लुहान हो जाने पर भी वह एक क्षण के लिए कहीं न रुकी। मार्ग में उसे कहीं कहीं और कभी कभी आदमियों के चिल्लाने और बन्दूकों के चलने का शोर भी सुनाई पड़ता, परन्तु उसका ध्यान इन बातों से भी नहीं टूटा। ज्यों ज्यों वह टीले की झाड़ियों को पार करती हुई आगे बढ़ती गई, त्यों त्यों किला उसके सामने और भी बड़े रूप में आता गया। अन्त में वह टीले के किनारे पर जा पहुँची। नीचे नाला बहता था जो बहुत नीचे था और इसलिए साफ साफ नजर नहीं आता था। थोड़ी ही दूर पर टीले की चोटी पर, पहियों पर तोपें चढ़ी हुई थीं। तोप की बत्तियों के धुंधले प्रकाश से, सामने एक बड़ा भारी काला ढेर सा मालूम पड़ता था। यही काला ढेर पुल और उसकी इमारत थीं। उसी से किला लगा हुआ था। किले के छेदों से कुछ प्रकाश कभी कभी छन छन कर बाहर आ जाता था। भीतर आदमियों के चीखने चिल्लाने की ध्वनि भी हो रही थी। फैशार्ड थोड़ा आगे और बढ़ी और अब वह बिलकुल किनारे पर पहुँच गई। अंधकार में

उसे पुल की इमारत के तीनों खण्ड दिखाई दे रहे थे । परन्तु इस समय उसके मन में नाना प्रकार के विचार दौड़ रहे थे । वह सोच रही थी, क्या यही जगह है जहां मेरे बच्चे हैं ? क्या यही ला-टोर का किला है ? यहां हो क्या रहा है ? वह इसी चिन्ता में मग्न थी कि इतने ही में, उसे मालूम पड़ा, मानों आंखों पर काला पर्दा सा पड़ गया । जो चीजें आंखों के सामने थीं, वे उस काले पर्दे के पीछे छिप गईं । एक धड़ाका हुआ । बेचारी फैशार्ड ने आंखें बन्द कर लीं । आंखें बन्द करते ही उसे मालूम हुआ, मानों पलकों के बाहर सारे व्योम में लाली छा गई है। उसने आंखें खोल दीं । देखती क्या है कि रात नहीं है, दिन हो गया है और ऐसा दिन जिसे अग्नि की बड़ी बड़ी लपकें लेकर उपस्थित हुई हैं । यथार्थ में, उसके नेत्रों के समाने महान् अग्नि-काण्ड का दृश्य उपस्थित था ।

खूब ज़ोरों की आग लगी हुई थी । सर्प-जिह्वा की भांति अग्नि-शिखायें लपलपा रही थीं । पुल की इमारत का नीचे का खण्ड पूर्ण रूप से अग्नि-मय था । इमारत के चारों ओर धुएं का घटाटोप छाया हुआ था । अग्नि-शिखाओं और धुएं के ढेर से इमारत का पूर्ण रूप आच्छादित था । हवा का एक झोंका आया जिससे धुआं हट गया और कुछ क्षणों के लिए हवा के झोंके से दब और सिमट जाने वाली अग्नि-शिखा के प्रकाश से पुल का वह भवन अंधकारमय निशा में ऊपर सिर उठाए हुए स्पष्टतया दिखाई दिया । अग्नि का पूरा आक्रमण नीचे के खण्ड पर था । उसका नाशक स्पर्श अभी तक ऊपर के खण्डों में नहीं पहुँचा था । खिड़कियां खुली हुई थीं । ऊपर जहाँ फैशार्ड खड़ी हुई थी, वहां से वह आग की लपटों और धुएं के झोंकों के भीतर से, खिड़कियों के भीतर की वस्तुओं को देख सकती थी । उसने देखा कि दूसरे खण्ड में, दीवार के सहारे लगी हुई अनेक

आलमारियां रक्खी हैं और उनमें पुस्तकें भरी हुई हैं। एक दूसरी खिड़की से, फैशार्ड ने देखा कि उस खण्ड में, नीचे भूमि पर छोटे छोटे प्राणी उसी प्रकार, जिस प्रकार घोंसले में चिड़ियों के बच्चे सिमट कर और सट कर शयन करते हैं, पड़े हुए हैं। उसे यह भी भासित हुआ, मानों एक बार वे कुछ हिले-डुले भी। इस ओर वह स्थिर दृष्टि से बहुत देर तक देखती रही। उसके मन में रह रह कर यह प्रश्न उठा, "ये क्या हैं और यहां क्यों पड़े हैं?" फैशार्ड एकटक उनकी ओर देखती रही। बेचारी ने दिन भर कुछ भी न खाया था। चलते चलते वह इतनी थक गई थी कि उसे ज्वर हो आया था। उसे इस समय चक्कर सा आ रहा था। निर्बलता के कारण उसका शरीर बैठा सा जा रहा था तो भी, उसकी दृष्टि उसी एक ठिकाने पर डटी रही।

अचानक अग्नि की एक लपक ऊपर उठी। पुस्तकालय पर एक बेलि छाई हुई थी। वह सूख चुकी थी। अग्नि-शिखा उसी में जा लगी और द्रुत-वेग से, सूखी बेलि के सहारे, अग्नि की लपकें ऊपर चढ़ चलीं। पलक झपकते ही, अग्नि-शिखायें ऊपर के खण्ड में अपना भयंकर नाच नाचती दिखाई दीं। दूसरे खण्ड में प्रकाश फैल गया और तीनों बच्चे भूमि पर सोते हुए साफ साफ दिखाई देने लगे। सुन्दर सुन्दर हाथ और पैरों वाले बच्चे, जिनकी आँख मुंदी हुई थीं और जिनके ओठों पर मुस्कराहट नाच रही थी, एक दूसरे से सटे पड़े हुए थे! माता ने अपने बच्चों को पहचान लिया।

माता क्रन्दन कर उठी। उसके मुंह से ऐसा करुण-क्रन्दन निकला जो मां ही के हृदय से निकल सकता है। उस क्रन्दन की तुलना दूसरे किसी भी क्रन्दन से नहीं की जा सकती। उसमें इतनी प्रचण्डता थी, वह इतना मर्म-भेदी था कि कदाचित् ही

कोई क्रन्दन वैसा हो सके। जब स्त्री उस प्रकार का क्रन्दन करती है, तब भासित होता है, मानों एक गौ रंभा रही है और जब कोई गौ इस प्रकार चिल्लाये तो समझ लो कि माता का हृदय क्रन्दन कर रहा है।

मारकुइस लन्टेनक ने इसी क्रन्दन को सुना था। उसके सुनते ही वह खड़ा हो गया। वह इस समय नाले और सुरंग के बीच में खड़ा हुआ था। झाड़ियों में से उसने देखा कि पुल की इमारत में आग लगी हुई है। ऊपर सिर उठा कर देखने पर, उसने देखा कि टीले के सिरे पर पुल की इमारत के सामने और अग्नि-शिखाओं के पूरे प्रकाश में एक शोकाकुल स्त्री चिल्लाती हुई नीचे की ओर झुकी पड़ती है। अकुलता की छाप उसके चेहरे पर थी। निराशा ने इस ना-समझ स्त्री के मुख-मण्डल पर एक विचित्र आभा उत्पन्न कर दी थी। भीषण यन्त्रणाओं से आत्मा महान् रूप धारण कर लिया करती है। यह स्त्री इस समय केवल एक साधारण माता नहीं रह गई थी। संसार भर का मातृत्व इस समय उसके द्वारा विलाप कर रहा था। ऐसे अवसर पर जिन बातों के मिल कर जोर मारने से मानवता प्रकट होती है, उन्हीं से देवत्व का भी प्रदर्शन होता है। आग की लपकों के सामने टीले के किनारे खड़ी हुई वह स्त्री एक प्रेतात्मा के सदृश मालूम पड़ती थी। पशु की भांति उसका चीत्कार था, परन्तु देवी की भांति उसकी चेष्टाएं। उसके मुंह से शापों की झड़ी लगी हुई थी, परन्तु उसका मुख-मण्डल था उस समय तेज का पुंज। नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी, परन्तु साथ ही उनसे आग के से अंगारे भी बरस रहे थे।

मारकुइस ने चुपचाप उसके आर्त्त-क्रन्दन को सुना। वह अपने बच्चों के नाम ले ले कर सहायता की दुहाइयां दे रही। लोग उस अग्नि-काण्ड के समीप पहुँच भी गये थे। गावैन,

सिमोरडेन और गूशेम्प अपने सिपाहियों को आज्ञा दे रहे थे। नाले में बहुत कम जल था। लोग नाले से जल लाये, परन्तु उससे कोई लाभ नहीं हुआ। आग अपना पल्ला पढ़ाती ही गई। चारों ओर आदमी खड़े हुए थे। उनकी आंखों के सामने विनाश-लीला हो रही थी, परन्तु वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। उस समय आग और भी ऊपर चढ़ गई। तीसरे खण्ड में भी पहुँच गई। ऊपर अन्न और घास भरी हुई थी। उनमें आग लग चुकी थी। उन पर लपकों का भीषण नृत्य हो रहा था। इतने में हवा का एक झोंका आया। उससे आग और भी भड़की। हवा का झोंका क्या था, मानों इमानस की आत्मा थी जो अपनी कृति पर प्रसन्न हो कर आग की इन किलोलों के साथ विचरण कर रही थी।

अभी तक पुस्तकालय में आग नहीं लगी थी। दीवारें मोटी थीं और छत ऊंची थी। इसलिए पुस्तकालय का खण्ड बचा हुआ था। परन्तु लपकें लपक लपक कर बीच के खण्ड में पहुँच चली थीं। नीचे और ऊपर के खण्ड जल रहे थे। ऐसी दशा में बीच का खण्ड कितनी देर तक बचा रह सकता था। बच्चे अभी तक सो ही रहे थे। उनके ऊपर और नीचे आग की लपकें थी और चारों ओर धुएं का मण्डल। हवा के झोंके से लपटें और धुआँ का मण्डल जब छिन्न-भिन्न हो जाता तब तब बाहर वाले देखते कि तीनों बच्चे सानन्द सुख-नींद सो रहे हैं। इस दृश्य को देखकर किस कठोर से कठोर हृदय प्राणी के नेत्रों में आँसू न आ जाते ?

माता निरन्तर चिल्ला रही थी, "अरे, बचाओ, बचाओ! अरे, भाई सुनते क्यों नहीं, क्या मेरे बच्चों को मार डालोगे ? दिन-रात मैं उन्हें खोजती फिरी। न मालूम कहां कहां की मैंने खाक छानी। आज मैंने उन्हें पाया भी, तो किस दशा में ? अरे, बचाओ, देखो, तीन अबोध बच्चे मरे! अरे, बचाओ! मैं गोली

से मारी गई, अब मेरे बच्चे जलाये जा रहे हैं ! अरे लोगो, अरे लोगो, मेरी बात क्यों नहीं सुनते ? कुत्ते पर भी तरस खाते हैं ! अरे, इन बच्चों पर तरस खाओ ! इन सोते हुए बच्चों पर तरस खाओ। अरे, ज्योर्जेट पर, रेनीजीन पर, ग्रोस-एलन पर तरस खाओ। मैं उनकी माँ हूँ, मेरी विनय सुनो ! कैसी विपदा है जंगल जंगल की मारी मारी फिरने के बाद आज मेरे लाल मिले भी, तो उनकी यह दशा ! अरे, देखो, मुझे उनके पैर दिखाई दे रहे हैं ! देखो, देखो, वे अभी तक सोते ही हैं ! मेरे बच्चे, मेरे बच्चे ! अरे, कोई उन्हें बचाओ ! क्या मनुष्यों के रहते मेरे दुधमुंहे बच्चे इस प्रकार मरें ! अरे, ऐसी हत्या तो कहीं और कभी नहीं हुई होगी। मेरे मेरे, बच्चे चुराये गये, अब वे मारे जा रहे हैं। परमात्मा ! मेरे बच्चों को बचा ! अरे, भाइयो, उन्हें बचाओ ! अरे भगवन् क्या तुम भी मर गये !"

इधर लोग चिल्ला रहे थे। किसी ने कहा, "अरे सीढ़ी लाओ सीढ़ी लाओ।"

किसी ने उत्तर दिया, "सीढ़ी नहीं है।"

किसी ने कहा, "पानी लाओ।"

उत्तर मिला, "पानी भी नहीं है।"

एक ने कहा, "दूसरे खण्ड में, किले में, एक दरवाजा है, उसे तोड़ कर बच्चों को निकाल लो।"

उत्तर मिला, "दरवाजा लोहे का है। उसका तोड़ना असम्भव है।"

माता ने चिल्ला कर कहा, "अरे मेरे बच्चों को नहीं निकालते, तो मुझी को आग में झोंक दो !"

इधर मारकुइश ने अपनी जेब को टटोला। लोहे के दरवाजे की कुञ्जी उसकी जेब में थी, दरवाजा खुलता तो कैसे खुलता।

नीचे झुक कर उसने फिर उसी सुरंग में प्रवेश किया जिससे से निकल कर वह जंगल में आया था।

जब चार हजार योद्धाओं ने देखा कि तीन बच्चे अग्नि के मुख से नहीं बचाये जा सकते, तब वे बहुत खिन्न हुए। गावैन अपने २० मजबूत साथियों को लेकर किले के उस खण्ड में पहुँचा जहां सुरंग का पटिया खुलता था और जहां पुस्तकालय में जाने के लिए लोहे का दरवाजा था। अब इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं रह गया था कि लोहे के दरवाजे को तोड़ा जाय। गावैन के २० जवान कुल्हाड़ी और हथौड़े लेकर उस दरवाजे को तोड़ने लगे। दरवाजे में लोहे की दोहरी चादर थी। इसलिए हथौड़ों की मार उस पर कुछ भी कारगर नहीं होती थी। गावैन ने कहा, "इस पर तो तोप के गोले ही का असर हो सकता है, परन्तु इस समय तोप का यहां तक लाना असम्भव है।" अन्त में, हथौड़े चलाते चलाते बीसों आदमी थक गये। वे चुपचाप खड़े हो गये। समाने ही इमानस की लाश पड़ी हुई थी। उसका भीषण रूप मानो अपनी विजय पर इन लोगों को चिढ़ा रहा था। अब कुछ मिनटों की देर थी कि पुल की इमारत भस्म होकर नीचे आ रहे। गावैन मन ही मन बहुत दुखी था। उसकी दृष्टि सुरंग वाले पटिया पर पड़ी। वह बोला, "इसी पटिया द्वारा मारकुस हमारे हाथों से निकल गया।"

एक आवाज सुनाई दी, "इसी से वह लौटता है।"

इतने ही में सुरंग में सफेद बालोंवाला एक सिर गावैन को दिखाई दिया। यह मारकुइस का सिर था। बहुत वर्षों से गावैन ने मारकुइस को नहीं देखा था। उसे देख कर गावैन कुछ पीछे हट गया। उसके दूसरे साथी भी आश्चर्य से चकित हो गये। मारकुइस के हाथ में एक बड़ी कुञ्जी थी। वह गावैन के आदमियों पर बड़ी गर्व-भरी दृष्टि डालते हुए, लोहे के दरवाजे की

ओर बढ़ गया। दरवाजे के ताले में उसने कुञ्जी लगाई। दरवाजा खुल गया। भीतर आग की लपटें दिखाई दीं। मारकुइस वैसे ही स्थिर भाव से आग की लपटों के भीतर चला गया। गावैन और उसके साथी उसे देखते रहे। अभी मारकुइस दरवाजे से आठ दस कदम ही आगे बढ़ा था कि छत नीचे धसक गई। जहां वह इस समय था, उसके तथा दरवाजे के बीच में एक गड्ढा हो गया। छत के धसकने पर धड़ाका हुआ, परन्तु मारकुइस ने उसका तनिक भी ख्याल नहीं किया। उसने मुड़ कर देखा भी नहीं। वह स्थिरभाव से आगे ही बढ़ता गया और अन्त में वह बढ़ते बढ़ते धुएं में लोप हो गया। गावैन और उसके साथी उसे उस समय तक देखते रहे जब तक वह दिखाई देता रहा। फिर, उन्हें पता न लगा कि आग की लपटों से वह बचा, या उनसे झुलस गया; छत ने उसका साथ दिया, या वह भी धसक गई; वह जिन्दा बचा या मर गया।

× × ×

इधर बच्चे जाग पड़े।

अग्नि-शिखायें इस समय तक पुस्तकालय के भीतर नहीं पहुँची थीं। उनका राज्य बाहर ही था। बच्चों ने अग्नि की इस लीला को देखा। वे डरे नहीं। उन्होंने ने इसे तमाशा समझा। ज्योर्जेट बहुत खुश हुई। बड़ी बड़ी लपटों को लपकते और उनमें अग्नि की लाली और चमक, और धुएं की काली धारा के मिश्रण को देख देख कर वह कुलकने लगी। इस तमाशे को अच्छी तरह से देखने के लिए तीनों बच्चों ने सिर उठाया। बाहर माता को उनके सिर दिखाई पड़े। वह चिल्ला कर बोली, "अरे, अरे, वे जाग पड़े।"

बच्चे उठ बैठे। रीनेजीन ने खिड़की की ओर हाथ फैला कर कहा, "मुझे गरमी लगती है।"

ज्योर्जेट ने भी कहा, "गम्मी (गरमी) !"

माता फिर चिल्लाई, "अरे, मेरे बच्चे, मेरे बच्चे !"

बच्चे चारों ओर देखने लगे। माँ की आवाज से वे चौंक से पड़े। इतने में माता फिर चिल्लाई, "अरे, मेरे रीने, एलेन और ज्योर्जेट !" रीनेजीन ने उधर दृष्टि डाली जिधर से आवाज आ रही थी। उसने अपनी मां को देख लिया।

वह चिल्ला पड़ा, "मां !"

ग्रोस एलन ने भी कहा, "मां !"

ज्यार्जेट भी बोली, "मां !"

ज्योर्जेट ने हाथ फैला दिये।

माता फिर चिल्लाई, "मेरे बच्चे ! मेरे बच्चे !"

तीनों बच्चे खिड़की की ओर बढ़ आये। आग इस ओर नहीं थी। रीने-जीन बोला, "बड़ी गरमी लगती है।" फिर वह माता को देख कर चिल्लाया, "मां, यहां आ जाओ।"

ज्योर्जेट भी बोली, "आ, मां !"

माता विकलता के मारे पृथ्वी पर लोटने लगी। उसके कपड़े फट चुके थे। हाथ-पैर से लहू चू रहा था। अन्त में, उसकी विकलता इतनी बढ़ी कि वह उंचाई से नीचे गिर गई और एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में लुढ़कते लुढ़कते नाले में पहुँच गई। सिमोरडेन और गूशेम्प पास खड़े देख रहे थे और गावैन ऊपर से, परन्तु कोई भी कुछ न कर सकता था। सिपाही इधर उधर घूम रहे थे। अपनी अपनी असमर्थता पर उन्हें बड़ा दुःख था। उनकी समझ में न आता था कि क्या करें और क्या न करें। रेडो नीचे था। उसका शरीर घावों से चूर चूर था। परन्तु उससे न रहा गया। उसने फैशार्ड को पास से जाकर देखा। उसे पहचान कर वह बोला, "अरे ! तू फिर कैसे जी उठी ?"

माता फिर चिल्लाई, "मेरे बच्चे !"

रेडो ने उत्तर दिया, "ठीक है, भले ही तू चुड़ैल हो कर यहां आई हो, परन्तु इस समय इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं।"

रेडो ने पुल पर चढ़ने के लिए जोर मारा। उसने पत्थरों के बीच में अपने हाथ-पैर की उंगलियां लगा कर चढ़ने का प्रयत्न किया। परन्तु उससे चढ़ते नहीं बना। वह नीचे गिर पड़ा। आग की भयङ्करता और भी बढ़ गई थी। रेडो को अपनी बेबसी पर बड़ा रोष आया। उसने आकाश की ओर हाथ उठा कर कहा, "क्या यहां भी दया नहीं है ?"

माता घुटने टेके हुए चिल्ला रही थी, "भगवान्, दया करो, दया करो !"

अग्नि-शिखाओं से 'धों, धों' का शब्द उठ रहा था। लकड़ी की शहतीरें चटक रही थीं। पुस्तकालय की अलमारियों के शीशे कड़क कड़क कर टूट रहे थे। मालूम पड़ता था कि सारी इमारत अब गिरती है और तब गिरती है। छोटे बच्चों का 'मां, मां' का आर्त्तनाद भी बीच बीच में सुनाई पड़ता था। सभी लोग भयभीत थे। इतने ही में, सब ने देखा, कि बच्चों के पास, आग की लपटों के पीछे एक लम्बी शकल प्रकट हुई। सब की दृष्टि उसी पर जा लगी। लोगों ने पहचाना, वह मारकुइस लन्टेनक है। थोड़ी देर के लिए, मारकुइस लोगों की नजर से छिप गया और फिर खिड़की के पास आया। खिड़की से उसने एक सीढ़ी नीचे लटकाई। यह वही सीढ़ी थी जो पुस्तकालय में रखी हुई थी। सीढ़ी लम्बी थी। उसको नीचे लटकाने में मारकुइस को पूरी ताकत से काम लेना पड़ा। जब वह बहुत नीचे आ गायी, तब नीचे से रेडो ने लपक कर उसे थाम लिया।

सीढ़ी को पकड़ते हुए रेडो चिल्लाया, "प्रजा-तंत्र की जय !"

मारकुइस ने ऊपर से आवाज लगाई, "राजा की जय !"

रेडो बोला, "तुम जो चाहो सो बको; परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तुम हो बड़े दयालु !"

सीढ़ी ने नीचे से लेकर ऊपर तक का सम्बन्ध जोड़ दिया। २० आदमी दौड़ पड़े। उन सब के आगे रेडो था। कुछ ही क्षणों में, ये लोग सीढ़ी के डंडों पर पैर रखते हुए नीचे से लेकर ऊपर तक पहुँच गये। मालूम पड़ता था कि आदमियों की एक सीढ़ी बन गई। रेडो सीढ़ी के सिरे पर था। आग की लपटें उसके चेहरे के पास से निकल रही थीं। सेना के अन्य सिपाही सीढ़ी के और भी पास सिमट आये। मारकुइस फिर भीतर गया और एक बच्चे को गोद में लेकर आगे आया। यह बच्चा ग्रोस-एलन था। गोद में लेते ही बच्चा बोला, "मुझे डर लगता है।" मारकुइस उसे दोनों हाथों में उठाये सीढ़ी के सिरे तक आया। वहां रेडो खड़ा था। मारकुइस ने बच्चे को रेडो के हाथों में दे दिया। रेडो ने सीढ़ी पर चढ़े हुए दूसरे आदमी को दे दिया। दूसरे ने तीसरे के हाथ में दिया और तीसरे ने चौथे को दिया। इसी प्रकार, हाथों-हाथ ग्रोस-एलन नीचे पहुँच दिया गया। उधर मारकुइस फिर भीतर चला गया। इस बार वह रेनी-जीन को लेकर आया। रेनी-जीन ने बड़ा उत्पात किया। वह रेडो के हाथ में आते ही खूब रोया-पीटा, उसने खूब हाथ पैर पटके और अपने छोटे छोटे हाथों से, जहाँ तक बना, रेडो को घूंसे भी लगाये। मारकुइस फिर भीतर गया। इस समय वहाँ ज्योर्जेट अकेली थी। जब मारकुइस उसके पास पहुँचा, तब ज्योर्जेट उसे देख कर मुस्करा दी। मारकुइस कठोर-हृदय आदमी था। परन्तु, इस अबोध बालिका की निर्दोष मुस्कराहट पर उसका हृदय भी पसीज उठा। उसकी आँखों में आंसू आ गये। उसने ज्योर्जेट से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?

मारकुइस ने उसे गोद में उठा लिया। वह अब भी मुस्कुराती रही। उसकी मुस्कुराहट और भोली-भाली सूरत ने मारकुइस के हृदय पर इतना असर किया कि जब वह उसे रेडो के हाथों में देने लगा, तब उसने उसे चूम लिया। यह लड़की उसी तरह से हंसती और दूसरे को अपने इस भोलेपन पर रुलाती, सिपाहियों के हाथों में से होते हुए, नीचे आ गई गई। माता सीढ़ी के पास खड़ी हुई थी। इस समय वह हर्ष के मारे पागल सी हो रही थी। मानो वह नरक से एक दम स्वर्ग में जा पहुँची। खुशी के मारे उसका हृदय बल्लियों उछल रहा था। अपने बच्चों के लेने के लिए, उसने हाथ फैला दिये और जब वे उसके हाथों में पहुँचते, तब वह उन्हें अपनी छाती से चिपटाती और उनके मुंह को खूब चूमती। जब तीनों बच्चों को उसने पा लिया, तब वह एक बारगी जोर से हंसी और बेहोश हो गई!

बच्चे आ गये! बूढ़ा मारकुइस ऊपर ही था। उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया। थोड़ी देर तक, आग की लपटों के बीच में खड़ा हुआ, मारकुइस कुछ सोचता रहा। फिर, अचल भाव से, वह खिड़की के पास आया और पूरी धीरता के साथ, आग की लपटों की ओर पीठ किये सीढ़ी के डंडों पर पैर रखते हुए, नीचे उतरने लगा। ज्यों ही वह नीचे पहुँचा, उसका पैर अन्तिम डंडे को छोड़ कर पृथ्वी पर लगा, त्योंही और लोग तो दब कर हट गये। परन्तु एक हाथ उसके कंधे पर पड़ा। उसने मुड़ कर देखा।

सिमोरडेन ने उसके कंधे पर हाथ रक्खे हुए कहा, "मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूँ।"

लन्टेनक ने उत्तर दिया, "ठीक है, जो कुछ करते हो ठीक करते हो।"

मन की व्यथा

सिमोरडेन ने मारकुइस को ला-टोर के किले के कैदखाने में कैद किया। अंधेरी कोठरी में, एक दीपक रख दिया गया। घड़ा भर पानी और एक रोटी वहां रख दी गई। इस कोठरी में मारकुइस को बन्द करके तथा उस पर बैठाकर, सिमोरडेन गावैन के पास पहुँचा। उस समय ११ बजे थे। सिमोरडेन अपने शिष्य से बोला, "मैं सैनिक अदालत में मामला पेश करूंगा। उस अदालत में, तुम्हारा कोई स्थान नहीं होगा, क्योंकि तुम लन्टेनक के वंशज हो। सैनिक अदालत में तीन न्यायकर्त्ता होंगे। एक कप्तान गूशेम्प दूसरा सारजंट रेडो और तीसरा मैं। मैं इस अदालत का अध्यक्ष रहूँगा। फ्रांस की जन-सभा ने जो आज्ञा दी है, उसी के अनुसार कार्य होगा। हमें केवल मारकुइस लन्टेनक को शिनाख्त भर करा लेना है। कल सैनिक अदालत की बैठक होगी, और परसों गला काटने का यन्त्र अपना काम करेगा। बस, फ़िर इसके पश्चात् वैण्डी को समाप्त समझो!"

गावैन कुछ न बोला। सिमोरडेन वहां से चला गया। गावैन; गूशेम्प को कुछ आवश्यक आज्ञायें देकर अपने तम्बू में गया। वहाँ उसने एक लबादा धारण किया। यह लबादा ऐसा था कि इससे सिर भी ढक सकता था। उस पर एक बेल कढ़ी हुई थी। यह बेल इस बात का चिन्ह थी कि लबादा सेनापति का है। लबादा ओढ़ कर वह युद्ध-क्षेत्र में गया। आग अब भी जल रही थी, परन्तु अब उस पर किसी का ध्यान नहीं था। सिपाही लोग मुर्दों के गाड़ने के लिए खाईं खोद रहे थे। घायलों के घाव

पर मरहम पट्टी हो रही थी। जहां पर मारकाट हुई थी वहां की सफाई की जा रही थी। परन्तु गावैन की दृष्टि इन सब बातों पर नहीं पड़ी। उसने यह भी नहीं देखा कि इस समय जहां एक पहरेदार खड़ा होता था वहां सिमोरडेन की आज्ञा से इस समय दो दो पहरेदार खड़े हुए हैं। वह उस दरार से, जहां तीन घंटे पहिले घमासान युद्ध हुआ था, लगभग १०० गज की दूरी पर खड़ा हुआ था। वहां खड़ा खड़ा वह एक एक कर मार-माट की सारी बातें सोच रहा था। सोचते सोचते उसके कानों में ये शब्द गूँज उठे, "कल सैनिक-अदालत बैठेगी और परसों गला काटने का यन्त्र काम करेगा।" सामने की आग की लपटें अब भी कभी कभी उठ पड़ती थीं और कभी कभी छतों के कड़कने और धमकने की ध्वनि हो पड़ती थी। छतें जब धसक कर एक दूसरे पर गिरती थीं, तब दबी हुई आग शिखा के रूप में फिर उठ उठ पड़ती थी। उल्का-पात का सा दृश्य उपस्थित हो जाता था और अन्धकार से परिपूर्ण क्षितिज में दूर दूर तक प्रकाश दौड़ जाता था और उसके साथ ही दौड़ जाती थी—ला-टोर दुर्ग की भारी और भयानक छाया। परन्तु इन सब बातों से, गावैन की विचार-धारा में कोई भी विघ्न नहीं पड़ा। वह उसी प्रकार धीरे-धीरे टहलता रहा। बीच बीच में वह दोनों हाथों को सिर के पीछे लगा लेता और इधर से उधर जाता और उधर से इधर। वह घोर चिन्ता में था।

गावैन सोचने लगा, "यहां तो बात ही पलट गई। जिस बात के होने की स्वप्न में भी सम्भावना नहीं थी, वह हो गई। विचित्र परिवर्तन हुआ! मारकुइस ने जो कुछ किया, उसने सारी अवस्था का रूप बदल डाला!" घटना-चक्र की चपेट भीमवेग से आगे बढ़ती हुई परिस्थिति पर स्पष्ट रूप से कुछ कहने के लिए उसे विवश कर रही थी। न केवल घटना-चक्र की चपेटें

ही अपना जोर बांधे थीं, ऐसे अवसर पर न्याय की भावना भी जोर पकड़ रही थी। गावैन के अन्तरतर में घोर युद्ध उपस्थित था। उसके पूर्व निश्चय और दृढ़ व्रत पर पानी फिरता जा रहा था। एक नैतिक भूचाल उसके मन को मथ रहा था। जितना अधिक वह सोचता था उतना ही अधिक वह उलझनों में पड़ता जाता था। गावैन यह समझता था कि मैं प्रजातन्त्रवादी हूँ और प्रजातन्त्रवाद का अर्थ है न्याय का पक्षपाती और अन्याय का घोर विरोधी होना। इस प्रकार, प्रजातन्त्रवादी का परम न्यायप्रिय होना आवश्यक है। गावैन के नेत्रों के सामने इस समय न्याय का एक अधिक उच्च और पवित्र स्वरूप उपस्थित था। उसने अनुभव किया कि क्रान्ति के न्याय के ऊपर मानवता के न्याय नाम की एक भावना है। कठिन समस्या उपस्थित थी। वह इस समस्या से अलग नहीं रह सकता था। यद्यपि सिमोरडेन ने कहा था कि इस मामले में जो कुछ होगा उससे अब तुम्हें कोई सरोकार नहीं, परन्तु गावैन को इस बात से शान्ति प्राप्त नहीं हुई। उसके मन को इस समय वैसी ही पीड़ा हो रही थी जैसी कि उस वृक्ष को होती है जो जड़ से उखाड़ा जाता है। प्रत्येक मनुष्य के कुछ बंधे हुए विचार होते हैं। जब उन विचारों पर धक्का लगता है, तब उसे बड़ी व्यथा होती है। यही दशा इस समय गावैन की थी। उसके विचारों पर धक्का लगा था। इस धक्के के कारण वह बहुत व्यथित था। उसकी समझ में न आता था कि ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए और क्या नहीं। दोनों हाथों से सिर पकड़ पकड़कर वह बार बार सोचता था, परन्तु स्पष्ट रूप से वह कुछ भी सोच नहीं पाया। उसका सिर चकराने लगा। तो भी उसने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा। वह बिखरे हुए विचारों को इकट्ठा कर कर के उन पर अपने ध्यान को केन्द्रित करने का बार बार उपाय करता। कभी

कभी प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे कठिन अवसर उपस्थित हो जाते हैं, जब उसे अपने ही से बार बार यह प्रश्न करना पड़ता है कि किस मार्ग का अवलम्बन किया जाय और किसका नहीं, आगे बढ़ा जाय या न बढ़ा जाय ? गावैन के सामने भी यही समस्या उपस्थित थी। उसने अभी अभी एक अलौकिक घटना देखी थी। सांसारिक संग्राम के समाप्त होते ही उसकी दृष्टि के सामने एक अलौकिक संग्राम उपस्थित हुआ था। सद्-वृत्तियों का मुकाबला दुर्वृत्तियों के साथ हुआ था और युद्ध में, सद्-वृत्तियों ने एक पत्थर के हृदय पर विजय प्राप्त की थी। गावैन सोच रहा था कि लन्टेनक ऐसा उग्र, घमण्डी और पाखण्डी आदमी और फिर उसके हृदय पर मानवता इस प्रकार विजय प्राप्त करे, यह निःसंदेह अलौकिक काण्ड है ! और किस प्रकार हुआ ? कौन से अस्त्रों का प्रयोग किया गया ? क्रोध और हिंसा की इस मूर्ति पर किस बल से विजय प्राप्त की गई ? युद्ध के किन शस्त्रों का प्रहार हुआ ? इस विजय के लिए जिन शस्त्रों का प्रयोग हुआ था, उन सब का रूप था केवल शिशुत्व ! गावैन के हृदय नेत्र चकाचौंधिया गये थे। इस घोर संग्राम के बीच में जब कि हिंसा और द्वेष की वृत्तियां भीम-वेग से झपाटा मार रही थीं, जब कि हिंसा अपना पूरा नाच नाच रही थी और घृणा का घोर रव सारी दिशाओं को गुंजा रहा था, जब कि मन की जितनी भावनायें थीं, वे सब "मार, मार" की ध्वनि से दिग्मण्डल को व्याप्त कर रही थीं और जब कि पारस्परिक मिलन का रूप इतना भयंकर, इतना प्रचण्ड था कि किसी के हृदय में न्याय और सत्य के लिए कोई स्थान ही न रह गया था, उस समय—और उस समय—उस अगम्य शक्ति ने आत्माओं को पथ से विचलित न होने का गुप्त संदेश, गुप्त ढंग से देनेवाली शक्ति ने—मानव प्रकाश और अन्धकार की इस लपेट के बीच में से सनातन सत्य की परम तेज-युक्त

किरणों को इस प्रकार झलका दिया ! तीन बच्चे थे छोटे छोटे, अनाथ, निःसहाय, बिछुड़े हुए और सारे स्नेह से वंचित ! उनके चारों ओर युद्ध की प्रचण्ड अग्नि भभक रही थी, मार-काट हो रही थी, भाई का खून भाई पी रहा था, हिंसा और द्वेष की बाग-डोरें छोड़ दी गई थीं और उत्पात और विनाश की लीला अत्यन्त विषमता के साथ हो रही थी। फिर, आग लगी, और किस लिए, तीनों अबोध शिशुओं की हत्या के लिए। गावैन ने सोचा, "यह भी अवस्था व्यतीत हो गई, नृशंस पाप-कृत्य हुए, और होकर रह गये। और, उसी में यह दिखाई दिया कि पुराने झगड़े, न शान्त होनेवाली क्रूरता, न समाप्त न होनेवाली युद्ध की आवश्य-कता, राज की रक्षा के सारे बहाने, बुढ़ापे के समस्त दुराग्रह— ये सब उन अबोध शिशुओं के सामने आपसे आप विलीन हो गये। और ऐसा होता भी क्यों नहीं, क्योंकि जिन्होंने अभी तक अपने जीवन के आनन्द को कुछ भी नहीं भोगा, उन्होंने अभी तक कोई अपराध नहीं किया, वे अभी तक न्याय, सत्य और शुद्धता की मूर्ति के समान हैं, और स्वर्ग के श्रेष्ठ से श्रेष्ठ देवता इस प्रकार के छोटे अबोध और निर्दोष प्राणियों के ऊपर रक्षार्थ मंडराते रहने के लिए लालायित रहते होंगे। इसी निर्दोषिता की नृशंसता पर यह पूरी विजय थी ! भासित होता था, मानों कहीं युद्ध की भीषणता थी ही नहीं, और द्वेष का राज्य था, और यदि वे कहीं थे भी, तो उनके उड़ा देने से लिए विशुद्धता की यह मात्रा यथेष्ट थी। नेकी और बदी का यह अच्छा संग्राम था, और इस संग्राम की लीला-भूमि थी लन्टेनक का विवेक-स्थल। इस समय, अधिक भीषण और अधिक व्यापक जो संग्राम हो रहा था, उसका लीला-क्षेत्र था गावैन का मन-स्थल। आदमी का मन भी कैसे कैसे संग्रामों का क्षेत्र है। मनुष्य के विचार, देव और दानवों

की भांति उसके मन को बहुधा कैसी भीषणता के साथ रौंदते हैं !

गावैन के विचारों का तांता टूटा नहीं। वह सोचने लगा, "लन्टेनक पिंजड़े में बन्द सा हो चुका था। उसके निकलने के लिए कहीं से कोई मार्ग न था। युद्ध का रुख ही ऐसा था कि उसमें से बच निकलना ही बड़ी बीरता का काम था। तो भी, वह भाग निकला। जंगल में जा पहुँचा। चाहता, तो निकल जाता, फिर आदमी बटोर लेता और उत्पात मचाना आरम्भ कर देता। प्रजा-तंत्र की सेना को विजय अवश्य प्राप्त हुई थी, परन्तु साथ ही, लन्टेनक को भी स्वाधीनता प्राप्त हुई थी और स्वाधीनता थी ऐसी कि निःसीम, जिधर चाहता चला जाता और जिस प्रकार चाहता, चैन से अपना जीवन बिताता। सिंह-जाल में फँस कर निकल चुका था, परन्तु फिर, वह उसी जाल में अपने मन से आ गया। अपने मन से स्वाधीनता की सुख-छाया को छोड़ उसने अपने गले को फाँसी के फंदे में डाल दिया, और प्राणों को जोखिम में डालते हुए उसने बीरता की वह अदा दिखाई, जिसकी शत-मुख से भी प्रशंसा नहीं हो सकती। कितनी बीरता के साथ अग्नि-शिखाओं के उठते हुए मण्डल में उसने अपने आपको झोंक दिया ! और फिर, कितनी दृढ़ता और निर्भीकता के साथ, सीढ़ियों पर उतरते हुए, उसने अपने को शत्रुओं के हाथों में दे दिया ! जो सीढ़ी दूसरों के उद्धार का द्वार थी वही उसके विनाश का कारण बनी ! फिर, उसने ऐसा किया क्यों ? केवल तीन अबोध शिशुओं की प्राण-रक्षा के लिए ! और ऐसे आदमी के साथ व्यवहार क्या होगा ? उसकी गर्दन उतारी जायगी ! क्या ये बच्चे उसके अपने थे ? नहीं तो ! क्या उसके समकक्ष थे ? नहीं ! इन तीन भिखारी बच्चों के लिए, जो अनाथ थे, जिन्हें कोई जानता तक न था, जिनके

तन पर साफ सुथरे कपड़े तक न थे, उनके लिए, इस बूढ़े रईस ने, इस बलवान सर्दार ने, सब कुछ पाकर, तुरन्त ही सब कुछ खो दिया। उसने अपने सिर के बदले में बच्चों को बचाया। जिस सिर की तिरछी नजरों से लोग काँप उठते थे, आज वही शत्रुओं को सहज में भेंट-स्वरूप दिया जा रहा है। लन्टेनक चाहता तो साफ निकल जाता। उसके सामने यही दो बातें थीं। अपनी जान बचाऊँ; या दूसरों की? उसने दूसरों की जान बचाना उचित समझा। और, उसके इस वीर कार्य का पुरस्कार मृत्यु दण्ड! अच्छे काम का कैसा क्रूर बदला! क्या क्रान्ति का यही फल होना चाहिए? क्या इससे प्रजा-तन्त्र की भावनायें कलंकित नहीं होतीं? पक्षपातों और परतन्त्रता की भावनाओं से परिपूर्ण लन्टेनक, ऐसे सत्कार्य को कर के मानवता के मन्दिर का पुजारी बने, और जो लोग उद्धार और स्वाधीनता के लिए यत्नशील हों,—वे युद्ध की क्रूरता से इतना चिमट जाय कि रक्त से हाथ धोवें, हत्या के पाप के भागी बनें! यह कैसी विधिविडम्बना है कि कुपथगामी तो त्याग और तपस्या, दया और क्षमा के उपासक बन जायं, परन्तु जो लोग सत्य के पथ के योद्धा हों, उनके लिये ये बातें कुछ भी मूल्य न रखें! चुपचाप यह कैसे देखा जाय? घोर पाप होते समय कैसे चुप रहा जाय? बलवान होते हुए निर्बलों के समान कैसे चला जाय? विजयी बन कर हत्यारा कैसे बना जाय? और फिर किसी को इस बात के कहने का अवसर कैसे दिया जाय कि राज-पक्ष में ऐसे आदमी थे जिन्होंने शिशुओं की रक्षा की, और प्रजा पक्ष में ऐसे जिन्होंने बूढ़ों की हत्यायें कीं? संसार भर अस्सी वर्ष के इस बूढ़े आदमी को, जो गिरफ्तार नहीं हुआ, परन्तु जिसने अपने को गिरफ्तार करा दिया, और जिसने अपने को गिरफ्तार भी उस समय कराया जब कि उसके माथे से उसी समय किये गये एक पुण्य-

कार्य के श्रम से स्वेद-विन्दु चू रहे थे, फाँसी की टिकटी पर चढ़ते हुए उस प्रकार देखेगा जिस प्रकार वह किसी विजयी को विजय-गौरव सिंहासन पर चढ़ते हुए देखता है। क्या प्रजा-तन्त्रवादी इस आदमी के गले पर छुरी चलावेंगे? कदाचित् कोई कसाई भी ऐसा करना अच्छा न समझे! इस कुत्सित कार्य के होने पर जिसका सिर धड़ से अलग होगा, उसके मुखमण्डल पर मुस्कुराहट की मन्द मुस्कयान अङ्कित होगी और जो इस काम को करेंगे—अर्थात् प्रजा-तंत्रवादी, उनके मुखमण्डल पर लज्जा की छाप होगी! और, क्या यह सब कुछ प्रजा-पक्ष की सेना के सेनापति, गावैन, के समक्ष हो? 'तुम्हें इस मामले से कोई सरोकार नहीं', क्या इतने ही के सुन लेने से गावैन के ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं रहती? ऐसे काम के करने में जितना पाप होता है उससे अधिक पाप ऐसे कामों के होने देने में होता है। परन्तु गावैन ही ने तो लन्टेनक के सिर पर बोली, बोली थी? उसी ने तो यह आज्ञा जारी की थी कि पकड़ते ही लन्टेनक का सिर काट लिया जाय। परन्तु, इस समय, पांसा पलट गया। गावैन ने पहले जिस लन्टेनक को देखा था, वह कुछ और ही था। उसका रूप भयंकर था। वह क्रूर था। वह राज-पक्ष और जमींदारी-सत्ता का भयंकर पोषक था। वह बर्बर था। वह बन्दियों का हन्ता था। वह रक्त-पिपासु था। ऐसे भयंकर आदमी का सिर उड़ा देना गावैन को इष्ट था। परन्तु, इस समय, भयंकर आकृति, बदल कर और ही रूप में प्रकट हो पड़ी थी। दैत्य को चीर कर एक देव निकल पड़ा था। हत्यारे लन्टेनक के स्थान पर उद्धारक लन्टेनक खड़ा दिखाई देता था। उससे जो स्वर्गीय आभा फूट फूट कर निकल रही थी, उसने गावैन को मोहित कर लिया। लन्टेनक ने उदारता के वज्र से उसके हृदय पर भीषण प्रहार कर दिया! भूतकाल का लन्टेनक दृष्टि से

छिप गया; और जो लन्टेनक अभी तक क्रूरता और हिंसा के आडम्बर से आच्छादित था, वह इस समय देव-दूत के रूप में ऊपर उड़ कर, आकाश में विचरण करने लगा, और गावैन पथ के भिखारी की भांति इस वैभव और सम्पदा से परिपूर्ण मूर्ति को एकटक दृष्टि से देखने लगा।

अभी और—रक्त का प्रभाव !

गावैन के मन में और भी विचार-तरंगें उठीं। जिस आदमी के रक्त बहाने की तैयारी हो रही है, वह कौन है ? उसकी नसों में भी तो वही रक्त बह रहा है, जो गावैन की नसों में। दादा का देहान्त हो चुका था। दादा के स्थान पर दादा का भाई लन्टेनक था। क्या अपने दादा के भाई का आदर—उचित आदर—गावैन को नहीं करना चाहिए ? क्या श्वेत बालों का कुछ भी विचार नहीं करना चाहिए ? क्या दादा की आत्मा इस समय अपने भाई की हत्या, अपने पोते द्वारा होती देखकर, कुंठित नहीं होती होगी ? क्या क्रांति का यही मतलब था कि लोग इतने अस्वाभाविक हो जाय कि नाते-गोते को भूल जाय ? क्या क्रांति का जन्म परिवारों के विनाश और मानवता की भावनाओं को भ्रष्ट कर देने के लिए हुआ है ? नहीं तो, यह बात तो नहीं है। राजदण्ड को धूल धूसरित करने और क्रांति को विजयी बनाने के लिए, १७८९ में, जो महान् प्रयत्न हुए, वे सब इसलिए नहीं हुए कि अस्वाभाविक और अमानुषिक भावनाओं की उन्नति हो। पूर्ण स्वेच्छाचारिता के साथ आंखों में खटकनेवाले लोगों को, अपने कपाट के भीतर, निश्चित समय के लिए, बन्द कर लेने वाले वेस्टाइल सदृश बन्दी-घर मानवता के उद्धार के निमित्त ही तोड़े गये थे ! जमींदारी-सत्ता की जड़ें इसीलिए हिलाई गई थीं कि परिवारों की रक्षा हो सके। इस समय प्रश्न यह उपस्थित था कि जब लन्टेनक मानवता की ओर पग बढ़ा

रहा है, तब गावैन क्यों नहीं अपने पारिवारिक बातों और कर्तव्यों की रक्षा करे ? क्यों नहीं वे दोनों कुटुम्बी उच्च भावनाओं की वेदी पर एक दूसरे से फिर जा मिलें ? क्या फिर, यह हो कि दादा लन्टेनक तो ऊँचा उठे और पोता गावैन नीचे को खसके ?

अन्त में, इस सारे संकल्प विकल्प का गावैन और उसके विवेक के इस झगड़े का नतीजा आप से आप यह निकलते हुए मालूम हुआ कि गावैन लन्टेनक की रक्षा करे परन्तु,—परन्तु, फ्रांस ? क्या फ्रांस की अवहेलना की जाय ? या देश का खयाल न किया जाय ? उसे शत्रु की आक्रमणस्थली बन जाने दिया जाय ? फिर, जर्मनी के लिए कोई रुकावट नहीं रहेगी। आल्प्स पर्वत इटली का और प्रेनीज पर्वत स्पेन का मार्ग नहीं रोकेंगे। दूसरे देश फ्रांस पर चढ़ दौड़ेंगे। फ्रांस तो भी उनका सामना कर लेगा। परन्तु पीछे जो समुद्र है उसका क्या इलाज ? इस समुद्र के किनारे इंगलैंड ताक लगाये खड़ा है। इंगलैंड समुद्र को पार नहीं कर सकता, परन्तु पार करने के लिए कोई समुद्र पर पुल बाँध देगा, कोई दोनों हाथों से उसे आगे बढ़ आने, समुद्र पार कर लेने और फ्रान्स की पवित्र भूमि को रौंदने के लिए निमन्त्रण दे देगा। और, यह आदमी कौन हो सकता है ? मारकुइस लन्टेनक के सिवा और कौन ? आज तीन मास के कठिन परिश्रम के पश्चात्, यह आदमी इस समय कब्जे में आया है। क्रान्ति के पंजे में बड़ी कठिनता से राज-पक्ष के इस रक्त-पिपासु प्राणी का गला पकड़ पाया है। विधि-विडम्बना से वह अपने ही बसेरे में पकड़ा गया है। उसके किले के बड़े बड़े पत्थर ही उसके शत्रु हो गये हैं, और उन्हीं ने उसे इस समय पकड़ रक्खा है। विधि की क्या ही विचित्र लीला है कि जो आदमी अपने देश के विरोध में कमर कस चुका हो, उसके विरोध के लिए घर की दीवारें ही उठ खड़ी हों। इस समय

उसके हाथ पैर बँधे हुए हैं। वह लड़ नहीं सकता। वह कुछ भी नहीं कर सकता। उसके इशारे ही पर वैण्डी के किसान सिर पर आकाश उठाए हुए थे। अब उसके धर जाते ही, वैण्डीवालों की आशाओं पर भी पानी फिर गया। अब उनके किये, धरे कुछ भी नहीं होना। कितनी मार-काट और रक्त-पात के पश्चात् वह व्यक्ति पकड़ा गया! इसने लोगों को कैसी निर्दयता के साथ मारा था, अब इसके मरने की बारी है! सिमोरडेन, क्रान्ति की रुद्र-मूर्ति के समान है, और लन्टेनक, राज-सत्ता के समान। इस भीषण मूर्ति के हाथों से किसकी मजाल जो लन्टेनक को बचा ले जाय? अब, तो, उसे कब्र ही में समझो। अब तो, यह समझो कि जीवन के कपाट उसके लिए बन्द हो चुके। कौन इन कपाटों को फिर खोल सकता है? समाज की जड़ रेतने वाला यह व्यक्ति अब समाप्त हो चुका और उसके साथ समाप्त हो चुके विद्रोह, हत्या, विग्रह और पाशविक संग्रामों के समस्त दृश्य! कौन है जो अब उसके जीवनकाल को बढ़ा सके? बच जाने पर मृत्यु की नोक पर टंगे हुए इस सिर की बाँछें कैसी खिल उठेंगी। वे मानो हंस हंस कर कहेंगी, "अच्छी बात, खूब बचे, वाह रे मूर्खो!" वह फिर अपने कुत्सित कार्यों की लड़ी बांध देगा। वह फिर कलह और रक्त-पात का बाजार गरम कर देगा। फिर बस्तियाँ जलेंगी, बन्दी मारे जायँगे, घायलों को तलवार की धार उतारा जायगा, और स्त्रियां गोलियों का निशाना बनाई जायंगी।

गावैन का ध्यान, बचाये हुए बच्चों की ओर गया। ठीक, तीन बच्चे बचाये गये और लन्टेनक ने उन्हें बचाया। परन्तु आग में उन्हें किसने झोंका था? इमानस ने। और इमानस कौन था? लन्टेनक का दाहिना हाथ। तब, फिर बच्चों के आग में झोंकने का दोष किसका? उसने कौन सा प्रशंसनीय कार्य

किया ? केवल वह अपने विचार पर डटा नहीं रहा। उसने पाप करने का विचार किया था। उसने उसमें हाथ भी लगा दिया था, परन्तु फिर, पीछे हट गया। उसे अपने कृत्य पर ग्लानि हुई। माता के चीत्कार ने उसके पत्थर के हृदय पर चोट मारी। ऐसे समय पर, ऐसे करुण-क्रन्दन को सुन कर किस दानव का हृदय न सिहर उठता ? इसी पर, अपने ही पाप की कालिमा धोने के लिए, उसका आगे बढ़ा हुआ पैर फिर पीछे मुड़ा। उसकी तारीफ की बात जितनी है वह केवल इतनी ही है कि दैत्य का कार्य आरम्भ कर के, अन्त तक वह दैत्य न बना रहा। और, इतनी सी बात के लिए क्या उसे छोड़ दिया जाय ? क्या इतने ही के लिए उसे स्वाधीनता प्रदान कर दी जाय ? क्या इसी के लिए उसे अपने साथियों को जोड़ कर वही पुरानी भयंकर क्रीड़ा करने का अवसर दे दिया जाय ? क्या इसी के लिए स्वतन्त्रता दे दी जाय कि वह इस भूमि में दासता के राज्य की स्थापना करे ? क्या इतने ही के लिए उसे जीवनदान दिया जाय कि उससे फिर वह दूसरों की मृत्यु का कारण बने ? उससे किसी प्रकार की शर्त करा ले, तब छोड़े ? ओह ! भला वह शर्तें कब करने लगा ? उसमें कितना औद्धत्य है ? शर्तों को अहंकार के साथ ठुकराता हुआ वह कहेगा अपमान मत करो, बस फाँसी पर टाँग दो। केवल दो ही मार्ग हैं—या तो उसे मारा जाय, या फिर छोड़ा। वह चट्टान की चोटी पर खड़ा हुआ है, जहाँ ऊपर उड़ने के लिए आकाश का विस्तरित राज्य है, और नीचे गिरने के लिए अथाह खाईं। उसके मारने के विचार से अनेक चिन्तायें हृदय क्षेत्र में आन्दोलन मचाती थीं और उसके बचाने से, अनेक जिम्मेदारियाँ सिर पर आती थीं। उसके बचाने से राज्य-पक्ष की जड़ जमती थी और फ्रान्स की बलि चढ़ती थी। उसके बचाने से, रक्तपात का चित्र आँखों के सामने खिंच

जाता था। दृष्टि के सामने बच्चों और स्त्रियों की हत्याओं के, गावों के अग्नि द्वारा ध्वंस किये जाने के, प्रजा के पीड़ित हो हो कर प्राण देने और घरों से भागते फिरने के दृश्य घूम जाते थे। भासित होता था कि मानों कोई हिंसक पशु छूट पड़ा हो और उसके विकराल उत्पात के कारण चारों ओर से आर्तनाद उठ पड़ा हो।

गावैन ने मन में सोचा, कि क्या लन्टेनक इसी प्रकार का हिंसक पशु है? कदाचित् वह ऐसा रहा हो, परन्तु क्या वह इस समय भी ऐसा ही है? इन विचारों से, पक्ष और विपक्ष की इन बातों से, जो अत्यन्त तीव्रता के साथ गावैन के मन को आन्दोलित कर रही थीं, गावैन का सिर चकरा उठा। वह फिर सोचने लगा कि लन्टेनक में कितनी निष्कामता है! ऐसे कठिन समय, विकराल विग्रह के बीच में, उसने जिस निःस्वार्थ भावना का परिचय दिया, उसकी श्रेष्ठता से कोई नाहीं नहीं कर सकता। उसने अपने उस समय के काम से यह सिद्ध कर दिया कि राज-पक्ष और क्रान्ति के, तथा अन्य समस्त सांसारिक प्रश्नों के ऊपर मानव-कल्याण की भावना का आसन है, बलवानों का निर्बलों की रक्षा करने का पुनीत कर्तव्य है, मौत के मुंह में पड़े हुए लोगों की रक्षा का कर्तव्य है उन लोगों पर जो उस जोखिम से बाहर हैं और कर्तव्य है समस्त बूढ़े आदमियों का पितृत्व के रूप में उन सब बालकों के प्रति जो छोटे और अबोध हैं। अपने प्राणों पर खेल कर लन्टेनक ने इन सत्य बातों की मर्यादा की रक्षा की! सेनापति होकर उसने सैनिक दाँव-पेंच को उस समय भुला दिया! राज-पक्ष का होकर के और राजा, १५ शताब्दी पुरानी राज-सत्ता, पुराने कानूनों की रक्षा और पुराने समाज की फिर से स्थापना के मुकाबले में उसने इन तीन अनाथ बच्चों को रख दिया और उस समय उसने यह समझ

लिया कि इन तीन बच्चों के मुकाबले में राज-पक्ष और राजा, राजवंश और पुराने संस्कार हलके हैं! क्या यह कुछ भी नहीं है? क्या यह बात उस आदमी से हो सकती है जो हिंसक पशु हो, क्या ऐसे आदमी के साथ वैसा ही व्यवहार होना नहीं चाहिए जैसा कि हम हिंसक पशुओं के साथ करते हैं? लन्टेनक ने जो पाप किये थे, उन सब का इस काम से प्रायश्चित्त होता है। अपनी जान को देकर वह इस समय अपनी आत्मा की रक्षा कर रहा है। वह निर्दोष हो गया है। इस समय से तो उसका आदर होना चाहिए।

गावैन बड़ी चिन्ता में पड़ गया कि क्या करे, और क्या न करे? वह एक ऐसे विचार-स्थल पर पहुँच गया था जहां उसके सामने एक दूसरे के विरुद्ध, परन्तु सत्य और कर्तव्य के रूप में प्रकट होने वाली पहेलियां उपस्थित होती थीं। मनुष्य के लिए तीन आदर्श सर्वोच्च हैं, एक मानवता का, दूसरा परिवार का और तीसरा देश का। तीनों आदर्श गावैन के सामने आते थे, और तीनों अपनी अपनी सच्ची दास उसके सामने रखते थे। तीनों उससे कहते थे कि इसी में सत्य और न्याय है, और इसलिए, इसी का अनुसरण करो। गावैन बड़े चक्कर में था कि क्या करे, और क्या न करे? तर्क से कोई बात सिद्ध होती थी, और हृदय कुछ और ही कहता था। और, दोनों की बातें बिल्कुल एक दूसरे के विरुद्ध पड़ती थीं। तर्क की बातें मनुष्य की बुद्धि से उदय होती हैं, और हृदय की बातें किसी अधिक ऊंचे स्थल से। इसीलिए हृदय की बातें अधिक बल-युक्त होती हैं।

गावैन के दोनों ओर गड्ढे थे। उसी की समझ में नहीं आता था कि किधर झुकूं? वह रह रह कर सोचता कि क्या मारकुइस को मरने दूं, या उसे बचा लूं? दोनों मार्गों में गड्ढे हैं। किस गड्ढे में कूदूं? किस गड्ढे में कूदना मेरा कर्तव्य है?

सोचते-विचारते रात को एक बज गया। इतने ही में गावैन की दृष्टि टीले के ऊंचे भाग पर पड़ी। अभी तक कुछ कुछ जलने वाली आग के प्रकाश में उसने देखा कि सामने एक गाड़ी खड़ी है, उसे कुछ सवार घेरे खड़े हैं और कुछ आदमी उस पर से कुछ उतार रहे हैं। जो कुछ उतारा जा रहा था, वह भारी था। और उतरते हुए खड़खड़ा रहा था। गावैन ने समझ लिया कि यह वही गाड़ी है जिसे कुछ घंटे पहले गूशेम्प की दूरबीन से मैंने आते हुए देखा था। उस गाड़ी पर से दो आदमियों ने एक बड़े संदूक को उतार कर नीचे रखा। उसमें कोई तिकोनी चीज मालूम होती थी। इतने में और लोग भी गाड़ी के पास पहुँच गये। गावैन साफ साफ न देख सका कि वहां क्या हो रहा है। परन्तु यह उसे मालूम होता रहा कि लोग आपस में बात-चीत कर रहे हैं, कुछ लोहा-लंगड़ उतार रहे हैं और कोई ऐसी चीज घिस रहे हैं जिससे ऐसा शब्द होता था जैसा कि उस समय होता है जब हंसिया घिसा जाता है। इतने में दो बजे।

धीरे धीरे, गावैन किले की दरार की ओर बढ़ा। सन्तरी वहां खड़ा था। उसने उसे सलामी दी। गावैन आगे बढ़ कर उस स्थल पर पहुँचा जहां संध्या को लड़ाई हो रही थी। वहां इस समय थके मांदे सिपाही पड़े सो रहे थे। गावैन के पहुँचने पर कुछ आदमी उठ पड़े। उनमें उनका अध्यक्ष भी था। गावैन ने उससे कालकोठरी के दरवाजे की ओर संकेत करते हुए कहा, "इसे खोलो!"

कालकोठरी का दरवाजा खोल दिया गया। गावैन उसके भीतर चला गया। दरवाजा बन्द कर दिया गया। इसी काल-कोठरी में इस समय लन्टनक बन्द था।

आत्म-बलिदान

कालकोठरी के एक कोने में एक दीपक टिमटिमा रहा था। एक घड़ा पानी रखा था। पास ही, रोटी रखी हुई थी, और कुछ पुआल बिछा हुआ था। मारकुइस इधर से उधर टहल रहा था। ठीक वैसे ही, जैसे जंगली जानवर पिंजड़े में बन्द होने पर टहलता है। दरवाजा खुलने की आहट पाते ही उसने अपना सिर ऊपर उठाया। दीपक के धुंधले प्रकाश में मारकुइस की दृष्टि गावैन के ऊपर पड़ी। गावैन की दृष्टि उसकी दृष्टि से मिली। थोड़ी देर तक, दोनों एक दूसरे को चुपचाप देखते रहे। अन्त में, मारकुइस ठठा कर हंसा और बोला—

"नमस्कार महोदय, बहुत दिनों के पश्चात् दर्शन हुए। आपने दर्शन दे कर बड़ी कृपा की। इसके लिए, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। अच्छी बात है, थोड़ी देर बातचीत ही होगी। मैं तो उकता सा रहा था। आपके मित्र व्यर्थ ही बहुत सा समय नष्ट करते है। अजी, शिनाख्त कराने, सैनिक अदालत की कार्रवाई, आदि मे तो व्यर्थ ही बहुत सा समय चला जाता है। काम तो बड़ा जल्दी समाप्त किया जा सकता है। यह तो बतलाइए कि यह जो कुछ हो रहा है, उसे आप कैसा समझते हैं? निःसन्देह, इसमे मौलिकता तो बहुत है। एक जमाना ऐसा था कि राजा और रानी हुआ करते थे। राजा, राजा था, और फ्रान्स को हम रानी समझते थे। राजा का तो आप लोगों ने सिर काट डाला। अब, बची रानी, सो उसका विवाह आपने रोब्सपीरी से कर दिया है। इस नई जोड़ी ने एक कन्या उत्पन्न की है। उसका

नाम है, फाँसी की टिकटी। इसी कन्या के साथ, कल सबेरे मेरा परिचय होने वाला है। इससे मुझे उतनी ही खुशी होगी, जितनी इस समय आपके दर्शन पाकर हो रही है। क्या आप उसी सम्बन्ध में कुछ कहने के लिये पधारे हैं? कहिए, आपका ओहदा बढ़ा, या नहीं? क्या आपही को जल्लाद का काम करना पड़ेगा। यदि आप मित्रता के नाते से दर्शन देने आये हैं, तो मैं आपका कृतज्ञ हूँ। वायकाउण्ट महोदय, कदाचित् अब आप यह नहीं जानते कि रईस और रियासत किसे कहते हैं? यदि आपको कोई रईस देखना है, तो आप देखिए, मैं आपके सामने उपस्थित हूँ। यही रियासत का नमूना है। आज कल रईस एक विचित्र प्राणी समझा जाता है। हां, यह विचित्र प्राणी ईश्वर में विश्वास करता है, पुरानी परिपाटी पर विश्वास करता है, अपने परिवार और अपने पूर्वजों की चलाई हुई, धर्म्म, कर्तव्य और राज-भक्ति की बातों पर विश्वास करता है। पुराने कानूनों का वह आदर करता है, और सदाचार और न्याय के विचारों पर श्रद्धा रखता है। और, यदि आवश्यकता पड़े, तो सहर्ष वह आपको गोली से मार भी दे। हां, हां, मैं आपसे बैठने के लिए कहना तो भूल ही गया। आइए, आइए, बैठिए। जो कुछ है, उसी पर बैठिए। पत्थर है, उसी पर सही। यहां, मेरे इस आराम-गाह में, न कुर्सियाँ हैं और न पलंग ही। आपको पृथ्वी पर बैठ जाने में कोई सङ्कोच भी न होगा। मैं यह बात आपको नाराज करने के लिए नहीं कह रहा, क्योंकि आप तो नीचे और उच्च सब को बराबर मानते हैं और नीचों को आप 'राष्ट्र' के नाम से पुकारते हैं! हां, मेरा खयाल है कि आप मेरे ऊपर 'स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व' (Liberty, Equality, Fraternity) की दुहाइयां देने का काम करने के लिए जोर नहीं डालेंगे। जहां मैं इस समय कैद हूँ, वह स्थल मेरे घर का

एक खण्ड है। पहले रईस लोग इस स्थल पर भांडों को कैद किया करते थे, अब गंवार लोग यहां रईसों को कैद करते हैं। इन्हीं बेवकूफियों को आप 'क्रांति, के नाम से पुकारते हैं। मालूम पड़ता है, ३६ घंटे के भीतर मेरा सिर काट लिया जायगा। इसमें मैं तनिक भी असुविधा नहीं मानता। तो भी, यदि मेरे कैद करने वालों में तनिक भी सभ्यता होती, तो वे मेरा नस्यदान मेरे पास भेज देते। ऊपर के खण्ड में वह पड़ा हुआ है—अजी, उसी जगह जहां छुटपन में आप मेरे घुटनों पर बैठ कर खेला करते थे। हां, महोदय, मुझे आपसे एक बात कहनी है। आप अपने को "गावैन" कहते हैं। आश्चर्य के साथ कहना पड़ता है कि आप की नसों में रईसों का रक्त बहता है। यह रक्त भी वही रक्त है जो मेरी नसों में भी प्रवाहित होता है, परन्तु इसी रक्त से मैं तो एक प्रतिष्ठित मनुष्य बना, और आप बने पक्के बदमाश। यह अपनी अपनी बनावट है। आप कह सकते हैं कि यदि मैं बदमाश हूँ तो इसमें मेरा क्या दोष? हां, महाशय, न यही मेरा दोष है कि मैं भलामानस हूँ। हां, हां, बुरे आदमी को अपनी बुराई का ज्ञान नहीं होता। वायु-मण्डल से श्वास के साथ वह बुराई को ग्रहण करता है। आजकल के समय में तो किसी का कोई दोष नहीं। जो दोष है वह सब क्रान्ति का है और आपके जितने बड़े बड़े अपराधी हैं वे तो, यथार्थ में, दूध के धुले, निर्दोष प्राणी हैं। कैसा प्रपंच है! आप अपने ही को लीजिए। मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ। आप अच्छे युवक हैं। आपमें गुण हैं। आप उच्च कक्षा के व्यक्ति हैं। आपमें कुलीन रक्त है। आपने बड़े बड़े रईसों के कुल में जन्म लिया है, और राज-सेवा से आपका पद और मर्यादा और भी बढ़ जाती। इससे बढ़ कर ऊपर उठने के लिए किसी युवक को और क्या चाहिये? परन्तु, आप कहां से कहां जा रहे हैं? किस

और अपनी शक्तियां लगा कर क्या के क्या बन रहे हैं ? खूब काम करते हैं, और तो भी शत्रु आपको बदमाश समझते हैं, और मित्र, आपको मूर्ख—अस्तु ! पादड़ी सिमोरडेन से मेरा नमस्कार कह दीजियेगा !"

मारकुइस बड़ी सरलता से, शान्ति के साथ, बोलता रहा । उसका ढंग बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि उच्च कुल के आचारों के पालन करने वालों का होता है । उसने जोरदार बातें कहीं, परन्तु वह बोलता धीरे धीरे ही रहा । उसके नेत्रों में बड़ी स्थिरता और शान्ति थी । उसके हाथ अपनी जेबों में थे । उसने लम्बी सांस लेकर फिर कहना आरम्भ किया—

"मैं आपसे यह छिपाना नहीं चाहता कि मैंने आपके मारने में कुछ उठा नहीं रक्खा । मैंने स्वयं तीन बार तोप का लक्ष्य आपके ऊपर बैठाया । निःसंदेह, यह अप्रिय व्यवहार था, परन्तु युद्ध के समय शत्रु प्रिय व्यवहार नहीं किया करते । महोदय इस समय हम और आप युद्ध कर रहे हैं । इस समय सभी वस्तुएं अग्नि और खड्ग की वेदी पर चढ़ाई जा रही हैं । यह सच है कि बेचारा राजा मुफ्त ही में मारा गया ! परन्तु, इसके लिए इस शताब्दी की बलिहारी !"

मारकुइस थोड़ी देर के लिए रुक गया और फिर बोला, "यह कुछ भी न होता, यदि वालटेयर* को फांसी लगा दी जाती और रूसो* को कैद में डाल दिया जाता । ये लोग भी कैसी आफत थे । आप लोग राज-सत्ता को किस लिए बुरा-भला कहा करते हैं ? इसीलिए कि उससे आततायियों और व्यभिचारियों की दाल नहीं गलने पाती थी ? ऐसे आदमियों को भले

---

*फ्रांस का एक प्रसिद्ध लेखक जिसने जनता के विचारों में बड़ी क्रान्ति उत्पन्न की ।

आदमियों के बीच में स्थान नहीं मिला करता था । उन्हें कैद-खाने में स्थान मिलता था। क्या आप इसी को अत्याचार के नाम से पुकारते हैं ? जवानी के दिनों में, मैं भी इसी प्रकार की ऊल-जलूल बातें बका करता था ! परन्तु वह मूर्खता का युग गया और सदा के लिए गया। उस समय बदमाशी का इतना दौर-दौरा न था। हम लोग बकते थे परन्तु केवल मनोरंजन के लिए। उसके पश्चात् इन रूसो, वालटेयर, आदि तत्व वेत्ताओं का उदय हुआ। उस समय उनके लेख जलाये तक गये, परन्तु जलाये गये लेख, जब कि जलाये जाने चाहिए थे वे स्वयं ! इन लुच्चों की बन पड़ी। बड़े बड़े आदमियों तक पर उन्होंने हाथ साफ किया। प्रुशा के राजा तक पर उन्होंने अपनी जादू की लकड़ी फेर दी। कागज रंगने वाले—इन दुष्टों की तो जड़ उखाड़ फेंकनी चाहिए थी, क्योंकि जहां ये होंगे, वहां हत्यारे विचरेंगे। जहां स्याही होगी, वहां काले दाग होंगे। पुस्तकों से अपराधों की सृष्टि होती है। उनमें भरी हुई बेहूदा बातों से पापवृत्तियां जोर पकड़ती हैं। इन पापवासनाओं को जगानेवाली वस्तुओं के लिए मनुष्य कितना बड़ा मूल्य देते हैं ! स्वत्व—स्वत्व यह आप क्या बकते हैं ? मनुष्य के अधिकार—जनता के जन्म—स्वत्व—ये सब ढोंग और प्रपंच से भरे हुए वाक्य हैं ! न कुछ इनका अर्थ है, और न कुछ इनमें तत्व ही ! जब कोई यह कहता है कि अमुक व्यक्ति अमुक राजवंश का है, उसके पुरखों ने अमुक अमुक प्रशस्त देशों को विजय किया था; जब कोई कहता है कि अमुक का दादा अमुक उज्ज्वल वंश का मुखिया था और उस उज्ज्वल वंश की ख्याति सर्व्व-व्यापी है; जब कोई कहता है कि अमुक के दादा ने अमुक महा-संग्राम में प्राण दे कर उज्ज्वल यश को प्राप्त किया और अपने नाम को अमर कर दिया, और अमुक ने और उसके पिता ने उस यश

को अक्षय रक्खा, तब मेरी समझ में यह बात आती है कि यदि ये लोग अधिकार और स्वत्व का दावा करें तो इनका ऐसा करना ठीक भी है। परन्तु, आपके बदमाश और उचक्के, आपके गुण्डे—ये किस बिरते पर अधिकार और स्वत्व की डींग मारते हैं? क्या धर्म्म पर आघात करने और राजा की हत्या करने के कारण? इस कुत्सित कार्य्य के लिए? कैसा कुसमय, और कैसी भंडता! महोदय, आपके लिए मेरे हृदय में बड़ा दुःख है। मैं और आप दोनों एक ही बंश के हैं। एक ही दादा की सन्तति हैं। हमारे पूर्व्वज फ्रान्स के रईसों में सर्व्व-श्रेष्ठ स्थान पर थे। हमारे बंश की ख्याति दिग्दिगन्त में व्याप रही है। हमारे बंश के वैभव के सामने देश भर के सामन्तों की आंखें झपती थीं। शुद्ध से शुद्ध रक्त हमारी नसों में प्रवाहित हो रहा है। अपने देश और नरेश के लिए, हम सब से आगे और सब से बढ़ कर थे। परन्तु, हा! आज विधि-विडम्बना से हमारा क्या का क्या हाल हो गया। आप ऐसे भाग्यवान् जन्मे! मेरे घसियारे के बराबर होने में आपको लज्जा नहीं आती। जब आप उत्पन्न हुए थे तब भी मैं बूढ़ा था। उस समय मैं आपसे जितना श्रेष्ठ था, आज भी उतना ही श्रेष्ठ हूँ। ज्यों ज्यों आप बढ़े त्यों त्यों आपके नये पंख निकले। जब से मैंने आपको देखना छोड़ा, तब से तो आपने और भी नये नये खेल खेले। खूब उलटे रास्ते पर मन-माने ढंग से चले। पता नहीं, आप कहां तक जायंगे और कहां तक आपके शैतान साथी आपको ले जायंगे। आपने खूब उन्नति की! आप लोग खूब बढ़े। अच्छी बात है, नागारिक महोदय, खूब चैन कीजिए और मन भावे सो कीजिए। परन्तु, आपके सब कुछ करने धरने से, इन सत्य बातों में कोई अन्तर नहीं पड़ सकता कि धर्म धर्म है, और हमारे इतिहास के १५०० वर्ष राजवंश की कीर्ति से आच्छादित हैं, और फ्रांस के रईस लोग,

चाहे उनके सिर धड़ पर रहें या न रहें, आपसे और आपके साथियों से कहीं अधिक उच्च हैं! अभी तक फ्रांस में राज-सत्ता थी। फ्रांस प्राचीनता के रंग में रंगा हुआ था। देश भर में शान्ति थी। राजा सब का मुखिया था और पवित्र था। वही देश भर का स्वामी था। उसके पश्चात्, राजकुमारों की गणना थी। उनके बाद, सेना, अर्थ-विभाग, न्याय-विभाग आदि के कर्मचारी थे। राज-कर ठीक ठीक उगाहे जाते थे और उनका उचित रूप से व्यय होता था। इन सब का आपने नाश कर दिया। आपने अपनी मूर्खता के प्राबल्य से देश भर पर चौका कर दिया। फ्रांस देश यूरोप महाद्वीप की प्रतिभा का केन्द्र था। यूरोप के सारे देशों की विभूति फ्रांस के प्रान्त प्रान्त में समाई हुई थी। परन्तु, आपको इसका क्या पता? आपको तो केवल काटा-ढार करने से काम! आपको तो केवल अपनी पशुता का परिचय देने से मतलब! आप रईसों से सरोकार नहीं रखेंगे। ठीक है, समाज के अलंकार स्वरूप जो बातें हों, उन्हें अब भूल जाइये। पुराना वैभव अब कहां? अब संग्राम में, लड़ने के पहले, एक पक्ष के वीरों का दूसरे पक्ष के वीरों से अभिवादन करने की शिष्टता कहां? शान के साथ, नाना प्रकार के सैनिक-वस्त्र धारण करके उल्लास के साथ रणक्षेत्र में प्राण देने की बान अब कहां? और कहां वे बड़े बड़े वीरगण, जिनकी शूरता ने फ्रांस को परम विजयी और परम प्रतापी बनाकर आज संसार में इतना यशस्वी बनाया? अब तो आप इन समस्त गुणों पर वज्र-हस्त हैं। अच्छा, कीजिए इनका अन्त। चलाइए इन पर कुल्हाड़ा। बनिए नये आदमी, परन्तु, साथ ही, छोटे, और खोटे। हमें, जैसे कि हम हैं—महान् और सहृदय—हमें वैसे ही बना रहने दीजिए। मारिए, मारिए! अच्छी तरह मारिए!! राजा को मारिए, रईसों को मारिए!!! छीनिए,

झपटिए, नाश की जए, रक्त-पात कीजिए, पद-दलित कीजिए, पुराने कानूनों को खूब कुचलिए। राजसिंहासन को खूब तोड़िए, धर्म की वेदी पर खूब उछलिए, उसके ऊपर ताण्डव नृत्य नाच कर उसे टूक टूक कर दीजिए। हां, हां, चले चलिए। आप विद्रोही और कायर हैं—भक्ति और त्याग के आप योग्य ही नहीं। मुझे जो कुछ कहना था वह मैं कह चुका। लीजिए, अब वायकाउंट महोदय, मेरा सिर काट लीजिए।..." (कुछ रुक कर) "जो बातें सच थीं मैंने आपसे कह दीं। बातें खरी हैं। परन्तु इससे क्या? मैं तो अब मर चुका।"

गावैन ने बीच में टोक कर कहा, "नहीं, आप आजाद हैं!"

उसने अपना लबादा खोला और मारकुइस की तरफ बढ़ा। उसने अपने लबादे को मारकुइस के शरीर पर लपेट दिया और लबादे के एक सिरे से उसे माथे तक ढक दिया। दोनों आदमी एक समान ऊंचे थे।

मारकुइस ने अकचका कर पूछा, "आप यह क्या कर रहे हैं?"

गावैन ने आवाज ऊंची करके कहा, "पहरेदार, दरवाजा खोलो।" (मारकुइस से) "दरवाजा संभाल कर, बन्द कर देना।"

यह कह कर गावैन ने मारकुइस को ड्योढ़ी के बाहर ठेल दिया। बाहर के कमरे में कुछ धुंधली रोशनी थी। जो सिपाही उस समय जाग रहे थे, उन्होंने देखा कि एक लम्बा आदमी, सेनापति का लबादा ओढ़े हुए दरवाजे की ओर जा रहा है। उन्होंने खड़े हो कर उसे फ़ौजी सलाम किया। मारकुइस धीरे धीरे आगे बढ़ा। हड़बड़ाहट में उसका सिर दरवाजे से टकरा गया। बाहर के सन्तरी ने यह समझ कर कि गावैन लौटा जा रहा है, फौजी ढंग से सलाम किया। जब मारकुइस बाहर निकल

कर, किले से कुछ दूर, जंगल में पहुँचा, और उसने अपने सामने जीवन, स्वाधीनता, स्थान और रात्रि का विस्तीर्ण क्षेत्र बिछा हुआ देखा, तब वह जरा ठहर कर सोचने लगा। वह इस तरह सोचने लगा जैसे वह आदमी सोचे जो धक्के दे कर कहीं से निकाला गया हो, और अब बाहर पहुँच कर सोचता हो कि उसने अच्छा किया, या बुरा। कुछ क्षण सोचने के पश्चात्, आकाश की ओर दाहिना हाथ कुछ उठा कर वह अस्पष्ट स्वर में बोल उठा, "ईश्वर की विचित्र लीला है!"

इसके पश्चात् वह जल्दी जल्दी चल पड़ा।

इधर काल-कोठरी का दरवाजा बन्द हो गया और गावैन उसके भीतर रह गया।

सैनिक न्याय

जहां पर लड़ाई हुई थी और जहां इस समय सन्तरियों का पहरा था, वहीं सिमोरडेन ने फौजी अदालत के बैठने का प्रबन्ध किया। पास ही, सिर काटने का यन्त्र (गिलोटिन) भी खड़ा कर दिया गया। कालकोठरी इस स्थान के अत्यन्त निकट थी। किसी को; न न्यायकर्ता को और न कैदी या जल्लाद को दूर जाने की आवश्यकया थी। दोपहर से अदालत बैठी। तीन कुर्सियां एक मेज के सामने पड़ी हुई थीं। मेज के सामने एक छोटी चौकी थी। कुर्सियां न्यायकर्ताओं के लिए थीं और चौकी अभियुक्त के लिए। मेज के इधर उधर दो चौकियाँ और भी थीं। वे सैनिक गवाहों के लिए थीं। मेज पर प्रजातन्त्र की मुहर, दो दावातें, कुछ कागज और दो छपे हुए इश्तहार रखे थे। एक इश्तहार था फ्रान्स की जन-सभा की आज्ञा का। बीच की कुर्सी के पीछे एक तिरंगा झंडा गड़ा हुआ था। यह कुर्सी अध्यक्ष की थी और इसका मुंह ठीक कालकोठरी के सामने पड़ता था। सिपाही लोग श्रोता-स्वरूप वहाँ उपस्थित थे, और इधर उधर सन्तरी लोग पहरा दे रहे थे।

सिमोरडेन आकर बीच की कुर्सी में बैठा और कप्तान गूशेम्प उसकी दाहिनी ओर, और सार्जेण्ट रेडो बाईं ओर। सिमोरडेन की टोपी में प्रजा-तंत्र का तिरंगा चिन्ह लगा हुआ था, तलवार उसकी कमर में लटकी हुई थी और दो पिस्तौलें उसकी कमर-पेटी में। डोल में उसके चेहरे पर जो घाव लगा था, उसका लाल लाल चिह्न उसके चेहरे को और भी भयंकर बना रहा था।

रेडो अपने घाव पर रूमाल बांधे हुए था। घाव का कुछ खून छन छन कर उस रूमाल के ऊपर झलक रहा था। मेज के सामने एक दूत खड़ा हुआ था। थोड़ी दूर पर उसका घोड़ा कूच करने के लिए खड़ा हिनहिना रहा था।

सिमोरडेन ने कलम उठाई। उसने कुछ पंक्तियाँ लिखीं। फ्रान्स की जन-सभा की देश-रक्षिणी-कमेटी के नाम यह पत्र था। उसमें लिखा गया कि लन्टेनक पकड़ लिया गया, कल उसका सिर काट दिया जायगा। पत्र पर हस्ताक्षर करके, उसे लपेट और उस पर मुहर लगा कर सिमोरडेन ने उसे दूत को दे दिया। दूत उसे ले कर चल दिया।

इसके पश्चात्, सिमोरडेन ने जोर से पुकार कर आज्ञा दी, "कालकोठरी खोलो।"

दो सिपाहियों ने कालकोठरी का दरवाजा खोल दिया। सिमोरडेन ने आज्ञा दी, "कैदी को बाहर लाओ!"

दोनों सिपाहियों के बीच में, कैदी भीतर से निकल कर कालकोठरी के दरवाजे पर आया। यह कैदी गावैन था। सिमोरडेन उसे देखते ही चौंक पड़ा और अत्यन्त आश्चर्य से बोला, "हैं, गावैन! (ठहर कर) मैं कैदी को चाहता हूँ।"

गावैन ने उत्तर दिया, "मैं ही कैदी हूँ।"

सिमो०—तू कैदी?

गा०—हाँ, मैं कैदी।

सिमो०—और, लन्टेनक?

गा०—वह आजाद हो गया।

सिमो०—आजाद!

गा०—हाँ।

सिमो०—क्या वह भाग गया?

गा०—हां, चला गया।

सिमोरडेन लड़खड़ाता हुआ बोला, "ठीक, यह किला उसी का है। उसे किले के चोर-रास्ते और सुरंगों का ज्ञान है। कालकोठरी से कोई गुप्त सुरंग का सम्बन्ध होगा। इस बात का ख्याल मुझे पहले ही होना चाहिए था। उसे किसी की मदद की भी आवश्यकता न पड़ी होगी।"

गा०—उसे मदद दी गई थी।

सिमो०—किस काम में? भाग निकलने में?

गा०—हाँ।

सिमो०—किसने दी थी?

गा०—मैंने।

सिमो०—तू ने?

गा०—हाँ, मैंने।

सिमो०—तू स्वप्न देख रहा है?

गा०—मैं कालकोठरी के भीतर गया था। मैं कैदी के साथ अकेला था। मैंने अपना लबादा उसे उढ़ा दिया। मैंने उसके चेहरे को लबादे से ढक सा दिया था। मैंने उसे बाहर कर दिया। मैं रह गया। और अब आपके सामने खड़ा हूँ।

सि०—तू ने ऐसा नहीं किया।

गा०—नहीं, मैंने ऐसा ही किया है।

सि०—असम्भव!

गा०—बिल्कुल सच है।

सि०—तू पागल है!

गा०—मैंने तो आप से ठीक ठीक सब बातें कह दीं।

कुछ क्षण तक दोनों चुप रहे। सिमोरडेन लड़खड़ाती हुई जिह्वा से बोला, "तब तो तुझे...।"

गा०—मौत की सजा मिलेगी।

सिमोरडेन का चेहरा पीला पड़ गया। वह अपनी कुर्सी पर इस प्रकार गिर पड़ा जिस प्रकार कटा हुआ वृक्ष जमीन पर गिरता है। मालूम पड़ता था कि वह सांस तक नहीं लेता। उसके माथे पर पसीने की बड़ी बड़ी बूंदें आ गई। अन्त में, उसने अपने को सम्भाला और आवाज कड़ी कर के सिपाहियों को आज्ञा दी, "अभियुक्त को उसके स्थान पर बैठाओ।"

गावैन चौकी पर बैठ गया।

सिमोरडेन ने आज्ञा दी, "सैनिको! अपनी तलवारें निकाल लो।"

सिमोरडेन का स्वर अब पहले ही का सा, स्थिर हो गया था। उसने कहा, "अभियुक्त! तुम खड़े हो जाओ।"

उसने इस बार गावैन को अपने पुराने 'तू' शब्द से सम्बोधन नहीं किया।

गावैन खड़ा हो गया।

सिमोरडेन ने उससे पूँछा, "तुम्हारा क्या नाम है?"

उत्तर मिला, "गावैन।"

सि०—तुम क्या काम करते हो?

गा०—मैं फ्राँस की सेना के एक खण्ड का सेनापति हूँ।

सि०—क्या तुम्हें फ्राँस की जन-सभा की आज्ञा का पता है?

गा०—मैं आपकी मेज पर इश्तहार को पड़ा देख रहा हूँ।

सि०—इस इश्तहार के सम्बन्ध में तुम क्या कहते हो?

गा०—हाँ, मैंने इस इश्तहार पर हस्ताक्षर किये थे। मैंने उस आज्ञा का प्रचार किया था। मैंने उस इश्तहार को लिखाया था और उसके नीचे अपना नाम अङ्कित किया था।

सि०—तुम अपनी सफाई के लिए किसी वकील को कर लो।

गा०—मैं स्वयं अपनी वकालत करूँगा।

सि०—अच्छी बात है। तुम अपनी सफाई में क्या कहना चाहते हो?

गावैन ने सिर ऊँचा किया, परन्तु न्यायाधीशों की ओर देखे बिना उसने कहना आरम्भ किया :—

"एक चीज ने दूसरी चीज को मेरी दृष्टि से ओझल कर दिया। एक अच्छे काम ने जो दृष्टि के सामने था, सैकड़ों बुरे कामों के देखने में मुझे असमर्थ बना दिया। एक ओर, एक बूढ़ा आदमी, दूसरी ओर, तीन बच्चे—बस, यही सब मेरे और मेरे कर्तव्य के बीच में आ गये। मैं भूल गया कि गांव जलाये गये थे, खेत उजाड़े गये थे, कैदी कत्ल किये गये थे, घायल लोग मारे गये थे और स्त्रियों तक को गोलियों का निशाना बनाया गया था। मैं भूल गया कि फ्रान्स इंगलेंड के चंगुल में पड़ा जाता है। मैंने अपने देश के हत्यारे को आजाद कर दिया। मैं दोषी हूँ। यह मालूम होता है कि मैं अपने ही विरुद्ध बातें कह रहा हूँ और यह बड़ी भारी भूल है। परन्तु, मैं जो कुछ कह रहा हूँ अपने विपक्ष में नहीं, अपने ही पक्ष में कह रहा हूँ। जब अपराधी अपने अपराध को स्वीकार कर लेता है तब वह एक ऐसी वस्तु की रक्षा कर लेता है जिसकी रक्षा करने ही के लिए कष्ट सहन करना उचित है। यह वस्तु है प्रतिष्ठा!"

सि०—क्या अपनी सफाई में तुम इतना ही कहना चाहते हो?

गा०—इतना और, कि मैंने सेनापति होकर एक उदाहरण आपके सामने रखा है। अब आपकी बारी है। न्यायाधीश की हैसियत से, आप भी एक उदाहरण पेश करें।

सि०—तुम किस तरह का उदाहरण चाहते हो!

गा०—मृत्यु-दण्ड का।

सि०—क्या तुम इसे न्याययुक्त समझते हो?

गा०—न केवल न्याययुक्त किन्तु आवश्यक भी।

सि०—बैठ जाओ।

इसके पश्चात्, एक सैनिक कर्मचारी ने मारकुइस लन्टेनक के बागी करार देनेवाले आज्ञा-पत्र को पढ़ कर सुनाया। फिर, फ्रांस की जन-सभा की वह आज्ञा सुनाई गई जिसमें उस आदमी के लिए कठोर दण्ड का विधान था जो बागी कैदी के भाग जाने में मदद दे। इस आज्ञापत्र के नीचे गावैन के हस्ताक्षर थे। वे भी, गावैन के पद के उल्लेख सहित, पढ़ कर सुनाये गये। इन कागजों के पढ़े जा चुकने के पश्चात्, 'सिमोरडेन बोला, "अभियुक्त, ध्यान से सुनो। उपस्थित लोगो, तुम भी सुनो और चुपचाप कार्रवाई को देखो। तुम्हारे सामने कानून उपस्थित है। अब, न्यायाधीशों की राय ली जायगी। जो कुछ बहुमत से तय होगा वही किया जायगा। प्रत्येक न्यायाधीश को अपना फैसला उच्चस्वर में अभियुक्त के सामने प्रकट करना पड़ेगा। न्याय के समक्ष किसी प्रकार की गोपनीयता की आवश्यकता नहीं। हाँ, अब पहला न्यायाधीश अपना फैसला सुनावे। कप्तान गूशेम्प, तुम अपना फैसला सुनाओ।"

कप्तान गूशेम्प की दृष्टि न तो सिमोरडेन पर पड़ी, और न गावैन ही पर। वह अपनी दृष्टि इश्तहार पर गाड़े हुए बोला, "नियमों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। न्यायधीश साधारण मनुष्य की अपेक्षा घट और बढ़ कर हुआ करता है। घट कर तो इसलिए कि उसके हृदय नहीं होता। और, बढ़ कर इसलिए कि न्यायखड्ग अपने हाथ में धारण करता है। सन् ईसवी ४१४ में, रोम के मेनलियस ने अपने पुत्र को मृत्युदण्ड इसलिए दिया कि उसने आज्ञा बिना ही विजय करने का अपराध किया था। जो कोई नियमों और व्यवस्था का उल्लंघन करे उसे समुचित् दण्ड मिलना चाहिये। दया मिश्रित भावुकता के कारण देश पर जोखिम की घटायें फिर छा गईं। यह दया

जघन्य पाप के तुल्य है। सेनापति गावैन ने बागी लन्टेनक को भाग जाने में मदद दी। गावैन अपराधी है। मेरा मत है—उसे मृत्यु-दण्ड दिया जाय!"

सिमोरडेन ने आज्ञा दी, "पेश्कार इसे लिखो।"

पेश्कार ने लिखा, 'कप्तान गूशेम्प का फैसला—मृत्युदण्ड।"

गावैन ने स्पष्ट और स्थिर स्वर से कहा, 'गूशेम्प, तुम्हारा फैसला वाजिब है। मैं इसके लिए तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।'

सिमोरडेन ने कहा, "अब दूसरे न्यायाधीश की बारी है। सारजेंट रेडो, अपना फैसला दो।,

रेडो उठ पड़ा। वह गावैन की ओर मुड़ा। उसे फौजी सलाम करके बोला—'यदि यह सब ठीक है जो कुछ हो रहा है तो मेरा सिर काटिए, क्योकि ईश्वर की शपथ खाते हुए मैं सत्य सत्य कहता हूँ कि मैं पहले तो उस काम को करना पसंद करता हूँ जो बूढ़े लन्टेनक ने किया, और उस काम को जो मेरे सेनापति ने किया। जब मैंने उस अस्सी वर्ष के बूढ़े को तीन बच्चों के निकालने के लिए आग में कूदते हुए देखा तब मैंने कहा था, 'बूढ़े आदमी, तुम बड़े वीर हो!' और मैंने जब सुना कि मेरे सेनापति ने उस बूढ़े को आपके उस गला काटने वाले यन्त्र रूपी पशु से बचाने का काम किया, तब मैं हजार बार जोर के साथ कहता हूँ, 'मेरे सेनापति! आप जेनरल बनाये जाने के योग्य हैं, आप सच्चे मनुष्य हैं, और यदि इस समय पदकों और उपाधियो के देने की प्रथा होती, तो मैं बड़े बड़े पदकों और उपाधियों को आप पर से न्योछावर कर देता।" इस समय हम लोग मूर्खता पर क्यों उतारू होते जाते हैं? क्या इसी प्रकार की मूर्खता के बल से, हमने अनेक बडी बड़ी लड़ाइयां अब तक जीतीं? आज चार मास के भीतर सेनापति गावैन ने अपने पौरुष से, अपने धौंसे की प्रतिध्वनि से, राजपत्त की अनेक

वीरअनियों के पैर उखाड़े और अपनी तलवार से प्रजा-तन्त्र के झण्डे की रक्षा की। डोल में उन्होंने जिस वीरता, जिस बुद्धि-चातुर्य्य का परिचय दिया था, वह अद्भुत था। आज उसी आदमी के सिर उतारने की आप तैयारी कर रहे हैं ? जेनरल बनाने के बदले में आप उसका सिर काट रहे हैं ! कैसी अच्छी कद्रदानी है ! कितनी बड़ी बुद्धिमत्ता है ! मेरे सेनापति नागरिक गावैन, यदि आप मेरे अफसर होने के बजाय मेरे मातहत सिपाही होते, तो मैं आपसे कहता कि आपने इस समय बहुत सी फजूल बातें बकीं। बूढ़े ने बच्चों को बचा कर अच्छा काम किया। आपने बूढ़े को बचाकर अच्छा काम किया। यदि हम अच्छे कामों के लिए लोगों के गले काटेंगे, तो फिर हो चुका ! इन सब बातों को गोली मारो। फिर ये सब उद्योग और दौड़-धूप किस बात के लिए ? फिर किस बात के लिए, इतनी हाय हाय ? मैं अपनी शरीर में चुटकी काटता हूँ, यह देखने के लिए कि मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा, मैं जागता तो हूँ। कुछ समझ में नहीं आता। क्या बूढ़े को चाहिए था कि वह बच्चों को जलने मरने देता और क्या मेरे सेनापति को यही उचित था कि वह इस बूढ़े का सिर कटने गिरने देता ? सिर ही काटना है, तो मेरा सिर काट लीजिए। मैं खुशी से तैयार हूँ। जरा सोचिए, यदि बच्चे मर जाते, तो बो-नेरा की बटालियन बदनाम हो जाती। क्या आप यही चाहते थे ? यदि ऐसा ही है तो आओ, एक दूसरे के गले पर छुरी फेर दो। मैं भी कुछ कुछ राजनीति समझता हूँ। पेरिस की राजनैतिक समितियों से मेरा भी कुछ कुछ लगाव रहा है। परन्तु यहां तो यही मालूम होता है कि अब सब कुछ की इति-श्री होने वाली है। यह तो बतलाइए कि हम लोग हथेली पर सिर लिये क्यों फिर रहे हैं, और क्यों जगह जगह अपने प्राण दे रहे हैं ? क्या इसीलिए, कि हमारे सर्दार

मारे जायं। आपके वितण्डा से कुछ मतलब नहीं। मैं अपने सर्दार को चाहता हूँ। मैं उसे और भी अधिक प्यार करता हूँ। पहले से भी अधिक—कल से भी अधिक! क्यों उसका आप गला काटेंगे? क्यों अपनी हंसी उड़वाते हो? इस ख्याल से दर-गुजरो। लोगों को बकने दो। ऐसा नहीं हो सकता।"

रेडो बैठ गया। बोलने के कारण उसका घाव खुल गया। उससे रक्त की धार बह उठी, और वह बहती बहती गर्दन तक पहुँच गई। सिमोरडेन ने मुड़ कर उससे पूछा, "तो तुम अभियुक्त की रिहाई का फैसला देते हो?"

रेडो—मेरा मत यह है कि वह जेनरल बनाया जाय।

सि०—मैं पूंछता हूँ कि क्या तुम उसकी रिहाई के पक्ष में अपनी राय देते हो?

रेडो—मेरा मत यह है कि वह प्रजा-तन्त्र शासन का अध्यक्ष बनाया जाय।

सि०—सारजेंट रेडो, मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि क्या तुम्हारी यह राय है कि अभियुक्त छोड़ दिया जाय? केवल 'हां' या 'नहीं' में उत्तर दो।

रेडो—मेरी राय यह है कि उसके सिर की जगह पर मेरा सिर काट लिया जाय।

सिमोरडेन ने पेशकार से कहा, "लिखो, सारजेंट रेडो की राय—रिहाई।"

पेशकार ने लिख लिया। सिमोरडेन बोला, "एक राय मृत्यु-दण्ड के पक्ष में है, दूसरी राय रिहाई के पक्ष में। मत बराबर हैं।"

अब, सिमोरडेन को अपनी राय देने की आवश्यकता पड़ी। वह उठ कर खड़ा हुआ। उसने अपनी टोपी सिर से उतार कर मेज पर रख दी। उसके चेहरे पर इस समय जर्दी न थी। जैसा

मट्टी का रंग होता है वैसा ही उसके चेहरे का रंग हो गया था। सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था। इतना सन्नाटा, जितना श्मशान् में भी कभी नहीं होता। सिमोरडेन ने गम्भीर और दृढ़ स्वर में कहा, "अभियुक्त, तुम्हारे मामले की सुनवाई हो चुकी। प्रजा-तन्त्र के नाम पर, यह सैनिक न्यायालय तुम्हें एक के मुकाबले में दो रायों से···" कहते कहते सिमोरडेन का गला रुक गया। क्या वह मृत्यु-दण्ड देने में हिचक रहा था? क्या वह जीवनदान देने में हिचक रहा था? यही दो प्रश्न उपस्थित लोगों के मन में थे। सब का ध्यान और नेत्र सिमोरडेन के चेहरे पर लगे हुए थे। सिमोरडेन फिर बोला, "···तुम्हें मृत्यु-दण्ड देता है।"

आज्ञा सुनाने के कुछ क्षण पश्चात् तक सिमोरडेन के मुख-मण्डल पर कुछ चमक सी रही। परन्तु शीघ्र ही वह चमक जाती रही। वह फिर पत्थर की भांति अचल हो गया। बैठ कर और सिर पर टोपी रख कर उसने कहा, "गावैन, तुम्हें कल मृत्यु-दण्ड मिलेगा।"

गावैन उठ खड़ा हुआ। उसने फौजी सलाम किया और कहा, "न्यायालय को धन्यवाद देता हूँ।"

सिमोरडेन ने आज्ञा दी, कैदी को ले जाओ। कालकोठरी का दरवाजा खुला। गावैन ने उसके भीतर कदम रखा। दरवाजा बन्द कर दिया गया। नंगी तलवार ले कर दो संतरी उस दरवाजे के दोनों तरफ खड़े हो गये।

इधर सार्जेंट रेडा बेहोश होकर धरती पर गिर पड़ा। सिपाही उठा कर उसे उसके डेरे पर पहुँचा आये।

कालकोठरी में गुरु और शिष्य

सेना में बड़ी सनसनी फैली हुई थी। पहले जब सिपाहियों को मालूम हुआ कि लन्टेनक हाथ में आकर भी निकल गया, तब, वे गावैन के सम्बन्ध में, अनेक बातें आपस में कहने सुनने लगे। जब गावैन कालकोठरी में से निकाला जाकर सैनिक अदालत के सामने पेश किया गया, तब दूसरे प्रकार की काना-फूसी आरम्भ हुई। सिपाहियों ने आपस में कहा, "यह सब ढोंग है, गावैन रईस है, उसने रईस का पक्ष किया और लन्टेनक को भगा दिया। सिमोरडेन पादड़ी है, वह अब गावैन को रिहा कर देगा, और इस प्रकार न्याय की दिल्लगी उड़ाई जायगी।" परन्तु जब गावैन के मृत्यु-दण्ड पाने का समाचार चारों ओर फैला तब चर्चा का रंग फिर पलटा। सिपाही लोग हाथ मलते हुए कहने लगे, "यह तो अत्यन्त भयंकर बात है। हमारे वीर सर्दार की यह दुर्गति! यदि वह कुलीन है, रईस है, तो इससे तो प्रजा-पक्ष में होने पर उसकी श्रेष्ठता और भी भली भांति सिद्ध होती है। डोल और ला-टोर के रणों में विजय-पताका उड़ाकर जिस वीर ने हमारा सिर इतना ऊंचा कर दिया, जिसने हमें अजेय बना दिया और वैण्डी भर में जिसने प्रजा-तन्त्र के खड्ग का यश छा दिया, हा! आज उसी वीर पुरुष को इस प्रकार मृत्यु-दण्ड

मिले ! सिमोरडेन उसे मारे ! और इसलिए, कि उसने तीन बच्चों के प्राण बचाने वाले एक बूढ़े की जान बचाई !"

सैनिकों का क्रोध सिमोरडेन पर बढ़ चला, परन्तु उसके सामने बोलने का साहस उन्हें नहीं पड़ा। वे उसकी कठोर प्रकृति, दृढ़ स्वभाव और बड़े अधिकार से खूब परिचित थे। वे भली भांति जानते थे कि सारी दुनियां इधर की उधर हो जाय, परन्तु सिमोरडेन अपने विचार और निश्चय से तनिक भी टलने वाला आदमी नहीं। परन्तु सिमोरडेन को जन-सभा की ओर से असीम अधिकार प्राप्त थे। सैनिक रीति से दण्ड देकर भी, वह गावैन की बड़ी बड़ी सेवाओं का खयाल करके उसे क्षमा कर सकता था। गावैन का जीवन सिमोरडेन के संकेत पर अटका हुआ था। सैनिक इस बात को भली भांति समझते थे, और इसी लिए, रात भर वे यही मनाते रहे कि सिमोरडेन की मति पलट जाय और गावैन के प्राण बच जायं।

× × ×

आधी रात को लालटेन लिए हुए, सिमोरडेन कालकोठरी के सामने पहुँचा। दो सन्तरी पहरा दे रहे थे। आज्ञा पाते ही सन्तरियों ने कालकोठरी का दरवाजा खोल दिया। सिमोरडेन ने भीतर प्रवेश किया। कोठरी में अंधेरा था, और सन्नाटा छाया हुआ था। भूमि पर लालटेन रख कर सिमोरडेन चुपचाप खड़ा हो गया। उसने देखा कि गावैन कोठरी के एक कोने में घास के बिछौने पर पड़ा गहरी नींद में सो रहा है। सिमोरडेन गावैन के बिल्कुल निकट गया और उसके चेहरे को देखने लगा। वह

गावैन को उससे भी अधिक प्यार से देख रहा था, जितने प्यार से माता अपने सोते हुए शिशु को देखती है। उसने बड़े प्यार से उसके नेत्रों को छुआ और फिर, झुक कर, धीरे से उसने गावैन का एक हाथ उठाया और उसे अपने ओष्ठों से लगा लिया। गावैन की नींद खुल गई। वह, आश्चर्य से सिमोरडेन को देखने लगा। लालटेन के प्रकाश के सहारे, सिमोरडेन को पहचान कर, गावैन बोला, "आप हैं, गुरुदेव! मैं यह स्वप्न देख रहा था कि मृत्यु मेरा हाथ चूम रही है।"

सिमोरडेन चौंक सा पड़ा। वह इस प्रकार चौंका, मानों बहुत से विचारों ने उसे एकदम आकर घर दबाया हो। उसके मुँह से बात नहीं निकली। वह केवल इतना ही कह सका, "गावैन!"

दोनों एक दूसरे को एकटक देखते रहे—सिमोरडेन ऐसी दृष्टि से जिसमें अग्नि का इतना समावेश हो कि उससे आँसू तक सूख जायं और गावैन ऐसी दृष्टि से जो मधुर मुस्क्यान से परिपूर्ण थी।

गावैन ट्योहनी के बल उठ कर बोला, "आपके चेहरे पर घाव का जो दाग है वह मेरे कारण है। कल भी, आप मेरे पास और मेरे लिए ही, उसी उसी स्थान पर रहते थे, जहाँ जहाँ घमासान लड़ाई में मुझे जाना पड़ता था। यदि, ईश्वर ने मुझे आपके निकट न रक्खा होता, तो आज मैं न मालूम कैसे भीषण अन्धकार में भटकता होता। मुझे जो कुछ कर्त्तव्य-ज्ञान है, वह सब आपसे प्राप्त हुआ है। मैं तो बन्धनों से, जकड़ा हुआ था।

आपने मेरे बन्धन तोड़े, आपने मुझे स्वाधीनता का अमृत चखाया और आपने मुझे अबोध से सुबोध बनाया। आपके बिना मैं कुछ भी न होता। आपही के कारण मैं जो कुछ हूँ वह हुआ। मैं रईस था, आपने मुझे नागरिक बनाया। मैं केवल नागरिक था, आपने मुझे सहृदय बनाया। मनुष्य बन कर विचरने के लिए आपने मुझे लौकिक शिक्षा दी और उच्च और पवित्र रहने के लिए आपने मुझे आत्मिक शिक्षा प्रदान की। आपने ही मुझे सत्य और ज्ञान का पथ दिखाया। गुरुदेव! मैं आपका कृतज्ञ हूँ। यथार्थ में, आप ही मेरे रचयिता हैं!"

सिमोरडेन घास के बिछौने पर गावैन के पास बैठ गया और उससे बोला, "मैं तेरे साथ भोजन करने आया हूँ।"

गावैन ने अपने पास पड़ी हुई काली रोटी उठाई। उसका एक टुकड़ा तोड़ कर उसने सिमोरडेन को दिया। इसके पश्चात्, गावैन ने उसे जल-पात्र दिया। सिमोरडेन बोला, "पहले तू पी।"

गावैन ने पानी पिया। उसके बाद, सिमोरडेन ने उसी पानी को पिया। परन्तु गावैन ने केवल एक घूँट पिया, और सिमोरडेन ने खूब खींच खींच कर। दोनों ने मिल कर भोजन किया। भोजन करते समय गावैन तो रोटी खाता था, और सिमोरडेन पानी पीता था। यह ढंग इस बात का द्योतक था कि गावैन शान्त था, परन्तु सिमोरडेन का शरीर दाह से जल रहा था और इसीलिए, वह बार बार पानी पीता था। भोजन करते समय दोनों चुप रहे। उसके पश्चात्, वे दोनों बात-चीत करने लगे।

गावैन ने कहा, "बड़ी बड़ी घटनायें घट रही हैं। क्रान्ति

इस समय रहस्यमय कार्य्य कर रही है। जो कुछ दिखाई पड़ता है उसके पीछे कुछ ऐसी बातें हैं जो दिखाई नहीं पड़तीं। ये बातें ओट में हैं। परन्तु, आगे चल कर ये सब प्रकट होंगी। वर्त्तमान भीषणता के पीछे सभ्यता के सुन्दर मन्दिर का निर्माण हो रहा है।"

सिमो०—हां वर्त्तमान काल के अस्थायी हृदय के पीछे स्थायी अवस्था का युग निहित है। आगे चल कर, अधिकार और कर्तव्य का समान युग उपस्थित हो गया। जिसकी जैसी आय होगी उसको वैसा ही कर देना पड़ेगा। देश के प्रत्येक युवक को सैनिक बनना पड़ेगा। सब के लिए आगे बढ़ने को समान सुविधा रहेगी। और, हम सब के ऊपर, छोटे और बड़े, सब के लिए एक सा कानून होगा। प्रजातन्त्र का स्थान सर्व्वोपरि होगा।

गा०—मैं आदर्श प्रजातन्त्र का पक्षपाती हूँ। परन्तु गुरुदेव! आपने जो कुछ कहा उस सब में आप श्रद्धा, त्याग, तपस्या, दया, और ममता को कहां स्थान देते हैं? सब अवस्थाओं को समान अवसर देना अच्छा है, परन्तु उससे भी अच्छा यह है कि सब अवस्थाओं के सम्बन्ध मधुर बनाये जायं। काव्य का स्थान नपे तुले वाक्यों के ऊपर है। आपके प्रजा-तन्त्र का आदर्श मनुष्य को नापता जोखता और सीमा के भीतर रखता है और मेरा आदर्श उसे खुले आकाश की ओर ऊपर उठाता है। गणित से सिद्ध किये जाने वाले प्रश्न और आकाश-चारी पक्षी की उड़ान में जो अन्तर है, वही इन दोनों बातों में है।

सिमो०—तुम ऊपर की उड़ान भर कर, घटाओं में जा छिपते हो।

गा०—आप अङ्कों के फेर में पड़ कर यथार्थ पथ को भूल जाते हैं।

सिमो०—सब अवस्थाओं में मधुरता के सम्बन्ध की स्थापना का विचार स्वप्न समान है।

गा०—मानव-जीवन की समस्याओं को अङ्कगणित के आधार पर तर्क करना भी भ्रम में पड़ना है।

सिमो०—मैं तो चाहता हूँ कि मनुष्यों को ठीक वैसे हिसाब से बनाया जाय जैसे रेखागणित के हिसाब से शकलें बनाई जाती हैं।

गा०—मैं चाहता हूँ कि मनुष्य वैसे बनें जैसे यूनान के महाकवि होमर ने अपने महाकाव्य में उन्हें चित्रित किया है।

सिमो०—कवियों की बातों में विश्वास मत करो।

गा०—मैंने भी यह बात सुनी है, परन्तु क्या सन्-सन् चलने वाली वायु पर और चमकते हुए सूर्य्य के प्रकाश पर भी अविश्वास किया जाय ? क्या बसन्त ऋतु के पुष्पों और उनके सुगन्ध और आकाश में चमकने वाले नक्षत्रों की चमक पर भी विश्वास न किया जाय ?

सि०—इनमें से कोई भी वस्तु आदमी का पेट नहीं भर सकती।

गा०—आप यह कैसे कहते हैं ? विचार मनुष्य का बड़ा भारी पोषक है।

सि०—तात्विक-विचारों को छोड़ो। प्रजा-तन्त्र का विचार इतना ही स्पष्ट है जितना दो और दो का मिलकर चार का होना। जिस समय मैं प्रत्येक व्यक्ति को वह भाग दे दूँ जो उसको अधिकार से मिलना चाहिए…।

गा०—अब भी उसे वह भाग देना शेष रहता है जो उसका नहीं है और जो उसे मिलना चाहिए।

सि०—इससे तुम्हारा क्या तात्पर्य ?

गा०—मेरे मत से एक बहुत बड़ा पारस्परिक दान-प्रतिदान भी है जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का सब को और सब का प्रत्येक व्यक्ति को, कुछ देना लेना कर्तव्य है। यही पारस्परिक महादान प्रतिदान सामाजिक जीवन का आधार है।

सि०—बड़े कानून कायदों के ऊपर कोई वस्तु नहीं है।

गा०—बहुत कुछ है।

सि०—मेरी दृष्टि तो, केवल, न्याय पर रहती है।

गा०—इस न्याय से भी ऊपर कोई वस्तु है।

सि०—न्याय के ऊपर क्या हो सकता है ?

गा०—साम्य न्याय। ईश्वरीय न्याय।

कुछ क्षण तक दोनों चुप रहे। सिमेरडेन ने बातों का सिल-सिला फिर छेड़ा। वह बोला, "कोई स्पष्ट बात पेश करो; तुम्हारा पक्ष ठीक नहीं।"

गा०—लीजिए, आप कहते हैं, सेना में भरती होना सब के लिए अनिवार्य होगा। क्यों ? किसके विरुद्ध ? दूसरे मनुष्यों ही के विरुद्ध न ? मेरा मत है कि सैनिक काम उड़ा दिया जाय।

मैं शान्ति चाहता हूँ। आप विपद्ग्रस्तों की सहायता करना चाहते हैं, मैं विपत्ति का अन्त करना चाहता हूँ। आप लोगों पर कर लगाना चाहते हैं, मैं चाहता हूँ कि कर रहे ही न। मैं चाहता हूँ कि सार्वजनिक खर्चों को खूब घटाया जाय और जब घटकर वे कम से कम हो जायं तब उनका बोझ सार्वजनिक-कोष पर पड़े।

सि०—यह किस तरह ?

गा०—पहले, उन्हीं को ले लीजिए जो देश के लिए जोंक हो रहे हैं। बड़ी बड़ी तनख्वाह पाने वाले पादड़ी और न्यायाधीश और बड़ी भारी सेना—यह सब देश के लिए जोंक के समान हैं। इनका व्यय दूर कीजिए, फिर देश की पूजी का हिसाब लगाइए। नालों और नदियों में हम अपना कूड़ा कचरा फेंक और बहा देते हैं। उसे खेतों की क्यारियों में पहुँचने दीजिए। इस समय फ्रांस का तीन चौथाई भाग बंजर भूमि के समान पड़ा हुआ है, उसे साफ कराइए। उसे हरे-भरे खेतों के रूप में परिवर्तित होने दीजिए, प्रत्येक आदमी को एक खेत दीजिए, फिर देखिए कि देश का धन बहुत ही थोड़े ससय के भीतर सौ-गुना हो जाता है, या नहीं ? इस समय फ्रांस की भूमि अपने बच्चों को पेट भर भोजन नहीं देती, फिर देखिएगा, यूरोप भर के आदमियों का शरीर आपके किसान पाल सकेंगे। तनिक प्रकृति से तो सहायता लीजिए, मनुष्य-जाति की वह परम हितैषिणी है। ऐसा कीजिए कि हवा का प्रत्येक झोंका, और पानी का प्रत्येक प्रपात आपके हित के लिए काम करे। पृथ्वी के नीचे तेल और

धातुओं के अनेकानेक भण्डार भरे पड़े हैं। उन्हें ऊपर निकालिए और देश के कोने कोने में प्रकृति की इस भेंट को फैला दीजिए। समुद्र की लहरों, उनके उठाव और चढ़ाव को देखिए। समुद्र अनन्त शक्तियों का घर है। पृथ्वी पर रहने वालों ने इस अनन्त शक्ति का अनन्त भूतकाल से व्यर्थ ही नष्ट होने वाली इस शक्ति का कौन सा सदुपयोग किया ?

सि०—अब तो, तुम स्वप्न के पूरे प्रवाह में बहे जा रहे हो।

गा०—नहीं, स्वप्न नहीं, ये सब बातें ठीक और पूरी पड़ने वाली हैं। (कुछ ठहर कर) हां स्त्रियों के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है ?

सि०—वे जैसी हैं वैसी ही रहें। वे पुरुष की सेवा के लिए हैं।

गा०—ठीक, परन्तु एक शर्त पर।

सि०—वह क्या ?

गा०—पुरुष भी उनके सेवक हों।

सि०—ऐसा हो सकता है ! पुरुष, और स्त्री का सेवक ? यह कभी न होगा। पुरुष मालिक है। रह गई मालिक या राजा होने की बात, सो मालिक-पन और राजा-पन तो अब केवल एक स्थल में रह गया है। यह स्थल है अपना घर, और अपने इस घर का राजा होगा पुरुष।

गा०—ठीक, परन्तु एक शर्त पर।

सि०—वह क्या ?

गा०—स्त्री उस राज्य की रानी होगी।

सि०—अर्थात् तुम यह चाहते हो कि पुरुष और स्त्री...।

गा०—...बराबर समझे जायं।

सि०—बराबर! कहीं दोनों बराबर हो सकते हैं? दोनों में बड़ा अन्तर है!

गा०—हां, मैं भी तो उनकी बराबरी पर जोर देता हूँ। उनके एक से होने की बात कहां कह रहा हूँ?

थोड़ी देर; फिर दोनों चुप रहे। इसके बाद, सिमोरडेन ने बात छेड़ी, "अच्छा, बच्चों के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है? उन्हें तुम किसे सौंपते हो?"

गा०—पहले तो, माता-पिता के हाथों में जो उनके जन्म-दाता हैं; फिर गुरु के हाथों में जो उन्हें शिक्षा दें; फिर नगर के हाथों में जो उन्हें सभ्य बनावें; फिर मातृ-भूमि के हाथों में जो उनकी बड़ी जननी है और अन्त में, मानवजाति के हाथों में, जो उनके पूर्वज के समान है।

सि०—तुमने ईश्वर का नाम नहीं लिया?

गा०—माता-पिता, गुरु, नगर, देश और मानव-जाति ये सब उस सीढ़ी के अनेक डंडों के समान हैं, ईश्वर तक पहुँचाती है। जब सीढ़ी की चोटी पर आदमी पहुँच जाता है तब वह ईश्वर तक पहुँच जाता है। स्वर्ग के द्वार उसके लिए खुल जाते हैं। उनके भीतर प्रवेश करना ही उसके लिए शेष रहता है।

सि०—(व्यग्रता के साथ) गावैन! तुम तो ऊपर उड़े जाते हो, पृथ्वी पर पैर रखो। जो कुछ सम्भव है, हम उसी को पूरा करना चाहते हैं।

गा०—परन्तु, आप किसी बात को आरम्भ ही से असम्भव क्यों समझ लेते हैं ?

सि०—जो बात सम्भव है वह तो आपसे आप मालूम पड़ जाती है !

गा०—ऐसा सदा नहीं होता। जब कोई आदर्शों के प्रति कठोरता का व्यवहार करता है; तब वह उनकी हत्या करता है ! आप जानते हैं, अण्डा कितनी निरीह वस्तु है, परन्तु, फिर...।

सि०—तो भी, यह आवश्यक है कि आदर्श, केवल आदर्श न रहें, उन्हें कार्य के रूप में भी परिणत किया जाय। तात्विक विचारों को ठोस कार्य का रूप देना आवश्यक है। इस प्रकार उन विचारों के सौन्दर्य में अन्तर पड़ जायगा, परन्तु उनकी उपयोगिता बढ़ जायगी। वे छोटे पड़ जाते हैं, परन्तु अधिक अच्छे हो जाते हैं। जो बात ठीक हो, उसे नियम का रूप मिल जाना चाहिए और जब ऐसा हो जाय, तब वह सिद्ध हो गई। इसी को मैं उसका सम्भव होना कहता हूँ।

गा०—परन्तु, जो कुछ सम्भव है वह इससे भी परे है।

सि०—फिर तुम आकाश-कुसुम की कल्पना करने लगे।

गा० जो कुछ सम्भव है वह उस रहस्यमय पक्षी के समान है जो मनुष्य के सिर पर मंड़राया करता है।

सि०—उसे पकड़ लेना चाहिए।

गा०—हाँ, परन्तु जीवित अवस्था ही में। निरन्तर उन्नति मेरा लक्ष्य है। यदि ईश्वर यह चाहता कि मनुष्य पीछे भी खसके तो वह उसकी खोपड़ी में पीछे भी एक आँख बना देता।

हमारी दृष्टि सदा प्रातःकालीन उषा की ओर, उसकी ओर जो खिल रहा है और फल रहा हो, होनी चाहिए। जो वस्तु विनष्ट हो रही है वह नई वस्तु को आगे बढ़ने का संदेश देती है। पुराने वृक्ष का पतन नये वृक्ष के उगने का संदेश है। प्रत्येग युग अपना अपना कार्य करता है—आज वह नागरिकता का कार्य करता है, तो कल मानवजाति भर के कल्याण के काम में हाथ लगाता है। आज यदि, उसके सामने अधिकारों की मीमांसा का कार्य होता है, तो कल उसके सामने कर्तव्य का क्षेत्र आता है। अधिकार और कर्तव्य—दोनों में कोई अन्तर नहीं। अधिकार यथार्थ में आन्तरिक कर्तव्य का रूप है और कर्तव्य-प्राप्त अधिकार का स्वरूप मात्र।

गावैन ने ये बातें बड़े ओज के साथ कहीं। सिमोरडेन ध्यान से उन्हें सुनता रहा। ऐसा भासित होता था कि बाजी पलट गई, शिष्य गुरु हो गया और गुरु शिष्य।

सिमोरडेन ने धीरे से कहा, "तुम बहुत जल्दी जल्दी बोल रहे हो।"

गावैन ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, "यह इसलिए कि मेरे पास बहुत कम समय है। हां, गुरुदेव! आपके और मेरे आदर्शों में कितना अन्तर है! आप चाहते हैं कि सेना अवश्य हो। मैं चाहता हूँ कि पाठशाला हो। आप मनुष्य को सैनिक के रूप में देखते हैं, मैं उसे नागरिक के रूप में देखता हूँ। आप उसे भयंकर बनाना चाहते हैं, मैं उसे विचारशील बनाना चाहता हूँ। आप तलवार के बल पर प्रजा-तन्त्र की सत्ता स्थापित करना

चाहते हैं और मैं—मैं उसकी प्रतिष्ठा मनुष्यों के मनों पर करना चाहता हूँ।"

सिमोरडेन ने आँखें नीचे किये हुए कहा, "अब से लेकर जब तक वह युग स्थापित हो, उस समय तक के लिए तुम क्या चाहते हो?"

गा०—जो जैसा है वह वैसा ही रहे।

सि०—अर्थात्, जो कुछ हो रहा है, उसे विस्मरण करने के लिए तैयार हो।

गा०—हाँ।

सि०—क्यों?

गा०—क्योंकि, इस समय तूफान चल रहा है। तूफान अपना काम अच्छी तरह जानता है। एक वृक्ष उखड़ जाता है, परन्तु जंगल के स्वास्थ्य को वह इस प्रकार लाभ पहुँचाता है। सभ्यता के अन्तरतर में अनेक विष उत्पन्न हो जाते हैं। ये आंधियां उन विषों का इलाज हैं। कदाचित् ये आँधियां उतनी संयत न हों जितना उन्हें होना चाहिए, परन्तु, इसके सिवा वे और क्या हो सकती हैं? उनके सामने अत्यन्त कठिन काम है। रोग की भयंकरता पर जब दृष्टि पड़ती है तब आंधी की उग्रता समझ में आ जाती है। हाँ, फिर उस समय मुझे आंधी और तूफान से डर ही क्या, जब दिशा-सूचक यन्त्र मेरे हाथ में हो। घटनाओं का मेरे ऊपर असर ही क्या, जब मुझे सद्विवेक प्राप्त है। (गम्भीरता के साथ) और, फिर, एक शक्ति ऐसी है

जिस पर, अपने पथ-प्रदर्शन के काम में, हमें भरोसा रखना चाहिए।

सि०—वह क्या ?

गावैन ने ऊपर की ओर अंगुली से संकेत किया। सिमोरडेन की आखें अंगुली के संकेत की ओर उठीं। उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे कालकोठरी की छत फट गई हो और उसे चमकने वाले तारों से भरा आकाश दिखाई दे रहा हो। दोनों थोड़ी देर तक चुप रहे। फिर, सिमोरडेन बोला, "समाज प्रकृति से श्रेष्ठ है। ये बातें सम्भव नहीं—यह सब स्वप्न हैं।"

गा०—यही लक्ष्य होना चाहिए। नहीं तो समाज से ही क्या लाभ ? प्रकृति ने जैसा उत्पन्न किया, मनुष्य वैसा ही रहे। जंगली रहे और जंगलों में विचरण करे। खोहें स्वर्ग हों। परन्तु कसर इतनी है कि इस अवस्था के प्राणी सोचना-समझना नहीं जानते। मानसिक चेतना से युक्त नरक भी पाशविक स्वर्ग से कहीं अच्छा ! परन्तु, नहीं, नहीं, नरक का क्या काम। हम मानव-समाज ही बने रहें। मानव-समाज प्रकृति से श्रेष्ठ है ! हाँ, यदि प्रकृति में कुछ बढ़ाते नहीं तो उससे परे क्यों हटते हैं। चींटी जिस प्रकार काम करती है उसी प्रकार काम करते हुए सन्तोष मानिए। मधु-मक्खी मधु एकत्र करने के लिए जितना प्रयास करती है उसी प्रकार वैसी ही वस्तु के लिए प्रयास कीजिये। खूब मेहनत कीजिए, आलस्य के लिए कोई स्थान नहीं। यदि, प्रकृति में आप कुछ जोड़ें तो निःसन्देह आप उससे अधिक बड़े बनें। प्रकृति में कुछ जोड़ना अपने को बड़ा बनाना,

अपना विकास करना है। मानव-समाज, प्रदीप्त-प्रकृति का स्वरूप है। जिस बात की मधु-मक्खियों में कमी है, जिस बात की चीटियों में कमी है—कला, कौशल, प्रतिभा और ओज की जो भावनायें उनमें नहीं हैं—मैं उन सब को चाहता हूँ। मनुष्य का काम सदा भार-वाहक बने रहना नहीं है। गुलामों, दस्युओं, और बन्दियों का अस्तित्व अब कहीं न रहे। मैं चाहता हूँ कि मनुष्य की बात बात से उन्नति हो और सभ्यता की छटा छिटके। मैं चाहता हूँ कि मनुष्य के मन, बुद्धि और आत्मा में स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व की भावना भली भांति समा जाय। बन्धन न रहें। आदमी शृङ्खलाओं के वहन करने के लिए नहीं बनाया गया, ऊपर उड़ने के लिए उसकी रचना हुई है। पृथ्वी पर रेंगनेवाले मनुष्य रूपी प्राणी की आवश्यकता नहीं। इस प्राणी में ऊपर उठने के लिए पंख लग जायं! पृथ्वी पर रेंगनेवाला कीड़ा जीता-जागता पुष्प बन जाय और ऊपर उड़ने लगे। मैं चाहता हूँ...।

बोलते बोलते वह रुक गया। उसके नेत्र चमक रहे थे। उसके ओंठ हिल रहे थे। कालकोठरी के दरवाजे खुले हुए थे। बाहर दूर बजने वाले बिगुल का शब्द कोठरी में सुनाई दिया। और, साथ ही सुनाई दी पहरा बदलने वाले सन्तरियों की बन्दूकों के सिरे की पृथ्वी पर धमक। कुछ दूर पर लोहे-लंगड़ और लकड़ी के तख्ते के उठाये-धरे और ठोंके-पीटे जाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। सिमोरडेन उसे सुनकर सिहर उठा। गावैन ने कुछ भी न सुना। वह अपने ही विचारों में लीन था। वह

इतना ध्यान-मग्न था कि भासित होता था मानों वह साँस ही नहीं ले रहा है। बीच बीच में कभी कभी वह कुछ चौंक सा पड़ता था। कुछ देर तक यही अवस्था रही। तब सिमोरडेन ने पूछा, "तुम किस विषय पर सोच रहे हो ?"

गा०—मानव-जाति के भविष्य पर।

फिर वह अपने विचारों में डूब गया। सिमोरडेन उठ खड़ा हुआ। गावैन को इसका कुछ भी ज्ञान न हुआ। सिमोरडेन ध्यान-मग्न गावैन पर दृष्टि जमाये दरवाजे की ओर पीठ किये, दरवाजे की ओर धीरे धीरे खसका। उसके बाहर निकलते ही कालकोठरी का दरवाजा बन्द हो गया।

अन्तिम आहुति

सूर्य्य उदय हुआ। सवेरे के प्रकाश में टी
पर, सब से पहले दृष्टि पड़ती थी, वह थी उस
भयंकर वस्तु—गला काटने का यन्त्र। उसे लो
नाम से पुकारते थे। लकड़ी और लोहे से बना
साथ ही, काम करने में भी भयंकर, यह यन्त्र
पीट कर टीले पर खड़ा किया गया था। लकड़ी
इस दैत्य समान भारी भरकम यन्त्र के मुकाबले में
निरंकुश शासन और शासितों की पराधीन अवस्था
ला-टोर का पन्द्रह शताब्दि पुराना किला एक दूसरे दैत्य
में खड़ा हुआ था। भासित होता था, मानो ला-टोर राज-
का रूप है, और 'गिलोटिन' क्रांति का। एक ओर प्रभु और
दास, और सेवक और सेवित, जागीरदार, और किसान,
हाकिम और पादड़ी, नियम, उपनियम, रीति, रवाज, राज-दण्ड,
राज-मुकुट, राज-सिंहासन, राजेच्छा और राजाधिकार की
गुत्थियों का उस विशाल गढ़ के रूप में अस्तित्व था, और दूसरी
ओर थी एक बड़ी छुरी। अर्थात् एक ओर थीं गुत्थियां, और
दुसरी ओर उन्हें उड़ा देने, साफ काट देने के लिए एक लम्बी
छुरी। आज १५ शताब्दियों से ला-टोर का वैभव चारों दिशाओं

न और सिपाही
ब ही जलती हुई
नाला था, और
पर से बैठ कर
लोटिन के पास
पास वालों से
कुर्सी पड़ी हुई
र एक आदमी
पर थे। यह
था। उसकी
। बगल में
चुप थे।
दूसरे

इतना ध्यान-मग्न प्रतिहिंसा, बर्बरता के समय भी, प्रकृति की
नहीं ले रहा है। के चारों ओर ज्यों की त्यों बनी रहती हैं।
पड़ता था। कुछ दोल करते हैं और पुष्प वैसे ही विकसित होते
पूछा, "तुम किस गम्भीरता और प्रकृति की सर्वव्यापिनी छटा,
गा०—मानव की भर्त्सना करती है और सनातन सौन्दर्य
फिर वह अप मानव-समाज के नियमों की वक्रता और
हुआ। गावैन के खोल खोल कर रखती है। मनुष्य विनाश-लीला
ध्यान-मग्न गावैता है—वह तोड़-फोड़ करता है, वह रक्त-पात
दरवाजे की ओ उसकी इन करतूतों से प्रकृति की अटल चाल में
कालकोठरी क नहीं पड़ता। ऋतुएँ बराबर वैसे ही आती जाती हैं,
ी फूलते हैं, तारे वैसे ही चमकते हैं!

सवेरा हुआ और बहुत अच्छा हुआ। सूर्य की किरणें की हिलती हुई डालियों और खेतों के लहलहाते हुए पौधों पर पड़ कर, जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहाँ तक, नवीनता और मनोहरता का राज्य फैलाये हुई थीं। मन्द मन्द वायु चल रही थी और प्रकृत पवित्रता चारों ओर छाई हुई थी। इस मनोहर दृश्य के बीच में, मनुष्य की निकृष्टता, उसकी निर्लज्जता, लाटोर के किले और गला काटने के यन्त्र गिलोटिन के रूप में, सिर उठा कर, ऊपर उठ पड़ी थी। चारों ओर छाई हुई प्रकृति की सुन्दरता मानो उस समय मनुष्य से यह कह सी रही थी, "मेरा काम देखो, और फिर, तुम अपनी करतूत पर तनिक दृष्टि डालो!"

सेना के चार हजार सिपाही टीले पर चन्द्राकार ढंग से खड़े

हुए थे। गिलोटिन उनके बीच में थी, उसके तीन ओर सिपाही थे। गोलन्दाज अपनी अपनी तोपों के पास ही जलती हुई बत्तियां लिये खड़े हुए थे। गिलोटिन के पास ही नाला था, और उसके बाद, किले की दीवार का चबूतरा, जिस पर से बैठ कर इस ओर का दृश्य देखा जा सकता था और गिलोटिन के पास की बात वहाँ से सुनी और वहाँ से गिलोटिन के पास वालों से बात कही जा सकती थी। उस चबूतरे पर एक कुर्सी पड़ी हुई थी। कुर्सी के पीछे झण्डे गड़े हुए थे। कुर्सी पर एक आदमी चुपचाप बैठा हुआ था। उसके दोनों हाथ छाती पर थे। यह आदमी था सिमोरडेन। वह सादे कपड़े पहने हुए था। उसकी टोपी पर प्रजातन्त्र का तिरंगा चिह्न लगा हुआ था। बगल में तलवार थी और कमर-पेटी में पिस्तौल। दर्शक लोग भी चुप थे। सैनिक भी आंखें नीचे किये, हाथ में बन्दूक लिये, एक दूसरे से कन्धा भिड़ाये चुपचाप खड़े हुए थे। प्रत्येक सैनिक के चेहरे पर चिन्ता की छाप थी। अचानक सैनिक ढोल बजा। उसमें से वे स्वर निकल रहे थे जो शव ले जाते समय निकाले जाते हैं। सैनिकों की पंक्ति अलग हो गई और उसके बीच से होकर एक जुलूस गिलोटिन के पास पहुँचा। उस जुलूस में, सब से आगे सैनिक बाजा बजाने वाले थे, उनके बाद कुछ सिपाही, भरी हुई बन्दूकें और कुछ नंगी तलवारें हाथ में लिए हुए। इनके पीछे था गावैन। गावैन शान्त और प्रसन्न भाव से चल रहा था। उसके हाथ और पैर में हथकड़ी और बेड़ी न थी। वह सैनिक पोशाक पहिने हुए था और उसकी कमर में तलवार पड़ी हुई

फिर; उसने गिलोटिन के खटके को दबाया। खटके के दबते ही यन्त्र का ऊपरी भाग घूम चला और वहाँ से छुरी गावैन के सिर के नीचे उतर गई। उतरते उतरते छुरी नीचे उतर गई और अन्त में एक धड़ाका हुआ। छुरी के धड़ाके के साथ ही पिस्तौल के दागने का धड़ाका हुआ। ज्यों ही गावैन का सिर धड़ से अलग हुआ, त्यों ही सिमोरडेन ने अपनी कमरपेटी से भरी पिस्तौल निकाल कर अपने हृदय-स्थल पर मार ली। गोली पार कर गई। रक्तधारा मुंह से निकल पड़ी और वह धराशायी हो गया।

इस प्रकार ये दोनों आत्मायें, एक की छाया में दूसरी की आभा को मिश्रित करती हुईं, एक साथ ऊपर उड़ गईं!